

लेखिका बापूके साथ

बा और बापूकी शीतल छायामें

मनुबहन गांधी

अनुवादक

रामनारायण चौधरी



नवजीवन प्रकाशन मन्दिर

अहमदाबाद–१४

मुद्रक और प्रकाशक
जीवणजी डाह्याभाऔ देसाऔ
नवजीवन मुद्रणालय, अहमदाबाद-१४

पहली आवृत्ति २०००, १९५४
पुनर्मुद्रण ३०००

रु० २.५०

फरवरी, १९६०

प्रकाशकका निवेदन

गांधी-साहित्यके पाठक श्री मनुबहन गांधीको अुनकी पहले प्रकाशित हो चुकी नीचेकी पुस्तकों द्वारा जानते हैं

१ बापू — मेरी मा (हिन्दी, गुजराती, मराठी और अंग्रेजीमें)

२ कलकत्तेका चमत्कार (हिन्दी, गुजरातीमें)

श्री मनुबहन गांधी श्री जयसुखलाल गांधीकी पुत्री हैं। श्री जयसुखलाल गांधी गांधीजीके काकाके लडके हैं। कुछ बरस पहले वे कराचीमें अपना धंधा करते थे। बादमें वे सौराष्ट्रमें आकर रहे और आजकल महुवामें रहते हैं। श्री मनुबहन आजकल अुन्हींके पास रहती हैं। वे कराचीसे १९४२ में गांधीजीके पास गअीं तबसे लेकर १९४५ में अपने पिताजीके पास महुवा रहने आअी तब तककी डायरी अिस पुस्तकमें दी गअी है।

अूपर बताअी हुअी पुस्तकों परसे पाठक जानते होंगे कि श्री मनुबहनने गांधीजीके साथ अपने निवास-कालमें जो डायरी रखी थी, अुस परसे ये दो पुस्तकें तैयार की गअी हैं। यह डायरी वे गांधीजीके साथ रहते हुअे रोज लिखती थी और गांधीजीको बता देती थी। अिससे यह माना जा सकता है कि अुनमें दी गअी वस्तु स्वयं गांधीजीकी लिखी हुअी तो नहीं है, लेकिन अुसे वे आद्योपान्त देख जरूर गये हैं। 'कलकत्तेका चमत्कार' नामक पुस्तकमें अिस बात पर प्रकाश डाला गया है, अिसलिअे यहां अुस विषयमें ज्यादा कहना जरूरी नहीं है।

यह नअी पुस्तक १९४२ से १९४५ के बीचके अरसेसे संबंध रखती है। और, जैसा कि अिसका नाम सूचित करता है, अुन वर्षोंमें

लेखिकाको वा और बापूके साथ रहनेका सौभाग्य मिला। अुस बीच अुन्हें जो तालीम मिली, अुनका चित्र अिसमें पेश किया गया है। यह काम अुन्होंने अपनी डायरीके तारीखवार अुद्धरणोंको शृंखलाबद्ध करके किया है। अिसलिअे अिसमें लेखिकाकी कुछ वर्षोंकी आत्मकथाके साथ गांधीजीके अुन वर्षोंके कार्योंका कुछ अितिहास भी मिलता है। डॉ० सुशीला नय्यरने आगाखा महलमें गांधीजीकी नजरकैदके अिन वर्षोंका अितिहास अपनी आकर्षक शैलीमें 'बापूकी कारावास-कहानी' नामक पुस्तकमें दिया है। प्रस्तुत पुस्तक थोड़े भिन्न पहलूसे अुसमें अुल्लेखनीय वृद्धि करती है। लेकिन अिसका खास पहलू है गांधीजी द्वारा लेखिकाको दी हुअी तालीम। शिक्षामें रस लेनेवाले पाठकोंको अिसमें गांधीजी अेक शिक्षकके रूपमें काम करते दिखाअी देंगे। लेकिन वे किसी स्कूलके शिक्षककी तरह काम नहीं करते, बल्कि अपना घर चलानेवाले अेक पिता या पालककी तरह काम करते हैं। और अुस कामके जरिये बालको और दूसरे सब लोगोंको शिक्षा देते हुअे और खुद लेते हुअे दिखाअी देते हैं। बालकको स्कूलमें ही नहीं — घरमें माता-पिता और साथमें रहनेवाले भाअी-बहनोंके सम्पर्कसे तथा अुनके कार्योंमें यथा-शक्ति सहकार या मदद करनेसे भी शिक्षा और तालीम मिलती है। और अिस तरह मिलनेवाला शिक्षण असरकारक होता है। यह शिक्षण वैसा ही होगा जैसा बालकका घर और अुसमें रहनेवाले मनुष्य होंगे। वे सब जिस तरह कामकाज करते होंगे, वैसा ही बालकको सहज शिक्षण मिलेगा। अुससे बालकको अपने-आप ही तालीम और संस्कार मिलेंगे। अुसमें जितना जाग्रत भाव होगा, अुतना ही वह शिक्षण अच्छा होगा। और जाग्रत भावकी जितनी कमी होगी, अुतनी अुसमें विचार-शुद्धिकी कमी रहेगी। फिर भी अुसका स्वाभाविक प्रभाव तो बालक पर पड़ेगा ही। अिस तरह गांधीजीकी शिक्षण-पद्धतिमें व्यवस्थित और विचार-शुद्ध गृहजीवनका मुख्य स्थान है। जिसे स्कूलका शिक्षण कहा जाता है, वह अुसका अेक अंग बनता है। अिसलिअे पाठक देखेंगे कि

गांधीजीकी नजरकैदके समयके कुटुम्बीजनोंमें से ही कुछ लोग लेखिकाको पढ़ानेका समय निकालते हैं और अुसका नियमित टा़िम-टेबल भी होता है। गांधीजीने शिक्षणका अर्थ चारित्र्यका शिक्षण किया है। अिस अर्थका शिक्षण बालकको देना हो, तो किस तरह काम करना चाहिये, अिसका नमूना अिस पुस्तकमें देखनेको मिलता है। और वही अिसका मुख्य रस है। अिसलिअे यह पुस्तक छोटे-बड़े, स्त्री-पुरुष सबको रसप्रद मालूम होगी।

अिसमें बा और बापूका भी अेक विरल चित्र पाठकोंको मिलता है। अुसका वर्णन करना सम्भव नहीं है। गृहस्थ-जीवनका यह दृष्टान्त हमारे देशके लोग हमेशा याद रखेंगे और अुससे हमेशा प्रेरणा पाते रहेंगे।

श्री मनुबहनकी अेक और पुस्तक 'अेकला चलो रे'* भी हम यथासंभव जल्दी ही हिन्दी पाठकोंके सामने रखनेकी आशा करते हैं। अिसमें गांधीजीकी नोआखालीकी धर्मयात्रासे सम्बन्ध रखनेवाली डायरी दी गअी है।

२८-११-'५४

---

* यह पुस्तक हिन्दीमें प्रकाशित हो चुकी है। अिसके सिवा, अिसी लेखिकाकी 'बापूके जीवन-प्रसंग' तथा 'बिहारकी कौमी आगमें' नामक पुस्तकें भी नवजीवन ट्रस्टने प्रकाशित की हैं।

अनुक्रमणिका

बा और बापूकी शीतल छायामें

१
शीतल छायामें

१९४२ के मअी मासमें बापूजी अेण्ड्रूज-कोष अिकट्ठा करने बम्बअी आये थे। बापूजी मुझे अपने पास आनेको ललचा रहे थे और अन्तमें बापूजीके "चार बहनोमे से कोअी तो सेविका बनो" अिस वाक्यसे मैं जानेको तैयार हो गअी। मैंने मअीकी छुट्टियो तकके लिअे ही जाना मजूर किया और कराचीसे बम्बअी गअी। बम्बअीसे २३ मअीको बापूजीके साथ सेवाग्रामके लिअे रवाना हुअी।

हम दूसरे दिन लगभग ११॥ बजे सेवाग्राम पहुचे। बापूजी मेरा कधा पकडकर पहले सीधे मुझे बाके पास ही ले गये। और अुनकी तरफ धकेलकर बासे कहने लगे "लो, तुम्हारे लिअे अेक लडकी लाया हू। अब अिसे अच्छी तरह पकडकर रखना ताकि भाग न सके।"

अुपरोक्त शब्द आज जब मैं अपनी डायरीमें पढती हू, तब अैसा लगता है मानो बापूने अेक अेक शब्दकी अुसी समय भविष्यवाणी कर दी थी। मैं सिर्फ दो महीनेकी छुट्टिया बिताने ही सेवाग्राम गअी थी, परन्तु पूर्वजोंके किसी पुण्यके प्रतापसे बा और बापू दोनोकी अतिम सेवा करनेका सौभाग्य मुझे मिला।

बा मुझे अपने कमरेमे ले गअी। मेरा सामान अुन्होने खुद ही व्यवस्थित रखवाया। फिर, प्रेमपूर्ण शब्दोमे मुझे कहा "बेटी, अब तुझे भूख लगी होगी, अिसलिअे पहले नहा ले। परन्तु तू फ्रॉक पहनती है, यह मुझे पसन्द नही। तेरी अुम्र १३–१४ वर्षकी तो अवश्य होगी? तेरे पास ओढनी नही होगी। ले, यह मेरी साडी पहन ले, बादमें मैं तुझे ओढनी फाड दूगी।" यो कहकर अपनी धुली हुअी साडी मेरे हाथ पर रख दी। मैं क्षणभरके लिअे हक्की-बक्की हो गअी कि बा अितनी बडी (प्रतिष्ठामें) हैं, अुनकी साडी मैं अेकदम कैसे पहन सकती हूं? परन्तु मेरी परेशानीको समझकर वे बोली "अिसमें सकोच क्यो करती है?

कल फिर धुल जायगी तो मैं पहन लूंगी।" फिर भी बा और बापूजीका कपडा हमारे लिअे तो प्रसादी ही हो सकता है। अुसे पहना कैसे जा सकता है? हजारों लोग अुनकी प्रसादीको यादगारके तौर पर रखते हैं, अुसके बजाय मैं अुसे पहनू, तो कोओी पाप तो नहीं लगेगा न? अैसे वैसे विचार भी मनमें आये। फिर भी मैं हिम्मतके साथ अिनकार नहीं कर सकी, और मैंने नहा कर साडी पहन ली।

मुझे अुस समय साडी पहननेकी आदत ही नहीं थी। अिसलिअे पहनना नही आया। परन्तु बाके साथ अेक और बहन रहती थीं, अुन्होंने मुझे ठीक ढगसे पहना दी। बाको मानो खूब सतोष हुआ। वे बोली . "हा, अब मुझे जरूर अच्छी लगती है। अितनी बडी १४ सालकी लडकीको कहीं फ्रॉक अच्छा लगता है? परन्तु आजकल विदेशी फैशनने आधीकी तरह सब जगह अपना असर फैला दिया है।"

बा मुझे भोजनके लिअे ले गओी। खानेमें अुबला हुआ साग, रोटी, मक्खन, दही और गुड था। आश्रममें खानेकी घटी ११ बजे होती थी, अिसलिअे खानेवाली मैं अकेली ही रह गओी थी। अुबला हुआ साग, अुनमें भी कद्दूका, मुहमें रखते ही मिचली आने लगती थी। बा मेरी स्थितिको समझ गओी। अुनका अेकादशीका व्रत था, अिसलिअे सूरण (जमीकद) का साग बनाया था। अुसमें से मुझे थोडासा दिया। परन्तु यह डर तो था ही कि अिस तरह नियमके विरुद्ध साग खाअूंगी और बापूजीको पता चलेगा तो वे मुझे क्या कहेंगे? पिताजी और मेरी बहनें वगैरा मुझे अिस बातकी कल्पना कराते रहते थे कि आश्रमके आदेश और नियम जो तोडता है अुनके कैसे बुरे हाल होते हैं। अिसलिअे मैं पहलेसे ही सावधान रहना चाहती थी। बा मेरा चेहरा देखकर मेरे मनकी बात समझ गओी। बोली "आजके दिन खा ले, बादमें धीरे धीरे अभ्यास हो जायगा तो मैं खुद ही तुझे नहीं दूंगी।"

मुझे खिलाकर बा बापूजीके कमरेमें गओी। मुझसे कह गओी कि "तू थक गओी होगी, अिसलिअे कुछ देर सो लेना।" थोडी देरमें वे आओी। मैं सोओी नहीं, अिसलिअे अुलहनेके तौर पर कहने लगी

"सोओी क्यो नही ? आश्रममे बीमार नहीं पड़ना है। यहा तो पढ-लिख कर होशियार बनना है।" थोडी देर बाने गाधी-परिवारकी पुरानी बातें सुनाओी : "तेरी दादी मेरी जिठानी थी। मोतीभाभीने जब बापूजी विलायत गये तब मेरी बहुत देखभाल की थी। हम दोनो अुस समय अेक-दूसरेके सुख-दु खकी साथिन थी। हमारी सास किसी दिन हमसे कुछ कहती, तो दोनो अेक-दूसरेको समझा और ढाढस बधाकर अपना दु ख हलका करती और आनन्द मनाती थी। हमारी देवरानी-जिठानीकी जोडी थी। आजकल तो कहीं भी अैसी जोडी देखनेको नही मिल सकती। हमारी सास कहती 'कस्तूर बहू और मोती बहूको छह महीने तक खानेको कुछ भी दिये बिना अेक कोठरीमें साथ ही बन्द रखकर खूब पेट भरकर बातें करने दो और छह महीने बाद फिर बाहर निकालो तो भी अेक मिनट वे अेक-दूसरेके बिना नही रह सकती।' हमारी अैसी जोडी थी। तेरा यहा आना तो मुझे बहुत ही अच्छा लगा है। कौन जाने, कही मोतीभाभीने ही स्वर्गमे बैठे बैठे अितना प्रेम प्रगट न किया हो! मुझे कभी कभी अुनकी बहुत याद आती है। तेरी मा भी अैसी ही सेवाभावी थी। बेचारी जब तक मेरे सिरमें तेल मलने या पैर दबाने न आ जाती तब तक सोती ही न थी!"

मुझे ये पुरानी बाते सुननेमें बडा ही आनन्द आया। अपनी दादीके बारेमें यह सब जाननेको मुझे और कहा मिलता? मैंने अुन्हे कभी देखा नही था। बाने आगे कहा "तेरे दादा बड़े तेज थे। किसीने जरासी खराब रोटी बना दी कि तुरन्त टोकते — यह रोटी कौनसी बहूने बनाओी है? और अिस बातका खास तौर पर खयाल रखते कि बापूकी गैरमौजूदगीमें मुझे कोओी दु ख न दे। मेरे ससुर पर तेरे दादाकी बहुत ही श्रद्धा थी, छोटेसे छोटा काम भी अुनसे पूछ कर ही करते थे।"

अिस प्रकार लगभग घटेभर तक बाने मुझे मेरे दादा-दादीके मीठे सस्मरण सुनाये। बापूजी कभी कभी अैसे सस्मरण सुनाते थे, जो कभी किसीने नही सुनाये। बाके पैर दबाते-दबाते मैं भी बाके पास ही सो गओी। बा दोपहरको कोओी आध घटे सोती थीं, अिसलिअे वे

तो आध घंटेमें जाग गअी। परन्तु मुझे नहीं अुठाया। आमका मौसम था, अिसलिअे हमारे लिअे स्वयं रसोअीघरसे आम लाकर पानीमें भिगो रखे। अुस समय रामदास काकाका कान्हा भी बाके पास ही था। हम तीनोंको बाने नाश्ता दिया। मैं अिनकार कर रही थी, परन्तु बाके साथ रहनेवाली बहनने मुझे बाके स्वभावका परिचय देकर कहा: "बा खाने या पहननेकी कोअी चीज दें, तब रुचि हो या न हो जरूर ले लेनी चाहिये। बाको खिलानेमें बड़ा आनन्द और संतोष होता है। अिसलिअे नहीं लोगी तो वे नाराज होंगी।" अिसलिअे मैंने भी नाश्ता किया।

अितनेमें अखबार आ गये। बाको अखबार सुनाये। फिर बाने डाक लिखवाअी। अितनेमें तीन बज गये, अिसलिअे वे चरखा चलाने बैठीं।

चरखा हाथमें लेते लेते बाने कहा "तू चरखा नहीं लाअी?" मुझे बड़ी शर्म आअी। मैंने ना तो कह दिया, परन्तु अुस समय अैसा लगा कि बाके पास चरखेके बिना खड़ी कैसे रहूं? मनमें यह डर था कि चरखा नहीं लाअी अिसलिअे बा नाराज होंगी। परन्तु अुन्होंने अपने प्रेममय शब्दोंमें चरखेका मीठा तत्त्वज्ञान समझाया "अिस तरह कैसे काम चलेगा? हमें रोज कातना ही चाहिये। तुझे रोज कपड़े पहनने पड़ते हैं। अितनी ही बात नहीं है कि हम कपड़े शरीरकी लज्जा ढकनेको पहनते हैं, परन्तु ठंड और गरमीमें कपड़े हमारे शरीरकी रक्षा भी करते हैं और हमारे लिअे बहुत आवश्यक हैं। अिसीलिअे तू ठेठ कराचीसे यहां तक बिना भूले कपड़े पेटीमें रखकर लाअी है। कहीं भी जाते वक्त कपड़ोंकी जोड़ी ले जानेकी आदत हमें जाने अनजाने पड़ी हुअी है। अैसी ही आदत यदि भारतके लोगोंको चरखा चलानेकी पड़ जाय, तो बापूजीका बहुतसा काम तेजीसे बन जाय। यह ले, अपना दूसरा चरखा तुझे देती हूं। अब तू अिस पर कातना।"

अिस प्रकार बाने थोड़ेसे शब्दोंमें मुझे चरखेका तत्त्वज्ञान समझा दिया और अिस बातका भान करा दिया कि बापूके चरखेको वेग प्रदान करनेकी अुनके भीतर कितनी अुत्कट भावना है। कोअी आध घंटे कातकर मैं अपने और बाके धुले हुअे कपड़ोंकी तह करने लगी। बाकी

तीक्ष्ण दृष्टि मेरे फ्रॉक पर पडी। तुरन्त ही मुझसे कहने लगी "बेटी! जरा फ्रॉक तो दिखा। ये धब्बे नही रहने चाहिये। मालूम होता है तुझे कपडे धोना नही आता। कराचीमें तो नौकर धोते होगे न? हम लोग जब तेरे बराबर थी, तब तो हमारी शादी हो चुकी थी। मा-बाप नौकर रखकर आजकलकी लडकियोको पगु बना देते है। ला, मै मिटा दू, अिसमें बहुत साबुनका काम नहीं। हाथसे खूब मसलना चाहिये। तू रोज कपडे धोकर मुझे बताया कर। दो तीन दिनमें सब ठीक हो जायगा। ये सब बातें यहा अधिक सीखनी होगी। पढना भी आना चाहिये और प्रत्येक काम भी आना चाहिये।"

बापूजी सुबह बाके पास छोड गये थे तबसे मै अुनके पास गअी नही थी। शामको खानेकी घटीके समय (पाच बजे) बापूजीको खानेके लिअे बाने जबरदस्ती मुझे भेजा। (बापूजी दोनो समय सामूहिक भोजनालयमें खाने आते थे।)

बापूजीके पास गअी तो वे बोले "अरे, यह लडकीने अेकदम स्त्री कब बन गअी? आज यह साडी क्यो पहनी है? यह तो बा[illegible] मालूम होती है। खुद अपनेको सभाल सके, अितनी भी शक्ति तुझमें नहीं है, फिर अूपरसे अितना भार क्यो लाद रही है? क्या तेरे पास फ्रॉक नही है? न हो तो सिलवा दू।"

मैंने कहा, "बापूजी, मोटी बाको फ्रॉक पसन्द नहीं है। अुन्होंने मुझे साडी पहननेके लिअे कहा, और अपनी साडी दी। मैंने सुबहसे ही साडी पहनी है।" अिस तरह बाने [illegible] हम बरामदे तक पहुचे। बा बाहर आअी तो बापूजीने बात छेडी 'अिस बेचारीको साडी किस लिअे पहनाअी है? भले ही यह १४ वर्षकी हो, परन्तु मैं तो अिसे ११–१२ वर्षकी ही मानता हू। अिसे आजादीसे दौडने-खेलनेका मौका मिलना चाहिये। यह [illegible] साडी [illegible] नहीं सम्हाल सकती। मुझे पता होता तो सुबह ही निकलवा देता।'

बा बापूजी पर नाराज होकर बोलीं: "मैं फ्रॉक तो [illegible] नही पहनने दूगी। लडकियोंके बारेमें मैं अधिक जानती हू। [illegible] आजसे ही लिअे है, पहले ओढनी दे दूगी। [illegible]

है, तो मुझे जैसा पसन्द होगा वही पहनाअूगी। हा, अिनकी अिच्छा फ्रॉक ही पहननेकी हो तो अिस पर मेरी जरा भी जबरदस्ती नही है।" अब मैं धर्मसंकटमें पड गअी। किनकी मानू? बाकी या बापूकी? अन्तमें मैंने कहा, "मेरे पास कोअी छह फ्रॉक हैं, अुन्हें पहन डालू; बादमें नये नही सिलवाअूगी।" और अिस बातको दोनोंने अुत्साहसे मान लिया। बाने अिस पर जरा भी आपत्ति नही की।

अिस प्रकार २४ मअी, १९४२ के दिनसे मुझे अिन दोनों महान आत्माओंकी शीतल छायामें स्थायी रूपसे रहनेका सौभाग्य प्राप्त हुआ। वह दिवस जीवनमें सदाके लिअे अंकित हो गया। और आज मानो वह स्वप्नजगत बन गया है। जब यह विचार करती हू तो लगता है कि क्या वे सब सपने थे या जीती-जागती महान आत्माअें थीं?

बा मेरी पढाअी, खान-पान वगैरा हरअेक बातका ध्यान रखती थीं। और मेरे दिन भी काफी सेवा करनेमें, खेलने-पढनेमें, और आश्रमजीवन जीनेके आनन्दमें सुखपूर्वक व्यतीत होने लगे।

२

पहला पाठ

मेरे आनेके बाद मेरे साथ रहनेवाली बहन बीमार हो गअी। अुसे सख्त बुखार आने लगा। अिसलिअे बाकी सारी सेवा मेरे हाथमें आ गअी। बाने अुस बहनकी खाट आग्रहपूर्वक अपने ही कमरेमें रखवाअी। अुस बहनका बुखार कब बढकर कितना हो जाता है, अुसके खाने-पीने, स्पंज, अेनिमा, मिट्टीकी पट्टिया वगैरा तमाम सेवा-शुश्रूषाका ध्यान बा बडे प्रेमसे रखतीं। अुस बहनको चरखेकी आवाज अच्छी नहीं लगती थी, अिसलिअे बा पासवाली छोटीसी कोठरीमें कातती थीं। बीमारीमें दूसरेकी लडकीकी अितनी देखभाल अेक माकी तरह विरली ही स्त्रिया कर सकती हैं।

जैसा मैंने पहले लिखा है, बाने मुझे पढानेकी व्यवस्था भणसालीभाअीको सौंप दी। अुनके पास मेरा अंग्रेजी, गुजराती, बीज-गणित,

भूमिति, सस्कृत, अितिहास, भूगोल वगैराका अध्ययन नियमित रूपसे चलता था। अेक बार बाने सुझाया कि कभी कभी अिसकी परीक्षा भी लेते रहिये। अिसलिअे अग्रेजीकी पाचवीं कक्षाकी पढाअी करनेवाली हम दो-तीन लड़कियोकी परीक्षा लेनेका भणसालीभाअीने निर्णय किया। बाको तो अिसकी जानकारी थी ही। परन्तु जिस दिन परीक्षा थी, अुसी दिन सेवाग्राममें काग्रेस वर्किंग कमेटीकी बैठक होनेके कारण मेहमान आये हुअे थे। और शामको रोटी बनानी थी। बहने अुस समय थोडी थी। मेरी परीक्षा शामके छह बजे बाद थी। अिसलिअे मैं चार बजे दूसरी बहनोके साथ रोटिया बेलनेके लिअे भोजनालयमें गअी। अभी पाच सात रोटिया ही बेली थी कि बा आअी। मेरे हाथसे बेलन ले लिया और मुझे मीठा अुलहना देने लगी "क्या तेरे बजाय मुझे परीक्षामें बिठायेगी? बेचारी पढनेसे अूब गअी जान पडती है जो यहा आकर बैठ गअी है। बादमें मोटी बा नाराज होगी तब बहाने बनाये जायगे कि मैं तो रोटी बेलने गअी थी। तुझे मुझसे पूछना चाहिये था कि रोटी बेलने जाअू?" मैं क्षणभरके लिअे स्तब्ध रह गअी। मैंने कहा, "परन्तु साढे चार बज गये थे और अितने अधिक खानेवाले होनेके कारण मुझे बुलाया गया, अिसलिअे मैं आ गअी। मैंने अपनी पढाअी पूरी कर ली है। आप यहा रोटी बेलेंगी तो थक जायेंगी। मैं थोडीसी बेलकर अभी चली जाअूगी।"

अितना मैं बड़ी हिम्मत करके बोली तो सही, परन्तु बाका जवाब सुनकर अुलटी पछताअी।

"हा, मैं तुम लडके-लडकियोको — पढाअीके चोरोंको — खूब जानती हू। यों ही कह न कि अिस तरह तू पढनेसे बच निकलना चाहती है। जा यहासे और सीधी पढने बैठ जा। अभी भणसालीसे कह देती हू कि खूब कठिन सवाल पूछना। और फिर यदि थोडे नम्बर लाअी तो तू तेरी जाने है।"

मैं कुछ बोले बिना चुपचाप चली आअी। बा कितनी जिम्मेदारी लेती, अुनकी सभाल अपने शरीरको हानि पहुचाकर भी रखती थी।

मेरी आंखें बिगड गयी थीं। चश्मा था, परन्तु मैं लगाती न थी। बाको मालूम नहीं था कि मेरी आंखें बिगडी हुओ हैं।

बाके कमरेमें अेक ताक है। अुनमें कुकुमका ॐ बनाया हुआ है। आज भी सेवाग्राममें वह मौजूद है। वहां बा सुबह-शाम घीका दिया जलातीं, माला फेरतीं, गीता पढतीं और अेक दो फूल चढातीं। वह ॐ मिटने लगा तो बाने मुझे फिरसे बना देनेको कहा। मैंने ॐ बनाया, परन्तु जरा नीचेकी पाख ठीक नहीं बनी। अुसका मुझे तो कोअी खास पता नहीं चला। परन्तु बाकी कला-पारखी आंखोंने तुरन्त देख लिया। अुन्होंने मुझसे कहा: "मनु, दूरसे देख तो, ॐ की नीचेकी पाख जरा बेडौल लगती है।" मैंने दूरसे देखनेका प्रयत्न किया, परन्तु दिखाअी दे तब न? अुस समय कुछ अुत्तर देना चाहिये, अिसलिअे मैं अितना ही बोली कि अभी ठीक कर देती हूं। बा बाहर बरामदेमें चली गयीं। अिस बीचमें मैंने चश्मा लगाकर देख लिया। बाके कमरेमें अेक जाली है। बाने अुसमें से मुझे चश्मा लगाते देख लिया। अुसी क्षण अन्दर आयीं, "क्यों, तुझे भी चश्मा लगता है? तो लगाती क्यों नहीं? आंखें ज्यादा बिगाडनी हैं क्या? बादमें रामदासकी सुमी जैसा हाल होगा। आजसे चश्मा नहीं लगाया तो मैं अपना कुछ भी काम तुझे नहीं करने दूंगी। याद रखना बापूजीसे कह दूंगी। और तुझे भी दोपहरको गरमीमें तीन सतरोंका रस निकालकर पी लेना है। सुमीको अिससे बड़ा लाभ हुआ था। (सुमी अर्थात् सुमित्रा — रामदास काकाकी बड़ी लड़की।)

मुझे कल्पना नहीं थी कि बा अिस तरह मेरी चोरी पकड लेंगी। परन्तु अुस दिन बाने मुझे चश्मा न लगवा दिया होता तो शायद आज मैं बिलकुल अंधी हो जाती। अथवा आंखें अत्यंत कमजोर तो हो ही जातीं।

मेरी अेक कुटेव थी। खाने बैठती तो कभी पानीका लोटा न भरती थी। अिसका कारण यह भी था कि हम चार पांच लडकियां साथ खाने बैठतीं और बरतन मलनेमें स्पर्धा होती कि कौन जल्दी मल लेती है। मुझे बरतन मलनेका अभ्यास कम था, अिसलिअे मैं सबसे कम

बरतनोंका अुपयोग करती। पानी लेकर न बैठनेसे अेक गिलास कम मलना पड़ता। यह भी मनकी अेक चोरी तो थी ही। फिर भी मुझे याद है कि मेरी अेक मुसलमान सहेली जोहराबहनके पास मुझसे दुगुने बरतन होते तो भी वह मुझे अिस स्पर्धामें हरा देती। यह दृश्य बा भी कअी बार देखती थी। और अुन्हे भी हमारी अिस स्पर्धामें मजा आता था।

अिन्ही दिनो अेक बार आश्रममें प्रार्थनाके बाद मुझे बिच्छूने काट लिया। अुसकी असह्य पीड़ा २४ घटे तो रहती ही है। रोज बाका बिस्तर, खाने-पीनेका प्रबध तथा अन्य कुछ सेवा मैं करती थी। बाके कमरेमें अिन दिनो मैं अकेली ही थी। बाने प्रेमसे मेरे सिर पर हाथ फेरा। प्रार्थनाके बादके हमारे रोजके कार्यक्रममे हम सब लडकिया मिलकर अन्त्याक्षरीका खेल खेलती, या बाके पास बैठकर काशी ताअी ('जीवनका प्रभात' नामक गुजराती पुस्तकके लेखक प्रभुदास गाधीकी माता) भजन गाती, शकरीमामी बाकी कमर दबाती और शकरीमौसी (आश्रमके व्यवस्थापक चिमनलालभाअी शाहकी पत्नी), दुर्गामौसी (महादेवभाअी देसाअीकी पत्नी) और गोमतीकाकी (श्री किशोरलालभाअी मशरूवालाकी पत्नी) खाने-पीनेसे निबट चुकने पर बाके पास आकर बैठती थी। अिस प्रकार रातके समय आश्रमका कुटुम्ब किल्लोल करता था। अिसलिअे अुस रातको बिच्छू काटनेसे हमारे रगमे भग हो गया। जब बापूजी सोनेके लिअे आये, तब मेरे पास आये। बाने कहा "देखिये न बेचारी लडकी खेल रही थी, अितनेमें अिसे बिच्छूने काट लिया।"

आश्रममें बा, बापूजी तथा हम लडकिया प्रार्थनास्थल पर रेतमें खुले आकाशके नीचे सोते थे। बा बहुत देर तक मेरे पास बैठी रही। दूसरे दिन भी कोअी काम न हो सका। रोज बाकी थाली मैं परोसती थी, अिसके बजाय बा मेरी थाली परोसकर लाअीं और पानीका लोटा भरकर मुझे देते हुअे कहा "हमेशा लोटा भरकर खाने बैठनेकी तेरी आदत नहीं है, यह बात तुझे कहना रोज भूल जाती हू। जिस सावधानीसे तू मेरे लिअे लोटा भरकर रखती है, वही सावधानी तुझे अपने काममें

रखनी चाहिये। यह ठीक नहीं कि बाका काम तो अच्छी तरह कर दे और अपना चाहे जिस तरह करनेकी छूट रखे। अैसे आदमी कभी आगे नहीं बढ़ते। खाते-खाते किसी समय पानी पीनेकी जरूरत पड़ जाये, तब या तो तुझे जूठे हाथों अुठना पड़े अथवा दूसरेसे मांगनेकी नौबत आये। तेरे मनमें अगर यह खयाल हो कि अैसा करनेसे अेक लोटा कम मलना पड़ेगा, तो यह बड़े आलस्यका चिह्न माना जायेगा। अब आजसे रोज पानी भरकर खाने बैठना।"

बा छोटी छोटी आदतोंके बारेमें कितनी सूक्ष्मता और संक्षेपमें समझा सकती थी, अिसका मुझे यह प्रत्यक्ष पाठ मिला।

३

बा और बापूकी बिदाअी

१९४२ का जुलाअी महीना बहुत स्मरणीय बन गया। रोज अखबारोंमें प्रश्न अुठाया जाता था कि बापू अुपवास करेंगे या आमरण अनशन? सारी बातचीत बापूकी कुटियामें ही होती थी। बा चाहती तो अिन सब सलाह-मशविरोंमें अुनके मौजूद रहने पर कोअी अेतराज न करता। परन्तु मैंने देखा कि वे कभी खानगी सलाह-मशविरा सुननेकी जिज्ञासा नहीं रखती थी। बा यह सम्बन्ध भूल ही गअी थी कि बापू पर पत्नीके नाते अुनका ज्यादा अधिकार है। कारण, बापू सबके बापू और बाके भी बापू बन गये थे। और बा भी सबकी बा और बापूकी भी बा बन गअी थी। अिसलिअे यदि आम जनता अखबारोंसे सन्तोष मान लेती थी, तो बाको भी अुन्हींसे सन्तोष मानना चाहिये।

अिसलिअे बाको अिस सारी हलचलकी बहुत चिन्ता रहती थी। 'हरिजनबन्धु' में बापूका "अंग्रेज भारत छोड़कर चले जाय" नामक लेख मैंने बाको पढ़कर सुनाया। बाने लेख बड़ी आतुरता और सावधानीसे सुना। परन्तु शायद अुन्हें मेरे सुनानेसे सन्तोष नहीं हुआ, अिसलिअे अुन्होंने स्वयं वह लेख धीरे धीरे पढ़ा। ('हरिजनबन्धु' के

लेख भी बा छपनेसे पहले नही पढती थी; जब वे प्रति सप्ताह छप जाते, अुसके बाद ही अुन्हे नियमित पढती थी।) पढकर कहने लगी "अभी तक बापूजीने अितनी कडाओी नही दिखाओी थी। अिसलिअे अब या तो सरकार यह अखबार बन्द कर देगी या कोओी अुथल-पुथल जरूर होगी।" अिन दिनो खुरशेदबहन (दादाभाओी नौरोजीकी पौत्री) भी वही थी। वे रोज बाके कमरेमें बहनोकी सभा करती और अुसमें यह बताती थी कि यदि बापूजी लडाओी छेड़े तो बहनोको क्या करना चाहिये।

अन्तमें अगस्तका महीना आया। बापूजीको कांग्रेस महासमितिकी बैठकके लिअे २ तारीखको बम्बओी जाना था। बाका जाना तय नही हो रहा था, क्योकि अुनका स्वास्थ्य कमजोर था और बापूजी मानते थे कि सरकार अिस बार अुन्हे हरगिज नही पकडेगी। बापूजीने बाको समझाया, "तुम यही रहो। सरकार मुझे नही पकडेगी। सरकार अितनी पागल थोडे ही है?"

परन्तु बा अिस तरह माननेवाली नही थी। अुन्होने बापूजीको अुत्तर दिया "मुझे क्यो नही ले जाते? मै आपकी चालाकी जानती हू। अिस बार क्या सरकार आपको पकडे बिना रहेगी? आप कितना कडा लिखते है? मै जरूर चलूगी। जहा आप वहा मै।"

बापू केवल अितना ही बोले "तो फिर हो जाओ तैयार।" और हुआ भी अैसा ही। बापूजीने स्वय प्रस्ताव रखे। भाषण दिये। फिर भी अुनका अनुमान गलत निकला। और केवल समाचारपत्रो परसे किया हुआ अपढ बाका अनुमान बिलकुल सही निकला और सबको जेल जाना पडा।

बाने मुझे तैयारी करनेको कहा। मानो बाको सारे भविष्यका पता हो, अिस तरह वें मुझे प्रत्येक छोटी-बडी चीज याद करके बताती थी और कहती थी, "अब सेवाग्राम कहा वापस आना है?" मैंने पूछा "मोटी बा, मै भी चलू?" वे बोली "बेटी, तुझे ले जाना तो मुझे अच्छा लगेगा, परन्तु तेरे लिअे बापूजीसे कहूगी तो मेरा जाना भी रुक

जायेंगा। फिर वहा प्रभा है, अिसलिअे मुझे कोअी दिक्कत नहीं होगी।" (प्रभावतीबहन श्री जयप्रकाशजीकी पत्नी)।

मैंने बाकी पेटी जमाअी। पेटीमें साड़िया रखाते रखाते वे बोलीं "यह साडी मुझे राजकुमारीने कात कर दी है, अिसलिअे अिसे जरूर रख। वह बेचारी बहुत खुश होगी।" बामें दूसरोंको खुश करनेके अैसे महान गुण थे। अेक लाल किनारकी साडी बापूके सूतकी थी, अुसे मेरे हाथमें रखकर गद्‌गद कठसे बोलीं "बेटी, शायद हम पकडे जाय, और आश्रम भी जब्त कर लिया जाय, तो मेरी अिस साडीको सभाल कर रखना। जबसे यह साडी बुनकर आअी, तबसे मैंने अपने मनमें निश्चय कर लिया है कि मरते समय बापूकी यही साडी ओढ़ूगी। यही मेरी अेक अतिम अिच्छा है। अिसे तू पूरी करना। यह बात तुझे ही कहती हू, और किसीसे नहीं कही। अुन्हे जो कुछ ले जाना हो भले ले जायं, परन्तु अिस साडीकी रक्षाकी जिम्मेदारी तुझ पर है।"

हुआ भी यही। आश्रम जब्त तो नहीं हुआ, परन्तु जब किशोरलालभाअी मशरूवालाको पकडने रातमें पुलिस आअी, तब जब्तीकी पूरी शंका थी। परन्तु वह साडी ज्यों ही बा और बापू पकड़े गये, मैंने बजाजवाड़ी, वर्धामें भेज दी। और मेरे आगाखा महलमें जानेके बाद वह साड़ी वहां मगवा ली। वहा अपने ही हाथो बाको ओढाअी। अुनकी अितनी-सी अतिम अिच्छा मैं पूरी कर सकी, यह मेरे पुण्यके बल तो नहीं परन्तु बडे-बूढोंके पुण्य और आशीर्वादके बल पर ही हुआ। आज अिसका मुझे अपार सन्तोष है। साडीकी बात परसे जान पडता है कि बामें पतिभक्ति — बापू-भक्ति कितनी अूची, कितनी भव्य थी!

२ तारीखको स्टेशन पर जाते जाते मुझे बार बार कअी बातें बाने समझाअीं "भीका दीया नियमित जलाना। हम पकडे जायं तो कराची चली जाना। शरीरकी अच्छी तरह सभाल रखना। मेरे कमरेमें अकेलापन लगे तो दुर्गाके यहां सोने जाना।" मुझे अच्छी तरह नाश्ता मिलता रहे अिनके लिअे भोजनालयके व्यवस्थापक श्री कृष्णचन्द्रको सब बातें समझाअीं।

अिस बीच अेक बहनने बाके लिअे 'थेपला' नामकी नमकीन बानगी बनाकर भेजी। बाको चने, मूग वगैराकी बनी नमकीन चीजोंका शौक तो था। लेकिन अुन बहनको लिखवाया "तुम आश्रमके सब नियम जानती हो। फिर यह चीज क्यों भेजी? मुझे खानी हो तो यहां कौन मना करता है? परन्तु अिस प्रकार बाहरकी चीजें मैं खा ही कैसे सकती हूं? बापूके सामने भी कैसी चोर ठहरूंगी?"

बाने अुन 'थेपलों' के टुकडे करवाकर अंतिम समय सबकी थालियोंमें रखवा दिये। खुदने अेक टुकडा भी नहीं चखा। अिस प्रकार बा बापूके सारे नियम बहुत ही समझ-बूझकर पालती थीं। शुरूके जीवनमें वे भले जाने-अनजाने बापूके पीछे खिंचती रही हों, परन्तु अुन नियमोंके समझमें आनेके बाद तो अिस हद तक अुनका पालन करती थीं। चाहती तो अुन 'थेपलों' को अपने कमरेमें रखवाकर दूसरे दिन रास्तेमें खानेके लिअे ले जातीं। परन्तु बा कभी पापका पोषण कर सकती थीं? तब तो बा बा न बन सकी होतीं।

बा और बापूने आश्रमसे बडे गंभीर वातावरणमें विदा ली। बादल खूब घिरे हुअे थे। राजनीतिक बादल तो थे ही, साथ ही ये कुदरती बादल भी थे। दिन बडा नीरस लग रहा था। या तो पूरा सूर्यप्रकाश आनन्दप्रद होता है या बरसात ही अच्छी लगती है। परन्तु यह तो न बरसात थी, न धूप। मुझे लगता है कि हममें जो शकुन देखा जाता है, अुस पर मेरा विश्वास अिस घटनाके बाद अधिक बैठ गया। बाके मुहसे यही शब्द निकल रहे थे: "अब कहां आश्रममें आना है? मुझे नहीं लगता कि अब फिरसे मैं आश्रमको देखूंगी।"

और बाने सेवाग्राम आश्रम लौटकर फिर कभी देखा ही नहीं! अुनकी आखिरी विदाअी आखिरी ही साबित हुअी!

४

गिरफ्तारी

बापूजी और बा जिस दिन गये, अुस दिन आश्रममें सूना-सूना लगने लगा। किसीका कहीं जी ही नहीं लगता था। किसीके लिअे मानो कोअी काम-धंधा ही नहीं रह गया था। दूसरे दिन मैंने बाका कमरा साफ किया। सब सामान पासकी कोठरीमें भरकर वहां ताला लगा दिया और कुंजी आश्रमके व्यवस्थापक चिमनलाल काकाको सौंप दी।

सभीकी नजर बम्बअीके समाचारपत्रों पर लगी हुअी थी। मैंने आश्रममें आनेके बाद आश्रमके नियमानुसार अब तक पाखाना-सफाअी नहीं की थी, क्योंकि पूज्य बाकी सेवामें सवेरेका समय चला जाता था। परन्तु बा और बापूजीके चले जानेके बाद मुझे भी यह आनन्द अुठानेकी अिच्छा हुअी। पूज्य बापूजीके आश्रममें पाखाना-सफाअी करना भी जीवनका अेक अमूल्य आनन्द था और आज भी है। अिन कामसे जीवनके निर्माणमें कितना अमूल्य लाभ होता है, यह तो अनुभव करनेवालेको ही पता चलता है। मुझे गन्दगीसे बड़ी घिन होती थी। कभी किसीको कै करते देखती तो अुन्हें तो जब होना होती तब होती परन्तु मुझे तुरन्त हो जाती। मैंने यह घिन मिटानेके लिअे ही जान-बूझकर पाखाना-सफाअीकी मांग की और मेरी सारी घिन अुसके बाद ही मिटी। मुझे लगता है कि मैं यदि पहले जितनी ही घिन करनेवाली होती, तो बा और बापूजीके पास टिक ही नहीं सकती थी। परन्तु अेक सप्ताह पाखानेकी बाल्टियां अुठानेमें मुझे बहुत लाभ हुआ। ८ अगस्त मेरी सफाअीका अंतिम दिन था। सबको विश्वास था कि बा और बापूजी कल अवश्य आयेंगे। अिसलिअे पाखाना-सफाअीसे निबटकर मैंने बापूजीका कमरा साफ किया, दफ्तरको सौंप भी दिया और पूज्य बाकी सब चीजें ज्योंकी त्यों जमा दीं। परन्तु अीश्वरकी लीलाको कौन समझ सकता है?

९ तारीखको सुवह् ८–३० वजे सव नेताओके पकड लिये जानेके समाचार आये। हमें वजाजवाड़ीसे टेलीफोन द्वारा सव समाचार सीधे मिला करते थे।

यह् खवर सेवाग्रामके आसपास वायुवेगसे सव जगह् फैल गयी। आसपासके देहातके लोग आये। सव किशोरलाल काकाके यहा अिकट्ठे हुअे और सवने रोते दिलसे प्रार्थना की। वापूजीका प्यारा गीत 'वैष्णव जन' गाया गया। सेवाग्रामके मनुष्य तो क्या पेड, फूल, फल भी मानो खिन्न होकर, विना हिले-डुले, जडवत् खडे थे। सूर्यभगवान भी शोक अनुभव करते हो, अिस प्रकार वादलोमे छिप गये थे। किशोरलाल काकाने वम्वअी टेलीफोन करनेकी वड़ी कोशिश की, तव कही मुश्किलसे लाअिन मिली। और अुसमें भी अितनी ही खवर मिली कि महादेव काका, श्रीमती सरोजिनी नायडू और मीरावहन वापूके साथ है।

और वा? वासे पुलिसने कहा 'वापूजीके साथ जाना हो तो आप जा सकती है।' परन्तु वा तो वहादुर थी। अुन्हे सरकारकी अैसी मेहरवानी कहा वरदाश्त होती? अुन्होने अिनकार कर दिया। शामको वहनोकी सभाका प्रवन्ध करवाया और अुसमें देनेका सन्देश तुरन्त तैयार कराया। वह सन्देश अिस प्रकार था .

वहनोको पूज्य कस्तूरवाका सन्देश

महात्माजी तो आपको वहुत कुछ कह चुके है। कल अुन्होने ढाअी घटे तक काग्रेस महासमितिमें अपने हृदयके अुद्‌गार प्रकट किये। अुससे अधिक और कुछ कहनेका हो ही क्या सकता है?

अव तो अुनके आदेशो पर अमल करना है। अव वहनोंको अपना तेज दिखाना है। सभी जातियोकी वहनें मिलकर अिस लड़ाअीको सुशोभित करे। सत्य और अहिंसाका मार्ग न छोड़ें।

विड़ला हाअुस, वम्वअी — कस्तूरवा गाधी
ता० ९–८–'४२

अैसी थी बा। वे कोअी पढ़ी-लिखी नहीं थीं, फिर भी छोटा-सा और प्रभावोत्पादक सन्देश अुन्होंने लिखवाया।

परन्तु सरकारको दया आअी या वह बासे डर गअी, कुछ भी हो, लेकिन अितना तो सही है कि अुसने बाको अुस सभामें जानेका कष्ट नहीं दिया। सभामें जानेके बजाय अुन्हें सीधे मोटरमें बिठाकर आर्थर रोड जेलमें ही ले गये। बाके साथ डॉक्टर सुशीलाबहन भी थीं। कुछ समय अुन्हें वहां रखनेके बाद दोनोंको बापूजीके पास ले गये। बा आर्थर रोड जेलमें और वहांसे पूना गअीं, अुस समयकी अुनकी मानसिक स्थिति कैसी थी, वे बापूजीके पास पहुंचीं तब क्या हुआ, यह सब हाल जानने लायक है। डॉ० सुशीलाबहन बाके साथ थीं अुस वक्तका अुन्होंने 'हमारी बा'* नामक पुस्तकमें सुन्दर वर्णन किया है, यह बहुत लोग जानते होंगे। फिर भी अूपरके सदर्भमें अुसका थोड़ासा भाग यहां दे दूं, तो अनुचित नहीं होगा।

आर्थर रोड जेलमें

ता० १०-८-'४२

"रातके करीब दो बजे कुछ आवाज सुनकर मैं अुठ बैठी। देखा तो बा पाखानेसे आ रही थीं। अुन्हें रातमें पतले दस्त होने लगे थे। मेरे अुठनेसे पहले वे कअी बार पाखाने जा चुकी थीं। मैंने अुठकर बाकी मदद की और अुन्हें बिस्तरमें सुलाया। दूसरे दिन जब डॉक्टर आये, तब मैंने बीमारीकी बिना पर बाके लिअे खास खुराककी मांग की।. . जिन कमरेमें हमें रखा गया था, अुसकी हवा अितनी खराब थी कि अन्दर बैठते ही सिरमें दर्द होने लगता था। मेट्रनको भी अैसा लगा, अिसलिअे अुसने कहा कि हम अुनके कमरेमें जाकर बैठें। लेकिन बाको जल्दी ही पाखाना जानेके लिअे अुठना पड़ा। बार-बार वहांसे जाना-आना बाकी शक्तिके बाहर था, अिसलिअे हम वापस अपने कमरेमें आ गअीं। बाने आग्रह करके मुझे बाहर भेजा। लेकिन मैं थोड़ी देर बाद

* नवजीवन ट्रस्ट द्वारा प्रकाशित।

ही अन्दर चली गअी। अुसी समय अेक और बहन हमारे कमरेमें लाअी गअीं। वह तीन-चार छोटे बच्चोंको छोड़कर आअी थी। बाने खूब प्रेमसे अुनका सब हाल पूछा। बाके मन पर व्यक्तिगत दु:ख और चिन्ताका बोझ नहीं था। अुन्हें तो अेक दूसरी ही चिन्ता सता रही थी — क्या बापूजी हिन्दुस्तानका दु:ख दूर करनेमें सफल हो सकेंगे? . स्टेशन ले जाकर हमें अेक वेटिंग रूममें बैठाया गया। मुझे नींद आ रही थी, पर बा भली-भांति जाग रही थी। स्टेशन पर हमेशाकी तरह लोगोंका आना-जाना, भीड़-भड़क्का और शोरगुल जारी था। बा ध्यानपूर्वक सब कुछ देख रही थी। अेकाअेक वे बोल अुठी 'सुशीला, देख यह दुनिया तो अैसे चल रही है, जैसे कुछ हुआ ही न हो! बापूजीको स्वराज्य कैसे मिलेगा?' अुनकी आवाजमें अितनी करुणा भरी थी कि सुनकर मेरी आंखें डबडबा आअीं।

आगाखां महलमें प्रवेश

ता० ११-८-'४२

"सुबह करीब सात बजे गाडी अेक छोटेसे स्टेशन पर खडी हुअी। अेक पुलिस अफसर हमें लिवाने आया था। बाको सारी रात दस्त आते रहे थे, अिससे वे बिलकुल कमजोर हो गअी थी। स्टेशन पर अुनके लिअे कुरसी तैयार रखी गअी थी, मगर अुन्होंने कुरसी पर बैठनेसे अिनकार किया। बाका स्वभाव ही था कि जब तक शरीर चल सके अुसे चलाना, दूसरे पर अुसका बोझ न डालना। वे चलकर ही बाहर आअी। बाहर मोटर तैयार थी। करीब आध घंटेमें मोटर आगाखां महलके फाटक पर पहुंची। पहरेदारोंने अेक बडा फाटक खोला। कुछ दूर जाने पर अेक तारका दरवाजा खुला। मोटर पोर्चमें जाकर खडी हो गअी। बा मेरा सहारा लेकर धीरे-धीरे सीढियां चढी। बरामदेमें कुछ कैदी झाड़ू लगा रहे थे। हमने अुनसे पूछा "बापूजीका कमरा कौनसा है?" अेकने जवाब दिया "अखीरका।" बा मेरे सहारे धीरे-धीरे चलकर बापूजीके कमरेमें पहुंचीं। बापू अेक अूंची गद्दी पर बैठे थे। पेंसिल हाथमें लेकर वे ध्यानपूर्वक कोअी लेख सुधार रहे थे। महादेवभाअी

पास खडे थे कुछ चर्चा चल रही थी। हम जब अुनके बिलकुल नजदीक पहुच गअी, तब महादेवभाअीने हमें देखा। वे बहुत खुश हुअे। लेकिन बापूकी त्योरिया थोडी चढ गअीं। अुन्हें लगा, कहीं बा दुर्बलताके कारण, मेरा वियोग असह्य लगनेकी वजहसे तो यहा मेरे पीछे-पीछे नही चली आअी? वह अपना कर्तव्य तो नहीं भूल गअी? बापूजीने तीखे स्वरमें पूछा. 'तूने यहा आनेकी अिच्छा प्रगट की थी या अुन लोगोंने तुझे पकडा?' बा अेक क्षणके लिअे चुप रही। वे कुछ समझ ही न पाअीं कि बापू क्या पूछ रहे हैं। मैंने जवाब दिया 'नहीं बापूजी, गिरफ्तार होकर आअी हैं।' अब बा समझी कि बापू क्या पूछ रहे हैं। बोलीं 'नहीं नहीं, मैंने कोअी माग नही की थी। अुन्होंने हमें पकडा है।'. बाको, खाटमें सुलाकर मैंने अुनके लिअे दवाका नुस्खा लिखा। मगर बाके दस्त तो बापूजीके दर्शनसे और मनका बोझ हलका हो जानेसे अपने आप बन्द हो गये थे। दवाकी सिर्फ अेक ही खुराक अुन्हें दी गअी। दूसरी खुराक देनेकी जरूरत ही नही पडी। शायद अेक भी न देते तो भी काम चल जाता।"

५

महादेव काकाका अवसान

अभी अेक सप्ताह भी पूरा नही हुआ था कि अेक अकल्पित दारुण आघात लगा। वह अितना भयकर था, अुससे सम्बन्धित लोगोंको अैसा असह्य दुःख हुआ कि आज ८ बरसके बाद भी वह ताजा ही मालूम होता है। मित्रों, धर्मकी मानी हुअी लडकियों, पुत्र और जाने हुअे तथा अनजाने लोगोंके — जिन्होंने अुनका केवल नाम ही सुना होगा और कितने तो केवल अुनकी लेखनीको ही जानते होंगे — सबके हृदयों पर लगनेवाला यह गहरा घाव पूज्य महादेव काकाके अवसानका था। किसीको स्वप्नमें भी खयाल नहीं था कि पहाड़ जैसे महादेव काका अिस तरह अेकाअेक चले जायगे! बजाजवाडीके बगलेसे फोन आया. रेडियो पर समाचार आया है कि महादेवभाअी गुजर

गये। अिस पर कैसे विश्वास किया जाय? दुर्गा मौसीको कौन कहने जाय? बादमें दूसरा फोन आया कि कर्नल भण्डारीके साथ बातें करते करते ही अुन्हें चक्कर आ गये और वहीं सदाके लिअे सो गये। पूज्य महादेव काकाकी मृत्युका करुण चित्र सुशीलाबहनने 'हमारी बा' नामक पुस्तकमें खींचा है। अुसमें से थोडा-सा भाग यहां देती हूं

शनिवार, १५-८-'४२

"हमेशाकी तरह बापू सुबह ७॥ बजे घूमने निकले। महादेवभाअी भी अुस दिन घूमने आये। आठ बजे सब लोग लौट आये। बापूजी मालिश कराने गये और महादेवभाअी अपने काममें लग गये। बा पंखा झलने नहीं आअी। अुस दिन जेलोंके अिन्स्पेक्टर जनरल कर्नल भंडारी आनेवाले थे। कैदी लोग बरामदेमें बड़ी फुर्तीसे सफाअी कर रहे थे। बा श्रीमती सरोजिनी नायडूके कमरेमें थी। थोड़ी देरमें कर्नल भंडारीकी मोटर आअी। बापूको और मुझे छोडकर बाकी सब लोग श्रीमती नायडूके कमरेमें अुनसे बातें कर रहे थे। मैं बापूजीकी मालिश कर रही थी। बीच बीचमें महादेवभाअी वगैराके हंसनेकी आवाज आती रहती थी। अेकाअेक आवाज बन्द हो गअी। किसीने मुझे पुकारा। मैं समझी, कर्नल भंडारीसे मिलनेके लिअे बुलाया होगा। अितनेमें बा खुद दौडी आअी और बोली 'सुशीला, जल्दी चल महादेवको फिट आयी है!' मैं दौडी गअी। महादेवभाअी महाप्रयाणकी तैयारीमें थे। नाडी बन्द थी। हृदयकी गति बन्द थी। सांस चल रही थी। शरीर अैंठा जा रहा था।

"मैंने बापूजीको बुलवाया। वे भी समझे कि कर्नल भंडारीसे मिलनेके लिअे ही बुलाया जा रहा है। किसीने अुनसे कहा 'महादेवकी तबीयत ठीक नहीं है।' लेकिन बापूको यह कल्पना कैसे हो कि महादेवभाअी हमेशाके लिअे जानेकी तैयारी कर रहे हैं! बापू महादेवभाअीकी खटियाके पास आकर खडे हुअे और 'महादेव, महादेव' पुकारने लगे। बा कहने लगी, 'महादेव, महादेव! बापूजी आये हैं। महादेव, बापूजी बुलाते हैं।' पर महादेवभाअी तो अुस दिन किसीको भी जवाब देनेवाले

नहीं थे। धीरे-धीरे अुनकी सास भी बन्द हो गअी। बाके लिअे अिस वज्राघातको सहना सबसे कठिन था। वे बडी हिम्मतके साथ प्रार्थना वगैरामें शामिल हुअीं। मगर आसुओंकी धारा तो अखड बहती ही रही। अुनकी आखोंके सामने सारी दुनिया घूम-सी रही थी।

"आखिर जब शवको जलानेके लिअे नीचे ले गये तो बा भी आग्रहपूर्वक नीचे आअीं। अभी अुनमें सीढियां चढ़ने-अुतरनेकी ताकत नहीं आअी थी। मगर वे अपने महादेवको पहुचाने भी न जाय, यह कैसे हो सकता था? बाकी कमजोर हालतको देखते हम यह चाहते थे कि वे दाहक्रिया न देखें तो अच्छा हो। लेकिन बा रुकनेवाली नहीं थीं। चितासे थोडी दूर अुनकी कुरसी रखी गअी। बा सारे समय हाथ जोडकर यही पुकारती रहीं, 'महादेव, तू जहा जाय वहा सुखी रहना।' और बीच बीचमें पूछ अुठतीं, 'महादेव क्यों गया? मैं क्यों नहीं गअी? अीश्वरका यह कैसा न्याय है?' शवको जलाकर हम सब घर लौटे। शामके पाच बज चुके थे। घरमें पूरा सन्नाटा था। कौन किसे सान्त्वना देता?

"बाको लगा करता कि 'ब्राह्मणकी मृत्यु तो भारी अपशकुन है।' बापू कहते 'हा सत्कारके लिअे।' पर बाके मनसे यह शका मिटी नहीं। कुछ दिनों बाद वे फिर कहने लगीं 'सुशीला, यह ब्रह्महत्याका पाप तो हमारे सिर ही लगा न? बापूजीने लडाअी छेडी, महादेव जेलमें आया और यहां अुनकी मृत्यु हुअी। यह पाप तो हमारे ही मत्थे चढा न?'"

आगाखां महलका वह कैसा भयानक दृश्य होगा, जिसकी कल्पना मुझसे करुण वर्णन करने भी आना शायद कठिन है। मैं [illegible] अिसलिअे महादेव काका मुझे सदा 'मिनी' कहते थे। किसी भी बात होती तो कहते, "यह मेरी पालतू मिनी है।" मिनी, यदि महादेव काका भोजन कर रहे हों, कोअी अच्छी चीज बनाअी गअी हो और मैं जा पहुंचू, तो कहते, "पालतू मिनी तो मेरी थालीमें से ही खायगी। वह कुछ भी ढोल-पीट करके अुधम नहीं मचायेगी।" अिसका अर्थ यह कि दूसरी बिल्लियोंकी तरह

झूठा अुधम न मचाया जाय अर्थात् झूठा आग्रह न कराया जाय। परन्तु कोअी पसन्दकी चीज हो तो सीधी तरह खा ली जाय। मैं कहती कि खा तो लू, परन्तु बापूजीकी अिजाजत चाहिये न? (आश्रममे आश्रमके रसोडेके सिवा जिनके घरोमें अलग निजी रसोडे होते, वहा आश्रमके रसोडेमे खानेवाले कोअी चीज नही खा सकते, अैसा नियम था।) अिसलिअे महादेव काका हसकर हाथ पकडकर यह कहते हुअे मुझे जबरदस्ती बिठा लेते, "मगर तू तो मिनी है न? तेरे लिअे अपवाद है। मैं बापूसे कह दूगा कि कही भी मिनी (बिल्ली) के लिअे अैसा नियम नही सुना। सिर्फ आपके आश्रममे ही सुना है। अिस तरह झूठ भी नही बोले और सच भी नही। अैसा 'नरो वा कुजरो वा' तो श्रीकृष्ण भगवानने भी सिखाया है और धर्मराज युधिष्ठिर भी तो बोले थे न।" अिस तरह मजाक करके कभी कभी मुहमें स्वाद ही रह जाय, अितनी ही चीज तो भी खिलाये बिना जाने न देते थे। और फिर बापूसे छिपाते भी नही थे। बापूसे भी हसते हसते कह देते थे — अैसी बात कही भी नही सुनी कि मिनी (बिल्ली) को भी सारे नियम पालने पडें। बापू कहते "भेद अितना ही है कि यह दो पैरोवाली है और वह चार पैरोवाली होती है।" लेकिन महादेव काकाका दिमाग क्या कम था? बापूके सामने ही मुझसे कहते "तो तुझे दो हाथो और दो पैरोंसे चलकर आना चाहिये, जिससे मैं भी सच्चा और बापू भी सच्चे।" बापू मुझसे कहते "देख तो सही महादेव तुझे खिलानेके लिअे जानवर बना रहा है।" अिस प्रकार कअी बार मजाक चलता। महादेव काका कितने ही काममे क्यो न हो, हम बालक यदि अुनके पास कुछ बात करने जाते तो वे कभी हमसे सीधी तरह बात न करते। या तो हमारे बाल पकडते या कान पकडते। कुछ नही तो मीठी चपत मारते ही। अैसे प्रेमल थे। आखिरी बार सेवाग्रामसे जब अुन्होने बिदा ली, तब मैं अुन्हे प्रणाम करने गअी। मुझे अपने पास बिठाकर कहा "अच्छा मिनी, अब तो क्या पता हम फिर कभी मिलेंगे या नहीं मिलेंगे।" भावी कभी कभी मनुष्यके मुहसे सत्य बात कहलवाती है। मैंने रोते-रोते कहा "आप जेल जायगे न? मैं भी आअूगी।" "अरे तू तो छोटीसी

लड़की है, तुझे कौन ले जायगा? मगर जेलमें मिनिया (बिल्लिया) बहुत होती हैं। अुनमें तू भी अेक बढ जायगी।" अुनके ये अंतिम शब्द सदाके लिअे अन्तिम बन गये। अुन्होंने जानेसे पहले मुझसे नीचेका भजन गवाया था। अुन्हे यह भजन बहुत ही पसन्द था। मैंने कराचीमें सीखा था। मुझसे वे बार बार यह भजन गवाते थे। बापूजीको भी यह बहुत प्रिय था

"थाके न थाके छताये हो मानवी,
न लेजे विसामो,
ने जूझजे अेकला बाये,
हो मानवी! न लेजे विसामो!

तारे अुल्लघवाना मारग भुलामणा,
तारे अुद्धारवाना जीवन दयामणा
हिम्मत न हारजे तु क्याये,
हो मानवी! न लेजे विसामो!

जीवनने पथ जता ताप थाक लागशे,
बबती विटम्बणा सहता तु थाकशे
नहतो संकट अे बबाये,
हो मानवी! न लेजे विसामो!

जाजे वटावी तुज आफतनो टेकरो,
आगे आगे हशे वनखेडयां खेतरो
खेते खेडे अे बधा छे,
हो मानवी! न लेजे विसामो!

झाझा जगतमा अेकलो प्रकाशजे,
आवे अधार तेने अेकलो विदारजे
छोने आ आयखु हणाये,
हो मानवी! न लेजे विसामो!

लेजे विसामो न क्याये, हे मानवी, देजे विसामो,
तारी हैया वरखडीने छाये, हो मानवी, देजे विसामो "*

यह गीत अुन्हे बहुत ही प्रिय था। अुन्होने मानो अिस प्रकारके गीतोको जीवनमे अुतार कर ही अपना जीवन सार्थक किया था। और अिस अंतिम कडीके तो मानो वे जीती-जागती मूर्ति ही बन गये थे

"लेजे विसामो न क्याये, हे मानवी, देजे विसामो,
तारी हैया वरखडीने छाये, हो मानवी, देजे विसामो "

पच्चीस पच्चीस वर्ष तक बापूजीकी अखंड सेवा की, न रात देखी न दिन देखा, न ठंड देखी न धूप देखी, और जीवनके अंतिम क्षण तक बापूजीका काम करते-करते बापूजीमे ही अपने प्राणोको समाकर हृदयरूपी वृक्षकी छायामें ही अुन्होने विश्राम लिया। कौन जाने शायद अिसीलिअे अुन्होने भविष्यवाणीके रूपमें मुझसे यह गीत गवाया हो? अुन्हे यह गीत कंठाग्र नही था। और अभी अुसका स्वर भी नही

---

* हे मानव, तू थके या न थके, कभी विश्राम न लेना और अकेले हाथो लडते रहना। हे मानव, विश्राम न लेना। तुझे भुलावेमें डालनेवाले मार्ग तय करने है। और करुण जीवनोका अुद्धार करना है। कही भी हिम्मत न हारना, हे मानव, विश्राम न लेना। जीवन-पथ पर चलते हुअे तुझे धूप और थकावट लगेगी। बढती हुअी कठिनाअियो और विडम्बनाओको सहते-सहते तू थक जायगा। हे मानव, अिन सारे संकटोको बहादुरीसे सह लेना, लेकिन विश्राम न लेना। अपनी मुसीबतोका पहाड लांघते हुअे चले जाना। अुसके आगे बिन जोते खेत होगे। लगनसे खेती करेगा तो वे सब तेरे होगे। हे मानव, विश्राम न लेना। अिस धूमिल जगतमें अकेले अपना प्रकाश फैलाना। जो अंधेरा सामने आये, अुसे अकेले चीरते चले जाना। भले यह जीवन नष्ट हो जाय, लेकिन हे मानव, विश्राम न लेना। कही भी विश्राम न लेना। हे मानव, दूसरोको विश्राम देना। हे मानव, तू अपने हृदयरूपी वृक्षकी छायामें सबको विश्राम देना।

बैठा था। परन्तु जिसे जीवनमंत्र मान लिया हो, अुसके स्वरकी क्या परवाह ?

मुझसे कहा "मुझे झटपट अेक कागज पर यह गीत अुतार दे।" मैंने अेक कागज पर लिख दिया। अुन्होंने वह कागज अपने कुरतेके आगेके जेबमें सभालकर रख लिया और सदाके लिअे सेवाग्राम आश्रम छोड दिया।

अैसा असह्य आघात लगने पर भी बापूजी जेलके बन्धनोंके कारण महादेव काकाके प्रिय पुत्र नारायणभाअीको और अुनकी माता (दुर्गाबहन) को दो शब्द भी आश्वासनके न लिख सकें, यह कैसे सह्य हो सकता है। अुन्होंने कह दिया - "तो मुझे किसीको भी पत्र नही लिखना है। मेरा सच्चा कुटुम्ब केवल गांधी-कुटुम्ब ही नही है। अैसे सकुचित पारिवारिक जीवनमें जीना तो मैंने कभीका छोड दिया है।" और तबसे बापूके साथ रहनेवाले साथियोंने जेलसे अपने किसी भी सबधीको पत्र नही लिखा।

हमारे समाजमें अैसे मजेदार पौराणिक किस्से प्रचलित हैं कि किसी भी ३२ लक्षणोवाले मनुष्यका बलिदान दिया जाय तो अमुक काम सफल हो जाता है, खास करके देवियोंके विषयमें तो अैसा कहा ही जाता है। क्या महादेव काकाके विषयमें भी अैसा ही हुआ ? भारतकी स्वतत्रताकी लडाअीमें प्रसिद्ध-अप्रसिद्ध कितने ही सेवकोंका बलिदान दिया गया है, परन्तु जैसे हाथीके पैरमें सभी समा जाते हैं, वैसे ही जिस अेक महान आत्माके बलिदानसे ही तो अन्तमें स्वतत्रता देवीको प्रसन्न न होना पडा हो ? क्या अिसीलिअे १५ अगस्तको वह हमारी अितने वर्षोंकी गुलामीकी जजीरें तोडकर आअी ? कही अग्रेजोंने 'अुसी तारीखको' भारत माताको गुलामीसे मुक्त करके अपने पाप तो नही धोये ? कुछ भी हो, बहुत विचार करने पर अैसा महसूस हुअे बिना नही रहता कि अिसमें कोअी न कोअी अीश्वरीय सकेत जरूर होगा।

सेवाग्राममें हम सबने अुनका श्राद्ध-दिवस अुनके निवास-स्थान पर कताअी और प्रार्थना तथा गीतापाठमें बिताया, जो अुन्हें बहुत प्रिय था।

६

सेवाग्राममें घर-पकड़

सेवाग्राम, २२–८–'४२

पू० महादेव काकाकी मृत्युके शोकका सप्ताह अेक वर्ष जितना लम्बा बनकर बडी मुश्किलसे बीता और अगस्तका तीसरा सप्ताह आ पहुचा।

वह भी कडी परीक्षाका सप्ताह था। सबको असह्य दुःखमें जो थोडा बहुत आश्वासन मिल रहा था, वह भी शायद भगवानको अच्छा नही लगा होगा, अथवा अभी तक परीक्षा बाकी रह गअी होगी। क्योंकि अभी तक आश्रम, दुर्गाबहन और नारायणभाअी जिनसे आश्वासन प्राप्त कर रहे थे, अुन्हें भी सरकारने छीन लिया, अुन्हे जेलमें बिठा दिया।

२ अगस्तको पू० बापूजी, बा और महादेव काकाने बम्बअी जानेके लिअे आश्रम छोडा। ८ तारीखको अनिश्चित अवधिके लिअे सबने आश्रम छोडा, पू० महादेव काका अपने प्रिय सेवाग्रामको सदाके लिअे छोडकर गये और दुःखमें सान्त्वना देनेवाले किशोरलाल काकाने २२ तारीखकी रातको अनिश्चित समयके लिअे सेवाग्राम छोडा। अिस प्रकार सारा अगस्त मास ही हम सबके लिअे अग्नि-परीक्षाका सिद्ध हुआ।

२२ अगस्तकी रातको कोअी बीस पुलिसवालोंकी हथियारबन्द सेना अचानक सेवाग्राममें आ धमकी। आश्रमके अेक भाअी श्री मुन्ना-लालने अफसरसे पूछा, आपको किससे काम है? अफसरने कहा, हमें श्री किशोरलाल मशरूवालाके घरकी तलाशी लेनी है; अुनका घर कहा है, हमें बतायेंगे? रातके करीब डेढ-दो बजे होंगे। किशोरलाल काकाके घरके दरवाजे तो खुले ही थे।

अेक तो आश्रम वर्धासे पांच मील दूर बहुत शान्त जगह पर स्थित है। दूसरे, रातकी नीरव शान्ति थी। अुस शांतिमें घ-र-र-र करती हुअी पुलिसकी लारीने आकर सबकी नींद खोल दी। अिसके अलावा, आश्रममें अैसी कोअी घटना होने पर वहांका घंटा रोजसे भिन्न प्रकारकी आवाजसे बजाना होता था। यह काम मेरे सुपुर्द था। अिसलिअे लारी आनेकी खबर मिलते ही मैंने घंटा बजा दिया।

अिस घंटेका नाम खतरेकी घंटी रखा था। घंटेकी आवाज सुनकर गांवके भी लोग दौड़कर आ पहुंचे। आसपासके खादी विद्यालय और तालीमी संघकी संस्थाओंके भाअी-बहन भी आ पहुंचे। सभी किशोरलालभाअीके यहां अिकट्ठे हो गये।

पुलिस अफसरने पूछा : "कोअी कुछ फसाद तो नहीं करेगा? हमारे पास साधन तो काफी हैं, परन्तु हम नहीं चाहते कि अुनका अुपयोग हमें यहां करना पड़े।" आश्रमके व्यवस्थापकने कहा : "नहीं, अैसा कोअी फसाद नहीं होगा।"

मैं तो मूढ़की तरह खड़ी खड़ी अुन यमदूत जैसे पुलिसवालोंको देखकर हक्कीबक्की रह गअी। मैंने कभी किसीको पकड़ते या अिस प्रकार पुलिस दलको भरी बंदूकोंसे लैस देखा न था। हां, हालकी घटनायें अखबारोंमें अवश्य पढ़ती थी। परन्तु वर्णन पढ़ना अेक बात है और आंखों देखना दूसरी बात है, अिसका अनुभव मुझे अिसी वक्त हुआ।

फिर भी मेरा तो अिस लड़ाअीमें भाग लेनेका निश्चय था। अिसलिअे मनका डर कोअी चेहरे पर देख न ले, अिसकी सावधानी रखनेमें मैंने जितनी मेहनत की अुतनी तो जब मैं सचमुच पकड़ी गअी तब भी नहीं की थी।

पुलिस अफसरोंने घर छानना शुरू किया और अेक-अेक कागज अुलट-पुलट कर देख डाला। परन्तु अुन्हें कुछ भी आपत्तिजनक साहित्य न मिल सका। अन्तमें किशोरलाल काकासे किसी कागज पर हस्ताक्षर करनेको कहा। अुन्होंने अिनकार कर दिया। 'अूंघतेको बिछौना मिल गया' के अनुसार पुलिस अफसरने तुरन्त वारन्ट निकाला और अुन्हें

तैयार हो जानेको कहा। सवेरेके ३॥ बज गये थे। सबने भग्न हृदयसे प्रार्थना की। सामानमें सिर्फ अेक पूनियोका बडल और अेक चरखा था। अितनी अधिक कमजोर तबीयत होने पर भी किशोरलाल काकाने अेक शालके सिवा कुछ भी ओढने-बिछानेको न लिया और न कपडोका दूसरा जोडा ही साथ लिया! गोमती काकी तो हिम्मतवाली हैं ही। अुन्होंने प्रणाम करके सबसे पहले विदा दी।

पुराने अितिहासमें हम पढते है कि जब राजपूत लडने जाते थे, तब शूरवीर राजपूतानिया हसते-हसते कमरमें तलवार बाधकर और माथे पर तिलक लगाकर अपने पतियोसे कहती देखिये, हार-कर लौटनेके बजाय पीछे रहे हुअे लोगोका जरा भी विचार किये बिना रणभूमि पर बहादुरीसे लडते लडते शत्रुके हाथ मर जाना। अुन वीर राजपूतानियोका वीरतापूर्ण अुत्तराधिकार मिटता जा रहा है, अैसा कौन कह सकता है? जब गोमती काकीने अितने अधिक लोगोके बीच सबसे पहले हसते हुअे किशोरलाल काकाको बिदाअीका प्रणाम किया, तब मुझ पर अैसा ही असर हुआ। क्योकि यह भी तो अेक प्रकारका रणक्षेत्र ही था। अिसका स्वरूप भले ही दूसरा हो, परन्तु सोचा जाय तो वस्तुस्थिति अेक ही थी। अुल्टे, यह रणक्षेत्र अधिक विकट था। क्योकि अिस अहिंसक रणभूमिमें किसीको मारना तो क्या, मारनेका विचार तक करनेकी मनाही थी, केवल मरनेकी ही बात थी। अिसलिअे अिसमें मन पर काबू रखना बहुत कठिन है।

प्रणाम करनेमें मेरा नम्बर सबसे आखिरी था। किशोरलाल काकाके मुह पर तो स्मितहास्य ही था। जिस जिसको हिदायतें देनी थी, अुसे विदा लेते समय जरूरी हिदायतें देते जाते थे। अिसी प्रकार मुझे भी समझाया "तुम्हारी अिच्छा कराची जानेकी नहीं है और जयसुखलालभाअी (मेरे पिताजी) ने तुम जैसा चाहो वैसा करनेकी मंजूरी दी है। अिसलिअे मैं तुम्हे रोकूगा तो नहीं, परन्तु अब भी विचार कर लो। अभी अिसका काफी मौका है। मनको अच्छी तरह टटोल लो। परन्तु अेक बार लड़ाअीमें कूदनेके बाद पीछे न हटना। तुम्हारी अुमर अभी छोटी है। अिसलिअे बिना सोचे-समझे जोशमें आकर

लड़ाओीमें न कूद पडना। अिसमें कभी लाठी चार्ज हो जाय या गोली चल जाय, तो सब कुछ हंसते हंसते सहन करना पड़ेगा। अिन सब बातोंका पूरा विचार करना और पूरी हिम्मत रखना।" सुबहके लगभग ४ बजे किशोरलाल काका जेलमंदिरमें जानेके लिअे लारीमें बैठकर विदा हुअे।

अभी भी अगस्तकी यातनाके दिवस आश्रमके लिअे आने बाकी ही थे। अैसी मान्यता है कि किसी मनुष्यके पीछे अमुक ग्रह पडा हो, तो अुनका कचूमर निकाल डालता है। अिसी प्रकार हमारे आश्रमके लिअे अगस्तमें कौनसा ग्रह अनिष्ट था यह तो औश्वर जाने, परन्तु हर हफ्ते हम कोअी न कोअी नया धडाका सुन ही लेते थे। लेकिन मेरे लिअे तो यह (अंतिम) सप्ताह आनन्दप्रद साबित हुआ। महिला-आश्रमकी बहनोंने अेक अैसी शृंखला बना ली थी कि तारीख ३०-८-'४२ से बहनोंकी टोलियां रोज वर्धा जाकर १४४ वीं धारा तोड़ें। तदनुसार आज कानूनभंग करनेकी बारी आश्रमके महिला-दलकी आओी। अिसलिअे यों ही खयाल हुआ कि अगस्तका अन्तिम सप्ताह भी शांतिसे कैसे गुजर सकता है? आश्रममें कुछ न कुछ नओी घटना तो होनी ही चाहिये।

मैं आनन्दभरी अपनी तैयारी कर रही थी। हमारे ८ बहनोंके दलमें हम ३ बहनोंकी अुमरमें दो-दो चार-चार वर्षका अंतर था। हमारे दलमें जोहराबहन मेरी खास मित्र थी। हम दोनोंने तो अपना बिस्तर भी अेक ही बना लिया था। कपडे भी दोनोंके अेकसे थे। हम खूब अुत्साहसे तैयार हो रही थीं। परन्तु मैं छोटी थी और फ्राक पहनती थी। अिसलिअे सब हमें चिढाते थे कि—मनु-जोहरा जरूर अलग होंगी, क्योंकि मनु छोटी है। अुसे कोअी नहीं पकडेगा। अिस प्रकार चिढानेवालोंमें आश्रमके अेक बहुत विनोदी भाओी बलवन्तसिंहजी और दूसरे भणमाली काका (प्रोफेसर भणसाली) थे। मैं अिससे बडी परेशान हुओी। अिसलिअे हम दोनोंने अेक युक्ति निकाली पहने हुअे कपडों पर ही मैंने साडी पहन ली, जिससे मैं बडी और मोटी दीखने लगी।

हमारे दलमें ४ बहनें २५ वर्षके भीतरकी और ४ प्रौढ थी।

हमने प्रार्थना की। चिमनलाल काकाने (आश्रमके व्यवस्थापक) 'थाके न थाके छताये' भजन (देखिये पृष्ठ २४) गानेकी सूचना की थी। अुसका जोश भी चढ गया था।

आश्रममें सबको प्रणाम करनेका सौभाग्य मुझे ही प्राप्त था, क्योंकि सब मुझसे बडे थे। अुनमें से अेक दो भाअी (लडके) मुझसे बहुत बडे तो नही थे, २–३ वर्ष ही बडे होंगे। फिर भी मेरी हसी अुडाते हुअे मुझसे कहते "अरी मनु, हम भी तुझसे तो बडे है, हमारे पाव पड।" मै सोचती, यदि अिस मडलीमे कोअी मुझसे छोटा होता तो मै भी अुससे जबरन पाव पडवाकर जोरसे पीठमें धप्पे लगाती। परन्तु दुर्भाग्यसे अैसा कोअी भी नहीं था।

जिन जिनके मैंने पाव पडे थे, अुन्होने मुझे जोरसे धप्पे लगा कर मेरा मजाक अुडाया।

अिन लोगोके लिअे खेल था और मेरे प्राण निकल रहे थे। अिन दो भाअियोको प्रणाम करते समय मुझे बडा गुस्सा आया, परन्तु जेलकी विदाअीके समय अपशकुन नही होना चाहिये, अिस खयालसे अिच्छा न होने पर भी मैंने अुन्हे प्रणाम किया। फिर भी आज तो यह स्पष्ट लगता है कि मुझे अुन सबके आशीर्वाद अद्भुत रूपमें फले। बलवन्तसिहजी और भणसाली काकाने सबसे अन्तमें कहा · "लडाअीमे जानेका, जेल जानेका जोग तो तुझ पर खूब छाया हुआ है। परन्तु बापूको साथ लाये बिना लौट आअी तो तेरी खैर नही है।" सचमुच अिन लोगोकी वाणी फली और मैंने बापूके बिना जेलके बाहर पैर नहीं रखा। अिसमें विदाअीके समय सच्चे अन्त करणसे दिये हुअे आश्रमके बुजुर्गोंके आशीर्वाद ही कारणभूत हुअे।

हम सब बहनें ठीक ४ बजे वर्धाके तिलक चौकमें पहुची और जिस जिसके जीमें आया, अुसने भाषण दिया, छोटी बहनोंने राष्ट्रीय गीत और नारे लगाने शुरु कर दिये। अिस प्रकार आधे घंटेमें हमने अपनी मडलीको जमानेकी शुरुआत की और कुछ भीड़ अिकट्ठी

हुअी, अितनेमें तो राक्षसी मोटर लारी घ र . र र करती हमारे सामने आ खडी हुअी। अुसमें बैठे हुअे आदमियोंको देखकर हमें अधिक जोश चढा। हमने जोरशोरसे गाना शुरू किया और पुलिसको चिढानेके लिअे "सरकारी नौकरी छोड दो" का नारा अधिकाधिक जोरसे लगाने लगी। पुलिस भी हम पर गुस्सा हो रही थी, परन्तु हमारी आवाज सुन कर भीड जमा न हो जाय, सिर्फ अिसीलिअे बिना कारण पेट्रोल जलाकर भी लारीकी आवाज जारी रखी। अितनेमें कोअी बैंड बाजेवाले निकले (जहा तक मुझे याद है वह बरात थी।) वे बाजेवाले बेचारे किसी अशुभ घडीमें निकले होंगे, क्योंकि अुन्हें 'सरकार माअी-बाप' का हुक्म हुआ कि अिन लोगोंका दल घूमे अुसके आगे आगे बैंड बजाते हुअे जायं, फिर भले ही ये लोग राग अलापती रहें, कुछ समयमें अपने आप थक जायगी। हमारा गला तो अितना ज्यादा सूख गया कि आवाज निकलना लगभग बन्द हो गया। लेकिन कैसी भी मुसीबत झेलकर बारी बारीसे नारे लगाकर अुन लोगोंको छकाना तो था ही।

बेचारे बाजेवालोंकी तो शामत ही आ गअी। अंतमें अुनके मालिकोंको अुन्हें छोडकर चुपचाप अपने गन्तव्य स्थान पर जाना पडा। बाजे हमारे लिअे रहे।

हमारे दलमें आश्रम-व्यवस्थापककी पत्नी श्रीमती शकरीबहन भी थीं। अुन्हें मैं मौसीजी कहती थी। शकरी मौसी प्रौढ होते हुअे भी बहुत विनोदी हैं। अिस कुटुम्बने कितने ही वर्षों तक आश्रममें बापूजीकी अेकनिष्ठ सेवा की है। वे अत्यन्त मूक सेवक हैं। वे आज भी अुसी श्रद्धा और निष्ठासे आश्रमका सचालन कर रहे हैं। बापूजी मुझे अनेक बार अिस परिवारके बारेमें कहा करते थे "मैं शकरीबहनको बासे कम त्यागी नही मानता। ये दोनो पति-पत्नी बस मेरी आज्ञा मिलते ही बिना किसी बहसके अुसे शिरोधार्य कर लेते हैं।" अैसे अैसे परिवारोंकी अद्भुत विरासत बापूजी हमारे लिअे छोड़ गये हैं, यह हमारे लिअे कोअी कम सौभाग्यकी बात है?

अिन बहनको हिन्दी नहीं आती, अिसलिअे कहने लगीं . "अरे, आ[1] तो मामा[2]नी जान[3] है। अेटलेज[4] अुसके लिअे वाजा दीधा[5] है। मामाके घर रोटलाय[6] नही है। ने ओटलाय[7] नही है।"

अिससे हसते हसते हमारा पेट दुखने लगा। हमने मजाकमे पुलिसका नाम 'मामाका घर' रख लिया था।

हमें न तो पुलिस पकड़ती थी और न हमारा कहना किसीको सुनने देती थी। दो घटे तक हमारा जोश बना रहा। अन्तमे खूब थक गअी और विश्राम लेनेके लिअे अेक चबूतरे पर बैठी। बाजे मोटर वगैरा सब बन्द हो गये। परन्तु ज्यो ही हमने बोलना शुरू किया त्यो ही अुन्होने भी शुरू कर दिया।

अन्तमें दिन छिपनेके बाद सात-साढे सात बजे पुलिस अफसरने हुक्म दिया कि मोटरमे बैठ जाओ। अुनके मुंहसे शब्द निकला ही था कि मैं सबसे पहले चढ गअी। चलो, आज रातको खूब सोयेंगी, हमारे मुहसे ये अुद्‌गार निकले। आवाज बिलकुल बैठ गअी थी। १५–२० मिनटमें हम जेलके दरवाजे पर पहुचीं।

दरवाजे पर प्रारम्भिक विधि पूरी हुअी। सबके नाम-पते लिखे गये। ८ बजे हमे अेक कोठरीमे बन्द किया गया। अुसमें ३०–४० स्त्रियोकी मंडली पहलेसे ही थी। वे हमें देखकर खुश हुअी। अुन्हे लगा हम कोअी ताजी खबर सुना सकेंगी।

तेज भूख लगी थी। मगर सूचना मिली कि अिस समय जेलमे खाना नही मिल सकता। भूखका गुस्सा जेलर पर निकाला कि हम अितनी अुमसमें छोटीसी कोठरीमें ३०–४० स्त्रिया नही रह सकतीं। आगेका फाटक भले ही बन्द कर दीजिये। यह कहकर सब स्त्रिया कोठरीके बाहर आकर खड़ी हो गअी।

वादविवादके बाद अन्तमें हमारी कोठरी खुली रही। फिर भी जेलके बडे बडे चूहोके कारण और पुरुषोकी बैरकमें कुछ ज्यादा

१ आ=यह। २ मामानी=मामाकी। ३ जान=वरात। ४ अेटलेज=अिसीलिअे। ५ वाजा दीधा=वाजे दिये। ६ रोटलाय=रोटी भी। ७ ओटलाय=बैठनेका चबूतरा भी।

अशान्तिके कारण रातभर हमारी पलक तक नही लगी। जैसे-तैसे सवेरा हुआ।

७

जेलके अनुभव

हम वर्धाकी जेलमें दो दिन रही। परन्तु अिन दो दिनोंमें ही अनेक अनुभव हुअे। पहले दिन रातको तो भूखी ही सो रही। दूसरे दिन सुबह जुवारके आटेकी राब (लपसी) आअी। हममें से जिन जिनको जेलका अनुभव था, अुन्होंने तो पी ली। परन्तु हम जो नअी थीं अुन्होंने मुहमें रखते ही थू-थू करके निकाल डाली। राब ककरीसे भरी और कुछ अजीब गन्धवाली मालूम हुअी। अिस आशासे कि दोपहरको कुछ खाने लायक पदार्थ मिलेगा, सवेरे हमने कुछ भी नही खाया। अिस पर कुछ बडी बहनें नाराज होकर कहने लगीं, जेलमें आकर अैसे नखरे करनेसे कैसे काम चलेगा?

नहाने धोनेके लिअे पानी भी नही था, अिसलिअे हमने नहाना ही छोड दिया।

ज्यों-त्यों करके ११ बजाये, तब कहीं खाना आया — निरा लहसन पडा हुआ अुडदकी दालका पानी और ककरीवाली जुवारकी मोटी मोटी रोटियां। दालके दाने तो अन्दर गिनतीके ही थे। अिस-लिअे मैंने कुछ नही खाया और भूखी ही दोपहरको सो गअी। दूसरी बडी बहनें बहुत नाराज हुअीं कि अैसा करोगी तो जरूर बीमार पडोगी और कमजोरी आ जायगी। पेटमें भूख तो खूब लगी हुअी थी, परन्तु शामकी आशामें दोपहरका वक्त जैसे तैसे बिताया।

परन्तु बिना खाये कब तक रहा जा सकता था? शामको ६ बजते ही खानेकी बाल्टियां आअीं। मोटी रोटियां और दाल थीं। परन्तु भूखी होनेके कारण वह रोटी-दाल अितनी अच्छी लगी कि मैंने कहा,

देख लिया? मैंने सवेरे नही खाया, अिसका जेलरको पता चल गया। अिसीलिअे अिस वक्त अच्छा खाना लाये। असलमें यह बात नही थी। खाना सुबह जैसा ही था, परन्तु पेटमें अग्नि थी अिसलिअे रोटिया खूब मीठी लगी, न ककरी मालूम हुअी और न लहसनकी गध। वे रोटिया और दाल अितनी स्वादिष्ठ लगी कि अभी तक मैंने अैसा खाना कभी न खाया था।

तीसरे दिन जन्माष्टमी थी। अिसलिअे जेलर पूछने आये कि हममें से कौन कौन अुपवास करेगी? लगभग सभी स्त्रिया अुपवास करनेको तैयार हो गअी। अुसमें मुस्लिम बहने भी थी। यह लोभ भी था कि फलाहारमें कोअी अच्छी चीज खानेको मिलेगी। सिकी हुअी मूंगफली और अुबला हुआ रतालू फलाहारमें मिला। परन्तु हमें अैसा लगा मानो आज सबसे बढिया चीज खानेको मिली हो। हमने जी भरकर खाया। जब खा चुकी तो हमें तैयार होनेको कहा गया और नागपुर सेंट्रल जेलमें ले जानेका हुक्म दिया गया।

वर्धासे नागपुर बसमें गअी। शाम हो गअी थी। लगभग ८ बजे हम नागपुर जेलमें पहुची। जेल बहुत बडी थी। वहा सुविधा भी खूब थी। परन्तु मजेकी बात यह हुअी कि ज्यो ही हम अन्दर पहुची, त्यो ही गरमागरम दाल, भात, साग और रोटी हमारे लिअे आयी। दिन भरका जन्माष्टमीका व्रत था, फिर भी हम सबने दाल-भात खानेके लिअे व्रत तोड दिया। हम चार दिनकी भूखी थीं, अिसलिअे अिस भोजनसे हमें बडा सतोष हुआ और खानेके बाद ही व्रत तोडनेका पश्चात्ताप किया। आरामसे सुबह ८ बजे तक सोती रही। नागपुर जेलमें हमें कोअी तकलीफ नहीं थी। मेट्रन भी बहुत भली थी। जेलके सभी अफसर अच्छे थे।

'ब' वर्ग मिला था परन्तु महीनेमें ४ पत्र लिखनेकी छूट थी। जेलका कोअी काम नहीं करना पड़ता था। हमने अपनी अपनी अिच्छानुसार समयकी व्यवस्था कर ली थी। पढ़नेका काम सुव्यवस्थासे चलता था।

दिनभरमें हमारी डाक या कोअी नये समाचार शामको ४ बजे जब हमारी मैट्रन आती तभी मिलते थे। जेलमें अेक सुन्दर पीपलका पेड था। मैट्रन अुसके नीचे बैठती। ज्यो ही फाटक खुलता हम दौड़-कर आतुरतासे डाककी पूछताछ करती। किसी भी बहनकी डाक क्यों न आवे, हम सब बडी जिज्ञासासे अुसे सुनती। वहा हम करीब करीब १५० स्त्रिया थीं।

हमें जेलमें अनेक अच्छे-बुरे अनुभव हुअे। पू० बापूजी और भणसालीभाअीके अुपवासके दिनोंमें हमारी स्थिति बडी विषम रही। बाहरकी कोअी खबर न मिलती थी। अेक अखबार आता था, परन्तु अुसमें कोअी खास समाचार न मिलते थे। सेवाग्रामसे हमारी जो डाक आती, अुसमें अगर कोअी समाचार देता तो अुस पर अधिकारी डामर पोत देते थे। कभी कभी तो अैसे पत्र आते कि लिफाफेके पतेके ही अक्षर सिर्फ पढनेको मिलते, बाकीके अक्षरो पर डामर पुता होता।

१९४३ के मार्च मासकी १९ तारीखकी शामको अेकाअेक जेलर आये। हमने अपनी मैट्रनको कातना सिखा दिया था। वे कात रही थी। बेचारी घबराहटमें पड गअीं कि अिस तरह अचानक 'साहब' के आनेका क्या कारण होगा?

मेरी आखें बहुत बिगड रही थीं और बुखार आता था। वे सीधे मेरे पास आये। पहले जाच कराअी कि मनु गाधी कौन है? क्योंकि मेरी भाभी — यद्यपि अुनका नाम मनोज्ञाबहन है, परन्तु सब अुन्हें मनुबहन भी कहते थे — का बच्चा बीमार था, अिसलिअे हमने समझा कि शायद अुन्हें पैरोल पर छोड रहे होंगे। परन्तु जेलरने जाच करके बम्बअी सरकारने फिर पुछवाया कि दो मनुमें से कौनसी मनु? अुमी रातको फिर बम्बअी सरकारका नागपुरके जेल सुपरिन्टेन्डेन्टके नाम तार आया १४ वर्षकी लडकी मनु। अुसी रातको जेलरने दुबारा आकर मुझसे तैयार हो जानेको कहा। मेरी बीमारीके कारण मुझे छोड रहे होंगे, यह समझकर कितनी ही बहनोंने बाहरके अपने आप्तजनोंके लिअे मुझे सदेश कहे। कुछने अिकट्ठा हुआ सूत बुनवानेके लिअे दिया, तो कुछने बच्चोंके लिअे भेंटकी चीजें दीं।

मैंने दो खासे बिस्तर और अेक पेटी तैयार कर ली। अितनेमें हमारी मैट्रन आअी और कहने लगी "कल जाना है, आज नही। और किसीकी कोअी भेट नही ले जानी है। तुम्हारा तो तबादला कर रहे हैं।" तबादलेका नाम सुनते ही मैं चौक पडी। मेरे साथ जो बडी स्त्रिया थी वे सब चौंकी कि अिस बेचारीका ही तबादला क्यो कर रहे है?

हमारे साथ रैहाना तैयबजी भी थी। अुन्होने जरा गुस्सेसे कहा "अकेली लडकीका तबादला करेगे तो हम अिसका विरोध करेंगी। अिसलिअे साहबको बुलाओ और जाच कराओ।" अुन्होने जेल सुपरिन्टेन्डेन्टको बुलाया। अुन्हे देखते ही रैहानाबहनने गुस्सेसे कहा "आप हमें बताअिये कि मनुका तबादला कहा कर रहे हैं। यह लडकी बापूकी सगे रिश्तेकी बेटी है, अिसलिअे हम सबकी बेटी है। अिसे हम यो नही जाने देंगी।" रैहानाबहनने अेक ही सासमे सारी वेदना अुडेल दी। सुपरिन्टेन्डेन्ट भी मुसलमान थे। वे ठडे दिमागसे सुनते रहे और अन्तमें बोले "कहिये, अभी और कुछ कहना है? (यो कहकर रैहानाबहनको और चिढ़ाने लगे।) अिस लडकीके पुण्यकी कोअी हद नही। आप सब १५०–२०० बहनें यहा है, अुनमें अिसीका भाग्य चमक अुठा है। मैं तो अपना और अपनी अिस जेलका अहो-भाग्य समझता हू कि अिसमें से अेक छोटीसी लडकी ससारके महापुरुषके पास अुनकी सेवाके लिअे जा रही है। यह कोअी अैसी वैसी बात है? कस्तूरबाको दिलका दौरा हुआ है, अुन्होने मनुकी माग की है। मेरे खयालसे आप सबकी अपेक्षा अिसीका जेल आना सफल हुआ है। यह कल आगाखा महलके लिअे रवाना होगी।" मेरी ओर देखकर कहने लगे "बोलो, अब तो जाना है न?"

सब बहनें सुन्न रह गअीं। जब सुपरिन्टेन्डेन्ट साहब बोल रहे थे, तब अैसी शाति थी कि सुअीके गिरनेकी आवाज भी सुनाअी दे जाय।

मैं तो आनन्दसे पागल हो गअी। सुपरिन्टेन्डेन्ट साहब बोले: "तुम तो मेरी बेटी हो। मेरी तरफसे महात्माजी और माता कस्तूरबाको प्रणाम कहकर तबीयतके हाल जरूर पूछना। मैं

महात्माजीको पैगम्बर साहबकी तरह ही अवतारी पुरुष मानता हू।" यो कहकर गद्गद हो गये।

सुपरिन्टेन्डेन्ट मुसलमान थे, अुस पर अेक अफसर थे और हम कैदी थीं। वे चाहते तो अुपरोक्त बात हमें न कहते। परन्तु वडे अफसर होकर भी वे वहुत नम्र थे।

८

नागपुरसे पूना

१९ मार्च, १९४३ की शामको मुझे आगाखा महलमें ले जानेके शुभ समाचार मिले। मेरे वहासे जानेके अुपलक्ष्यमें 'अपराधी स्त्रियों' और हमारे साथकी वहनोने मिलकर २० तारीखको मनोरजनका कार्यक्रम रखा। वह कार्यक्रम आनन्द देनेवाला था, फिर भी चूकि हम सहेलिया जुदा होनेवाली थीं, अिसलिअे हमारी आखोंसे आसुओंकी धार लग गअी थी।

दोपहरको दो वजेके करीव सात महीने तक चार-दीवारीमें रहनेके वाद जेलका वडा फाटक खुला। मेरे सामानमें अेक छोटासा बैग और अेक विस्तर ही था। सब वहनें दरवाजे तक पहुंचाने आअी। परन्तु यह तो मैट्रन और जेलरकी मेहरवानी ही थी। वर्ना वहा तक अुन्हे कौन आने देता?

हमारी वैरकसे थोडी ही दूर चलने पर सामने पुरुषोकी वैरक आती थी। अुसमें काकासाहव, कृष्णदासभाअी गांधी और दूसरे हमारे आश्रमके लगभग कुटुम्बी-जन ही थे। परन्तु अुनसे मिलने तो कौन देता? पर मुझे वादमें रैहानावहनने वताया कि सभी लोग अिस खवरसे वहुत खुश हुअे थे।

मुझे आफिसमें ले जाया गया। वहा मेरे साथ जानेवाले दो जवान पुलिस तैयार खडे थे। अुन्हें जेलर मेरे सारे कागजात सौंप रहे थे।

अितनेमें सुपरिन्टेन्डेन्ट साहब आ गये। मुझे देखकर फिर मुस्कराये और समझाया कि सभलकर जाना, तुम्हे रास्तेमे किसी चीजकी जरूरत हो तो तुम्हारे साथ जो सिपाही हैं अुनसे कह देना। और तुरन्त सिपाहियोकी तरफ देखा और अुन्हें बाहर भेजकर मेरे सामने ही जेलरको डाटा। अिस लडकीके साथ अैसे जवान छोकरोको भेजा जाता है? अेक स्त्री-कैदीकी कितनी जिम्मेदारी होती है, अिसका आपको जेलरके नाते बिलकुल भान नही है। जाअिये, दशरथ और गोविन्दको तैयार कीजिये। (दशरथ और गोविन्द दोनो अधेड अुमरके ४० से अूपरके होगें।) अैसा कहकर अुन दो नौजवानोको मना कर दिया। अुन्हीके बिस्तर अिन दो वृद्ध सिपाहियोको दिलवा दिये, क्योकि गाडी ५ बजे रवाना होती थी और ३–४५ यही बज गये थे। अगर सिपाही सामान लेने घर जाते तो देर हो जाती। बेचारा दशरथ कहने लगा "साहब, मै जरा घर कह आअू? घर पर सब मेरी चिन्ता करेगे।" साहबने दोनोको घर ले जानेके लिअे अपनी मोटर दी और फौरन लौटनेको कहा। सुपरिन्टेन्डेन्ट बडे दयालु अफसर थे वे दशरथसे कह सकते थे "तुझे नौकरी करनी हो तो कर, घर नही जा सकता।" परन्तु अुनमें कितनी दया भरी थी यह मैं देखती ही रही। सिपाही दसेक मिनिटमें वापस लौटे। मेरे लिअे स्टेशन-वैगन जैसी गाड़ी आअी। अुसमें सामान रखवाया। मैट्रन और सुपरिन्टेन्डेन्टको मैंने प्रणाम किया। मैट्रन तो रो पडी और सुपरिन्टेन्डेन्ट भी मेरी पीठ थप-थपाकर गद्‌गद हो गये और कहने लगे "बेटी! मेरी नौकरीको लगभग १८ वर्ष पूरे हो रहे हैं। अिस बीच कितने ही कैदी आये-गये; बहुतोकी फासी भी देखनी पडी है। अनेक जेलोमें काम करना पडा है। लेकिन मेरे जीवनमें अेक प्रसग मेरे वारिसोंके लिअे बहुत महत्त्वका आया है कि मुझे अपने ही हाथो कैदियोकी कोठरीमें से महात्मा गाधीके पास अेक बालिकाको भेजनेका सौभाग्य मिला। अिसे मैं कोअी अैसी वैसी बात नही मानता। मुझे विश्वास है कि ये महापुरुष ही हम लोगोको अिस गुलामीसे मुक्त करनेवाले है। खुदासे मेरी यही प्रार्थना है कि अुनकी यह लडाअी आखिरी लड़ाअी बन जाय। मैंने जिन वर्षोमें

बहुतसे कैदियों पर अत्याचार किया है, परन्तु मुझे अैसा लगता है कि तुझे कस्तूरबा जैसी देवीकी सेवा करने भेजते समय मेरे सभी पाप अवश्य धुल जायेंगे। बेटी! मुझे भूलना मत। मैं तुझसे जरूर मिलूंगा खुदा तेरा भला करे।" अुन्होंने ये वचन अेक सासमें पांच मिनिट तक गाड़ीका दरवाजा पकडकर मुझे कहे। वे आज भी मानो मेरे कानोंमें गूंज रहे हैं। (अुनका लगभग प्रत्येक शब्द मैंने अपनी नोटबुकमें नागपुर स्टेशन पर ही लिख लिया। अुस वक्त लिख लेनेका कारण तो यही था कि मैं बापूजीके पास पहुंचते ही यह बताना चाहती थी कि अेक मुस्लिम अफसर कैसे थे।)

ये ही सुपरिन्टेन्डेन्ट साहब मुझे १९४६ में दिल्लीमें मिले। अब बूढे हो जानेके कारण मैं अुन्हें अेक दम पहचान न सकी। अिसलिअे अुनसे मिली तब अेक अनजान मनुष्यके नाते मैंने दूरसे अुन्हें नमस्ते किया। अुन्होंने मुझे ताना मारा: "बेटी! तू भले ही मुझे दूरसे नमस्ते कर, क्योंकि अब तू बडी हो गअी है। पर मेरी तो तू बेटी ही है। नागपुर जेलको कभी याद करती है? हमें अपनी पुरानी स्थितिको कभी न भूलना चाहिये। अगर हम अुस स्थितिको भूल जायं तो हमारी कोअी कीमत न रहे। चाहे जितना वैभव हो, चाहे जितना बडा ओहदा हो, फिर भी हम यदि विवेक छोड दें तो हम गिर जायंगे। अिसलिअे अेक बुजुर्गके नाते मैं तुझे यह शिक्षा देता हूं। मन्नो तू बडी बन गअी है। बापूके साथ तेरे फोटो देखकर मेरा मन नाचने लगता है। अभी तो तू बालिका ही है। पर बापूके कारण तेरा बहुत लोग सम्मान करेंगे। परन्तु तू अपनी नम्रताको कभी न छोडना।"

मुझे अेकदम अुनकी याद आ गअी और मैंने अुन्हें पहचान न सकनेके लिअे माफी मांगी।

अिसके अलावा, जेलमें मैंने अुन्हें अंग्रेजी पोशाकमें देखा था। लेकिन जब वे मिलने आये तब तो पाजामा और कुरता पहनकर आये थे। मैंने अुन्हें प्रणाम किया और फौरन बापूजीके पास ले गअी। बापूजी अुनसे मिलकर बहुत खुश हुअे। अुन्होंने कहा "यह मेरी

जेलकी बेटी हैं। अिससे आपके दर्शन भी हुअे।" अुस दिन प्रार्थनामें कुरानशरीफकी आयत भी अुन्होंने पढी।

जाते जाते अूपरके कडवे शब्द कहनेके लिअे अुन्होंने मुझसे माफी मागी। मैंने कहा "आपको तो मुझे मारनेका भी अधिकार है। अगर आप माफी मागेंगे, तो मैं पापकी भागी बनूंगी। पिता भी कहीं पुत्रीसे माफी मागता है?" अुन्होंने कहा - "मैं अिसलिअे माफी नही मागता, लेकिन तू मुझे पहचान क्यो न सकी यह पूछे विना मैंने तुझे कडवे शब्द कहे, अिसके लिअे माफी मागता हू।" मैंने कहा "अिसमे तो आपने मुझे सावधान ही किया है। आप भी मेरे लिअे अीश्वरसे प्रार्थना कीजिये कि मुझमे हमेशा नम्रता बनी रहे। आप जैसे बुजुर्गोसे, अैसे ही आशीर्वाद मागती हू।"

मैं नागपुर स्टेशन पर पहुची। लेकिन गाडी आध घटा लेट थी। स्टेशन पर कुछ लोगोको शायद पहलेसे ही किसी तरह खबर लग गअी थी। अिससे अेक छोटीसी टोली मेरे आसपास जमा हो गअी। सब पूछने लगे कि तुम्हारी बदली कहा हुअी है? मुझे अितना तो मालूम ही था कि जेलमें जाने पर जेलके नियम तोडना बापूजीको अच्छा नही लगता। और कभी बापूजी मुझे पूछ बैठे या मैं ही कह दू, तो अुन्हें बुरा लगेगा। अिसलिअे मैंने सबको यही जवाब दिया कि मेरे साथ आनेवाले वृद्ध सिपाहियोंसे पूछो। मैं अिसका जवाब नही दे सकती। मैं कैदी हू। मेरे अिस जवाबसे कुछ लोग मेरा ही मजाक अुडाने लगे। कुछ युवकोने कहा, यदि कह दोगी तो हमारे बजाय तुम्हें फायदा होगा, हम अपने सगे-सम्बन्धियो और जान-पहचानवालोंको तार कर देंगे तो स्टेशनो पर तुम्हे सुविधा हो जायगी। दो चार भाअियोंने कहा, अरे, अैसी मूर्ख लडकीको कहा महात्मा गाधीके पास ले जा रहे हैं। कहनेका कितना अच्छा मौका है, तो भी नही कहती। यदि हममें से कोअी अिसकी जगह होता और अैसे कमजोर बूढे सिपाही साथ होते, तब तो हम सभा ही कर डालते। . . . अिस तरह आपसमें बातें करके मेरी खिल्ली अुडाते रहे। मुझे यह जरा भी अच्छा नही लगता था। लेकिन मैं चुपचाप सब सुनती रही। क्योंकि मुझे ज्यादा अुत्तर नही देने थे। ५॥ बजे

गाडी आयी। यह आधा घंटा मुझे अेक दिन जितना लम्बा लगा और गाडी आयी तभी अिस झंझटसे मुक्ति मिली।

मुझे दूसरे दर्जेमें ले जाया गया। लेकिन वहां भी लगभग स्टेशन जैसा ही अनुभव हुआ। दूसरे दर्जेके डिब्बेमें मुसाफिर तो थे ही। मेरे लिअे सीट रिजर्व करा ली गयी थी। लेकिन किसीको मालूम न हो, अिसलिअे मेरा नाम नहीं लिखा था। स्टेशन मास्टर आकर मुझे अच्छी तरहसे गाडीमें बैठा गये। नागपुरमें गाडी बीसेक मिनिट ठहरी। अिस बीच स्टेशनवाली भुस टोलीकी संख्या बढी और डिब्बेके पास करीब सौ आदमी अिकट्ठे होकर "महात्मा गांधीकी जय" बोलने लगे। मुझे बहुत बुरा लग रहा था लेकिन मैं निरुपाय थी।

गाडी चल दी। अंदर बैठे सज्जनोंमें से अेक तो पोरबन्दरके ही थे और मेरे सारे कुटुम्बको पहचानते थे। अुन्होंने भी बातें जाननेकी अिच्छा प्रकट की। दशरथकी तरफ देखकर मैंने कहा, आप अिस भाअीसे पूछिये। अुन्होंने सिपाहीको फुसलाकर पूछा। दशरथने सारी बात कह दी। मेरे नामका हुक्म तक निकालकर दिखा दिया।

अैसा होते होते कल्याण स्टेशन आया। अिस तरफके रास्तेकी मेरी यह पहली ही यात्रा थी। मुझे मालूम नहीं था कि कल्याणमें गाडी बदलनी होती है। वे दोनों बूढे तो बहुत ही भोले थे। अिसलिअे अुस गाडीमें हम सीधे बम्बअीके बोरीबन्दर स्टेशन पर पहुंच गये। मैं खूब चिढ गअी। मेरे साथके वे परिचित सज्जन तो बीचमें ही अुतर गये थे। अखबारमें पढ़ा था कि कस्तूरबाको हृदयका सख्त हमला हुआ है। अिससे बहुत चिन्ता थी। अिसके सिवा दो दिनसे बिलकुल भूखी थी; गाडीमें कुछ खाया भी नहीं था। अैसा निश्चय किया था कि बापूजीके पास पहुंचकर ही खाअूंगी। लेकिन भूखसे भी ज्यादा चिन्ता तो अिस बातकी थी कि मोटी बासे कब मिलूंगी। बोरीबन्दर पर सारी बातोंकी पूछताछ की। पूनाके लिअे दूसरी गाडी मुझे ४ बजे मिलनेवाली थी। तीन घंटे किस तरह बीतेंगे, यह सोचकर मैं तो कांप अुठी।

अब दूसरी तरफ पूना स्टेशन पर स्थानीय पुलिस सुपरिन्टेन्डेन्ट, कान्स्टेबल वगैरा मुझे लेने आये। जब अुन्होंने मुझे न देखा तो तार-

टेलीफोन किये। मै स्त्रियोंके वेटिंग रूपमें बैठ नही सकती थी, क्योंकि सिपाही मुझे छोड नहीं सकते थे, और स्त्री होनेकी वजहसे पुरुषोंके वेटिंगरूममें भी नही बैठ सकती थी। अिसलिअे बाहर बेंच पर बैठी। बोरीबन्दरके स्टेशन मास्टरके पास पूनासे पैगाम आया था। अिसलिअे वे मेरी तलाश कर रहे थे। वे मेरे पास आये और मेरा नाम-पता पूछा। फिर बोले "बहन! तुम्हारी तो बडी खोज हो रही है। तुम यहा कैसे आ पहुची?" मैंने सब बात कही। मुझे आफिसमे बैठाकर कुछ खानेका आग्रह किया। मैंने मना किया, केवल नीबूका शरबत लिया। अखबार पढनेको दिया, वह पढा। ये दो घटे दो युग जैसे बीते। मैंने बातें करते समय स्टेशन मास्टरसे कहा था कि मेरी बहन बम्बअीमे ही रहती है और बुआ विलेपार्लेमें रहती हैं। अिसलिअे अुन्होने मुझसे बहुत आग्रह किया कि अगर अुनसे तुम्हारी मिलनेकी अिच्छा हो तो मेरी मोटर अुन्हे जाकर ले आवे। लेकिन अिस लोभमें मै नही पड सकती। पडू तो बापूजीको कितना कष्ट हो? यह सोचकर मैंने अुनकी अिस शिष्टताके लिअे अुनका आभार मानकर अिनकार कर दिया।

शामको ३॥ बजेकी गाडीमें मै पूना जानेके लिअे रवाना हुअी। ६॥ बजे स्टेशन पर पहुची। लेकिन कास्टेबलो और पुलिस सुपरिन्टेन्डेन्टके न होनेसे मुझे आगाखा महल कौन ले जाता? वहा भी आधा घटा स्टेशनके आफिसमे बैठना पडा। करीब ७ बजे वे लोग आये। अुन्होने मैं ही मनु हू अिसकी खातरी करनेके लिअे मुझसे खूब जिरह की और बहुतसे प्रश्न पूछे। नागपुरमें मैंने जो हस्ताक्षर किये थे, अुससे मेरे अग्रेजी, गुजराती और हिन्दी तीनो भाषाओंके हस्ताक्षर मिलाये। लेकिन मेरी यह जाच करना अुन्हे अच्छा नही लग रहा था। अुनकी अिच्छा भी मुझे जल्दी घर पहुचानेकी थी, क्योंकि मैं खूब थकी हुअी थी। फिर भी कानूनका पालन करनेके लिअे यह विधि करनी पडती है, अैसा कहकर बीच बीचमें वे लोग 'माफ करना, माफ करना' कहते थे।

वहांसे अेक मोटरलारीमें मेरे साथ दशरथ और गोविन्द नामके दो सिपाही, दो अंग्रेज सार्जन्ट और कान्स्टेबल और पुलिस सुपरिन्टेन्डेन्ट बैठे और आगाखां महलकी तरफ रवाना हुअे।

करीब १५ मिनिटमें हम आगाखां महलके सदर दरवाजे पर पहुंचे।

९

आगाखां महलमें

ता० २०-३-'४३ की शामको मैं आगाखां महलमें पहुंची। अिस महलके चारों ओर पुलिसका पहरा लगा हुआ था। जाते ही सदर दरवाजे पर दो गोरे सार्जन्ट भरी बन्दूक लिये खडे दिखाओ दिये। अुन्होंने हमारी मोटर रोक दी। यहां हमारी पहली तलाशी हुअी। (जेलमें मनुष्यके शरीर पर कोअी निशान हो तो वह भी नाम-पते और अुनके साथ लिखना पडता है, ताकि कभी अपराधी भाग जाय तो अुस निशानसे ढूंढा जा सके।) अिस प्रकार मेरे दायें पैरके तलवेके बीचका तिल दिखानेको सार्जण्टने मुझसे कहा। मैंने अुसे दिखानेमें आनाकानी की। मैंने कहा "यदि अितना अधिक अविश्वास हो तो आप नागपुर जेलके अफसरोंको बुलवा लीजिये। मैं यहां दरवाजे पर दो दिन पड़ी रहूंगी। परन्तु अभी तक किसीने मेरी अैसी जांच नहीं की। अिन कान्स्टेबल साहबने भी अैसी जांच नहीं की।" अुस कान्स्टेबलने कहा "ये लोग अंग्रेज हैं। हम तो अेक ही हैं। आपको देखते ही पता लग जाता है कि आप गांधी परिवारकी हैं। फिर भी कानूनको मानकर हमने आपके हस्ताक्षर मिलाये। अब आपको भी देर होती है, आप जल्दी कीजिये।' अितनेमें आगाखां महलके सुपरिन्टेन्डेन्ट कटेली साहब आ गये। अुन्होंने गोरे सार्जन्टको समझाया: "अिसमें अितना [illegible] है। आप देखा न, स्टेशन पर ही अिनके हस्ताक्षर मिलाये

गये है। दूसरी तरह भी नागपुर सेंट्रल जेलकी तरफसे जो यह रिपोर्ट है, अुसके आधार पर भी यह मनु गांधी ही है। और कोअी नहीं।"

अिस पर सार्जेण्ट कुछ शांत हुआ और पहला दरवाजा बडी मुश्किलसे खींचतानके बाद पार किया। अुसके बाद आया दूसरा छोटा-सा, कांटोंकी बाडवाला दरवाजा। वहां मेरी पेटी, बिस्तर वगैरा रखवाकर कटेली साहबने दिखानेको कहा। अुन्होंने तो अूपर अूपरसे देखा। मेरे भत्तेका रुपया सारा ही बच गया था। अुसका हिसाब मेरे साथ आये हुअे सिपाहियोंने दिया। मैंने सारा रुपया अुन सिपाहियोंको दे दिया। वे बडे खुश हुअे। अुन्होंने दूरसे बापूजीके दर्शन भी कर लिये।

यह विधि पांचेक मिनिटमें पूरी करके मैं बरामदेकी सीढियों पर चढी। अितने अधिक कमरे थे कि बा और बापूजीका पता लगानेके लिअे मैं अेक अेक कमरा पार करती ही चली गअी।

अुस दिन श्रीमती सरोजिनी नायडूके बीमार होनेके कारण डॉक्टरोंकी कुछ धूम-सी मची हुअी थी। अुस कमरेके पीछेवाले या तीसरे कमरेमें अेक लकडीके तख्ते पर स्वच्छ गद्दी और तकिया था, जिन पर जेलकी चादर बिछी हुअी थी। हाथमें लकडीका चम्मच और जेलका लोहेका कटोरा लिये बापूजी बैठे थे। साफ दिखायी देता था कि अभी तक अुपवासकी अशक्ति दूर नहीं हुअी है। अुनके सामने ही अेक पलंग था, जिस पर बा बैठी थी। मैंने जाते ही बापूको प्रणाम किया। बडी जोरका धप्पा लगाकर सदाकी आदतके अनुसार मेरा कान खींचकर बापूजीने कहा "क्यों, कहां भाग गअी थी?" मैंने साडी पहन रखी थी, अिसलिअे अुन्हें पुरानी बात याद आ गअी। "अब तो मनुबहन बन गअी हो न? मगर मुझे न तो बाको सताना है, और न तुझे छोटीसी मनुडी बनाना है।"

बाको प्रणाम करनेको जाअू, अिसके पहले बा ही बापूके पलंग तक पहुंचकर अुस पर बैठ गअी थीं। अिसलिअे अूपरोक्त बातोंके बीचमें मैंने अुनके पैर छूअे। बा बहुत कमजोर और फीकी लगती थीं। बोलीं "क्यों बेटी, तू बहुत भूल गअी? जबनुनलाल यहां आते तभी मुझे

पता लगा कि तू नागपुरमें है। तुझसे कहा था न कि तू कराची चली जाना। परन्तु तू क्यों मानने लगी? चल, अब भूख लगी होगी। नहा ले फिर बातें करना। अभी अभी तेरे बारेमें श्रीमती नायडू पूछ रही थी कि तू आ गयी या नहीं? सबने जल्दी खा लिया है। लेकिन तेरे लिअे अुन्होंने सब कुछ रखवाया है।"

श्रीमती नायडू वहाका भोजनालय सभालती थी। अुन्हे नओी नओी वानगिया बनवानेका शौक था। और खिलानेका भी अुतना ही शौक था। अितनी बीमारीमें भी अुनका पलग खानेके कमरेमें ही था। मेरे नहा-धोकर निपटने पर पू० बा मुझे खानेके कमरेमें ले गयी। बाने मुझे कहा "ले, यह तेरी अम्माजान, अिन्हे प्रणाम कर और फिर खानेको बैठ।"

अिस प्रकार अम्माजानसे परिचय कराकर बाने अुनके साथ अैसा पारिवारिक सम्बन्ध स्थापित कर दिया कि वह सदाके लिअे बना रहा।

मैंने प्रणाम किया तो अुन्होंने अपने स्वभावके अनुसार मुझे चूम लिया। मैं थोडी घबराकर मूर्तिकी तरह खडी रही। मनमें अितना हर्ष था कि कुछ बोल ही नही सकी। बा और बापूके साथ तो मेरा खूनका सम्बन्ध था और अुनकी गोदमें खेली थी, अिसलिअे अुनसे मिलकर मैंने कोअी विचित्रता अनुभव नही की। फिर मनमें यह खयाल भी जरूर था कि सरोजिनी देवी तो महान देशनेत्री हैं, अुन्हें कभी सभाओमें दूरसे देखनेका अवसर मिल जाय तो भी अपनेको धन्य समझना चाहिये। अैसी महान देशनेत्रीके सान्निध्यमें मैं खडी हू। मैंने अुन्हें प्रणाम किया। अुन्होंने मुझे चूम लिया। यह सब स्वप्न तो नहीं है? अिस विचारसे मैं शून्यमनस्क बन गयी थी। परन्तु अम्माजानने दूसरे ही क्षण कहा "बेटी अब तुम खा लो, पीछे मेरे पास बैठना। मेरी भी सेवा करोगी न?"

मैं मेज पर खाने बैठी, अुस वक्त प्यारेलालजी खा रहे थे। अुनसे बोली "अिस लडकीको कच्चे टमाटर, चटनी, पुडिंग वगैरा सभी देना। बहुत दुबली है, अिसे यहा मोटी बनाना है।"

खाकर मै फिर अुनके पास गअी। अुन्होंने मुझे प्रेमसे अपने पास बिठलाया। मै अुनके पैर दबाने लगी। जिससे मानो मैं अुनकी सगी लड़की होअू, अितनी अुनके निकट पहुच गअी। पहली बार अितने अधिक स्नेहसे मिलने पर मनमें जो घबराहट हुअी थी वह अब जाती रही। परन्तु अुस समय अुनकी सेवा करनेका जो सौभाग्य मुझे मिला वही मिला। क्योंकि अुनका स्वास्थ्य अधिक खराब हो जानेके कारण अुसी रात अुन्हे छोड़ देनेका हुक्म जेलके सुपरिन्टेन्डेन्ट साहब बता गये।

थोडी देरमें बाने कहा · "मनु, सुशीलाके साथ जाकर महादेवको फूल चढा आ।" मैं कुछ समझी नहीं। अितनेमें सुशीलाबहनने आवाज दी, 'चलो, महादेवभाअीकी समाधि पर फूल चढ़ा आयें।' तभी मैं बाके कहनेका अर्थ समझी।

वहांसे आकर अपने नागपुर जेलके अनुभवो और वहाकी स्त्रियोकी मूर्खताकी थोडीसी बातें की। सब हस रहे थे। अितनेमें सायकालकी प्रार्थनाका समय हो गया। प्रार्थना की। प्रार्थनाके बाद बापूजी अम्माजानके पास गये। मैंने बाको तेलकी मालिश की। मालिश कराते कराते बाने सबकी खबर तो पूछी, परन्तु अुन बातोंके बीच अेका-अेक सारी बात काटकर वे बोली "मैंने तुझे सेवाग्राममें बापूजीके हाथ-कते सूतकी अेक साडी दी थी और कहा था कि मुझे मरते समय ओढा देना। वह कहा है? अब मैं ज्यादा नही जीअूगी। अिस-लिअे याद रखकर कल पत्र लिखकर मगवा लेना।"

मेरी आखोमें आसू भर आये। मैं बोली . "मोटी बा, यह क्या कह रही है? आपकी साडी तो मगा ही दूगी। परन्तु अब सरकार बापूजीको भला कब तक जेलमें रखेगी?"

बा बोली . "यह सब गलत है। बापूजी कहते है कि सात वर्ष तक रहेंगे। लेकिन अब मैं तो दो-चार महीनेकी मेहमान हू, अधिक नहीं।"

बा बापूका बिस्तर करके अम्माजानके पास थोड़ी देरके लिअे हो आअी। बापूजीके और बाके पैर दबाकर हम रातको साढे दस बजे सोये। मेरा पलंग बाके पलगके पास ही था, ताकि जरूरत पडने पर मुझे बुला

सकें। लगभग साढे बारह बजे होंगे। बाको जोरकी खांसी शुरू हुआी, अिसलिअे मैं अुनके पलंग पर चली गअी। "बेटी, तू मेरे साथ ही सो जा, तेरी नींद बिगडेगी।" मैंने कहा, "मोटी बा, आपने मुझे अपनी सेवा करनेका यह अमूल्य अवसर दिया है, आप मेरी चिन्ता न कीजिये।" थोडी देर पीठ और पैर दबाये। बाको थोडी राहत मिली। जैसे माता अपने छह-सात महीनेके बालकको प्रेमसे थपथपाकर सुलाती है, वैसे ही बाने मुझे सुलाया। बाको तो यही चिन्ता थी कि वे मेरी नींद खराब कर रही हैं। लेकिन मैं अुनके प्रेमकी गरमीमें अैसी आरामसे सोअी कि सुबहकी प्रार्थनाका समय हो जानेका मुझे पता ही न चला।

बापूजी और बाके मनमें अितनी दया भरी हुअी थी कि बेचारी रात भर जगी है अिसलिअे अिसे नहीं जगाना चाहिये, भले सोती रहे। परन्तु भजनकी आवाजसे मैं अेकदम चौंक कर जाग गअी और तुरन्त धीरेसे अुठकर प्रार्थनामें बैठ गअी। प्रार्थनाके बाद मैंने बापूजीसे पूछा कि मुझे क्यों नहीं अुठाया? बापूजीने कहा "सुशीलाने मुझे कहा कि बाको रातमें खांसी आती रही और तुझे जागरण करना पडा। साथ ही अभी तक तू थकी हुअी लगती है, अिसलिअे अुसने मना कर दिया।" मैंने कहा, "मैं छह-सात महीनेके बच्चेकी तरह मोटी बाकी मीठी गरमीमें कितने आरामसे सो रही थी, अिसकी आपको क्या कल्पना हो सकती है?"

आगाखां महलकी अुस पहली आनन्दपूर्ण रात्रिसे मुझे अितना अुल्लास हुआ मानो मेरे जीवनमें सुनहले सूर्यका अुदय हुआ हो।

१०

अम्माजानकी रिहाअी

आगाखाका महल, पूना,
२१–३–'४३

श्रीमती सरोजिनी नायडूकी आज रिहाअी होनेवाली थी। हम अुन्हें अम्माजान कहते थे। मेरे लिअे तो अुनके नजदीक आनेका यह पहला ही दिन था। और दो घटेमें ही वह अतिम बन गया। अुन्होने अपने प्रेमपूर्ण स्वभावके झरनेमें अपनी सेवा करनेवाले सिपाहियो, कैदियो और जेलके साथियो सभीको परिप्लावित कर दिया था, अिसलिअे सभीको अुनका वियोग खलने लगा। अम्माजानको बिगडे हुअे स्वास्थ्यके कारण जेलसे मुक्त किया गया, अिसलिअे अुन्हे भी क्या आनन्द होता? अुलटे, अुनके चेहरे पर दु ख झलक रहा था। मानो अुनके चेहरेसे यह भाव टपक रहा था कि जब आत्मा वीरतापूर्वक सब कुछ सहन करती है तो फिर शरीर क्यो बरदाश्त नही करता? परन्तु देशके लिअे लडनेवाली अिस महान वीरागनाने शरीरसे आज हार मान ली। यह कल्पना की जा सकती है कि जब तमाम साथी जेलोमें पडे हो तब अुन्हे स्वास्थ्यके कारण विवश होकर बाहर जाना बुरा लगा होगा। मेरे लोभका मानो पार ही नही था। मुझे लगा कि भारतके रत्नोमें से अेक व्यक्तिके अितने ज्यादा नजदीक आनेका सौभाग्य जरा जल्दी प्राप्त हुआ होता, तो मुझे कितना अधिक ज्ञान मिलता?

३।। बजे मोटर अुन्हे लेने आअी। अधिकारी आये। अम्माजानने तैयार होकर बाको नमस्कार किया। बाको अैसा ही दु ख हुआ जैसा कुटुम्बके किसी व्यक्तिके लम्बे समयके लिअे सफर पर जाते समय घरके लोगोको होता है। बाने हाथ जोडकर अम्माजानने कहा· "अब हम दुबारा मिले या न मिले, अिसलिअे यह आखिरी राम राम कर ले।" अम्माजानने बाका आलिगन करके कहा· "बा, आप तो

अब जल्दीसे जल्दी बाहर आने ही वाली है।" परन्तु यह केवल आश्वासन ही था।

मैं प्रणाम करने लगी तो मुझे अुलहना दिया· "यह सब तेरा ही कसूर है। तुझे मेरी ओीर्ष्या जो हो गअी।" यों कहकर चपत लगानेको हाथ अुठानेकी शक्ति तो नही थी, फिर भी मीठी चपत मार दी। बाने मेरा पक्ष लिया "यों कहो न कि यह अच्छे कदमोंवाली आअी जिससे आपको आज ही जेलसे छुट्टी मिल गअी। बाहर जाकर आप अधिक काम कर सकेंगी, अधिक शरीर-सेवा भी कर सकेंगी।"

परन्तु अम्माजानको अिस तरह जाना कहा अच्छा लगता था? अुन्होंने निराशाभरे स्वरमें कहा· "नही जी, बापू जेलमें हैं, सब साथी पिंजडेमे बन्द हैं। तब मेरे स्वास्थ्यके कारण मुझे छोडा गया, अिसमें मेरी क्या बहादुरी है? अिसमें तो अुलटी मेरी हेठी है।"

यह अंतिम बात कहकर अम्माजानने बापू और दूसरे सब लोगोंसे हाथ जोडकर गीली आखोंसे विदा मागी। बापूजीने अुनके कान मलकर कहा: "देखना, बाहर जाकर तन्दुरुस्ती जल्दी सुधार लेना। नही सुधारी तो तुम्हारी खैर नही है।"

अम्माजानकी मोटर चली गअी और हम सब लौट आये। घरमें सब ओर सुनसान लगने लगा। थोडी देर सब बैठे, फिर जिस कमरेमें अम्माजान रहती थीं अुसकी पूरी सफाअी कराअी। अिसमें समय निकल गया।

अम्माजान जेलके भोजनालयकी देखरेख करती थीं, क्योंकि अुन्हें खाने और खिलानेका बहुत शौक था। अुनकी जगह अब सुशीला-बहनने देख-रेख रखनी शुरू की। मैं अुनकी सहायक बनी।

हमारा साधारण कार्यक्रम अिस प्रकार था सवेरे ५।। बजे अुठना, दातुन वगैरासे निपटकर लगभग ६ बजे तक प्रार्थना। बापूजी २ चम्मच शहद और ८ औंस गरम पानी और १ नीबूका रस मिला कर प्रार्थनाके बाद लेते थे। बादमें अभी तक २१ दिनके अुपवासकी कमजोरी होनेके कारण थोडी देर आराम करते थे। बा ६।। बजे

अुठती। वाके लिअे दातुन वगैरा तैयार करके और तुलसीका काढा बनाकर मैं अुन्हे देती और बापूके लिअे मोसम्बीका रस निकालती। बादमें बापूजीके सुबहके बर्तन और पीकदान वगैरा सबको माज डालती। अिनमें से बापूजी जेलमें खानेके लिअे जेलका लोहेका जो कटोरा रखते थे अुसे तो अैसा माजना पडता था कि मुह दिखाअी दे। बापू कहते कि दक्षिण अफ्रीकामें जेलका कटोरा वे अितना बढ़िया माजते थे कि जेलर और जेल सुपरिन्टेन्डेन्ट खुश हो जाते थे। और अफ्रीकाकी जेलमें तो नीबूके छिलके या अैसी कोअी चीज देखनेको भी नही मिलती थी। रेत और हाथकी ताकतसे ही माजना पडता था। यहा मुझे अितनी दिक्कत नही थी, अिसलिअे किसी दिन काम अुजला निकलता तो बापू मुझे क्षमा नही करते थे। फिर, आगाखा महलमें काम करनेके लिअे २५ कैदी यरवडा जेलसे रोज सुबह ८ बजे लाये जाते और शामको ६ बजे वापस ले जाये जाते थे। परतु अपना काम आप ही करनेका हमारा नियम था, अिसलिअे कैदियोका विशेष अुपयोग नही किया जाता था। बापू कहते: "यह कटोरा अैसा अुजला होना चाहिये कि अिसमें मुह देखकर मैं हजामत बना सकू।"

यह सारा कामकाज करते करते सहज ही ८ बज जाते। अुसके बाद हम लोग ८ से ८॥ तक बापूजीके साथ सैरको जाते, महादेव काकाकी समाधि पर फूल चढाते और वहा नित्य गीताके १२ वे अध्यायका पाठ करते।

९ से १ सैरसे आकर मोटी बाके सिरमें कघी करना, अुनको मालिश करके स्नान कराना, अुनका तथा बापूजीका भोजन तैयार करना, कपडे धोना, खानेके बर्तन धोना और भोजन करना। हमारा, बापूजीका और बाका भोजन अलग अलग ढगसे पकता था।

बापूजीके लिअे अुबला हुआ शाक, बकरीका दूध, बकरीके दूधसे रोज मक्खन निकालना और कच्चे शाकको धो और सुधारकर रखना होता था। बापू १०॥ बजे भोजन करते और बा ११ बजे। बाकी अिच्छा होती तो अुनके लिअे थोडासा शाक घीमें भी छौंक देती थी। कभी कभी वे पूरीके बराबर रोटी खाती और वह भी केवल अेक-दो ही।

गायका दूध, दूधमें कभी कभी अंजीर, द्राक्ष या जरदालू अुबालकर रखती। और हमारे लिअे साधारण भोजन। परतु यह सब काम सुशीलाबहन, प्यारेलालजी और मैं अेक-दूसरेकी मददसे कर लेते। मीराबहन अपना भोजन—रोटी और साग खुद ही बना लेतीं।

जब मैं बाको मालिश वगैरा करती तब सुशीलाबहन और डॉ॰ गिल्डर बापूजीकी मालिश करने और अुनका रक्तचाप देखनेका काम करते। अिस प्रकार बाका काम मुख्यत. मुझ पर और बापूका काम सुशीलाबहन पर रहता था।

१ से २ मैं आरामके समय बापूजी और बाके पैरोंमें घी मलती थी। अुस बीच सुशीलाबहन बापूजीके साथ संस्कृत रामायणका अनुवाद करतीं और अपना संस्कृतका ज्ञान ताजा करतीं। अिस १ घंटेके बीच सबको अनिवार्य रूपसे सोना पड़ता था। कभी मैं या सुशीलाबहन न सोतीं तो बापू दोनों पर नाराज भी हो जाते और कहते · "अभी हाल ही में अैसी खोज हुअी है कि बालक, युवा और वृद्ध यदि नित्य दोपहरको आधे घंटेके लिअे सो जायं, तो दुगना काम कर सकते हैं। और मेरा अनुभव भी यही कहता है।"

२ से ३ · मुझे सुशीलाबहन अंग्रेजी पढाती। बा व बापूजी फिर गरम पानी और शहद लेते, अखबार पढते और पढने योग्य अुपयोगी समाचारों पर नजर डाल लेते।

३ से ४. मैं बाके पास अखबार पढती, डाक लिखती, डाक आअी हो तो अुसे पढती वगैरा।

४ से ४॥. बापूजी मुझे गीता, भूमिति और गुजराती पढाते। अिसमें अेक दिन गीता, अेक दिन भूमिति और अेक दिन गुजराती, अिस तरह बारी बारीसे चलता था।

४॥ से ५ · फिर बाको भागवत या रामायण या अुनकी अिच्छाके अनुसार और कुछ पढकर सुनाती।

५॥ से ६॥ बापूजीका व हमारा भोजन। बा तो शामको सिर्फ तुलसीका काढ़ा लेतीं, और अुसमें अेक वैद्यका दिया हुआ कोअी और मसाला डलवातीं।

६।। से ७।। शामका छोटा-मोटा काम। कपडोंकी तह करना या आगे पीछेका काम-काज। ७।। होते ही बापूजी घंटी बजाते, और हमें अुस समय चाहे जितना काम हो अुसे छोडकर लाजमी तौर पर खेलने जाना पडता। बापूजी कहते, मेरे साथ घूमनेसे तुम्हे पूरी कसरत नही मिलती। अिसलिअे दूसरी घंटी होने तक हम बैडमिंटन, पिंगपोंग वगैरा खेल खेलते। दूसरी घंटी ८ या ८। बजे बजती।

८ से ११ बापूजीके साथ घूमना। वापस आकर प्रार्थना करना, बिस्तर लगाना, बापूजीके सिरमें तेल मलना, बा और बापू दोनोंके पैर दबाना और फिर अगले दिनके लिअे कुछ पढना हो तो पढकर डॉ० गिल्डरसे आध घंटा शरीर-विज्ञान पढकर सो जाती। अिस प्रकार मेरा सामान्य कार्यक्रम और पूज्य बा, बापूजी तथा साथके बुजुर्गोकी छत्रछायामें नियमित रूपसे मेरे जीवनका नवनिर्माण शुरू हुआ। बापूजी मुझे हमेशा समयका ध्यान रखनेके लिअे बार-बार कहा करते और दिनभरकी बातें डायरीमें नोट कर लेनेके लिअे कहते थे। रोज रातको मैं क्रमपूर्वक लिखी डायरी बापूजीके सामने रखती। वे दूसरे दिन अुस डायरीमें सुधार करके 'बापू' हस्ताक्षर करके मुझे दे देते, जिसने आज मेरे लिअे अेक प्रतीकका रूप ले लिया है। वहा मुझे शिक्षा और दीक्षा दोनो मिली। फिर मैं सबसे छोटी थी, यह अेक अलभ्य लाभ था। अिसलिअे बा, बापूजी, डॉ० गिल्डर, मीराबहन, प्यारेलालजी और सुशीलाबहन सबके साथ और सबकी देखरेखमें रहनेका मौका मिलनेसे अनेक प्रकारके और नये नये — बहुत बार कडी परीक्षा करनेवाले — सामाजिक, धार्मिक, राजनीतिक और आध्यात्मिक पाठ सीखनेको मिलते।

११

जेलमें पढ़ाओ

आगाखा महल, पूना,
१०-४-'४३

जैसा पहले लिखा जा चुका है, पूज्य बापूजी और दूसरे बड़े साथी मेरी पढ़ाओ पर खूब ध्यान देते थे। अिसलिअे आजसे बापूजीने अपने अध्ययनके लिअे अुन पुस्तकोंको पढ़ना शुरू किया, जो कराचीकी मेरी पाठशालामें पाठ्य-पुस्तकोंके रूपमें थी। अिस प्रकार भूमिति और अितिहास-भूगोल तथा गुजराती व्याकरणकी पुस्तकें वे पढ़ने लगे। अपना पढ़ना छोड़कर मेरी पाठ्य-पुस्तकोंके आधार पर मुझे कैसे पढ़ायें, अिस विचारसे बहुत ही ध्यानके साथ, जहां भी नोट करना अुचित था वहां पेंसिलसे नोट लगा लिये और दोपहरको मुझे भूमिति और त्रैराशिकके दो-तीन सवाल लिखवाये। वे सवाल दूसरे दिन करके लाने थे। मेरे पास भूमितिकी नोटबुक नहीं थी, अिसलिअे मैंने हमारे सुपरिन्टेन्डेन्ट साहबसे मंगवा ली। वह डेढ़ रुपयेकी आओ। वह नोटबुक लेकर मैं सीधी बापूजीके पास गओ और अुन्हें बताओ। अुन्होंने मुझे पहला ही सवाल पूछा - "कितनेमें आओ?"

मैंने कहा: "मुझे मालूम नहीं।"

बापू बोले: "जा, पूछकर मुझे खबर दे कि कितनेमें मिली।"

कटेली साहब तो बापूके स्वभावको जानते थे, अिसलिअे मुझसे बोले "बापूजीको कुछ भी कहनेकी जरूरत नहीं है।"

मैंने कहा: "अेक तो मैंने अुनसे पूछे बिना मंगा ली और अब न बताअूं और अुसमें 'लेसन' लिख डालूं तो बापू मुझे खूब डाटेंगे।" अिसलिअे अुन्होंने बिल मुझे सौंप दिया।

डेढ़ रुपयेका बिल देखकर बापू मुझसे कहने लगे "तू यह समझती होगी कि हमारा पैसा नहीं खर्च हो रहा है, अंग्रेज सरकारका

हो रहा है। और हमें अितनी सुविधा मिली है, अिसलिअे चाहे जो चीज मगवानेमें हर्ज नही है। परन्तु यह तेरी बडी भूल है। यह पैसा अग्रेज सरकार कहासे लाअी? असलमें ये हमारे ही पैसे खर्च होते है। अिस तरह तो हमी अपनेको बेवकूफ बनाते है। अिसके अलावा अेक बडी बुरी आदत तो यह पडती है कि जो सुविधा मिले, अुसका अपव्यय या दुरुपयोग किया जाय। अच्छा हुआ कि तूने नोटबुक मुझे बताये बिना काममें नही ली। मेरा अितना डर तो लगा। तुझे आज-कल पाठशालाके नियम कहा पालने पड़ते है, जो अैसी पक्के पुट्ठेकी भूमितिकी नोटबुक चाहिये? हमारे पास तारीखके पन्ने बहुत पड़े है, जिनके पीछेके हिस्से बिलकुल कोरे है। तू अुन पर सवाल किया कर। यह नोटबुक लौटा दे।"

वह नोटबुक मैने लौटा देनेके लिअे कटेली साहबको दी। वे कहने लगे· "बापूजी भी जुल्म करते है। मै अपने पास रख लूगा। तुम्हे चाहिये तब ले जाना।" परन्तु दो बजते ही कटेली साहब डाक और अखबार देने बापूजीके पास आये। अुस समय बापूजीने अुनसे पूछा "क्यो, मनुने नोटबुक आपको लौटा दी?"

अुन्होने कहा· "हा लौटा दी। मगर बेचारीको अिस्तेमाल करने दीजिये न? सभालकर रखेगी तो बादमें काम आयेगी।"

बापूजी बोले. "मालूम होता है आप अुसे बिगाडना चाहते है। अगर अुसे सभालकर रखनेकी परवाह होगी, तो क्या आप मानते है कि ये तारीखके पन्ने नही रखे जा सकते? अुसे तो वापस ही कर देना चाहिये। अुसका नकद डेढ रुपया लौटा लाये या नही, अिसकी मुझे खबर दीजिये, यद्यपि शामको मै जमादारसे तो पूछूगा ही।"

शाम हुअी। बापू और हम सब बाहर घूमने निकले। फिर नोट-बुकका प्रकरण शुरू हुआ. "तू समझ गअी न, तुझे अिससे कितना बडा सबक मिला? (१) यह डेढ रुपया कौन देता है? किसे चूसकर यह सारा खर्च पूरा किया जाता है? अिस सारे खर्चका रुपया कोअी विलायतसे नही आता। अिस प्रकार अिससे मैने तुझे

अितिहास सिखाया। (२) और जितनी चाहिये अुससे अधिक किसी भी तरहकी सुविधा मिले तो भी अुसका अुपयोग नहीं करना चाहिये। अिस प्रकार मानवताके अनेक लक्षणोंमें से तूने अेक गुण सीखा। (३) और बेकार पड़ी हुअी चीजका सुन्दर अुपयोग होगा। ये कैलेण्डरके पर्चे यों ही फेंक दिये जाते, लेकिन अगर काममें आ सकेंगे तो अब वे बचाकर रखे जायगे। और फेंके भी जायगे तो अुपयोगमें आनेके बाद, अिसमें कोअी हर्ज नहीं। (४) और कभी तेरा बाहर जाना हो जाय और तू शालामें पढ़ने जाय तो पक्के पुट्ठेकी अितनी सुन्दर नोटबुक, जिसमें सवाल किये हुअे हों, कोअी चुरा भी सकता है (हमारे समयमें बहुत दफा अैसा होता था)। लेकिन अिन कैलेण्डरके पर्चोंको चुरानेका किसीका भी मन न होगा। बोल, यह सबसे बड़ा लाभ हुआ कि नहीं?"

यह बात हो ही रही थी कि जमादार साहब आये और नकद डेढ़ रुपया वापस लानेकी खुशखबर सुना गये। तो भी यह नोटबुकका प्रकरण पूरा नहीं हुआ। बापूने विनोदमें कहा

"अगर तुझे शर्म आये कि अिन तारीख बतानेवाले पर्चोंमें भी कहीं अंग्रेजी हाअीस्कूलमें जानेवाला सवाल कर सकता है, तो मैं भी कितने वर्षोंके बाद तुझे भूमिति पढ़ा रहा हूं? अिस प्रकार मैं भी अब सीखनेवाला माना जाअूगा और तू भी सीखनेवाली मानी जायगी। अिसलिअे मेरा नाम लेकर कहना कि बूढ़ोंका तो कैसी भी चीजसे काम चल जाता है।"

अब तो मैं अिन तारीखके पर्चोंको अिस तरह संभाल कर रखती हूं, जैसे कोअी रुपये या जवाहरातका खजाना संभालकर रखता है। अिन पर्चोंमें कितने ही सवाल और आकृतियां पू० बापूके हाथकी खींची हुअी हैं। अिसलिअे बापूने जो आखिरी बात कही थी कि "आकर्षित करनेवाली अच्छे पक्के पुट्ठेकी नोटबुक हो तो किसीका चुरानेका मन हो सकता है," वह बिलकुल सही है। किसीको चोरी करनेका प्रोत्साहन नहीं मिलता और वह अमूल्य वस्तु सुरक्षित भी रहती है।

आगाखा महल, पूना,
१३–४–'४३

अपनी रोजकी डायरीमें मैंने भूमितिकी नोटबुक सबधी बात नही लिखी थी। बापूजीने अुसे लिखनेके लिअे कहा और वह डायरी रोज शामको अपने पास रख देनेकी हिदायत दी।

डायरीका अेक नमूना

ता० १३–४–'४३

५ बजे बापूजीने अुठाया।

५ से ५॥ दातुन वगैरा और प्रार्थना।

५॥ से ६॥ पढना था, लेकिन आखोमें नीद छा गअी और सो गअी।

७ से ८ बापूजीके लिअे रस निकाला, मोटी बाके लिअे दवा डालकर चाय बनाअी, सब बरतन माजे।

८ से ८॥ आज १३वी अप्रैल होनेसे बापूजीने झडावदन करवाया। 'झडा अूचा रहे हमारा' गीत गाया और बापूजीके साथ घूमे।

८॥ से ९ पूज्य बाके सिरमें तेल मला और बालोमें कघी की।

९ से १०॥ पूज्य बाको मालिश की, अुन्हे स्नान कराया और अपने तथा बाके कपड़े धोये।

१०॥ से ११ बापूजीके लिअे खाखरा रोटिया बनाअी, शाक और दूध तैयार किया और छाछ बिलोकर मक्खन निकाला।

११ से ११॥ अग्रेजीका पाठ लिखा।

११॥ से १२॥ बापूजीको खिलाकर बाके साथ हम सबने खाना खाया।

१२॥ से १ पूज्य बापूजी और बाके पैरोमें घी मला। कल रातको भी बाके सारे शरीरमें बहुत जोरका दर्द था, बुखार जैसा लगता था, और अभी भी था अिसलिअे अुनका शरीर दबाया।

१ से १॥ बाको अखबार पढकर सुनाये और बापूजीसे १५ मिनिट बाद अुठा देनेका वचन लेकर सो गअी। १५ मिनटमें बापूजीने अुठा दिया।

१॥ से २॥ बा और बापूजीको शहदका गरम पानी पिलाकर काता। बापूजीका और मेरा सूत अटेरन पर अुतारा, बापूजीके २२० तार निकले। सफाअी वगैरा की।

२॥ से ३॥ कल गुजराती व्याकरणकी बापूजी लिखित परीक्षा लेंगे, अिसलिअे यह घंटा पढनेके लिअे मुझे दिया गया। अत गुजराती व्याकरण पढा।

३॥ से ४ सुशीलाबहनसे अंग्रेजी पढी।

४ से ६ बकरी, गाय और भैंसका दूध आते ही अुसे गरम करके अुसकी अलग व्यवस्था की। शाक सुधारा और शामकी रसोअी बनाअी। सब खाना खाकर निपट गये। (सब कैदियोंको खिलाया।)

६ से ६॥ ग्रामोफोन पर भजनोंके रिकार्ड बजाये। बाने लेटे-लेटे सुने।

६॥ से ७ शामके बरतन मांजे, बा और बापूजीके लिअे दातुनकी कूची तैयार की, कपडोंकी तह की, बाके लिअे अेक साडीकी किनारी काढनी शुरू की।

७॥ से ८ बैडमिंटन खेलकर बादके दसेक मिनिट बापूजीके साथ घूमे।

८ से ८॥ प्रार्थना। प्रार्थनाके बाद बिस्तर लगाये। बाकी मालिश की। पूज्य बापूजीके सिरमें तेल मलकर पैर दबाये। मैंने बापूजीसे कहा, रोज रातको मुझे अेक कहानी सुनाया करिये। अिस पर बापूजीने मेरी बात अुडा देनेके लिअे चिडा-चिडीकी कहानी सुनाअी। अिस तरह थोडी देर मजाक करके ९ बजे बापूजी सोये। बाकी तबीयत आज अच्छी नहीं रही। पसलीमें बहुत दर्द रहा। अिसलिअे आध घंटे तक दबाया। अिससे कुछ शांति मिलने पर वे सो गअीं। अुन्हें खासी थी।

१०। बजे अपना 'लेसन' करने बैठी और १२ बजे सोओी।

नोट आज १३ अप्रैल होनेसे हम सबने आधे दिनका अुप-वास किया। हमारा जितना खाना बचा अुसमें थोड़ा और मिलाकर जेलके कैदियोंके लिअे खिचड़ी, शाक, केलेकी चटनी और हलवा बनाया था। बीसेक कैदी थे। पूज्य बापूजीने खुद ही सबके बरतनोंमें परोसा। अुनके हाथकी परोसी हुअी प्रसादी खाते खाते कुछ कैदियोंने कहा "हम सात सात सालसे यरवडा जेलमें है, परतु अपने अपराधोंके लिअे भी हम आज यह सोचकर गौरवका अनुभव करते है कि महात्माजीके हाथसे प्रेमपूर्वक परोसी हुअी प्रसादी खानेको मिली।"

अिस प्रकारकी डायरी रखनेके लिअे बापूजीने मुझे हिदायत दी थी, जिससे अेक अेक मिनिटका सावधानीसे सदुपयोग हो। आजकी डायरीमें बापूजीने नीचेकी अधिक सूचना देकर हस्ताक्षर किये

"कातनेका हिसाब लिखा जाय। मनमें आये हुअे विचार लिखे जाय। जो जो पढा हो अुसकी टिप्पणी लिखी जाय। 'वगैरा'का अुपयोग नही होना चाहिये। डायरीमें 'वगैरा' शब्दके लिअे कोअी स्थान नही है।

"जिससे जो पढा हो वह लिखा जाय। अैसा करनेसे पढा हुआ कितना पच गया है, यह मालूम हो जायगा। जो बातें हुअी हों, वे लिखी जाय।"

—बापू

अिस प्रकारकी सूचनाअें मेरी डायरीमें लिखकर बापूजी रोज अपने हस्ताक्षर करते थे।

१२
सेवाके नियम

आगाखां महल, पूना,
३–५–'४३

मुझे पिछले चारेक दिनसे बुखार आता था। आज रातको अधिक था। बापूजी रातको मेरे पास आये; मेरा सिर दबाया। मैंने बापूजीको सो जानेके लिअे बहुत आग्रह किया। वे बोले: "तू मेरी दुगनी सेवा कर लेना, जिससे पापसे मुक्त हो जायगी। सुबह अरंडीका तेल पी ले, तो तबीयत अच्छी हो जायगी। अच्छी हो जायगी तो किसीको तेरी सेवा नहीं करनी पड़ेगी। तू सबकी सेवा कर सकेगी, जिसलिअे पुण्योंका ढेर हो जायगा।"

मैं अरंडीका तेल पीनेमें आनाकानी कर रही थी, जिसलिअे सिर दबाते-दबाते बापूजीने अूपरवाली बात कही और सुबह अरंडीका तेल पी लेना मंजूर करवा लिया। सुबह ५। बजे अरंडीका प्याला, पानीका लोटा और नीबू लेकर बापूजी मेरे बिस्तरके पास आये और सोमवारका मौन होनेसे बोल न सकनेके कारण मुझे खूब हिलाया। जागता चोर भला क्यों अुठने लगा! मैं तो जैसे गहरी नींदमें सोअी होअू जिस तरह—यद्यपि थोड़ी देर बाद तो अरंडीका तेल पीना ही था—ढोंग करके पड़ी रही। पर बापूजी जिस तरह छोड़नेवाले नहीं थे। मेरी नाक पकड़ी कि आसानीसे मुंह खुल गया और मुझे हंसी आ गअी। अन्तमें अरंडीका तेल पिलाकर ही छोड़ा। आज पहली ही बार बापूजीके हाथसे अरंडीका तेल पीना पड़ा। बापूजीने मौन होनेके कारण पर्चे पर लिख दिया: "बच्चे तो बूढ़ोंको बनाना ही चाहते हैं, लेकिन 'बच्चे और बूढ़े बराबर' जिस कहावतके अनुसार बराबरी-वालोंमें मित्रता होती ही है। अुस पर मैं ठहरा तेरा दादा, जिसलिअे मेरे सामने तो तेरा ढोंग कैसे चल सकता था? वैसे बच्चोंका

दिमाग अिसी अुधेड़बुनमें पड़ा रहता है कि दादा-दादीको कैसे बनाया जाय। बोल ठीक है न?" यह लिखकर बापूजी खिलखिलाकर हंसने लगे।

आगाखा महल, पूना,
४–५–'४३

हर पन्द्रहवें दिन हमारा वजन लिया जाता था। आज वजन करनेका दिन था। पूज्य बापूजीका वजन १०८ पौंड और पूज्य बाका वजन ८८ पौंड निकला। बापूजीका वजन १०९ से १०८ पौंड हो गया, अिसलिअे बा बहुत चिन्ता करने लगी। "बापूजी अेक पौंड कैसे घट गये?" मुझसे बाने चिन्ताग्रस्त स्वरमें पूछा। मैंने कहा, आजकल सुबह दूध नहीं लेते, अिसलिअे शायद वजन घट गया हो। पूज्य बाने अिसका अुपाय खोज निकाला।

बापूजी रोज दो औंस गुड़ लेते थे। बापूजीके शरीरमें शक्करका तत्त्व कम था। अिसलिअे डॉक्टरने मीठी चीज लेनेकी खास सूचना दी थी। फलोंका रस तो लेते थे, परतु वह काफी नहीं होता था। गुड़को पानीमें डालकर घोल लेते थे और कपड़ेसे छान लेते थे, जिससे कुछ कचरा हो तो निकल जाय और गुड़ स्वच्छ हो जाय। फिर अुसे अुबाल लेते थे, जिससे पानी जल जाय और गुड़का हिस्सा रह जाय।

बापूजीका वजन कम हुआ अिसलिअे बाने मुझे कहा - "जितना गुड़ हो अुससे दुगना दूध डालकर गुड़ बनाना।" अिसलिअे मैंने वैसा ही किया। गुड़ जैसा ही गुड़ हो गया और स्वाद लगभग चॉकलेट जैसा लगता था। हम लोग बच्चोंके लिअे बाजारसे जो चॉकलेट खरीदते हैं, अुनसे बच्चोंको कितना नुकसान होता है अिसका अनुभव लगभग सभी लोगोंको होगा। अिसलिअे बाकी युक्ति बापूजीके लिअे तो लाभदायक सिद्ध हुअी ही, परतु अिस देशी चॉकलेटने कितने ही बच्चोंको भी लाभ पहुंचाया। बा बापूजीके स्वास्थ्यकी अैसी चिन्ता रखती थी।

आगाखा महल, पूना,
७–५–'४३

मेरी आखें खूब लाल रहती थी, और चश्मेसे अुलटा सिर दर्द होता था। चश्मा न लगाती तो दूरका देखनेमें कठिनाअी होती और आखोंसे पानी झरने लगता था। अिसलिअे बापूजीने नया प्रयोग शुरू किया — आखो पर बार बार पानी छीटना और जब जब समय मिले तब आखो पर मिट्टीकी पट्टी रखकर आखें बद करना। घूमते समय मेरी आखें बद रखवाते, मेरे कधे पर अुनका हाथ होनेसे चलते वक्त गिरने या ठोकर खानेका डर तो रहता ही नही था। परतु आखोकी वजहसे अभ्यास बन्द रखना मेरे लिअे ठीक होगा या नही, अिसके बारेमें वे खुद प्रश्न करते। पूज्य बापूजीको यह सह्य नही था। अिसलिअे अुनके पास पढने बैठती, तब वे सस्कृतके रूप, श्लोक, सधि, सधि-नियम, सब मुझे अपने मुहसे कहते। पढकर सुनाते। और आख पर मिट्टी रखवाते।

मैंने कहा: "लेकिन पढ़े बिना याद ही कैसे रहेगा?"

बापूजी बोले: "यदि अैसा हो तो मेरी गलती है। मैं पढानेमें अितना कच्चा माना जाअूगा।"

मैंने कहा "लेकिन सबसे अलग अलग विषय पढू और सभी मुझे अिसी तरह पढावे और याद न रहे, तो क्या वे सब बेकार कहे जायगे?"

"हा। लेकिन अुस वक्त तेरा मन जो पढकर सुनाया जाय अुसमें लगना चाहिये। फिर भी अगर तुझे याद न रहे, तो मैं शिक्षकका पहला दोष मानूगा। शिक्षक पढानेमें अैसा कुशल होना चाहिये कि विद्यार्थीको पढाया हुआ विषय अपने आप याद रह जाय। विद्यार्थी खेलते-खेलते सीख ले और अुसे किसी भी प्रकारकी रटाअी न करनी पडे। मैंने फिनिक्समें अिस तरह कितने ही बच्चोको पढाया है। अुस अनुभवके बाद ही मैं कहता हू कि विद्यार्थी कमजोर हो तो अुसमें शिक्षक और शिक्षाका अुत्तरदायित्व तीन-चौथाअी है और चतुर्थांश

विद्यार्थीका है। मेरे लिअे यह कोअी नया प्रयोग नही है। यो ही तेरी आखके लिअे दो घटे तक मिट्टीकी पट्टी रखकर तुझे लिटाअू यह तुझे अच्छा नही लगेगा। फिर भी तेरे लिअे आज अितना समय नही निकाल सकता। क्योकि यहा तू बाकी सेवा करनेके लिअे आअी है, तेरी आखोका अिलाज करानेके लिअे नही। तू दिनभरमें दो घटे सबसे पढ़ती है, अिसलिअे दोनो काम साथ-साथ हो जाते है।"

अिस प्रयोगमें बापूजी सफल हुअे। अेक तो मेरी यह चिन्ता मिट गअी कि कल अितना पढकर तैयार करना है। अिसलिअे कोअी पढाये अुस समय दिमागको अधिक सावधान रखनेकी तालीम मिली और स्मरण-शक्तिको तो लाभ हुआ ही। दूसरे आठ दिनमें ही आखें ठीक होने लगी। मिट्टीने आखकी गरमी खीच ली। बिलकुल मिटनेमें तो लगभग अेक महीना लगा होगा। बापूजीकी अिच्छा तो अिस प्रकार चश्मा छुड़वानेकी भी थी, परन्तु वह नही हो सका।

आगाखा महल, पूना,
९–५–'४३

आज बापूजीने घूमनेका समय बदल दिया। ८ से ८॥ के बजाय ७॥ से ८॥ रख दिया। क्योकि २१ दिनके अुपवाससे आअी हुअी कमजोरी अब कम हो गअी थी।

आज बापूजीने दोपहरके १२ बजेका घटा सुनते ही कैसा भी काम छोडकर सो जानेके लिअे कहा था। बादमें बापूजी और बाके पैरोमें घी मलना था। लेकिन आज १२ से १ के बीच सोनेके बजाय मै दूसरे काममें लग गअी। और ठीक १ बजेका घंटा होते ही बापूजीके पास गअी, तो सुशीलाबहन घी मल रही थी। मैं क्षण-भरको स्तब्ध रह गअी। कुछ क्षण बाद मैंने बापूजीसे पूछा, आज अैसा क्यो किया? बापूजीका चेहरा बहुत गम्भीर हो गया था। अुन्होने मुझे अेक ही बात कही

"ये तेरे सेवा करनेके लक्षण मुझे नही दीखते। जिसे दूसरेकी सेवा करनेका अुत्साह हो अुसे पहले अपनी सेवा करनी चाहिये और

शरीरको मजबूत बनाना चाहिये। यदि शरीर मजबूत न हो तो हमें अपनी कमजोरियां नम्रतासे कबूल करके, शरीरकी आवश्यकतायें पूरी करके शरीर टूट न जाय अिसका ध्यान रखनेका प्रयत्न करना चाहिये। मैं जानता हूं कि तुझे रातमें जागना पड़ता है। बुखार आ गया। तेरा वजन ९५ से ९१ पौंड हो गया। आंखें ठीक ठीक काम नहीं देती। मेरा प्रयत्न शुरू न होता तो अीश्वर जाने क्या होता। लेकिन मुझे डॉ० गिल्डर और सुशीलाने चेतावनी दी। अभी भी कुनैनकी खुराक पर तू जी रही है, वर्ना मलेरिया कब तक चल सकता है? अिसलिअे मैंने तुझे १२ से १ बजे तक सोनेकी आज्ञा दी। पर तू दूसरा काम करने लगी। अपनी शर्तें तुझे याद है न कि मैं कहूंगा वैसा ही तू किया करेगी? परन्तु तूने नियम बदल दिया, अिसलिअे मैंने भी बदल दिया। जिसे सेवा करनी है, अुसे लोहे जैसा मजबूत शरीर बनाना ही पड़ता है। यदि तेरा शरीर अैसा मजबूत और सशक्त बन जाय कि चाहे जैसा खानेको मिले, चाहे जितना कम सोनेको मिले, तो भी कमजोर न हो तो मुझे कोअी अेतराज नहीं है। फिर मैं तेरे लिअे कोअी नियम नहीं बनाअूंगा। नींद न आये तो भी आंखें बन्द करके कलसे यहां मेरे पास ही सोना मंजूर करे, तो घी मलनेका हक तेरा बना रहेगा। नहीं तो मेरी कोअी सेवा तू नहीं कर सकती। सोनेके लिअे कहते ही मेरी गद्दीका तकियेके रूपमें अुपयोग करके सो जाना। मैं तुझे जगा दूंगा। तेरे आजके अिस अपराधको क्षमा करनेकी मेरी जरा भी अिच्छा नहीं थी, परन्तु तेरा करुणाभरा मुंह देखकर दया आ गअी। अिसलिअे अिस अपराधके होते हुअे भी तुझे मेरी शर्त मंजूर हो तो तू घी मल। अेक पैर तो सुशीलाने पूरा कर दिया, दूसरे पैरमें तू मल, और बाके पैरोंमें घी मलकर यहीं सो जा। नियम पालन करनेके लिअे बनाया जाता है।"

मुझे स्वप्नमें भी खयाल न था कि मेरे न सोनेकी बात अितना अुग्र रूप धारण कर लेगी। मैं अपना काम नहीं कर रही थी, बल्कि रसोअीघरकी अलमारियां साफ कर रही थी। मेरे मनमें यही भाव था कि कोअी दूसरा समय नहीं मिलता अिसलिअे अगर अेक दिन न

न सोमू तो क्या बिगड जायगा? पर यह तो बडा महगा पड गया। अिसकी जरा भी कल्पना नही की थी कि पाच-सात मिनट तक बापूजीके दु खी हृदयका अैसा अुग्र व्याख्यान सुनना पडेगा।

सारा काम वैसा ही पडा रहा। अैसा भाषण सुननेके बाद नींद तो आती ही कहासे? फिर भी मिट्टीकी पट्टी चढाकर अेक घटे लेटे रहना पडा। यह अेक घटा बडी मुश्किलसे बीता। अेक घटेमें अेक मिनिट बाकी रह गया, तब बापूजी बोले "जा, तुझे नीद आने ही वाली नही है। मनमें राम राम किया होता तो जरूर आ जाती। पर अब अेक मिनिटके लिअे तुझे माफ कर देता हू।" मै तुरन्त खडी हो गअी। पर मनमें यह चिढ तो थी ही कि अितनी छोटीसी गलतीके लिअे बापूजीने सुशीलाबहनसे घी मलवाना शुरू कर दिया, अिसके बजाय मुझे बुलवाकर अुसी क्षण सोनेके लिअे कह दिया होता तो? अुसके बदले अेक पैरमें घी मलवा लिया, और अूपरसे अितनी बातें सुना डाली। अिसलिअे बापूजीसे गुस्सेमें मैं कुछ बोली नही। शाम हो जाने पर अकेली ही अिधर-अुधर घूमने लगी। बापूजीने मुझे अपने पास बुलाया और कान पकडकर कहा, "मुह क्यो फुला रखा है?"

मैंने कहा, "आपने पहलेसे नोटिस क्यो नही दिया?"

बापूजी बोले. "जान-बूझकर, तू यह प्रश्न करेगी ही अैसा विश्वास था अिसलिअे। तू अब और अधिक समझेगी, अधिक नियमित बनेगी। पहलेसे नोटिस देता तो यह परिणाम नही आता। पहलेसे कब किसे नोटिस दिया जाय, अुसका भी प्रकार और पात्र देखना होता है। परन्तु मजेकी बात तो यह है कि तुझे कोअी डाटे तो भी मैंने तेरा मुह लम्बे समय तक चढा हुआ कभी नही देखा। लेकिन आज तो तूने दो बजेसे मुझसे बोलना बन्द किया सो सात बज गये। अिसलिअे मेरे साथकी कुट्टी अब तो छोडनी चाहिये न?" अैसा कहकर मुझे हसा दिया। मेरी और बापूजीकी फिरसे दोस्ती हो गअी। अिस तरह बापूजी बच्चोंके साथ बच्चे बनकर अुनके गुरु बन जाते थे।

१३

शिक्षिका बा

आगाखा महल, पूना,
११–५–'४३

आज रातको पूज्य बाकी तबीयत बिगड़ गअी थी। रातको ३ बजे अुन्होंने मुझे जगाया। अुनकी पीठ और सिरमें दर्द था। ३ से ५॥ तक मैं अुनके पास बैठी रही। ५॥ से ६ प्रार्थना और प्रार्थनाके बादका जो काम मुझे करना था, अुसे सुशीलाबहनने खुद करनेको कहा। मुझे अुन्होंने सोनेका हुक्म दिया। पर अुनकी बात पर कोअी ध्यान न देकर मैं काममें लग गअी। अुन्होंने बासे कहा। बाने कहा: "हां, बेचारी अब मेरी सेवा करके थक गअी होगी और जेलसे छूटनेका मन हो रहा होगा अिसीलिअे सोअी नहीं और काममें जुट गअी है, जिससे बीमार पड़े तो सरकार छोड़ दे। अिसमें अुसका क्या दोष? अुसका अपनी बहनोंसे मिलनेका मन होना स्वाभाविक ही है।" मुझे सुलानेका मानो बाने यह अुत्तम अुपाय ढूढ निकाला। मेरे मनमें यह डर था कि बा डांटेंगी। अुसके बदले अुन्होंने अुलटी बातें सुनाअीं, और अैसी सुनाअीं कि मुझे लगे कि अिस तरह अगर बा अुलटा ही समझती हैं तो मैं क्यों न सो जाअू। मेरे मनमें छूटनेकी जरा भी अुत्सुकता नहीं थी, फिर बाने अैसी बात कैसे कह दी? मैं चिढकर सो तो गअी, लेकिन यह बात मैंने बापूजीसे कह दी। बापूजीने कहा: "बाकी यही तो खूबी है कि सीधे चिढानेके बजाय परोक्ष रूपसे दूसरे पर अैसा प्रहार करना कि वह सीधा पड़े। हमारे यहां अेक पुरानी कहावत है — लड़कीको कहकर बहूको सुनाना। सयानी सास आजकलकी तरह तुरन्त नहीं झगड़ती थी। जो कुछ कहना होता वह अिस तरह लडकीको कहती कि बहू सुन ले। और बहू भी अैसी सयानी होती थी कि तुरन्त समझ जाती। अुसी तरह अैसा कहनेमें बाका सयानापन था। अगर तुझे डांटती तो तू

री पड़ती। जैसे सुशीलाकी बात पर तूने ध्यान नहीं दिया, वैसे ही बाकी बात पर भी तू ध्यान न देती तो बाका डाटना व्यर्थ हो जाता। बाने यह सुशीलाकी बात परसे जान लिया, अिसलिअे दूसरी युक्ति अपनाअी। बा और मैं क्या यह नही जानते कि तू हमारे लिअे मर-खपकर काम करनेको कितनी आतुर रहती है? परन्तु तुझे मार डालना तो है नहीं। अिस प्रकार जागरण हो तो नीदकी कमी तेरे जैसे बच्चोंको किसी और समय पूरी करनी ही चाहिये। तभी तेरा शरीर बनेगा। तब बाने लालन-पालनका — मौन्टेसोरीका — तरीका तुझ पर दूसरे रूपमें आजमाया और तुझे पूरे ३ घटे सुलाया। अैसी बा है। अैसी अैसी कितनी ही युक्तिया बाने मुझ पर आजमाकर मुझे जिन्दा रखा है, अैसा कहूं तो अनुचित न होगा। मैं अभी तक जीवित हू अिसका मुख्य श्रेय बाको है। बा जानती थी कि मैं अैसा कहूगी तो मनुको बुरा लगेगा और वह जरूर सो जायेगी। बुखार आने पर मा कड़वी दवा भी पिलाती है और मौका पड़ने पर मिठाअी भी खिलाती है न?"

बापूजी बाका कितना आदर करते थे, अिसका मुझे अिस प्रसगसे भान हुआ। दिनमें भी बाकी तबीयतमें कोअी खास सुधार मालूम नही होता था, परन्तु बाको मेरी पढ़ाअीमें विघ्न अच्छा नहीं लगता था। अिसलिअे अपने पास बैठाकर प्यारेलालजीसे मुझे पढ़ानेके लिअे कहा। प्यारेलालजी मुझे भूगोलके प्रश्न पूछ रहे थे। अुसमे अेक प्रश्न चीनके बारेमें था कि चीनके लोग पानी अुबालकर पीते है, पर अुसमें चाय किसलिअे डालते हैं? अिसका अुत्तर देनेमे मुझे थोडी देर लगी, तो बा तुरन्त बोल पड़ी "तू अितना भी नही समझती? रोज केटलीमें सबके लिअे तो चाय बनाती है। यदि पानी पूरा अुबला हुआ न हो और चाय डाल दी जाय तो रग नही आता, पानी ठीकसे अुबला है, अिसका प्रमाण चाय डालनेसे मिलता है। और चीनमें पानी खराब होता है, अिसलिअे अुबालकर पीया जाता है। पानी गरम करने और अुबालनेमें बहुत फर्क है। सिर्फ गरम करे तो सभव है अुसमें जीव-जन्तु रह जाय। कितने ही कीड़े तो सूक्ष्मदर्शक यत्रसे भी बहुत कठिनाअीसे दिखाअी देते हैं। अैसे कीटाणु पानीको अुबाले बगैर नही

भरते। अिसलिअे चाय डालनेके रिवाजसे अुबले हुअे पानीका अन्दाज आ जाता है। अैसी बातें बापूजी अफ्रीकामें बच्चोंको सिखाते थे, अिसलिअे मैं भी जानती हू। लेकिन अैसे पाठ बापूजी कहानीके रूपमें लड़कोंको सिखाते थे, जिससे लडके खेल-खेलमें सीख जाते थे। तेरी तरह किसीको भी पढ-पढ कर दिमाग खाली नही करना पडता था।"

अिस तरह बाने मुझे भूगोलका पाठ तबीयत खराब होते हुअे भी बिस्तर पर लेटे-लेटे और खासते-खासते पढा दिया।

शामको बापूजीने दिनभरमें मैंने जो कुछ पढा था अुसके बारेमें पूछा। मैंने कहा, "आज तो बाने बडे प्रेमसे मुझे अेक पाठ पढाया।" और अुबाले हुअे पानीकी सारी बात मैंने कह दी।

बापूजीने कहा "न जाने कितने साल पहले मैंने यह पाठ फिनिक्समें सिखाया होगा, पर बा बूढी हो गअी तो भी अुसे नही भूली।"

मैंने हसते-हसते कहा "अिसमे होशियार कौन? आप या बा? जिसने अितना याद रखा वही होशियार है न?"

"हा, अैसा कहकर बाकी प्रिय बनना हो तो बन जा।" कहकर बापूजी हसने लगे। "लेकिन मैंने तुझे कहा न कि मेरा तरीका अुलटा है। विद्यार्थियोंको कोअी विषय न आये तो मै शिक्षकोंको ही अधिक दोष देता हू। अिसलिअे अपने तरीकेसे मैं ज्यादा होशियार हुआ न?" बाकी तबीयतके समाचार जाननेके लिअे बापूजी बाके पास आये। (बाकी खाट, तो बापूजीके कमरेमें ही थी। परन्तु हम घूमने गये अुस बीच कुछ नअी बात तो नहीं हुअी यह जाननेके लिअे बापू बाकी खाटके पास आये।)

"क्यों, आज तो तुमने अिस लडकीको पढाया है? अब कौन कह सकता है कि तुम बीमार हो? और पढानेमें भी मैंने फिनिक्समें कुछ बातें कही होंगी, अुन्हींको याद रखकर सिखाया है न? पर यह लडकी तुम्हारी ही तारीफ करती है कि बा कितनी होशियार हैं जो अितना सब याद रखती हैं। तब मैंने खुद अपना पक्ष लेकर कहा कि मैं कितना होशियार हू। मैंने लडकोंको अिस तरह पढाया कि बाने कोअी काम करते-करते अुसे सुन लिया और बूढी हो गअी तब तक याद रखकर

आज तुझे यह पाठ सिखाया। बोलो, अब मैं होशियार हू कि तुम ?" अिस तरह बासे विनोद करके क्षण भरके लिअे बापूने अुनका दर्द भुला दिया।

बाने विनोद किया "अपने मुह मिया मिट्ठू कौन नही बनना चाहता ?"

प्रार्थनाका समय हो जानेसे बापूजी अुठे। रातको कहने लगे "मुझे यह बहुत पसन्द है। यदि तू बासे अफ्रीकामें मेरी दी हुअी शिक्षा ग्रहण कर लेगी, तब तो तू अुत्तम ज्ञान प्राप्त कर लेगी — वह ज्ञान हम सब जो तेरे शिक्षक बन गये हैं अुनसे भी अधिक अिस अपढ बासे तुझे प्राप्त होगा। लडकोको मैंने शालाओमें क्यो नही पढने दिया, अिस प्रश्नका अुत्तर मानो बाने आज तुझे शिक्षा देकर मुझे भी दे दिया है। मुझे अितना आत्म-सन्तोष हुआ कि फिनिक्समें रहे हुअे अुन लडकोको मैंने भले बैरिस्टरी पास करनेके लिअे विलायत नही भेजा, लेकिन अुन्होने अुससे कही अधिक ज्ञान प्राप्त कर लिया होगा। अिस बारेमें मैं तो नि शक था ही, फिर भी आजके अिस प्रसगसे और अधिक नि शक हो गया हू। और यह सारा प्रसंग भले विनोदमें ही हुआ हो, फिर भी अुसमें पूरा गाभीर्य था। मै मानता हू कि अिससे मेरी शिक्षकके रूपमें परीक्षा भी हो गअी। अिसके सिवा, यदि बीमारीमें बा तुझे अैसे पाठ देती रहेगी, तो मुझे विश्वास है कि बाकी आधी बीमारी दूर हो जायगी। अगर मातापिता अपने बच्चोको अिस तरीकेसे तालीम दें, तो बच्चोकी शिक्षाके लिअे अुन्हे जो भारी खर्च करना पडता है वह बहुत कम हो जाय, यह भी तू जानेगी। अिसमें भी यदि स्त्रिया बच्चोको अिस प्रकारकी शिक्षा दें, तो हिन्दुस्तानके बच्चोका आज ही अुद्धार हो जाय। यही देखनेके लिअे मैं तरसता हू और अिसीलिअे मैं स्त्रियोको अधिक महत्त्व देता हू।"

बापूजीने क्षणभरमें अिस सारे विनोदी प्रसग पर दूसरी दृष्टिसे सोचनेकी नअी ही दिशा देकर अेक नया पाठ पढा दिया। बापूजीका मस्तिष्क देशहितके प्रश्नोको कितनी सूक्ष्मतासे देखनेका काम कर रहा है, यह सोचते-सोचते मैं बापूजीकी बात सुनती रही। अेक क्षण पहले जो बात विनोदमे ही अुडाअी जा रही थी, वह

अितने अूचे आदर्शवाली हो सकती है, अिसकी कल्पना भी मुझ जैसी लडकीको कैसे हो सकती थी?

आगाखा महल, पूना,
१२–५–'४३

मैंने बापूजीसे रोज अेक कहानी सुनानेके लिअे कहा। पहले तो अुन्होंने मेरी बात हसीमें अुडाते हुअे कहा "अेक था चिडा और अेक थी चिडी।" अितनेमें सुशीलाबहन आअी। बापूजीसे बोली, यह कैसी कहानी? अिसके बजाय तो आप अपनी ही बातें सुनाअिये। बापूजी भी बहुत खुश थे। अुन्होंने अेक मजेदार बात कही "मैं विलायत जानेवाली स्टीमरमें बैठा। मैट्रिक पास करके गया था, लेकिन अंग्रेजी अितनी अच्छी नही थी कि सबके साथ खुलकर बात कर सकू। और शरम भी आती थी कि कही बोलनेमें भूल हो जाय तो लोग हसेंगे। अिसलिअे अधिकतर मैं अपने केबिनमें ही बैठा रहता। परन्तु ज्यो ज्यो मैं गोरे लोगोको देखता, त्यो त्यो मैं अपने आपको काला लगने लगा। फिर मैं स्नानागारमें गया। वहा गोरा बननेके लिअे खूब साबुन लगाया, ताकि कुछ तो खूबसूरत मालूम होअू। परन्तु अेक तो समुद्रकी हवा और अुस पर साबुन, फिर क्या पूछना? अेकदम दाद हो गया और अितना हो गया कि मैं तग आ गया। लदन पहुचकर डॉ० प्राणजीवन मेहतासे बात करनेमें भी शरमाया, क्योकि स्टीमर पर पराक्रम ही अैसा किया था। अन्तमें मैंने अुनसे सारी बात कही। अुन्होंने दवा तो दी, परन्तु खूब फटकारा भी।"

हम तो यह बात सुनकर अितनी हसी कि पेटमें बल पड गये।

आगाखा महल, पूना,
२०–५–'४३

बापूजीने मैक्सवेलको जो पत्र लिखा, अुसकी बात कही "भले वे कुछ भी करे, परन्तु अब तो अिन लोगोको भारत छोडना ही पडेगा। मुझे विश्वास है कि भारतको अब ये लोग अधिक समय तक गुलामीमें नही

रख सकेगे। मै तो कहता हू यदि हम लोगोको पकड न लिया होता, तो अिसी सन् '४२ में ही समझौता हो जाता। अिसीलिअे भाषण देकर आनेके बाद मैंने महादेवसे कहा था कि अिस बार यदि लिनलिथगोमें समझदारी होगी तो हमें गिरफ्तार नही करेगे। परन्तु विनाशके समय विपरीत बुद्धि ही सूझती है। जल्दबाजी करके सबको जेलमें डाल दिया, अिसीसे जाहिर होता है कि अब भारत अग्रेजी सत्ताको अधिक वर्ष तक सहन नही कर सकता। मै यह जानता हू कि लोगोने अहिसा और सत्यका मार्ग मन, वचन और कर्मसे पूरी तरह नही अपनाया। परन्तु अिसमें भी मै लोगोकी अपेक्षा अपना दोष अधिक पाता हू — मैंने स्वय यह मार्ग मन, वचन और कर्मसे नही अपनाया होगा। अिसीलिअे अिस बार अितनी अधिक तोडफोड हुअी। यदि हम अैक्यके साथ अहिसा और सत्यको बुद्धिपूर्वक अपना सकें, तो ये जेलके दरवाजे अपने-आप खुल जाय, अिसमें मुझे सन्देह नही।"

आज वर्षा होनेके कारण बाहर नही खेला जा सका। बरामदेमें ही खेले। मैंने रस्सी कूदनेका खेल खेला। डॉ० गिल्डरने भी यही खेल खेला। परन्तु वे जरासी देरमें ही हाफने लगे। पचास वर्षसे अूपरकी अुम्रमें वे हमारी तरह रस्सी कूदकर छलाग कैसे मार सकते थे? हम खूब हस रही थी, अिसलिअे बा आअी। डॉ० गिल्डर बहुत ही विनोदी स्वभावके है। बासे कहने लगे "बा, बच्चोके अिस बुड्ढे आदमीका मजाक अुडानेका समय आ गया है। देखिये तो ये लड़किया मुझे खेला रही है।"

बा हसने लगी और बोली "आप जैसोको भला वे क्या खेला सकती हैं? परन्तु यो कहिये न कि आज वर्षा है और कसरत नही हुअी, अिसलिअे रस्सी कूदकर व्यायाम कर लिया है।"

कूद-कूदकर सब थक गये तो बैठकर 'धमाल गोटा'* का खेल खेला। अिस छोटे बालकोके खेलमें सभी बडे लोग शामिल हो गये। अिस पर बा कहने लगी "अिस सरकारने जेलमें बन्द करके आप

* बच्चोका अेक खेल।

लोगोंके लिअे बडा आराम कर दिया है। (खेलमें बा और बापूके सिवा सब शामिल थे, वे दोनों देखते थे।) बचपनके खेल ताजा कर रहे हैं। आप पर सरकारकी कितनी कृपा है!"

डॉ० गिल्डर बोले "बा, मनु मुझे आज आनन्दी कौवेकी कहानी पढनेको दे गअी थी। बालवार्ताओंकी अिस पुस्तकमें मुझे वह कहानी बहुत ही पसन्द आअी।" (डॉ० गिल्डर पारसी होनेके कारण गुजराती जानते अवश्य थे, परन्तु गुजराती लिखने-पढनेकी आदत कम थी। मेरे हाथमें वह पुस्तक आते ही मैं अुन्हें मनोरंजनके लिअे पढनेको दे आअी थी।)

बाने कहा "आप जैसोंको मजा आवे अिसीलिअे तो कहीं यह न छपी हो? लो, अब आप कहानी पढने बैठे हैं! लेकिन आप ये पुस्तकें और कब पढते? अिसलिअे पुस्तकका भी सौभाग्य है कि आप जैसे बडे डॉक्टर अुसे अितने शौकसे पढ रहे हैं।"

डॉक्टर "परन्तु मेरा सौभाग्य और अंग्रेज सरकारकी मेहरबानी है कि बचपनके अधूरे रहे शौक अब बुढापेमें तो ताजा हो रहे हैं। बाहर रहने पर कितनी झंझटें और दौडधूप पीछे लगी रहती है।"

अिस प्रकार हमारा परिवार आनन्दसे दिन बिता रहा था। भले ही मैं सबसे छोटी थी। परन्तु ये सब अितने छोटे छोटे मित्र बन जाते कि अुस समय मैं यह भूल जाती कि बापू, बा, डॉक्टर गिल्डर, कटेली साहब, मीराबहन, प्यारेलालजी और सुशीलाबहन अितने बडे हैं, विद्वान हैं, नेता हैं और राष्ट्रके निर्माता हैं।

१४

प्रार्थना आत्माका भोजन है

आगाखा महल, पूना,
२६–५–'४३

बापूने आज घूमते-घूमते मुझे गीताके आठवें अध्यायका पाठ कराया। श्लोक पूरे होने पर सुशीलाबहन भी घूमने आ गअी, अिसलिअे बापूजीने कहानी कहना शुरू किया और पोर्ट सैयद तक अपने पहुचनेकी बात कहकर छोड दी। केवल सात ही मिनट तक कही।

परन्तु आज प्रात कालकी प्रार्थनामें मै नही अुठी थी, अिसलिअे घूमकर आने पर हाथ-मुह धोते समय बापूजीने पूछा. "क्यो, तुझे पता है मैंने तुझे कान पकडकर जगाया था, फिर भी तू नही अुठी?"

मैंने कहा "मै भजनके समय अपने आप अुठ गअी थी। आप अुठाने आये, अिसका मुझे कुछ भी पता नही है।"

बापू बोले "तुझे बार बार कहा तक कहा जाय कि पूरी नीद ले? रातको देरसे सोना और दिनको सोनेका ढोग करना। तेरे शरीरको तो दस घटे नीद जरूर मिलनी चाहिये, क्योंकि अभी वह बढ रहा है। परन्तु तू अपनी जिद छोडे तब न?"

मैंने कहा "रातको मै बाके साथ कैरम खेलने बैठी थी। लेकिन बा नही खेली। मीराबहन, डॉ० गिल्डर, कटेली साहब और मै चार खेले थे। अेक आदमीकी कमी पड रही थी, अिसलिअे बाने मुझे बुलाकर खेलनेको कहा। अिसीसे सोनेमे देर हो गअी।"

बापूने पूछा "कितने बजे थे?"

मैंने कहा "मै सोअी अुस समय १२॥ बज रहे थे।"

बापूजीने कहा. "तो वह नीद आज दिनमें पूरी कर लेना, ताकि प्रार्थनाके समय अुठ सके। प्रार्थना न तो अूघते-अूघते हो सकती है और न जबरन कराअी जा सकती है। प्रार्थनाके समय अीश्वर-

मय बननेकी कोशिश करनेका सुन्दर अवसर है। प्रार्थना आत्माका भोजन है। मैं तुझे वह भोजन देना चाहता हूं। परन्तु जैसे शरीर-रक्षाके लिअे दो दिन भोजन करे और चार दिन न करे तो शरीर कमजोर हो जाता है, वैसे ही प्रार्थना भी दो दिन करे और चार दिन न करे तो आत्माको अुसका पोषक तत्त्व नहीं मिलेगा और आत्मा भी शरीरकी तरह दुर्बल हो जायगी। हमेशा रातको सोते समय मनमें दृढ संकल्प करना चाहिये कि कुछ भी हो जाय प्रार्थनाके समय तो अुठना ही है। अिससे तू अपने आप अुठ जाया करेगी। यह बात मैं तुझे सुबह अुठते ही कहनेवाला था, परन्तु बादमें भूल गया। अब सोचा कि मेरी और बाकी मालिशके समयमें से पांच मिनट कम करके भी यह बात तुझे समझा दूं। अिसलिअे समझा दी।"

अिसके बाद मैं रातको सोनेसे पहले हमेशा निश्चय करके सोती कि प्रार्थनाके समय अुठना ही है और अिस संकल्पके आधार पर अकसर अपने आप जग जाती, कभी न जागती तो बापूजी जगाने आते ही थे। अुनके आते ही अुठनेकी आदत पड गअी। अिससे प्रार्थनामें मैं क्वचित् ही अनुपस्थित रहती।

पूज्य बाने अपने हस्ताक्षरोंवाला सबसे पहला पत्र आश्रममें रहनेवाली काशीबहन गांधीके नाम लिखवाया था। परन्तु अुसका कोअी अुत्तर नहीं आया। आश्रममें रहनेवाले लोगोंको ही बा अपने कुटुम्बीजन मानती थीं। परन्तु जेलके नियमानुसार सगे-सम्बन्धियोंको ही पत्र लिखा जा सकता था। यह शर्त किसीने मंजूर नहीं की थी। परन्तु मेरे आगाखां महलमें आनेके बाद पू० बाने अपवादके तौर पर यह नियम छोड दिया था। और मैं तो नागपुर जेलमें थी तभीसे सम्बन्धियोंको पत्र लिखती थी। अिस प्रकार मेरे लिअे तो आगाखां महलके नियम पालनेकी बात ही नहीं थी। अिसलिअे मैं और बा पत्र लिखती थीं। वे सारा पत्र मुझसे लिखवाती और नीचे अपना और बापूजीका नाम खुद ही लिख देती। अिससे आश्रमवासियोंके लिअे पू० बापूजीके पत्रकी कमी पूरी हो जाती थी। आज अिसी प्रकार डेढ बजे काशीबहन गांधीके नाम पत्र लिखवाया। अुसमें आश्रम-

वासियोके लिये कितनी सावधानीसे याद करके समाचार लिखवाये, जिसका नमूना नीचेके पत्रसे मिलता है (मैंने अुसकी नकल रख ली थी) :

"चि० काशी,

"तुम्हारे दोनो पोस्टकार्ड मिले। पढकर आनन्द हुआ। सबकी अपेक्षा तुम्हारा ही पत्र नियमित आता है। पढकर बहुत ही खुशी होती है। ता० १४–५–'४३ का पत्र आज मिला। अिस प्रकार पत्र बडी देरसे मिलते है। वहा सब अच्छे है, यह जानकर आनन्द हुआ है। किशोरलालभाअीका स्वास्थ्य अच्छा है, यह आनन्दकी बात है। अिससे पहलेका मेरे हस्ताक्षरोवाला पत्र तुम्हे मिला या नही?

"आर्यनायकम्जी नागपुरसे आ गये है, अिसलिअे अुन्हे और आशादेवीको मेरे आशीर्वाद। पत्र लिखो तो प्रभु तथा अबाको मेरे आशीर्वाद लिख देना। कल लक्ष्मीका पत्र आया था। लिखती है कि कभी कभी अबाके पत्र आते है। वैसे यहा सब मजेमे है। मेरी तन्दुरुस्ती अच्छी है। मेरी चिन्ता न करना। तुम्हारी तबीयत अच्छी होगी। बच्चू मजेमें होगा। यहा प्रार्थनाके समय तुम सबको खूब ही याद करती हू। चि० कहाना (कनु गाधी) क्या लिखता रहता है? शाक तो थोडा-बहुत सभी काटते है। अुससे कहना कि थोडा तू भी काट। भणसाली-भाअीसे पढता है या नही? बढअीका काम करने जाता है या नही? वैसे मेरे लिअे तो वह तरसता ही होगा, परन्तु मैं कैसे आअू? चि० कनुसे कहना कि तू सबसे मिलजुलकर रहा कर। लीलावतीसे कहना कि हमें अुसका सन्देश मिल गया है। अुससे कहना कि अुसे पसन्द हो सो करे। वैसे मेरा तो खयाल है कि वह कालेजमें भरती हो जाय। यह तो लम्बा रास्ता है। छगनलालको आशीर्वाद। लीलावती, गोमतीबहन, शारदा, आनन्द, बच्चू वगैरा सभी आश्रमवासियोको मेरा आशीर्वाद। कृष्णचन्द्रजी जैसे भी हो सके वैसे कहानाको अच्छी तरह रखें, फिर पसन्द न हो तो भेज दें। नागपुरमें सब बहनोको आशीर्वाद लिखना।

बाके आशीर्वाद तथा

बापूजीके शुभ आशीर्वाद"

िस प्रकार पू० बाका यह ेक ही पत्र बताता है कि ुनके लिे आश्रमवासी क्या थे?

[िस पत्रमें जिनका जिक्र आता है, वे सब परिचित् हैं। परन्तु बहुत लोग बार-बार ुनका परिचय पूछते हैं, िसलिे यही दे देती हू.

काशीबहन गाधी. ये बापूजीके भतीजे छगनलालभािकी पत्नी है। बापूजी और बाके साथ अफ्रीका और हिन्दुस्तानमें रही हैं। काशीबा बहुत मीठे स्वभावकी है। मेरी बडी तािी होती है। मै तो कौटुम्बिक दृष्टिसे ुन्हे तािजी कहती थी। परन्तु आश्रमकी दूसरी लडकिया काशीबा कहती और बा तो ुन्हे 'काशी बहू' कहकर मीठे लहजेसे बुलाती थी।

आर्यनायकम्जी ये नागपुर जेलमें थे और छूटकर सेवाग्राम आये थे। आशादेवी ुनकी पत्नी हैं। दोनो सेवाग्राममें तालीमी सघकी सुन्दर सस्था चला रहे है।

प्रभुदासभाी और अबाबहन ये काशीबहनके पुत्र और पुत्रवधू है। प्रभुदासभाी जेलमें थे। जेलमें ुन्होने बहुत कष्ट सहन किया। अबाबहन बाहर थी। ुनके दुःखद समाचार कभी कभी बाको मिलते रहते थे। िसलिे बाने ुनका ुल्लेख किया है। प्रभुदासभाी गाधीकी हाल ही में 'जीवननु परोढ' (जीवनका प्रभात) नामक बडी दिलचस्प पुस्तक (गुजरातीमें) प्रकाशित हुी है।

कहाना रामदास भाीका पुत्र है। पू० बाका लाडला लडका है। जैसा नाम है वैसे गुण हैं। तूफानी भी खूब और ूपरसे दादीमाका लाड। फिर पूज्य कस्तूरबा जैसी दादीमाकी तालीम, िसलिे शरारती होनेके साथ होशियार भी खूब। ुसने बासे शिकायत की थी कि "आप नही है, िसलिे आश्रमके व्यवस्थापक कृष्णचन्द्रजी मुझे शाक काटनेको कहते हैं।" यद्यपि बा आश्रममें थी, तब भी ुसे काम तो करना ही पडता था, परन्तु बैठे बैठे करनेका काम ुसे बिलकुल पसन्द नही था। िसलिे पू बाने पत्रमें कहानाका ुल्लेख किया है।

लीलावतीबहन यह बहन बचपनमें ही पू० बापूजी और बाके पास आ गअी थी। अिसलिअे बा और बापूजीके लिअे तो वे पुत्रीके समान ही थी। परन्तु अुन्होने '४२ की लडाअीके कारण पढना छोड दिया था। अिसलिअे वे अिस पसोपेशमें थी कि अब क्या करू? वे डॉक्टरीकी पढाअी कर रही थी और बाका हुक्म चाहती थी। अिसलिअे बाने अुन्हे सन्देश कहलवाया।

सब आश्रमवासी और आश्रमके बालक. नागपुरमें अभी तक आश्रमकी बहनें जेलमें थी — अुन्हे याद करके आशीर्वाद भेजे।]

सरकार पत्रोको सेन्सर करती थी, अिसलिअे बा कोअी भी अैसा वाक्य नही लिखती थी जिसकी सरकारको काटछाट करनी पडे। "नागपुर जेलकी बहनें" शब्द लिखावे तो सरकार पत्र ही न जाने दे। अिसलिअे "नागपुरमें सब बहनोको आशीर्वाद लिखना" वाक्य लिखवाया। पू० बापूजी और बा तो जेलके और सरकारके पुराने और परिचित मेहमान ठहरे, अिसलिअे वे वहाके सभी नियम भलीभाति जानते थे।

* * *

आज शामको जिन्नासाहबने बापूजीके साथ बातचीत करनेका सुझाव दिया था। और बापू पत्र लिखें अैसी सूचना 'डॉन' पत्रमें पढी थी। बापूजीको अखबार तो सभी मिलते थे। अिसलिअे अुन्होने जिन्नासाहबको पत्र लिखा था। अुसका सरकारकी तरफसे अुत्तर आया कि जब तक बापूजी अपना राजनीतिक आचरण न बदलें, तब तक सरकार अुनका पत्र जिन्नासाहबको नही भेज सकती। परन्तु सरकार अुसको अखबारोमें प्रकाशित कर देगी। अिस पर मैंने घूमते-घूमते बापूजीसे कहा, आप जानते तो थे कि सरकार आपका पत्र जिन्नासाहबको नही देगी, तब भी आपने पत्र क्यो लिखा? अिसमें आपका कितना अपमान हुआ? जिन्नासाहबको पत्र लिखना होता तो आपको लिखते।

बापूजीने कहा - "अिसमें मेरा अपमान नही हुआ। जिन्नासाहबने मुझे निमत्रण दिया, अिसलिअे मुझे पत्र लिखना ही चाहिये।

जिससे मैं छोटा नहीं बन जाता। और छोटा बन जाअूं तो भी क्या हुआ? अैसा लगे कि परिणाममें कुछ न कुछ सेवा होगी, तो काम भले कितना ही हलका हो, तो भी अुसे करना सबका फर्ज है। हम (महादेवभाअीकी) समाधि पर बारहवें अध्यायका रोज पाठ करते हैं, अुसमें भगवानने क्या कहा है? —

यो न हृष्यति न द्वेष्टि न शोचति न काङ्क्षति।
शुभाशुभपरित्यागी भक्तिमान् यः स मे प्रियः॥
समः शत्रौ च मित्रे च तथा मानापमानयोः।
शीतोष्णसुखदुःखेषु समः सङ्गविवर्जितः॥
तुल्यनिन्दास्तुतिर्मौनी सन्तुष्टो येनकेनचित्।
अनिकेतः स्थिरमतिर्भक्तिमान् मे प्रियो नरः॥

"जिसे हर्ष-शोक, राग-द्वेष नहीं और जो अिसकी चिन्ता नहीं करता कि कोअी भी काम सफल होगा या नहीं और कार्यसिद्धिके लिअे किसी भी तरहकी आशा नहीं रखता — जैसे कि मैं यह काम करूंगा तो मुझे बड़ा पद मिलेगा या रुपया मिलेगा अथवा मेरी वाहवाही होगी, अिस प्रकार कर्तव्यके पीछे जिसकी किसी भी प्रकारकी आशा नहीं — जिसकी दृष्टिमें शत्रु-मित्र सभी समान हैं और मान-अपमान सब अेकसा है। भक्त तो सब कुछ भगवानके भरोसे ही छोड़ दे। तभी हम भगवानके सच्चे भक्त बन सकते हैं। फिर हम प्रार्थनामें बहुत बार यह भजन गाते हैं:

साधो मनका मान त्यागो।
काम क्रोध संगत दुर्जनकी, ताते अहनिस भागो।
सुख दुःख दोनों सम करि जानै, और मान अपमाना,
हर्ष शोक ते रहै अतीता, तिन जगतत्त्व पिछाना।
अस्तुति निन्दा दोअू त्यागे, खोजै पद निरबाना,
जन नानक यह खेल कठिन है, कोअू गुरमुख जाना।

(यह सारा भजन बापूजी बोल गये) "यह भजन बड़ा महत्त्वपूर्ण है, परन्तु यह गानेके लिअे नहीं है। अिसका अर्थ और मैंने तुझे गीताके

वारहवे अध्यायके श्लोकोंका जो अर्थ बताया वह अेक ही है। परन्तु अिसे जो लोग आचरणमें ले आते हैं, अुन्हे अनोखा आनन्द आता है। अिसके भीतर जो पडता है, वह महासुखका अनुभव करता है। लेकिन देखनेवालेको अुस पर दया आती है। मैं तो अिसके भीतर पडकर अिसे आचरणमें अुतारनेके प्रयत्नमें लगा हू, अिसलिअे आज जब यह खबर आयी कि सरकार जिन्नासाहबका पत्र अुनके पास नही पहुचायेगी तो मुझे बडा आनन्द हुआ। लेकिन तू देखनेवाली है, अिसलिअे तुझे मुझ पर दया आती है कि बापूका कितना अपमान हुआ। और मुझे सीख देने आअी कि आप पत्र न लिखते तो अच्छा होता। परन्तु हरिका मार्ग वीरोंका मार्ग है, अिसमें कायरोका काम नही। अिसलिअे अीश्वरको जो करना होगा करेगा, हम क्यो चिन्ता करके अुसके प्रति अपनी श्रद्धा कम करे, और अपने दिमागको अैसी झझटमें फसावे ?"

यह सारी बात मुझे बापूजीने बहुत ही रसपूर्ण और ज्ञान-पूर्वक समझाअी। अन्तमें बापूजीने मुझसे कहा: "यदि तू अैसे प्रश्न करती रहेगी, तो मुझे बहुत अच्छा लगेगा। अिससे तुझे ज्ञान तो प्राप्त होगा ही, साथ ही अीश्वरकी पहचान भी होगी, और जिस ढगसे मैं तुझे तैयार करना चाहता हू अुस ढगसे तैयार कर सकूगा। यह बात अिसीलिअे कहता हू कि तुझे लगता होगा कि बापूजीको अैसी बात मैंने क्यों कही ? तेरे मन शायद यह विचार हो कि मैंने तो हसते-हसते यह बात कही थी, फिर बापूजीने मुझे अिस तरह अुलहना क्यो दिया ? अिसलिअे तुझे नि सकोच बनानेको अितना कह देता हू।"

सचमुच मुझे अैसा ही लगा था कि मैंने कहनेको तो कह दिया कि जिन्नासाहबको आपने पत्र क्यो लिखा ? अिसमें किसी हद तक मजाक भी था। लेकिन मजाकमें यह गाम्भीर्य आ गया और मनमें बापूजीसे प्रश्न पूछनेका पश्चात्ताप होने लगा। बापूजी मानो अुसे जान गये। अुन्होने मुझे निश्चिन्त कर दिया, अिसलिअे मेरे आनन्दका पार नही रहा।

१५

बा और बापूका खेल

आगाखा महल, पूना,
४–६–'४३

डॉ० सुशीलाबहन और डॉ० गिल्डरने मेरी आखें किसी अच्छे डॉक्टरको बतानेके लिअे हमारी जेलके सरकारी डॉक्टर कर्नल शाहसे कहा। अिसलिअे वे डॉ० पटवर्धनको लाये थे। डॉ० पटवर्धनने दो दिन तक आखोंकी परीक्षा की। नम्बर बढ जानेके कारण नये चश्मेकी आवश्यकता बताओ और आखोंमें डालनेकी दवा लिख दी। अिस पर बापूजीके पास कर्नल भण्डारीकी तरफसे यह सूचना आओ कि मेरे लिअे नया चश्मा लेना हो तो वह मेरे खर्चसे लिया जाय।

अिस समाचारको सुनकर बापूजीने कहा . "कैदीकी सम्हाल रखना तो सरकारका काम है। यदि आपको चश्मा दिलाना हो तो दिलाअिये। नही तो आखें चली जानेकी जिम्मेदारी अपने सिर अुठाअिये। यह ठीक है कि मनुके पिता अुसके लिअे चश्मा खरीद सकते है। वे अितने गरीब नही है कि चश्मा न खरीद सकें। परन्तु अिस लडकीकी सारी जिम्मे-दारी अिसके पिताने मुझे सौंपी है। और यदि बीमार कैदीकी हालतमें न होकर बाहर हो और मान लीजिये वह गरीब स्थितिका हो, तो धर्मादा खातेसे भी वह चश्मा ले सकता है। कैदीकी सम्हाल रखनेका काम सरकारका है। अुसे खुराक, कपडे वगैरा दिये जाते है। बीमार पडे तब अुसकी सार-सभाल भी की जाती है। सरकार अैसा न करे और मनुष्य मर जाय अथवा अुसके शरीरमें कोओ दोष पैदा हो जाय, तो अिसकी जिम्मेदारी सरकारकी ही मानी जायगी। और अैसा हो तो सरकार लोगोंकी निगाहमें अवश्य गिर जायगी।" अिसलिअे कर्नल भण्डारी और बापूजीके बीच थोडीसी लिखा-पढीके बाद सरकारने यह तय किया कि चश्मा दिया जाये।

आगाखा महलें, पूना,
१६–६–'४३

अभी अभी बरसात हो रही थी, अिसलिये बाहर कुछ खेला नही जा सकता था। अिस कारण अेक वडी मेज पर जाल डलवाकर पिंगपोंग खेलनेका कटेली साहवने सुझाव रखा। अिसके लिअे कोअी खास खर्च करनेकी जरूरत नही थी। अिसलिअे शामको अुसकी अुद्घाटन-विधि हुअी। अुद्घाटन वापूजीके हाथसे हुआ। अेक तरफ वापूजी थे और दूसरी तरफ वा। डॉ० गिल्डर साहव, मीरावहन और हम सव तो हाजिर थे ही। वापूजीने बल्ला हाथमें लेकर छोटीसी गेंदको — जो खास तौर पर पिंगपोंग खेलनेमें ही काममें ली जाती है — मारा। सामनेसे वाको मारना था। पत्ता नही वापूजी कव यह खेल खेले होंगे ? न तो वापूजी ठीकसे मार सके और न वा गेंदको लौटा सकी। हमारा तो हस-हसकर दम निकल रहा था। ७४–७५ वर्षके वापूजी मानो कोअी खिलाडी खेल रहा हो अिस तरह वोले "देखना, हा . मैं अभी धडाका करता हूं।" हम सवको खूब आनन्द आया। और शामको हम लोग अितने हसे कि घूमनेकी भी सुध न रही। आजकल अनेक वार अकल्पित आनन्द लूटनेके अनुभवोंमें पूज्य वापूजी और पूज्य वाको पिंगपोंग खेलते देखनेका दृश्य तो अनोखा ही था।

वापूजी हालमें ही सरकार द्वारा प्रकाशित 'कांग्रेसकी जिम्मेदारी' नामक पुस्तिकाका जोरदार जवाब देनेके काममें जुटे रहते हैं। अिसके लिअे अुन्हे गभीर विचार करनेमें दिमागकी बहुत शक्ति खर्च करनी पडती है। साथियोंसे सलाह-मशविरा करना पडता है, अुन्हे अपनी सत्य और अहिंसाकी सूक्ष्मता समझानेके लिअे चर्चायें करनी पड़ती हैं। अैसे गभीर वातावरणको भी वापूजी क्षणभरमें विनोदी वातावरणमें वदल डालते हैं।

आगाखा महल, पूना,
५–७–'४३

आजकल मैं पूज्य वाके लिअे अेक साडी पर कसीदा काढ रही हूं। यह साड़ी असलमें तो मदालसावहन (जमनालालजी वजाजकी पुत्री

और प्रो० श्रीमन्नारायण अग्रवालकी पत्नी) ने काढकर पूज्य वाके लिअे भेजी थी। परन्तु थोड़ा काम अधूरा रह गया था, अुसे पूरा करना है। पूज्य वा दोपहरको मेरे पास बैठी और देखने लगी कि मैं कैसे सुअी चला रही हू। पाचेक मिनट बाद अुन्होंने कहा "ला, अब मैं काढू। तू मुझे सिखा; देख मुझे आता है या नही?" साड़ी पर हाथ-कते सूतका ही कसीदा भरना था। अिसलिअे कच्चा डोरा बार-बार टूट जाता था। बा बोली "अिसे पहले बल दे दे तो नही टूटेगा।" बल देनेका मुझे आलस्य था, यह वा नही जानती थी और न मैंने बताया था। मैंने कहा "बा, अिसी तरह धीरेसे भरूगी, तो काम चल जायेगा।" अिस पर वे तुरन्त बोली . "बल देनेमें आलस्य आता है क्या? अिसमें मेहनत तो पडेगी, परन्तु बार बार सुअीमें डोरा पिरोनेमें आलस्य नही आता? अिसमें वक्त कितना खर्च होता है? समयका हमारे पास अभाव नही है। फिर भी अिससे डोरा बेकार जाता है। तू जितना काढेगी (लगभग दो गज काढना था), अुसमें पाच पूनियोका सूत नष्ट कर देगी। अैसी साड़ी मुझसे कैसे पहनी जायेगी? मदालसाकी बहुत समयसे अिच्छा थी कि अुसके हाथ-कते सूतकी साड़ी मैं पहनू। अुस बेचारीने हाथसे मेहनत करके यह साड़ी भेजी है। मैं पहनूगी और अुसे मालूम होगा, तो वह और श्रीमन् (श्रीमन्नानारायण अग्रवाल, जिन्हे वा 'श्रीमन्' के नामसे पुकारती थी) बडे खुश होगे।" आलस्य मेरे रास्तेमें आये बिना न रहा। अिसका मुझे पाठ मिल गया। और अन्तमें बल देनेके बाद ही वाने टाका भरना बहुत रसपूर्वक सीखा। पाचेक मिनिटमें तो अुन्हे आ भी गया। अिस पर मुझसे कहने लगी . 'मेरे जीमें आया कि देखू तू बाहर बरामदेमें क्या कर रही है। निकली तो तुझे काढते देखा। मैं न निकली होती तो पता नही अिस तरह तू कितना सूत बिगाडती? मेरे आनेसे सूत भी बच गया और मैं काढना भी सीख गअी।"

अितनी अुमरमें नअी कला सीख लेनेकी अुत्कठा और अिससे भी अधिक सूत बचा लेनेके आनन्दकी चमक अुनके मुख पर साफ दिखाअी दे रही थी।

आगाखा महल, पूना,
८–८–'४३

'अंग्रेजो, हिन्दुस्तानसे चले जाओ' वाला अैतिहासिक प्रस्ताव पास करनेको आज पूरा अेक बरस हो गया। हमने यहा ध्वजवदन किया। डॉ० गिल्डरने कराया था। हमने 'झडा अूचा रहे हमारा', 'सारे जहासे अच्छा हिन्दोस्ता हमारा' और 'वन्देमातरम्' गाया। अिसमें बा, बापूजी, हम सब और जेल सुपरिन्टेन्डेन्ट साहब भी शामिल हुअे। जमादार और सिपाहियोने भी हिस्सा लिया। सबने साथ मिलकर गाया और कैदियोको भोजन कराया।

आगाखा महल, पूना.
९–८–'४३

प्रात जल्दी ही यरवडा जेलसे जय-जयकारका नाद सुनाअी दे रहा था। पू० बापूजीको आगाखा महलमें आये पूरा अेक वर्ष हो गया। घूमते-घूमते बापूजी कहने लगे "कौन जाने क्यो, महादेव मुझे कहता था कि सरकार पकडेगी। गिरफ्तारीका वारण्ट आ गया, पुलिस अफसर आ गये, तब भी मुझे विश्वास नही हो रहा था। महादेव जब पुलिस अफसरको मेरे पास लाया, तभी भरोसा हुआ। आध घटेका समय मागा। महादेवने तो मानो दो महीने पहलेसे ही तैयारी करके सारी सामग्री जुटा रखी थी।"

बापूजी आज अिस प्रकार जब महादेव काकाको याद कर रहे थे, तब हमारा हृदय द्रवित हो अुठा।

तुलाअीका दिन था। पू० बापूजीका ११२ तथा बाका ९० पौड वजन निकला। कोअी न घटा और न बढा।

आगाखा महल, पूना,
११–८–'४३

बापूजीने आज मुझे सूचित किया कि, "महादेवकी पुण्यतिथि १५ तारीखको है। अुस समय तू सबके साथ गीतापाठ कर सके अिसलिअे

किसी भी तरह अठारहों अध्यायोंका अुच्चारण प्यारेलाल और सुशीलाके साथ मिल सके अिस तरह तैयार कर ले। अभी चार पाच दिन बाकी है। अिसलिअे जब जब मुझे या प्यारेलालजी या सुशीलाबहनको वक्त मिले, तब तब तू सब काम छोड़कर अुच्चारण सीखने बैठ जा।" अिसलिअे सारा दिन लगभग अिसीमें बीता।

दोपहरको पू० बाके पास अखबार पढ़ने नहीं गअी थी। परन्तु बरसातसे मारवाड़के अुपलेटा प्रदेशमें जो भारी हानि हुअी थी, अुसका जो ब्यौरा अखबारमें आया था, अुसे अूपर अूपरसे बाने पढ़ा। फिर मुझसे कहने लगी "ब्यौरा पढ़कर सुना। बादमें अपना काम करना।" ब्यौरेमें था कि मारवाड़में बीस-पच्चीस हजार आदमी बाढ़में बह गये, बेघरबार हो गये और पशुओंकी हानिका तो कोअी हिसाब ही नहीं है। अुपलेटा गांव बहनेसे बाल बाल बचा।

अैसी चौंकानेवाली बातें सुननेके बाद बा बोली. "अेक ओर बंगालमें भुखमरी, दूसरी तरफ हमारी अिस लड़ाअीमें कितने ही जवानोंके सिरोंका बलिदान हुआ होगा, कितने ही बच्चे मर गये होंगे, और तीसरी ओर यह प्रकृतिकी अतिवृष्टि! क्या भारतका भाग्य अैसा ही है?" बाकी तबीयत अच्छी नहीं थी। बिस्तर पर तकियेके सहारे बैठे बैठे सास लेते हुअे दुःखी हृदयसे कहने लगी. "अीश्वर बापूजीके सत्य और अहिंसाकी कब तक कड़ी परीक्षा करता रहेगा?"

आगाखां महल, पूना,
१४-८-'४३

पिछले दो तीन दिनसे पू० बाकी तबीयत अच्छी नहीं है; मन भी प्रफुल्ल नहीं रहता। अखबारोंके विस्तृत समाचार पढ़कर और सुनकर बहुत अुद्विग्न हो जाती हैं। बापूजी, डॉ० गिल्डर, मीराबहन, प्यारेलालजी और सुशीलाबहन बापूजी पर सरकार द्वारा लगाये गये आरोपोंका अुत्तर देनेमें लगे हुअे हैं। वे सब मिलकर चर्चाअें करते हैं। ये चर्चाअें बापूजीके बैठनेकी जगह होती हैं। और बाका पलंग बापूजी बैठते हैं अुसके सामने ही रहता है। अिसलिअे

वे सब चर्चायें सुनकर बहुत अुद्विग्न हो जाती है। अुनको लगता है कि "बापूजीने अैसा न तो कहा था और न किया था, फिर भी सरकार क्यो झूठे आरोप लगाती है? कहते है कि सत्यकी सदा जीत होती है। अमुक बात सत्य है, यह प्रत्यक्ष देखकर भी सरकार अैसे आरोप लगाये, तो अिसे क्या कहा जाय?" बापूजीकी सत्यतामें बाको यहा तक विश्वास था कि साथियोमें होनेवाली अिस सारी मत्रणाके जितने शब्द बाके कानो पर पडते और समझमें आते, अुन पर मन ही मन वे दुखी होती और मेरे सामने प्रकट करती। अलबत्ता, किसीको अिसका जरा भी खयाल होना कठिन था कि पू० बा यह सब सुनकर अपने मनमें गभीर विचार या भारी चिन्ता करती होगी। मैं अिन चर्चाओमें अितनी गहरी दिलचस्पी नही लेती थी। बहुतसी बातें तो मेरी समझनेकी शक्तिसे बाहर भी होती थी। फिर भी अपना काम करते करते अथवा पू० बा कुछ कहे तब, या अुनके पलग पर बैठकर अुनकी सेवा करते करते कुछ सुननेको मिल जाता था। अिसके सिवा खास कुछ नही। मैं पू० बा और बापूजीकी सेवा करने, खाने-पीने और पढनेके सिवा तेरह-चौदह वर्षकी अुमरमें गहरी राजनीतिक बातोमे क्या समझू? अिसलिअे अुनकी चर्चामें कोअी रस नही लेती थी। अिसका आज दुख और पश्चात्ताप भी है कि १९४२-४३ के दगोके लिअे काग्रेसकी जिम्मेदारीके आरोपका अुत्तर देनेमें पू० बापूजीको लगभग दो महीने लग गये होगे, अुस पर भी अन्तमें साथियोके साथ जो अैतिहासिक चर्चायें होती, अुनमें बापूजी जो मनोव्यथा अुडेलते अुसमें भाग लेनेका मुझे सौभाग्य नही मिला। फिर भी पू० बाके ये करुण अुद्गार अपनी डायरीमें सहज ही मैंने लिख लिये थे और अब अुन्ही परसे बापूजीकी अुस समयकी मनोव्यथाकी कल्पना करके आश्वासन प्राप्त करना होगा।

१६

महादेव काकाकी बरसी

आगाखा महल, पूना,
१५-८-'४३

आज महादेव काकाको अिस ससारसे विदा हुअे पूरा अेक वर्ष हो गया।

'कल बाको दिलका दौरा हुआ था। साथ ही सास लेनेमें भी बडी कठिनाअी होती थी। खासी भी थी। अिसलिअे रातको अच्छी नीद नही ले सकी थी। मै और सुशीलाबहन बारी बारीसे अुनके पास बैठी थी। परन्तु बापूजी काग्रेस पर लगाये गये अिलजामोंका सरकारको जवाब लिख रहे थे, अिस कारण सुशीलाबहनको दिनमें काफी काम रहनेसे बाने सुशीलाबहनसे कहा "मुझे तुम्हारी जरूरत पडेगी तब अवश्य बुलवा लूगी। मनु मेरे पास है।" बा सीधी तो सो ही नही सकती थी। छातीमें सख्त घबराहट रहती थी, अिसलिअे जब कभी थोडा आराम होता मेरे सहारे गोदमें सिर रखकर थोडी देरके लिअे नीद ले लेती थीं। सुशीलाबहन बीच बीचमें आकर देख जाती। अेक बार दवा भी पिला गअी। डॉ० गिल्डर भी रातको दो बार आ गये। बाको अिन लोगोकी चिन्ता थी। बोली, "आप मेरे लिअे क्यो जागकर आते है? मेरे लिअे जागरण क्यो करते हैं? आपको दिनमें भी काम करना पडता है।" बापूजी अेकाध बार आये वह भी बाको पसन्द नही आया। अुन्हें अिसका बडा दुःख था कि अुनकी बीमारीके कारण दूसरे लोग परेशान होते हैं।

अिस प्रकार सोते जागते रात बिताअी। प्रार्थनाका समय हो गया। मैं बाके पलग पर ही बैठी थी। मुझसे कहने लगी "तू अब प्रार्थनामें जा। सारी रात मैंने तुझे परेशान किया है। आज

तो महादेवकी पुण्यतिथि है न? अरे रे, वर्षको जाते क्या देर लगी? जाने लायक मैं थी और चला गया वह। मेरा दुनियामें अब क्या काम है? बेचारी दुर्गा और बाबलाकी भगवान कैसी परीक्षा ले रहा है! बापूजी बाहर होते तो अुन्हें बड़ा आश्वासन मिलता। खैर, जैसी भगवानकी मरजी। आज महादेवकी बरसी है। अिसलिअे प्रार्थनामें बैठ।" मैंने कहा: "मैं यहां बैठी रहूंगी।" बापूजीने भी कहा "मनु वहीं बैठी बैठी बोलेगी, तुम चिन्ता मत करो।" बाकी सांस फूलती थी, अिसलिअे मेरे सहारे बैठी थी। मैं अुनकी छाती पर हाथ फेरती थी। बेचैनी बहुत थी, तो भी वे प्रार्थनामें भाग लेनेका प्रयत्न कर रही थी।

यह बात तो सर्वविदित है कि बा और बापूजीके लिअे महादेव काका पुत्रवत् थे। प्रार्थनाके बाद बाको थोड़ा आराम मालूम हुआ, अिसलिअे सो गअी। मैंने धीरेसे अुनका सिर तकिये पर रख दिया और मच्छरदानी डालकर अपने काममें लग गअी।

लगभग अेक घंटे तक अुन्हें अच्छी नींद आअी। अुठते ही बोलीं "आज कैदियोंको भोजन करायेगी न?" मैंने कहा. "हां, सुशीलाबहन कैदियोंके लिअे भोजनका सामान निकाल रही है।"

हम लोगोंमें स्वजनोंकी मृत्युतिथिके दिन ब्राह्मण-भोजन होता है। लेकिन बा अिन बेचारे अपराधी कैदियोंको ब्राह्मणोंसे भी अुच्च मानती थीं, अिसलिअे सुबह ही सुबह मुझसे पूछा. "कैदियोंको खिलायेगी न?" पुराने जमानेकी, पुराने शास्त्रोंको माननेवाली रूढ़िग्रस्त बाके विचार कितने गहरे थे, यह अिन शब्दोंसे मालूम हो जाता है।

आज हम सबका अुपवास था। बापूजीने सिर्फ गरम पानी, अुसमें दो चम्मच शहद और जरासा सोडा डालकर प्रार्थनाके बाद पीया था। फलका रस आज छोड़ दिया। अिसलिअे मुझे कोअी खास काम न था। सुशीलाबहन और मीराबहन समाधिको फूलोंसे सजानेके लिअे पहले ही चली गअी थीं। मैं बाको दातुन करवाने और काढ़ा देनेके लिअे ठहर गअी थी।

ठीक ७।। बजे रोजके नियमानुसार बापूजी समाधि पर पहुच गये। मै नही गअी अिसलिअे बाने कहा · "तू आज न जाय यह मुझे अच्छा नही लगता। फूल चढाकर प्रणाम करना और गीतापाठ (गीताका बारहवा अध्याय वहा रोज बोला जाता था।) करके चली आना। अितनी देरमें मुझे कुछ नही हो जायगा। मेरे पास काढा रख जा मै खुद पी लूगी।"

मैने कहा "डॉक्टर साहब (डॉ० गिल्डर) और सुशीलाबहनने खास तौरसे कहा है कि बारी बारीसे बाके पास किसी न किसीका हमेशा रहना जरूरी है। अिसलिअे अुन लोगोके आनेके बाद मै प्रणाम कर आअूगी।"

मुझसे कहा "तू कहना कि मुझे बाने भेजा है। अितनी देरमें मुझे कुछ भी नही होनेवाला है, तू जा।"

मै समाधि पर गअी तब श्लोक बोले जा रहे थे। सबकी आखें बद थी। लेकिन मेरा स्वर अुसमें मिला अिससे बापूजीने जरा आखें खोली, फिर बद कर ली। अगरबत्तीका सुगधित धुआ चारो तरफ फैल रहा था। मीराबहन और सुशीलाबहन दोनो ठहरी कलाप्रेमी, अिसलिअे 'डेलिया' और दूसरे फूलोसे अुन्होने सुन्दर सजावट की थी। जिस भक्तिभावसे महादेव काका बापूजीके सम्मुख खडे रहते थे, ठीक अुसी भक्तिभावसे आज बापूजी दोनो हाथ जोडकर प्रभातमें सूर्योदयकी सुनहरी किरणोंके बीच आख बद करके गभीर मुखमुद्रामें खडे थे। अुस पर गीताजीके बारहवें अध्याय — भक्तियोगका पाठ हो रहा था। अिससे मेरे मनमें सहज यह खयाल आया कि अिस समय किसे किसका भक्त कहा जाय? महादेव काका बापूजीके भक्त या बापूजी महादेव काकाके भक्त?

जैसे ही श्लोक समाप्त हुअे, पहला प्रश्न बापूजीने किया "क्यो, तू आ पहुची? बाने तुझे भेजा होगा, अैसी है बा! आज महादेवकी बरसी है। अुसके कारण तू यहा न आ सके, यह बाको कैसे सहन होगा? यह बताता है कि बाके हृदयको पहुचा हुआ महादेवकी मृत्युका आघात अभी तक वैसा ही बना हुआ है।"

मैं समाधिसे सीधी बाके पास आयी। बापूजीके साथ सुशीलाबहन लौटीं। जिस कमरेमें महादेव काकाके शवको नहलानेके बाद गीतापाठ और प्रार्थनाके लिअे रखा गया था, अुसमें गीतापारायण करना था। अिसलिअे मीराबहन अुसे सजाने आयी। अुस कमरेका सारा फर्नीचर निकलवा दिया। कमरा साफ किया और जेलकी अेक चादर बिछा दी। जिस तरह अेक वर्ष पहले महादेव काकाका मृत शरीर सुलाया गया था और जिस ओर अुनका सिर था अुस ओर फूलोंसे बड़े कलामय ढंगसे ॐ बनाया, पैरोंकी तरफ † (क्रॉस) बनाया, अगरबत्ती सुलगाअी और सारा वातावरण पवित्र कर दिया। अिस बीच बापूजी और हम सब नहा-धोकर निपट गये, अिसलिअे अेक थाली और चम्मच लेकर ठीक दस बजे घंटी बजाअी। पू० बाने गीतापारायण हो तब तक घीका दिया जलानेको कहा था, अिसलिअे मैंने घीका दिया जलाया। अिस प्रकार सब प्रार्थनामें बैठे। कटेली साहब (हमारे सुपरिन्टेन्डेन्ट साहब) भी मौजूद थे। सबके बैठ जाने पर सदाकी भांति प्रार्थनाके रोज बोले जानेवाले श्लोक शुरू हुअे।

सबसे पहले जापानी श्लोक, 'नम्यो हो रेंगे क्यो' बोला गया। (अिस श्लोकका अर्थ होता है, बुद्ध भगवानको मेरी ओरसे नमस्कार।)

अिसके बादका श्लोक था

ओीशावास्यमिदं सर्वं यत्किंच जगत्यां जगत्।
तेन त्यक्तेन भुञ्जीथा मा गृधः कस्यस्विद्धनम्॥

अिस श्लोकके बाद कुरान शरीफकी आयत बोली गअी। बादमें जरथोस्त गाथा डॉ० गिल्डर साहब बोले।

(नम्यो, ओीशावास्य, कुरान शरीफकी आयत तथा जरथोस्त गाथा बापूजीकी सुबह-शामकी दैनिक प्रार्थनामें सदा बोले जाते थे। अुनका अर्थ आश्रम-भजनावलिके नये संस्करणमें दिया गया है।)

अुपरोक्त श्लोक बोले जानेके बाद 'वैष्णवजन तो तेने कहिये' भजन सुशीलाबहनने और मैंने शुरू किया। परंतु अिस भजनकी पहली ही कड़ी गाने पर गला भर आया। प्यारेलालजीने भजनका सुर संभाल लिया और मुश्किलसे भजन पूरा किया।

भजनके बाद मीराबहन कमरेके अेक कोनेमें तानपूरा लेकर बैठ गअी। अुन्होंने तानपूरेकी मीठी झनकारके साथ अपनी पहाड़ी आवाजमें रामधुन गवाअी।

बापूजी और बा अपनी कमजोर तबीयतके बावजूद आखें बन्द करके बैठे थे। अेक तरफ दिया जल रहा था, फूलोंका ॐ और † (क्रॉस) का पवित्र चिह्न थे, तथा अगरबत्तीका सुगन्धित धुआं सारे वातावरणकी पवित्रताके साक्षीके रूपमें फैल रहा था। बा और बापू पलथी मारकर आखें बन्द किये सीधे दोनो हाथोंकी अुगलिया स्वाभाविक रूपमें ही जोडकर ध्यानमग्न बैठे थे। बडा हृदयद्रावक दृश्य था। रामधुनके बाद मीराबहनने महादेव काकाका प्रिय अंग्रेजी भजन गाया

When I survey the wondrous Cross,
On which the Prince of Glory died,
My richest gain I count but loss,
And pour contempt on all my pride
See from His head, His hands, His feet,
Sorrow and love flow mingling down;
Did e'er such love and sorrow meet,
Or thorns compose so rich a crown ?

अिस भजनके बाद गीतापारायण शुरू हुआ। सारे गीतापाठमें अेक घटा दस मिनट लगे। गीतापाठके बाद .

विपदो नैव विपद. सपदो नैव सपद.।
विपद्विस्मरण विष्णोस्सपन्नारायणस्मृति ॥

अिस श्लोकके बाद सब काम पूरा हुआ। बा निश्वास लेकर बोली "पिछले साल अिस समय तो महादेवकी चिता जल रही थी और दुनियामें केवल अुसका नाम रह गया था।"

प्रार्थनाके बाद सुशीलाबहनने बापूजीको गरम पानी और शहद दिया। मैंने बाको पानी दिया। बादमें हम दोनो कैदियोंके लिअे बन रहे भोजनको देखने गअी। हम दोनोने भोजन बनानेमें सहायता दी।

भोजन सब तैयार हो गया, तो सब कैदियोको अेक बजे खानेको बैठाया। ३० कैदी थे। बा अिन ब्राह्मणस्वरूप कैदियोको खिलाने अेक कुरसी पर बैठी। भोजनमें खिचडी, कढी, शाक, हलवा और पकौडी बनाअी थी। सबसे पहले हरअेककी दस्तेकी चमकती हुअी तसलीमें कडछीसे कापते हाथो बापूजी हलवा परोसने लगे। बाकी चीजें डॉ० गिल्डर, मीराबहन, प्यारेलालजी, सुशीलाबहन और मैने बारी बारीसे परोसी।

पू० बाका ध्यान ठेठ सिरे पर गया, जहा मै पकौडिया परोसना भूल गअी थी। दूसरेको परोसना शुरू किया कि मुझे टोका "देख, अुस कैदीको तूने पकौडिया नही परोसी और यहा कैसे परोसना शुरू कर दिया? परोसना भी नही आता? कौन रह गया, अिसका ध्यान रखना चाहिये न?" (जरा नाराजीसे बोली)।

खासीके कारण और कल दिलका जो दौरा हुआ था अुसकी कमजोरीके कारण अशक्त बनी हुअी बाका ध्यान कहा पहुचा? और मै परोसनेवाली होने पर भी आखिरी आदमीको भूल गअी, अिससे मनमें खूब शर्माअी।

कुछ कैदी तो बीस बीस वर्षकी सजा पाये हुअे थे। वे कहते कि हमने पाप करते समय थोडा सोच-विचार किया होगा, अिसीलिअे अिन देवपुरुषके समान महात्माजी और माताजीके हाथकी प्रसादी खाकर हम पवित्र हो रहे है। अिस प्रकार अिन कैदियोको अितनी आजादीसे बा और बापूजीके साथ रहनेका सौभाग्य मिल गया था और बाहरके लोगोके लिअे बापूजीकी चरणरजके लिअे तरसते रहने पर भी वह सभव नही था। और जब कैदी बा और बापूजीको प्रणाम करते और अुन दोनो विरल विभूतियोके पवित्र आशीर्वाद देनेवाले हाथ कैदियोकी पीठ छूते, तब कैदियोके चेहरो पर अपने आपको धन्य समझनेका भाव दिखाअी दिये बिना कैसे रहता?

अिस प्रकार बा, बापूजी और कैदियोके बीचका यह पवित्र प्रसग शब्दोमें चित्रित करनेका काम यद्यपि मेरे लिअे बहुत ही कठिन है, फिर भी अुस पवित्र दृश्यकी मै साक्षी थी, अिसलिअे थोडेमें यह

कल्पना-चित्र यहा खीचनेका मैं प्रयत्न कर रही हू। अिसलिअे स्वभावत· ही मेरी आखोंके सामने यह दृश्य खडा हो जाता है और मुझे लगता है कि आज जब वे दोनो विभूतिया देहरूपमें ससारमें अदृश्य हो गअी है, तब जितने कैदियोंने अिस प्रकार बा और बापूजीके हाथोंसे परोसी हुअी प्रसादी खाअी होगी, जिनकी पीठ पर अुनके प्रेमपूर्ण हाथ आशीर्वादके रूपमें फिरे होगे, अुन अपराधी कैदियोंके मनमें कितना आत्मसतोष होगा? क्योंकि हत्या करके सजा पाये हुअे कैदियोंके भाग्यमें महात्माओंके अितने समीप रहना आम तौर पर दुर्लभ ही होता है। परन्तु अिस दृश्यकी कल्पना करनेवालोंके मनमें यह श्रद्धा सहज ही जमे बिना नही रहेगी कि दुनियामें दुर्लभ भी सुलभ हो सकता है।

कैदियोंको खिलानेके बाद बा और बापूजीने थोडा आराम किया। मैंने दोनोंके पैरोंमें घी मला। अितनेमें ३। बज गये। ठीक ३॥ से ४॥ बजे तक १ घटा सामूहिक कताअी-यज्ञ रखा था। अिसलिअे सबने जैसे सवेरे प्रार्थना की, अुसी तरह अिस १ घटेमें मौन लेकर काता।

ठीक ५॥ बजे बापूजीने अुपवास छोडा। (सबने २४ घटेका अुपवास किया था।) बापूजीके भोजन कर लेनेके बाद हम सबने खाया, घूमे, सदाकी भाति सायकालकी प्रार्थना हुअी और प्रार्थनाके बाद रविवार होनेके कारण बापूका सोमवारका २४ घटेका मौन-व्रत शुरू हुआ।

मौन भी सामान्यत· बहुतसे व्रतोंमें से अेक व्रत है और वह मौनदिन भी कुदरती तौर पर आज ही पडा, अिसलिअे सारे दिनमें भक्तको अर्पण किये गये पवित्र श्राद्धको कुदरतने अन्तमें सोते समय पूरा करा दिया।

मेरी रिहाअीका हुक्म

आगाखा महल, पूना,
३–९–'४३

पिछले कुछ दिनोसे मुझे बुखार रहता था और अुसके कारण वजन घट गया था। आज वजन लेनेका दिन था। मेरा वजन ४ पौड घट जानेसे मुझे सब चिढाने लगे कि अब मुझे सरकार अवश्य छोड देगी। और कटेली साहब अेक कागज टाअिप करके और अुस पर झूठे हस्ताक्षर करके मुझे छोडनेका हुक्म भी ले आये। डॉ० गिल्डर, कटेली साहब, प्यारेलालजी और सुशीलाबहन सब अेक हो गये। मै अकेली ही थी। मैंने सचमुच ही मान लिया और जैसे सब बालक निरुपाय होने पर रोनेका आश्रय लेते है, वैसे अेक कोनेमें बैठकर मै रोने लगी। पहले तो हिम्मत रखी, परन्तु जब सब लोग कहने लगे "अब रोयेगी, अब रोयेगी" तो मै सचमुच रो पडी। अिस प्रकार लगभग आध घटे तक अुन लोगोने मुझे तग किया। आध घटे बाद सब हसते हुअे बापूजीके पास गये। बापूजी कहने लगे: "जो चिढता है अुसे सब चिढाते है। यह तो झूठा कागज है, तुझे सब बना रहे है। तू रोती है अिसलिअे अिन सबको आनन्द आता है।"

मुझे थोडे दिनसे सुशीलाबहन अिग्लैण्डके अितिहास और भूगोलका (अग्रेजीकी छठी क्लासका अभ्यासक्रम) विषय शामको ६ से ६–२० तक बारी बारीसे पढाती है। आज मै काममें लगी हुअी थी। ६–१० हो गये अिसलिअे १० मिनिटमें क्या पढा जा सकता है, यह सोचकर मै वहा न गअी और दूसरा काम करने लग गअी। और सदाकी भाति ६॥ बजे बापूजीके साथ घूमने चली गअी। बापूजी कहने लगे

"अेक बार अपने मनमें जो निर्णय कर लिया हो अुसे छोडना नही चाहिये। तभी हमारे जीवनकी प्रगति होती है। तू काम पूरा न कर पाती हो अथवा किसी दिन कदाचित् अपवादके रूपमें नियम तोड़ना पडे, तो अुस दिन आकर मुझसे कह दिया कर। अिससे तू

नियम पालन सीख जायगी। अिसी तरह वक्तकी पाबन्दी सीखनी चाहिये। अैसी शिकायत है कि तू खानेके लिअे भी ठीक ५।। बजे नहीं जाती और पाच-सात मिनिटमें ही खा लेती है। पाच-सात मिनिटमें भला क्या खाती होगी? यो कहना ज्यादा ठीक होगा कि तू जैसे तैसे खाना निगल लेती है। मैं सोच ही रहा था कि अिस लडकीको मलेरिया छोड़ता क्यों नही? आज मुझे पता चला कि तू बिना चबाये जैसे तैसे खा लेती है, अिसीलिअे बीमार पडा करती है, खानेमें ठीक आधा घटा लगाना ही चाहिये। अीश्वरने तुझे दात सदुपयोगके लिअे दिये है, अीश्वरका काम करनेके लिअे दिये हैं। दातोंसे अच्छी तरह चबाया जाय, और परिणामस्वरूप तन्दुरुस्ती अच्छी रहे और शरीर अच्छा हो तो ही सेवा हो सकती है। अिसलिअे हमें हरअेक बात अिस भावनासे करनी चाहिये कि सब कुछ अीश्वरके कामके लिअे करना है। साथ ही जैसे तू कोअी नया कपडा अिस्तेमाल न करे और रख छोड़े तो वह किसी समय सड जायगा, अुसी तरह दातोंका सदुपयोग नहीं करेगी तो वे भी सडकर गिर जायगे। मैं भी यदि तेरे दातोंकी तरह अपने शरीरसे अिस प्रकार घूमनेका व्यायाम न कराअू, तो जल्दी ही बिना मौत मर जाअू। खुद होकर बिना मौत जल्दी मरना भी पाप है, क्योंकि बिना मौत तो हम अपनी पूरी सभाल न रखें तो ही मरते हैं। (मानसिक और शारीरिक सावधानी दोनो मेरी दृष्टिमें अेक है।) और सेवा करनेके लिअे अयोग्य ठहरना यह तो पाप ही हुआ न? थाली पर खाने बैठें तब और कौर मुहमें डालनेसे पहले अीश्वरकी प्रार्थना करनी चाहिये। अीश्वर हमें खानेको देता है, अत. अुसका अुपकार मानकर खाना चाहिये। अैसे सब नियम तू पालेगी तो तुझे मुह बिगाड़ कर कुनैन और अरडीके तेलकी खुराक पीनी पडती है, वह न पीनी पड़ेगी और तेरा शरीर मजबूत हो जायगा। यह याद रखना कि आज तो कटेली साहब झूठा हुक्म लाये थे, परन्तु अधिक बीमार हो जायगी तो सच्चा हुक्म भी आ जायगा।"

और दूसरे हफ्ते सच्चा हुक्म आ भी गया।

*

आगाखा महल, पूना
५–९–'४३

आज पारसियोका नया वर्ष है। अिसलिअे सुशीलाबहनने प्रार्थनाके बाद तुरन्त डॉ॰ गिल्डरके कमरेके पास चौक पूरा। बाहर आंगनमें भी पूरा। ६॥ बजे कटेली साहब फूलोका हार और दूसरी भेंटें लेकर डॉ॰ साहबको देने नीचे आये। बा, सुशीलाबहन और मैंने अुन दोनोको बारी बारीसे तिलक किया और सूतके हार पहनाये। बादमें अुन दोनोने बा और बापूजीके पैर छुअे। चाय पीकर हम सब बैडमिंटन खेलनेको नीचे अुतर रहे थे कि अितनेमें बाने मुझे बुलाकर कहा, "दोनोंके लिअे आज कोअी मिठाअी बनाना।" दूसरी बहुतसी मिठाअी थी, अिसलिअे दोनोंने मना कर दिया। अिस पर बा कहने लगी, "आप क्या जानें? शकुनकी तो बनानी ही चाहिये न?" दोनो चुप हो गये। बाने मुझे पूरणपोली बनानेको कहा।

जब मैं खेलकर लौटी और बाके सिरमें मालिश करने लगी, तब वे बोलीं, "देख, बेचारे कटेलीको भी आज बारह महीनेके त्योहारके दिन अपने बालबच्चोसे अलग रहकर हमारी तरह जेल ही भोगनी पड रही है। गिल्डरकी तो कोअी बात नही। ये दोनो बाहर होते तो जैसे और सब नववर्षके दिन आनन्द मनाते हैं वैसे ये भी मनाते। अिसलिअे हम कुछ न बनायें तो ठीक नही होगा। अत मेज पर डेढ बजे खाने बैठें, तब गरम गरम पूरणपोली बनाना।"

अशक्त बा अिन दोनोको खिलानेके लिअे डेढ बजे मेज पर आअी और आग्रहपूर्वक भोजन कराया।

असल बात यह है कि जबसे बापूजी और बाने अपना जीवन-परिवर्तन किया, तबसे अुनके लिअे सब दिन अेकसे हो गये थे। फिर भी बा दूसरोंके त्योहारोका प्रसग अिस प्रकार व्यावाहारिक रूपमें साध लेती थी।

आगाखा महल, पूना,
१६–९–'४३

आज दोपहरको जब मैं बापूजीके पैरोंमें घी मल रही थी तब कटेली साहब आये। मुझसे कहने लगे "अिस बार तो सचमुच तुम्हे छोडनेका हुक्म आया है।"

मैंने कहा . "आप सबको अिसके सिवा और कोअी काम ही नही है। मुझीको चिढाना आता है? आप भले ही मजाक करे, अब मैं पहलेकी तरह रोनेवाली नही हू।"

अिस प्रकार बात चली अितनेमें तो मुझे चिढानेवाली मडली जमा हो गअी। कटेली साहबने बापूजीके हाथमें कागज रखा, अिसलिअे मैंने सोचा कि मजाक ही होता तो बापूके हाथमें झूठा कागज हरगिज न रखते। क्या मुझे सचमुच छोड दिया जायगा? मैं बोल अुठी और छूटनेकी घबराहट फिर पैदा हो गअी।

सब कहने लगे "चलो अब मनुको बिदाअी देनी पडेगी।"

पू० बा भी पलग परसे वहा आ गअी, जहा बापूजी नीचे सो रहे थे। बोली "तो मनुबाअी चली जायगी? मुझे पत्र लिखती रहना। अब सीधी कराची जाकर पढना। सबसे अेक बार मिल आना। बेचारी तेरी बहनें तुझसे मिलनेको कितनी तरस रही होंगी? वे खुश हो जायगी। तूने हमारी बहुत सेवा की है। परन्तु सरकारके आगे हमारी क्या चले?"

यह पिछला वाक्य बा बोली कि बापूने कहा "परन्तु अिसमें तो अैसा है कि तुझे सी० पी० सरकार छोड रही है। तू सी० पी० सरकारकी कैदी है; नागपुरमें दूसरी बहनोको छोड रहे होंगे अिसलिअे तेरा हुक्म यहा भेजा है। परन्तु यदि तुझे यहा रहना हो तो तुझ पर जो अकुश हैं वे जारी ही रहेंगे। और छूटना हो तो किसी भी समय छूट सकती है।"

मैंने कहा "मुझे नही जाना।" मेरे आनन्दका तो पार नही था। अैसा हुक्म होगा, यह कल्पना कैसे हो सकती थी? मनमें मैं

अिस डरसे काप रही थी कि बा-बापूकी पवित्र सेवाका अैसा अलभ्य अवसर हाथसे छिन जायगा। मैंने बादमें साहस करके कहा "आप सब भले ही मजाक कीजिये। पहली बात तो यह है कि मुझे स्वप्नमें भी खयाल नही था कि मुझे आगाखा महलमें रहनेको मिलेगा। पूर्वजोंके पुण्यबलसे और पू० बा तथा बापूजीके प्रेमके आकर्षणसे मैं यहा आ गअी। अीश्वर कोअी अैसा अनुदार नही है कि अैसी अमूल्य सेवाका अवसर देकर तुरन्त ही वापस ले ले। तब तो अीश्वर पर मेरी जरा भी श्रद्धा न रहती। परन्तु हुक्म भी कितना बढिया है? कोअी किसीका भाग्य थोडे ही छीन सकता है?"

बा तो बहुत ही प्रसन्न हुअी। कटेली साहब कहने लगे "यह तो तू बहुत रोयेगी, अिसीलिअे अितनी राहत मागी थी।" (मजाकमें ही कहा) सब हस पडे।

फिर थोडी देरमें बा बोली "तू अितनी छोटी अुमरमें क्यो हमारे पीछे परेशान होती है? बाहर जायगी तो ज्यादा पढ-लिख सकेगी।"

मैंने आखिरी जवाब दे दिया "मुझे यहा जो शिक्षा मिलती है, वैसी ससारमें कही भी नही मिलेगी। मुझे अिस तरह नही जाना है।"

बा बोली "तेरे जी में क्या है, यह जाननेको मैं तुझसे जिरह कर रही थी। अिसमे रोनेकी क्या बात है?"

कटेली साहबने बापूजीसे कहा "मनुके पिताजीसे पुछवाना पडेगा न?"

बापूजी बोले: "अिस लडकीका पिता यानी मेरा भतीजा या बेटा। दोनो अेक ही बात है। अुसका मुझ पर अगाध विश्वास है। अिस लडकीके लिअे तो जो मेरी अिच्छा है वही अुसकी अिच्छा है। अुसे मैं अच्छी तरह जानता हू। लडकियोको अितनी स्वतत्रता देनेवाले बहुतसे पिताओंमें वह अेक है। अितनी छोटीसी मनुको जेल जानेसे भी अुसने नही रोका। जहा तक मैं जानता हू मनु और अिसकी बहनोको अिनके मा-बापने कभी किसी बातकी कमी नहीं रहने दी। अिसलिअे अिसके पिताके बारेमें मनु और मैं दोनो निश्चिन्त है।"

बापूजीने फिर पूछा कि तेरा थोड़ा भी विचार बाहर जानेका हो तो कह देना। मैंने कहा, अब मुझे पूछेंगे तो मैं अुत्तर ही नहीं दूंगी। अिन सब बातोंके कारण बापूजीको सोनेमें दो बज गये। ढाअी बजे अुठकर अेक रद्दी कागज पर पेंसिलसे कटेली साहबको देनेके लिअे मुझे नीचेका मसौदा बना दिया। वह मसौदा अैतिहासिक मसौदेके रूपमें मेरे पास आज भी अुसी हालतमें सुरक्षित है।

"आदरणीय कटेली साहब,

"आपने मुझे खबर दी है कि सी० पी० सरकारकी कैदमें होनेके कारण वह मुझे छोडना चाहती है। परन्तु यदि मैं अपनी मरजीसे यहां रहना चाहूं, तो वर्तमान अंकुशोंके नीचे रह सकती हूं। अिसका जवाब आपने मुझसे मांगा है।

"मेरा जवाब यह है कि यहां मैं पू० कस्तूरबाकी सेवाके लिअे ही आअी हूं और जब तक अुनकी मरजी हो तब तक यहां रहना चाहती हूं और वर्तमान पाबन्दियोंको स्वीकार करती हूं। मैं समझती हूं कि यदि मेरी अिच्छा छूटनेकी हो, तो मैं छूट कर जा सकती हूं। अिसलिअे मेरे पिताजीकी अिच्छा जाननेकी बात नहीं रह जाती। परन्तु जब अुन्हें पत्र लिखूंगी, तब अुन्हें यह बता दूंगी कि अभी मेरी अिच्छा यहीं रहनेकी है।"

यह मसौदा बापूजीने लिख दिया और मैंने अपने अक्षरोंमें लिखकर कटेली साबहको सौंप दिया। अिस मसौदेमें अंतिम वाक्य अिसीलिअे लिखा कि हमारे पत्र बम्बअीके गृहविभागके अफसर श्री अायंगर पास करें तभी जाने दिये जाते हैं, नहीं तो काट-छांट करते हैं। सेंसर करते वक्त वे काट न दें अिसीलिअे मैंने यह सफाअी कर दी। मैंने तो जैसे बडी आफतसे बच जानेका आनन्द अनुभव करके सच्चे हृदयसे अीश्वरका अुपकार माना। बापूजीने यह मूल मसौदा मुझे अपने ही पास रख छोडनेकी सूचना की और डायरीमें अुसकी नकल कर लेनेको कहा।

अिस सारे काममें दोपहरको सुशीलाबहनके पास अंग्रेजी नही पढी जा सकी। अंग्रेजीका वर्ग न छूटे और नियमकी रक्षा हो सके, अिसके लिअे बापूजीने मुझे अपने पास पढनेके ४।। से ५ बजेके समयमें से १५ मिनट सुशीलाबहनसे पढ लेनेको दिये। अिससे अंग्रेजीका वर्ग भी नही छूटा और संस्कृतका वर्ग भी (जो मैं बापूजीसे पढती थी) नही छूटा। और ५ से ५।। तक बाको भागवत सुनानेके कार्यक्रम पर ठीकसे अमल हो सका। "भले सब कुछ छूट जाय, परन्तु बाको भागवत सुनानेके समयमें से अेक भी मिनिट न तो तुझे किसीको देना चाहिये और न किसीको तेरा अेक मिनिट लेना चाहिये, क्योंकि बाके लिअे वह अेक खुराक है। बा रामायण और भागवत सुनकर ही आनन्द प्राप्त करती है," बापूजीने कहा।

१८

'बा अैसी है!'

आगाखा महल, पूना,
१७-९-'४३

आज बाने मणिलाल काकाको अेक तार दिया। (मणिलालभाअी गांधी बापूजीके दूसरे पुत्र हैं।) क्योंकि अुनका बहुत समयसे दक्षिण अफ्रीकासे कोअी पत्र नही आया था। और वहां लडाअी तो समय समय पर किसी न किसी बातको लेकर होती ही रहती है, अिसलिअे बाको बडी चिन्ता हो रही थी। तार दक्षिण अफ्रीका भेजनेके लिअे मैंने कटेली साहबको दिया। परन्तु शामको वे बापूजीके पास आये और यह हुक्म लाये कि तारके दाम कस्तूरबासे लिये जाय।

बापूजी कहने लगे, "बेचारी बाके पास तो अेक पाअी भी नही है। चाहिये तो अुसकी अेकाध खादीकी साड़ी बेच दीजिये। तीनेक रुपये तो जरूर मिल जायेंगे।"

सब खिलखिलाकर हसने लगे। कटेली साबह् लौट गये और अिस बारेमें सरकारको लिख भेजा। अन्तमें जवाब आया कि आगाखा महलके खर्चमें से अितनी रकम नामे लिख दी जाय। बापू हसते-हसते बोले "सरकार जानती नही होगी कि पत्थरसे पानी निकले तो ही मेरे पाससे रुपया निकले। असलमें अैसी बातें पूछी ही नहीं जानी चाहिये।"

अुपरोक्त मनोरजक प्रसगके आधार पर बापूजीने बासे कहा: "मुझे तो लगा कि तेरी अेकाध साड़ी बेचनेको देनी पड़ेगी। परन्तु यह नौबत नही आयी! मेरे कच्छके तो (बापूजी २॥ गज लम्बा और ३२ या ३६ अिंच अर्जका कच्छ पहनते थे।) तार जितने दाम कोअी नही देगा, परन्तु साडीके तार जितने दाम मिल जाते।" यों कहकर थोड़ी देर बाको हसाया।

काग्रेसके विरुद्ध लगाये गये आरोपोंका जवाब बापूजीने भिजवा दिया था। अुसकी छोटीसी पहुच सर टॉटनहामकी तरफसे यह मिली कि, "आपका जवाब मिल गया। जवाब देनेका विचार किया जा रहा है।"

यह पत्र पू० बा बैठी थीं तभी आया था। अिसलिअे वे कहने लगीं: "आप सबने रातको जागरण कर करके अितना बड़ा अुत्तर दिया है। परन्तु जिसे सच-झूठसे कोअी मतलब नही अुस पर आपके अुत्तरका क्या असर होगा? आपने यह लड़ाअी छेड़ी, अिसलिअे बेचारे कअी लोगोंको मार डाला। व्यर्थ अैसे पत्र लिख लिखकर सरकारसे अपना अपमान कराना है!"

बापूजी बोले. "अिसमें हमारा अपमान बिलकुल नहीं है। सत्यका कभी अपमान नही होता।"

बा. "यह बात सच है कि सत्यका अपमान नही होता, मगर देखिये तो अुपवासके दिनोंमें सरकारने कैसे पत्र लिखे? अभी तक भी वह मानती है कि अुसकी कोअी भूल है?"

अन्तमें बापूजीने हसते हसते कहा. "अेक अुपाय है। चल, आज मैं और तू सरकारको माफीनामा लिख दें।"

बा चमककर बोली "बस, रहने दीजिये, मैं क्यो माफी मागू? मैं मानती ही नही कि मैंने कोअी अपराध किया है।"

बापू "तो मैं माफी माग लू?"

भोली बा और भी चिढी "अिस मनु और सुशीला जैसी लडकिया, अिनसे भी छोटी कितनी ही फूलसी सुकुमार लडकिया और लडके जेलोमें पडे है और आप माफी मागेगे?"

बापूजी अिस तरह गभीर मुह बनाकर बाका अुत्तर सुन रहे थे, मानो सचमुच ही माफीकी बात कर रहे हो। बा मानती थी कि बापूजीके स्वाभिमान — सत्यकी किसी भी कीमत पर रक्षा होनी चाहिये, और कदाचित् माफी मागें तो कितनी बदनामी हो? अैसी बदनामी बा सहन ही कैसे कर सकती थी?

वे चिढकर जोरकी आवाजमें बोली, अिसलिअे अुन्हे खासी आ गअी। मैंने बापूजीसे कहा "आपने बाको क्यो चिढा दिया? देखिये, कैसी खासी अुठ आअी है?"

बापूजी . "तेरी बात भी सच है। परन्तु देख तो सही, बा कितनी भोली और निर्दोष है! मैंने हसीमें कहा था, परन्तु अिसने सच समझ लिया। अपनी जान चली जाय तो भी वह मुझे नही छोडेगी। मेरे पीछे पीछे चलनेका ही अेक महामत्र अिसने ग्रहण कर लिया है। हर वक्त मेरे पीछे चलनेमें अुसने हमेशा बुद्धिसे ही काम लिया हो सो बात नही। फिर भी जो कुछ किया, वह मेरे प्रति श्रद्धा रखकर ही किया है। परन्तु मेरी मान्यता है कि बुद्धि कितनी ही तीव्र क्यो न हो, अगर हृदय पाषाण जैसा हो तो बुद्धि बहुत बार काम नही आती। बुद्धि हृदयके पीछे चलनेवाली वस्तु है। तूने देख लिया न कि मैंने जरासी माफीकी बात की, अुसमें अिसे हम दोनोकी मानहानि मालूम हुअी और वह नाराज हो गअी। वह मुझे कितना समझती है? बाके हृदयकी शुद्धतासे ही मैं अितना सुशोभित हुआ हू। लोगोंने मुझे महात्मापद दिया है, अुसका श्रेय भी मैं तो मानता हू कि बाको ही है। वह मेरा साथ न देती तो मैं कुछ भी न कर सका होता। जैसे गाडीके दो पहियोंमें से अेक पहिया कामका न हो तो गाडी बिलकुल नही

चल सकती, अेक पहियेमें जरासी खामी हो, कहीं टूट-फूट/हो गअी हो, तो भी वह अच्छी तरह नही चल सकती। यही बात सासारिक जीवनकी भी है। भले बा बहुत पढी हुअी नही है, परन्तु हिन्दू स्त्री जिस पतिव्रता-धर्मको सब धर्मोंसे श्रेष्ठ मानती है, अुसे बाने अपनाया है। मैंने जब कभी भूले की हैं, तब बाने मुझे कितनी ही बार समय पर सचेत किया है। अिस प्रकार मैं तुझे यह समझा रहा हू कि बाने पतिव्रता-धर्मको पोथीधर्म नही बना डाला। जब मैं दक्षिण अफ्रीकामें था तब हमारे यहा अेक पचम जातिके मा-बापका अीसाअी लडका क्लर्कका काम करता था। वहाके मकानोंमें हमारे मकानोकी तरह टट्टी और पेशाबघर नही होते। वहा पॉट (बरतन) रखा जाता है। मेहमानोंके पॉट या तो मैं अुठाता था या बा अुठाती थी। यह अीसाअी लडका अभी तक मेहमान जैसा ही था। परन्तु बाने हसते हुअे चेहरेसे नही, बल्कि मुह बनाकर वह पॉट अुठाया। यह मुझसे सहन नही हुआ। मैं चिढा। बा भी नाराज हुअी। मैं हाथ पकडकर ज्यो ही अुसे बाहर ले जाने लगा, बाने रोते रोते मुझे अुलहना दिया कि तुम्हे लाज-शरम नही है, परन्तु मुझे तो है। कोअी सुन या देख लेगा तो क्या कहेगा? दोनोमें से अेककी भी शोभा नही रहेगी। यह प्रसग मैंने 'आत्मकथा' में भी दिया है। अिस प्रकार बामें पातिव्रत-धर्मके पालनके साथ साथ अैसी निर्भयता भी थी। ले, मैंने तुझे आजकी कहानी भी कह दी। अब शामको नही कहूगा।"

मैंने पहले लिखा है कि बापूजी अपने जीवनकी घटनायें हमें सुनाया करते थे। अुसी सिलसिलेमें अुपरोक्त प्रसग कह सुनाया।

तीसरी घटना भी अैसी ही आज हो गअी। सुशीलाबहन स्नानागारमें रपटकर गिर पडी। अुन्हे सख्त चोट आअी थी। अिससे अुन्हें बुखार आने लगा। अिसलिअे शामको बापूजीको दूध देनेमें पाच मिनट देर हो गअी। बापूजीका खाना-पीना सदा सुशीलाबहन सभालती थी। (सवेरे वे दूसरे काममें होती और बाको खिलाने-पिलानेकी जिम्मेदारी मेरी होती, अिसलिअे बापूजीका सुबहका खाना-पीना मैं ही संभाल लेती। परन्तु शामको पाच बजे मेरा बाके पास रामायण पढनेका समय होनेके कारण यह काम सुशीलाबहन करती थीं।)

बाकी तन्दुरुस्तीमें भी बिगाड-सुधार होता रहता था। मैं दूध गरम कर रही थी। अुबाल आ रहा था, अितनेमे बा धीमी चालसे खासती-खासती भोजनालयमें आ पहुची। "क्या अभी तक बापूजीको दूध नही मिला?"

मैंने कहा "बस, दे ही रही हू। आप यहा क्यो आअी? बापूजी और सुशीलाबहन नाराज होगे न?"

बा बोली "तुझे मालूम तो था कि सुशीलाकी तबीयत अच्छी नही है। अिसलिअे तुझे अपने मनमे चिन्ता रखनी चाहिये न कि मुझे अमुक काम अमुक समय पर करना है? अन्य कार्य बादमें। मेरे पास रामायण पाच मिनिट कम पढी होती तो?"

बापूजीको दूध देते हुअे मैंने कहा "बापूजी, पाच मिनिट देर हो गअी।"

बापूजी "कोअी हर्ज नही।"

मैंने कहा "परन्तु बा मुझ पर नाराज हो गअी।"

अितनेमें बा भी आ गअी। बापूजीसे कहने लगी "अिस लडकीने पाच मिनिट देर कर दी। पता तो था ही कि आज दूध-खजूर अिसे देना है, अैसी हालतमें घडी पास रखकर ही रामायण पढने बैठना था।"

बापूजी "अिसमें कोअी हर्ज नही। यहा कहा बाहरकी तरह किसीको मुलाकातका समय दिया हुआ है?"

बा "मगर मुझे मालूम है न कि वक्तकी पाबन्दी आपको बहुत पसन्द है। आप यहा भी अपने सब काम समय पर करते हैं, तो फिर देर क्यो की जाय?"

बापूजी और मैं निरुत्तर रहे। क्योंकि मैंने भूल की थी, अिसलिअे अब बचाव करनेमें मैं या बापूजी कोअी भी बाकी दलीलके सामने टिक नही सकते थे। परन्तु बापूजी अपने लकडीके चम्मचसे दूधका घूट लेते हुअे अेक ही वाक्य बोले "बा अैसी है!"

१९

मक्खन निकाला !

आगाखा महल, पूना,
१८-९-'४३

हमारे यहा श्रावण मासका पहला रविवार विशेष महत्त्व रखता है। अुसे 'वीरपसली' का दिन कहा जाता है। अुस दिन भाअी बहनको कुछ न कुछ भेंट देता है। अिस निमित्तसे बाने बापूजीकी बडी बहन पू० गोकी बुआजीको और अुनकी लडकी फूली बुआको अेक अेक साडी और चोलीका कपडा (अपनी ओरसे) भेजनेको आश्रममें लिखवाया था। अुसका जवाब आज आया। अुसमें यह पुछवाया था कि साडी किस पेटीमें किस जगह रखी है। श्रावण महीनेके पहले रविवारको बीते अेक मास हो चुका था और अभी तक अुपरोक्त प्रश्न पूछनेवाला पत्र ही मेरे नाम अेक सम्बन्धीका लिखा हुआ आया। वह मैंने बाको पढ सुनाया।

बा कहने लगी "कैसे लोग है? 'वीरपसली' कभीकी चली गअी, और अभी तक काली पट्टीवाली दो साडिया ही किसीको नही मिली। मानो मेरी कोठरीमें तिजोरी हो और अुसमें कही कुछ छिपाकर रखा हो, जो किसीको भी नही मिलता! अरे, अुस बिना साकल-कुन्देवाली पेटीमें अूपर ही तो रखी है। जब तक मै जिन्दा हू तब तक बुआजीको दूगी, बादमें बापूजी तो क्या देंगे? कह देंगे कि मेरे पास देनेको कुछ भी नही है। मैंने वे दो साडिया खास तौर पर बुआजी और फूलीके लिअे रखी थी। जरा मोटी हैं और जाडेमें पहनी जा सकेंगी। परन्तु समयकी बात समय पर ही शोभा देती है। बुआजीको भी अिस बार कैसा बुरा लगेगा? बारह महीनेमें बेचारीको अेक साडीकी तो आशा होगी ही न? अब अच्छी तरह समझाकर आश्रमवालोंको लिख दे।" फिर मुझ पर जरा नाराज हुअी, "तूने तो

अच्छी तरह लिखा था या नही? साडिया कैसे नही मिली? आज ही लिख दे कि वे न मिले तो कोअी भी अेक सफेद साडी भेज दें। अब बापूजीका जन्मदिवस आ रहा है। अुस समय मिल जाय तो भी काफी होगा।"

बापूजी महात्मा ठहरे। अुनके लिअे सभी दिन समान थे। परन्तु भाअी (बापूजी) की तरफसे बहनके लिअे जो कुछ किया जाना चाहिये, अुसे भाभी (बा) कितनी भावनासे करती थी! ठीक 'बीरपसली' के दिन ननदको अपने भाअी-भाभीकी तरफसे कुछ भी न मिलने पर बुरा लगा होगा, 'अिसका अुन्हे बडा दुःख हो रहा था। अैसे अैसे व्यावहारिक प्रसगोकी रक्षा करना बा कभी भूलती नही थी।

आजकी घटनासे बा कुछ दुःखी थी। अुन्हे जब कभी अच्छा न लगता, तब अन्तमें वे भजनावलि लेकर बैठ जाती। तदनुसार लगभग दस बजे नहा-धोकर वे अेक कोच पर बैठी बैठी श्लोक बोल रही थी और अुनके अर्थ पढ रही थी -

गोविन्द द्वारिकावासिन् कृष्ण गोपीजनप्रिय।
कौरवै परिभूता मा किं न जानासि केशव॥

(यह सारी प्रार्थना भजनावलिमें खास तौर पर स्त्रियोकी प्रार्थनाके रूपमें दी गअी है।) बा तो जब अुनका मन अुद्विग्न होता, तब अकसर भजनावलि लेकर यही प्रार्थना पढने लगती। परन्तु अुसका अर्थ वे मनमाना करती और अुसे भी जोरसे बोलती "हे प्रभु, हे अीश्वर, जैसे द्रौपदीने यह प्रार्थना की, वैसे मैं भी तुझसे विनती करती हू कि तू कौरवो (अग्रेजो) से घिरे हुअे मेरे अिस देशकी रक्षा कर। और कितने ही बेचारे जेलमें सड रहे हैं अुन्हे अब छोड। तुझे रखना हो तो हम दोनोको रख; परन्तु अब तो मेरे धीरजकी हद हो रही है।"

अिस प्रकार प्रार्थनारूपी शब्द बोलती। वे शब्द मैं कितनी ही बार छिपकर सुननेके लिअे खडी रहती। पू० बाने जब अत्यन्त करुण स्वरमें ये शब्द कहे कि "तुझे रखना हो तो हम दोनोको

(वापूजी और बाको) रख, परन्तु औरोको छोड", तब वे नि स्वार्थताके कितने अूचे शिखर पर पहुच गअी थी।

वा कोच पर लेटे लेटे अिस प्रकार प्रार्थना कर रही थी और मैं वापूजीके लिअे मक्खन निकालनेको छाछ विलोती विलोती रुक गअी थी। अुनकी प्रार्थना पूरी हो गअी, मगर मेरा छाछ विलोना अभी तक पूरा नही हुआ था। अिसलिअे वा बोली "अेकसी रुअी घूमनी चाहिये, तभी मक्खन अच्छी तरह निकल सकता है।" मैंने कहा "मक्खन तो मै अभी निकाल देती हू।" यो कहकर मैंने अुस छाछको अेक कपडेमें छान लिया। पानी नही डाला था, अिसलिअे अभी तक दही जैसा घोल ही था। अिससे निचोडकर पानी निकाल दिया और जो दहीका मावा रह गया था अुसकी छोटी कटोरी भर गअी। मै खुशी खुशीमें वाके पास गअी और वोली "देखिये वा, मैंने आज मक्खन कितना जल्दी निकाल लिया? अच्छा निकला है न?" मैं तो अुसे सचमुच ही मक्खन समझ रही थी और अिस नअी खोजसे जरा फूल भी गअी थी कि कपडेमें छान लेनेसे अितना वढिया और ज्यादा मक्खन निकल सकता है।

परन्तु वे अिस तरह मेरे पराक्रमके भुलावेमें थोडे ही आनेवाली थी? अुन्हे आश्चर्य हुआ कि बकरीके दो (कच्चे) सेर दूधमें से कटोरी भर मक्खन निकल ही कैसे सकता है। मुझसे कहने लगी "यह मैं मान ही नही सकती, भूलसे भैसका दही विलो डाला होगा।" यो कहकर वे बाहरके बरामदेमें आअी और कपडा, पानी वगैरा देखकर मेरी मक्खन निकालनेकी नअी खोज पर कहिये या मेरी मूर्खता पर हसने लगी। अितनी हसी कि दस मिनिट तक लगातार जोरकी खासी रही और मुश्किलसे सास वैठी। फिर भी मैं समझ न सकी कि वा अिस प्रकार अितना ज्यादा क्यो हसी। मुझसे वोली "तूने मक्खन नही निकाला, परन्तु श्रीखड वना दिया। यह वापूजीसे कह देना, मूर्ख! मटके भर भरकर छाछ विलोनेके लिअे हम अपने वचपनमें कितनी जल्द अुठती और विलोते विलोते हाफ जाती थी। तेरी तरह यो कपडेसे

दहीको छानकर मक्खनके नामसे देती तो हमारा कैसा हाल हुआ होता ? चल, अब मैं तुझे अिसमें से मक्खन निकालकर बताअू।"

अैसा कहकर बाने दुबारा दही और अुस दहीके पानीको मिलवाया और यों छाछ बिलोनेमें नित्यकी भांति ही खासा आध घंटा चला गया। मैं मक्खन तो रोज निकालती ही थी। मगर मुझे बिलोते बिलोते ही देर हो गअी और बाने प्रार्थनाके बाद तुरन्त टोक दिया कि अेकनी रअी घूमनी चाहिये। तब मुझे यह नया रास्ता सूझा, जिन पर तुरन्त अमल किया, और लगा कि रोज आधा घंटा चला जाता है, अिसके बजाय अिस तरह पांच-सात मिनिटमें ही कितनी अच्छी तरह काम निपट जाता है। अिसलिअे आज यह नया पराक्रम किया था। परन्तु बाने अन्तमें दुबारा सर पर खड़ी रहकर जैसा रोज करती थी वैसा ही करवाया और मक्खन निकलवाया। बापूजीसे कहने लगी: "आज तो मनुको आप पर कुछ प्रेम अुमड़ आया था, अिसलिअे श्रीखंड खिलानेवाली थी।" और अुन्हें सारा किस्सा कह सुनाया। मैं बापूजीको खाना देकर अपनी मूर्खतासे शरमिन्दा होकर वहांसे चल दी। परन्तु सारा कमरा अिस नअी खोजके पराक्रमके कारण हंसीसे गूंज रहा था। अिससे मेरे स्वाभिमानको चोट पहुंची। मुझे लगा कि मैंने तो अपनी अक्ल दौड़ायी और ये लोग हैं कि मेरा मजाक अुड़ा रहे हैं! अिस प्रश्नका अुत्तर अुस वक्त तक नहीं मिला था, अिसलिअे अुस दिनकी डायरीमें तो गुस्सेमें मैंने यही लिखा है कि मेरे स्वाभिमान पर आज अिस तरह आघात हुआ।

परन्तु आज जब मैं सोचती हूं तब अपने बचपनकी अिस हास्य-जनक घटना पर हंसी तो आती ही है, लेकिन पूज्य बाने जिस प्रेमसे मुझे दुबारा स्वयं सब कुछ सिखाया अुसका पूज्यभावसे स्मरण भी करती हूं। और विचार करने पर आज अैसा भी लगता है कि शायद अुस समय मेरे काम करनेमें कुछ आलस्य भी रहा होगा। क्योंकि बहुत बार बचपनमें जब मुझे काम करनेमें आलस्य आ जाता, तो मैं अैसी किसी खोजमें लग जाती। परन्तु ये दुर्गुण मुझमें पैदा

होनेके साथ ही बा और बापूजीके सान्निध्यमें रहनेसे और अुनकी मुझ पर तीव्र देखरेख होनेसे मिट जाते थे।

और जिस प्रकार कुम्हार आवेमें जिस ढंगसे सुन्दर बरतनोंका निर्माण करता है और अुसके बाद ही अुन बरतनोंकी कीमत आंकी जाती है, अुसी तरह आगाखां महलके मेरे जिस प्रकारके प्रारम्भिक निर्माणका मेरे लिअे आज कितना मूल्य है, जिसका वर्णन शब्दों द्वारा करना मेरे लिअे संभव नहीं है।

२०

सच्चा स्वदेशी

आगाखां महल, पूना,
१९-९-'४३

मैंने पिछले प्रकरणमें लिखा है कि बापूजीके कामकी (खास तौर पर खाने-पीनेके मामलेमें) बा स्वयं देखरेख रखती थीं। बीमार होतीं तो भी सोते सोते या कुर्सी पर बैठकर सब जगह नजर डाले बिना न रहतीं।

रोज तो बकरीका गायका दूध मीराबहन ही छानती थीं। आज मीराबहनकी तबीयत अच्छी नहीं थी, अिसलिअे मुझे छानना था। मीराबहन जिस कपड़ेसे दूध छानती थीं, वह कपड़ा मुझे न मिला। वे सो गअी थीं अिसलिअे अुन्हें जगाकर नहीं पूछा जा सकता था। परन्तु अेक बारीक कपड़ा मेरे हाथ लग गया। जिस कपड़ेमें बाहरसे मेवा बंधकर आया था। वह साफ और बारीक था, अिसलिअे अुसे मैंने संग्रह करके रख छोड़ा था। अुसे आज दूध छाननेके लिअे निकाला। अुसे धोकर दूध छान रही थी कि बा आ पहुंचीं। दूध लगभग ४ या ४॥ बजे (तीसरे पहरके) दुहकर आता था। अुसी समय बा, डॉ० गिल्डर और कटेली साहब तीसरे पहरकी चाय लेने मेज पर आते थे। बा गरम पानी और शहद पीती थीं और अिन लोगोंको चाय पिलाती और कुछ नाश्ता कराती थीं।

मैं दूध छान रही थी। अितनेमें बा बोली "मीराकी तबीयत कैसी है?"

मैंने कहा "मुझे कपडा मिल नही रहा था अिसलिअे अुन्हे पूछने गअी थी। परन्तु वे सो रही थी, अिसलिअे मैंने जगाया नही।"

बा "तब यह कपडा कहासे लिया? किसमे से फाड़ा? धोया था या नही?"

मैंने कहा "कराचीसे जिस-कपडेमें खजूर बधकर आअी थी वह कपडा है। कपडा बिलकुल नया है। मैंने अुसे धोकर सावधानीसे रख लिया था। अब फिर धोकर अुससे दूध छान रही हू।"

बाने अुस कपडेको हाथमें लिया और अुलट-पलटकर देखा। वह मिलका था। बोली "अिस मिलके कपडेसे बापूजीका दूध छाना जाता है भला? यह तो मिलका कपडा है। बापूजीको मालूम हो जाय कि दूध मिलके कपडेसे छाना हुआ है, तो अुनका मन दु खी होगा। अपने पास खादीके कपडे क्या कम है? हम अपने ही काममें मिलका कपडा कैसे अिस्तेमाल कर सकते है? यदि हमारा कोअी काम मिलके कपड़ेसे ही पूरा होता हो, तो वह काम ही हमें छोड देना चाहिये। लेकिन मिलके या विलायती कपडेसे हमारा काम हरगिज नही निकाला जा सकता। तू जानती है कि मिलका कपडा दीखनेमें बारीक होता है। अिसलिअे बहुत बार यह माना जाता है कि छानने या अैसे ही अुपयोगके लिअे वह अुत्तम होता है। पर यह बिलकुल गलत है। खादीका कपडा मोटा होगा, तब भी अुसकी बुनाअीमें अैसे छिद्र होते है कि वह मिलके कपडेसे अधिक अच्छा काम देता है। आज तुझे यह खयाल हुआ होगा कि अिस कपडेसे अच्छा छनेगा, और छाननेमें क्या हर्ज है, कपडा पहनना हो तो ही आपत्ति है। परन्तु यह बडी भूल है। आज तो तूने दूध छाना, और कल तुझे लगेगा कि कितना मुलायम है, चलो, पहन लू! अिस तरह वहा मन डिग जायगा। साथ ही मिलके कपडेसे छाना हुआ दूध पेटमें जाय तो सूक्ष्म दृष्टिसे यह अेक प्रकारका पाप ही पेटमें गया कहा जायगा। हमने स्वदेशीकी

प्रतिज्ञा ले रखी है। और बापूजी कितनी दृढतासे प्रतिज्ञाका पालन करनेवाले है? तुझे अिस बातका पता न होगा। तूने साफ और बारीक टुकडा देखकर काममें ले लिया। परन्तु तुझे आयदाके लिअे सावधान करने और सिखानेके लिये मैं कह रही हू। प्रतिज्ञाका तो पालन करनेवाला होता है या पालन करानेवाला होता है। (तू अिस समय मेरी या बापूजीकी प्रतिज्ञा पालन करानेवाली है।) तू बकरीके दूधके बजाय भैंसका दूध कभी बापूजीको दे दे, तो अिससे बापूजी तो दोपमें नही पडते, परन्तु तू पडती है। अिसलिअे दोनोंको सूक्ष्म रूपमें प्रतिज्ञाका पालन करना चाहिये। तभी ली हुअी प्रतिज्ञा सच्ची कही जायगी। बाकी तो सब सुविधा-धर्मकी तरह निरा दंभ ही कहलायेगा। अब दुबारा खादीके कपडेसे दूध छान ले। और अिस घटना परसे आगेके लिअे पूरी सावधानी रखना।"

मैंने सारा दूध फिरसे खादीके टुकडेसे छान लिया। परन्तु यह समझमें आ गया कि प्रतिज्ञाका सूक्ष्मतम रूपमें कैसे पालन किया जाय; और मिलके कपडेसे छना हुआ दूध बाने फिरसे खादीके टुकडेसे छनवाया, अिसमें बाने समझपूर्वक खादीका जो आग्रह बताया, अुसकी बात मैंने बापूजीसे कही।

बापूजी कहने लगे "भले ही बा अपढ है, परन्तु मेरी दृष्टिसे जितना अुसने ग्रहण किया है, जितना अुसने समझ लिया है, अुसका वह सूक्ष्मसे सूक्ष्म पृथक्करण कर सकती है। और मैं मानता हूं कि जैसे कालेजमें कोअी खास विषयोंके प्रोफेसर लडकोंको खास विषय पर पूर्ण शुद्ध और भावनामय व्याख्यान दे सकते है, वैसे ही बाने भी समझकर जितना हजम कर लिया है, अुसमें श्रद्धाके साथ ज्ञानको मिलाकर आज तुझे खादीका अितना माहात्म्य सुनाया। जैसे अेकादशीका माहात्म्य तुलसी बा प्रत्येक अेकादशीके दिन पढवाती है, वैसे ही यह भी अेक पवित्र खादी-माहात्म्य है। यदि घरमें मातायें बालकोंको अैसी शिक्षा देने लग जाय, तो अुनसे मुझे पूरा संतोष होगा। अिसमें न कोअी अंग्रेजी भूमिति सीखनेकी जरूरत है और न बीजगणित। केवल

श्रद्धा चाहिये। परन्तु वह श्रद्धा ज्ञानपूर्ण होनी चाहिये। गीतामाता कहती है

श्रद्धावान् लभते ज्ञान तत्पर सयतेन्द्रिय ।
ज्ञान लब्ध्वा परा शान्तिमचिरेणाधिगच्छति ।।
अज्ञश्चाश्रद्दधानश्च सशयात्मा विनश्यति।
नायं लोकोऽस्ति न परो न सुख सशयात्मन ।।

"अिस प्रकार बाने तो केवल श्रद्धासे मेरे पीछे अपनी जीवन-नौका चलाअी है। और श्रद्धा यदि शुद्ध भावनावाली हो तो ज्ञान अपने-आप प्रकट होता है। परन्तु श्रद्धा शकावाली हो तो ज्ञान प्रकट नही होता। अिसलिअे अैसे सशयवालोको कही भी सुख नही मिलता। जब खादी शुरू की तब बा न तो कोअी खादीका विज्ञान जानती थी, न चरखेका विज्ञान जानती थी और न यह गणित ही जानती थी कि अिससे देशका क्या लाभ है। परन्तु अुसने श्रद्धासे ही मेरी अिच्छाका आदर किया, तो आज अुसका यह ज्ञान अपने-आप प्रकट हुआ और तुझे वह अितना सुन्दर पाठ दे सकी।

"अिसमें तुझे मुख्य बात तो यह सिखाअी कि सच्ची प्रतिज्ञा किसे कहते हैं? वह किस तरह पाली जाती है? अिसके सिवा यदि तूने आज सिर्फ दूध छाननेके लिअे मिलका कपडा अिस्तेमाल किया, तो कल किसी और काममें अुसका अिस्तेमाल करनेका मन हो सकता है। अिस प्रकार यह तो अुस साधु बाबाकी लगोटीका किस्सा हो जायगा। अिसलिअे अिस मोहमें पडना ही नही चाहिये। साथ ही दुबारा खादीके कपडेसे छनवा कर मुझे दूध देनेको कहना खादीके प्रति बाकी पवित्र भावनाके साथ ही मेरे प्रति अुसकी असीम भक्ति और सेवाकी भावनाको भी सूचित करता है। तुझे तो अिसमे आध्यात्मिक, धार्मिक, सामाजिक और राजनीतिक पाठ सीखनेको मिला।

"आध्यात्मिक और धार्मिक पाठने तो तुझे समझा दिया कि मिलमें कितने लोगोके खूनका पानी हो जाता है! अुसमें अुत्पन्न हुआ जरासा भी कपडा हम हरगिज काममें नही ले सकते। और खादी गरीबोको रोजी देनेवाली है। घर बैठे आरामसे कातकर सब कोअी

अपना पेट भर सकते हैं। राजासे लेकर रंक तक कात सकते हैं। अिसमें कितना पुण्य भरा है?

"सामाजिक और राजनीतिक पाठोंमें पतिने जो भी पवित्र प्रतिज्ञा ली, अुसका सूक्ष्मतासे पालन करानेमें पत्नीका साथ सामाजिक दृष्टिसे मेरे खयालमें बड़ी भारी बात है। और राजनीतिक पाठमें तो खादी पहनना ही अिस समय अंग्रेजोंके राज्यमें अपराध है। सूतके धागेसे आज ही स्वराज्य प्राप्त किया जा सकता है, अिसमें मेरे मनमें जरा भी शक नहीं — बशर्ते ४० करोड़ लोगोंके हाथमें चरखा या तकली चले। अिस प्रकार आज तो तूने मेरी दृष्टिसे बहुत बड़ा ज्ञान प्राप्त कर लिया है।"

बापूजीने दूध पीते-पीते मेरी पढ़ाअीके समय दूसरा नया पाठ देनेके बजाय पू० बाकी आजकी बातका अधिक शुद्ध स्पष्टीकरण करके मुझे अेक अनोखा पाठ पढ़ाया।

२१
बाकी राजनीतिक भाषा

आगाखां महल, पूना,
२०–९–४३

पू० बा रोज अेक बार सूखे मेवेमें अंजीर, जरदालू, मुनक्का, काली द्राक्ष वगैरा जो भी हो अुसे दूधमें अुबालकर लेती थीं। यही अुनके लिअे दवा और खुराक दोनोंका काम करती थी। (अुनसे दूसरी खुराक नहीं ली जाती थी।) अिसी प्रकार बापूजीके लिअे खजूर खुराक और दवाका काम देती थी। बापूजी लगभग रोज शामको दूधमें अुबालकर खजूर लेते थे। ये सब बातें कराचीके मेरे साथ संबंध रखनेवाले कुछ भाअी-बहन जानते थे और कराचीका सूखा मेवा तो प्रख्यात ठहरा। जब बापूजी बाहर थे तब तो जब चाहिये तभी मैं मंगवा लेती थी। परंतु अब जेलके नियमानुसार पत्र लिखकर तो मंगवा ही नहीं सकती थी। अिसलिअे यह समझकर कि बापूजी

और बाके लिअे मेवा नही होगा, अुन लोगोकी तरफसे श्री शान्ति-कुमारभाअी द्वारा भेजा हुआ पार्सल आज मिला। साथ ही बापूजीकी प्रत्येक जयती पर बहुतसे स्त्री-पुरुष अपने अपने हाथके सूतकी खादी, धोतिया, रूमाल वगैरा बनाकर पू० बापूजीको अर्पण करते थे। परतु अिस समय अुन सबको पता नही होगा कि ये चीजें बापूजीके पास कैसे पहुचेंगी। फिर भी कुछ परिचितो और आश्रमवासियोको मालूम था कि शान्तिकुमारभाअीके द्वारा अैसी चीजें बापूको मिलती है, अिस-लिअे प्रेमाबहन कटक, अमतुस्सलामबहन तथा दिलखुश दीवानजीकी ओरसे पू० बापूजीकी आगामी जयती पर भेंट करनेके लिअे अिस पार्सलके साथ खादीका थान, धोतिया और रूमाल अित्यादि मिले।

पार्सल खोलते ही पहले खजूर देखी। खजूर स्वच्छ और सुन्दर थी। मै तुरन्त बापूजीको दिखाने ले गअी। अैसी खजूर मैंने कभी नही देखी थी। और अुसके बाद भी अभी तक मैंने वैसी खजूर नही देखी। वह कुछ और ही किस्मकी थी। बडे दानेकी, बिलकुल बारीक गुठलीवाली, स्वच्छ और प्रत्येक दाना अलग अलग और रसदार था। अूपर 'बटर पेपर' लिपटा हुआ था।

बापूजी और बाको दिखाने गअी। बा अपने पलग पर बैठी थी। अितनी बढिया खजूर देखकर कहने लगी, "देख, शान्ति-कुमार कितनी सावधानीसे सब कुछ अिकट्ठा करके भेजता है! लेकिन मै अुसे और सुमतिको आशीर्वादके लिअे नाम तक नही लिख सकती, क्योंकि अुनके पीछे गाधी नामका पुछल्ला नही है। सरकारका अैसा काम है!"

यह जान लेनेके बाद कि और क्या क्या किसकी तरफसे आया है, बापूजीने बासे कहा "तुम जानती हो न कि शान्तिकुमार सिधियाके मैनेजिंग डाअिरेक्टर है, और अब हमारे अेजेण्ट बन गये दीखते है। अुनमें यह कुशलता है। हमारे लिअे भागदौड करके सब चीजें भिजवाना अुन्हे बुरा नही लगता, बल्कि आनददायक मालूम होता है। वे रामदास और देवदास जैसे ही हमारे लिअे सब कुछ करनेको तैयार रहते है। सुमति और शान्तिकुमार तो प्राण न्योछावर

करनेवाले पति-पत्नी हैं। परतु सिन्धियासे अुन्हें आमदनी होती है, जब कि हमारे वे अवैतनिक अेजेंट है। अिस प्रकार जैसे सबको अपनी पसन्दका काम मिल जाता है, वैसे ही शायद शान्तिकुमारके लिअे भी हुआ।" (शान्तिकुमारभाअी नरोत्तम मोरारजी तो बापूजीके पुत्रोंमें से अेक हैं। पू० बापूजी जब जेलरूपी महलसे निकले तब जूहूके किनारे अिन्हींके मेहमान बने थे। अिसलिअे अुनका परिचय अनावश्यक है।)

अिस पर बाने मुझसे अपने पिताजीको पार्सलकी पहुच लिख देनेको कहा। मैंने तो पहुचमें साफ नाम सहित लिखा कि शान्ति-कुमारभाअीके द्वारा अितनी चीजें मिली हैं, वगैरा.. ।

बाको मैंने पत्र पढकर सुनाया। बा भी जबरदस्त थी। राजनीतिक भाषा किस तरह काममें ली जाती है, यह वे जानती थीं। मेरा पत्र नापास कर दिया। कहा "अिस तरह साफ लिखेगी तो तेरा पत्र कौन जाने देगा? पत्र कभी जयसुखलालको मिल भी गया, तो काटछाट किया हुआ मिलेगा, जिससे अुन सबको चिन्ता हो जायगी कि कोअी बीमार तो नही है। आ यहा बैठ। मैं नये सिरेसे पत्र लिखवा दू।" फिर अुन्होंने छोटा, परन्तु सचोट नया पत्र लिखवाया.

"चि० जयसुखलाल,

तुम्हें चि० मनु समय समय पर पत्र लिखती रहती है, अिसलिअे मैं खास तौर पर नही लिखती। तुम सबके पत्र मिलते हैं, पढकर आनन्द होता है। चि० मनुका पढाअीका क्रम अच्छी तरह जम गया है। मेरी सेवा भी खूब करती है। बापूजी, डॉ० गिल्डर, प्यारेलाल और सुशीलाके पास बारी-बारीसे नियमित पढती है। स्वास्थ्य हम सबका अच्छा है। चि० संयुक्ता, चि० अुमिया और चि० विनोदको हमारा आशीर्वाद।

तुम्हारे अेजेन्टके कुशल-समाचार जाने। बहुत जरूरी भी था, मौकेका था और बढिया था। सबको मेरा खास तौर पर आशीर्वाद लिखना। तुम्हे मेरा आशीर्वाद।

२०-९-'४३

बा तथा बापूके
आशीर्वाद"

मैंने प्रयोग करनेके लिओे अपना पत्र भी भेजा और बाका यह पत्र भी भेजा।

महीने भर बाद मालूम हुआ कि अुन्हे अभी तक मेरा २० तारीखको लिखा पत्र मिला ही नही और बाको अपने पत्रका जवाब मेरे पिताजीकी ओरसे १५ दिनमें ही मिल गया। मेरे सीधे नाम-पतेवाले पत्रका अभी तक कोओी ठिकाना ही नही है! अिस प्रकारकी दो अर्थवाली भाषा पू० बा कभी कभी अिस ढगसे काममें लेती कि अच्छे अच्छे लोगोको भी पढकर अर्थ लगानेमें थोडी बुद्धि खर्च करनी पडती। कौन कहेगा कि बा अपढ थी? मैंने वह पत्र कटेली साहबको डाकमें डलवानेके लिओे नियमानुसार दिया। वे चाय पी रहे थे। अुन्होंने पत्र पढा और फिर तह करके लिफाफेमें रख दिया। बादमें मेरा पत्र भी पढा और मुझसे बोले: "यह सब काट देंगे, परंतु यहासे जाने देनेमें हमारा क्या जाता है?"

मैंने कोओी बात तो नही की, परतु हसे बिना नही रहा गया। मुझसे अुन्होंने अिसका कारण पूछा। मैंने शामको डाक चले जानेके बाद अुनसे सारी बात कही। सुनकर वे कहने लगे "मैंने तो यही समझा कि तुम्हारे कुटुम्बमें कोओी प्रसग होगा। अुसीके सिलसिलेमें बाने लिखवाया है। परतु आयंगर साहब कितने ही अनुवाद करायें, कैसे ही अच्छे गुजराती जाननेवाले भाषा-शास्त्रियोको दें, मगर बाकी भाषा कोओी नही समझेगा।"

हुआ भी अैसा ही। बाका मेरे पिताजीके नामका पत्र आज भी मेरे पास है और मेरा पत्र तो जाने कहा चला गया!

२२

मेरी परीक्षा

आगाखा महल, पूना,
२३-९-'४३

दोपहरको सुशीलाबहन मेरी अंग्रेजीकी परीक्षा लेनेवाली थी। मैं अुसकी तैयारीमें लगी थी। कुछ शब्द रट रही थी। मेरी यह रटन्त जब तक सुशीलाबहनने प्रश्नपत्र मेरे हाथमें नहीं दिया, तब तक अर्थात् अन्तिम क्षण तक जारी रही। प्रश्न भी पाठशालाके ढग पर ही बाकायदा ४ पन्नोकी नोटबुक बनाकर स्याहीसे लिखने थे। समय अेक घटेका था। परतु सुशीलाबहन खुद अेम० डी० थी, अिस-लिअे अुन्हे विद्यार्थियो-सबधी अनुभवोका विश्वास तो होना ही चाहिये। मुझे भी पूरा विश्वास था कि जो पाचवी रीडर मैं पढ रही हू, अुसे मैंने अितना रट लिया है कि अुसमें से शब्दोका वाचन या किसी पाठको जबानी बोलनेके लिअे मुझसे कहा जायगा तो शायद बोल जाअूगी। अिसलिअे पास होनेके सिवा १०० में से कमसे कम ८० नबर तो मुझे मिल ही जायगे। परंतु यह कल्पना मुझे कहासे होती कि वे पाठमालाके वाक्य पूछेंगी तथा जो चौथी रीडर मैं पढ चुकी हू अुसके शब्द पूछेंगी अथवा अनुवाद करायेंगी? मुझे तो अितना ही कहा था . "कल तेरी अंग्रेजीकी परीक्षा लूगी।" मैं मनमें गर्व कर रही थी कि भले कभी भी ले लें। पाचवी रीडरके सिवा नीचेकी (४ थी कक्षाकी) पढाअीमें से थोडे ही पूछेंगी? पर अुन्होने मुझे अिससे बेखबर नही रखा था। अुन्होने कहा था · "पाठमाला, चौथी रीडर और पाचवी रीडरमें से प्रश्न पूछूगी।" मेरा खयाल था कि चौथी कक्षाके सवाल थोड़े ही पूछेंगी। परतु मेरी धारणा बिलकुल गलत निकली और सभी प्रश्न लगभग चौथी कक्षाके अभ्यासक्रममें से ही पूछे गये थे। आजका अकल्पित प्रश्नपत्र देखकर मैं चकरा गअी।

वा कोच पर पैर फैलाये लेटी थी। मुझसे बोली "खूब पढ रही थी। कल परीक्षाके कारण खेलने भी नही गअी, अिसलिअे अेक घटेके वजाय शायद जल्दी ही पूरा कर लेगी क्यो? परन्तु देख, अच्छी तरह विचार कर लिखना। जो लिखे अुसे दुबारा पढ लेना। भूले न हो और पास हो जाना।"

प्रश्नपत्र देखकर मेरे मुहसे अितना निकल गया "सुशीला-वहन! यह तो आपने चौथी रीडर और पाठमाला–भाग १ के प्रश्न दे दिये। परन्तु अिस नअी पाचवी रीडरके जो बीस पाठ हो गये है अुनमें से या पाठमाला–भाग २ में से कुछ भी नही पूछा!"

सुशीलावहन वासे बोली "देखिये वा, मैं कितनी दयालु हू! मनुको पूरे नम्बर लेनेका कैसा बढिया अवसर मैंने दिया है? वह पढती है पाचवी अग्रेजी और सवाल मैंने चौथी अग्रेजीके पूछे है। अिसलिअे मनु शायद सौ में से सौ नम्बर ले जायगी।"

वाको क्या पता कि मेरी अिस समय कैसी दयाजनक स्थिति है?

वे बोली "परन्तु सुशीला, तूने भूल की। तुझे तो अिससे पाचवीमें से भी सवाल पूछने चाहिये थे। चौथीके (अर्थात् पिछली वातोके) सवालोके जवाव तो मेरे जैसी भी दे सकती है, अिसमें क्या है?"

मुझे थोडी आशा हुअी कि वाके कहनेसे अगर अेक दो सवाल मेरी की हुअी रटाअीमें से आ जाय तो मजा आ जायगा।

सुशीलावहन मेरी विषम स्थिति पलभरमें समझ गअी। अिसलिअे कहने लगी "अब वा, आज तो जो हो गया सो हो गया। दूसरी दफ़ा देखूगी।"

मैंने जितना याद था अुतना मुश्किलसे लिखा। घटा पूरा हो गया। मेरा पर्चा सुशीलावहन अुसी समय देखने लगी। सही गलत मिलाकर कुल १०० में से ४५ नवर मुश्किलसे मिल सके। मैंने कहा "सुशीलावहन, मैंने पहलेका पढा ही नही था। आपने पिछला पढ लेनेको कहा था, परन्तु मैंने अुतना कष्ट नही किया। जव चौथी

कक्षाकी अतिम परीक्षा भणसाली काकाको दी थी, तब तो मुझे १०० में से ७० नम्बर मिले थे और तीन लडकियोंमें मेरा पहला नबर आया था।" (जब मैं सन् '४२ में सेवाग्राम गअी तभी भणसाली काकाने मेरी परीक्षा ली थी। यह बाको अच्छी तरह याद था।)

मैंने अुपरोक्त शब्द अपनी कुछ बहादुरी बतलानेको सुशीला-बहनसे कहे।

पर बा नाराज हो गअी· "पढ लिया सो तो भूल जानेके लिअे ही न? तभी तो तूने अपने सवाल पढते ही फौरन सुशीलासे कहा कि चौथी रीडरमें से क्यो प्रश्न दिये, पाचवी रीडरमें से क्यों नही? आता नही था अिसलिअे तो अैसा पूछा। सुशीलासे पूछ कि तुमसे यूनिवर्सिटीमें कभी अिस तरह पूछा गया था? रटन्त करनेसे सब मना करते हैं तो भी क्या करते ही रहना चाहिये? समझकर अेक बार भी पढ लिया जाय तो कैसा अच्छा याद रहता है?"

फिर सुशीलाबहनसे कहने लगी "अब अिसे चौथी ही पुस्तक पढाना। भले ही अेक वर्ष लग जाय। परन्तु जो पढे सो पक्का तो होना चाहिये न?"

मेरी आखोंसे टप टप आसू गिरने लगे। चौथी कक्षाके प्रश्न पूछनेके कारण सुशीलाबहन पर मुझे गुस्सा आ गया और दिनभर अुनसे बोली नही। बाके साथ भी नही बोली। मुझे दुबारा चौथी कक्षामें अुतार देना कितनी मानहानिकी बात थी? यदि पाठशालामें पढती होती और अिस तरह अुतार देते तो पढना छोड देती। परन्तु अूपरसे नीचेकी कक्षामें पढने जाना कैसे हो सकता है? अिससे आजका मेरा सारा दिन खराब हो गया। शामको घूमने नही जा रही थी। अिस पर बापूजीने जबरन हाथ पकडकर मुझे साथ ले लिया। सुशीलाबहन घूमनेमें साथ नही थी और दूसरे लोग खेल रहे थे।

घूमते समय मैं और बापूजी दो ही थे। मुझसे बोले "मैंने सुना है कि परीक्षामें तेरे नम्बर कम आनेसे तू रोअी और खेलने भी नही गअी। बाने तुझसे कुछ कहा है?"

मैंने कहा "परन्तु बापूजी, मैंने कितनी बार अपनी रीडरके पाठ और शब्द पढे थे? मुझसे कोओी भी पाठ बुलवा लीजिये। अभी बोल दू। लेकिन बाने मुझे चौथी रीडर ही दुबारा पढनेको कहा। मैंने जरा भी नही सोचा था कि सभी सवाल चौथी कक्षाके पूछे जायगे।"

बापूजी कहने लगे "परन्तु तुझे तो मेरे विश्वविद्यालयमें पास होना है? ससारके विश्वविद्यालयमें कहा तुझे बिठलाना है? फिर भी तेरा रटना मुझे जरा भी पसन्द नही है। कल रातको नीदमें भी तू शब्दोके हिज्जे रट रही थी। सुशीलाबहन मुझे कह रही थी कि पाठशालाकी यह भयकर कुटेव मनुको अैसी पड गअी है कि कितने ही बार टोकने पर भी मिटती नही है। वह तो डॉक्टर है न? अिसलिअे अुसने यह अिलाज आजमाया। बाने तुझे धमकी दी है। तुझे नीचेकी कक्षामें नही अुतारा जायगा, परन्तु अिससे तेरी जड पकडी हुअी कुटेव छूट जायगी। बहुतेरे विद्यार्थियोमें यह होती है। मैं भी जब छोटा था तब कभी या तो मास्टरके विषय समझा न सकनेके कारण या मेरे ध्यान न देनेके कारण रट लेता था। यह आदत आगे चलकर बहुत दु ख देती है। अिसका असर तेरी नीद पर भी हो गया। कल रातको तू नीदमें बडबड़ा रही थी। नीदमें यह खलल तो मैंने अितने समयमें तुझमें पहली ही बार देखा। तू कुछ हिज्जोकी गडबड कर रही थी। यह सब रटन्तका परिणाम है। रटा हुआ ज्ञान स्थायी नही होता। परीक्षाके हौअेसे तेरी नीदमें खलल पडते देखकर मुझे भारतके विद्यार्थियोकी दयनीय स्थितिकी कल्पना हो आअी और दु ख हुआ। मनमें विचार कर रहा था कि भारतीय बालक खेलके लिअे, शौकके खातिर नही पढते, तब क्या केवल परीक्षाके लिअे पढते हैं? मेरी दृष्टिमें तो हमारी सारी पढाअीका ढग ही गलत है। मैंने यह कअी बार कहा है। परन्तु सुशीलाबहन पर तेरा क्रोध बेजा है। मैंने समझा था कि तू किसीसे अबोला नही लेगी, लेकिन आज तो तीन घटेसे तूने सबके साथ अबोला ले रखा है। भोजन भी नही किया और खेलने भी नही गअी। यदि विश्वविद्यालयकी परीक्षामें अनुत्तीर्ण हो जाय तब तो समुद्रमें ही डूब मरे न? अैसा बहुत विद्यार्थियोका हुआ है और अब भी कअी

जगह होता है। मैंने जब तेरे गुस्सेकी बात सुनी तभी मुझे तुझसे कहना चाहिये था। परन्तु बादमें सोचा कि घूमते समय तुझे समझाअूंगा। मैं मानता हूं कि सुशीलाने तुझे डॉक्टरी ढगसे यह अिन्जेक्शन दिया है। वह तुझे बार-बार समझाती थी कि रटा न कर। परन्तु तू अिसके लिअे प्रयत्न ही नहीं करती थी। अिसलिअे तुझे पड़ी हुअी रटनेकी कुटेव अब अिस पाठशालामें अपने-आप मिट जायगी।"

रटनेसे मैं अितनी ज्यादा बदनाम हो गअी, अिससे मैं खूब शर्माअी। परन्तु अिसका चमत्कारी लाभ तो तभी अनुभव किया, जब मैं आगाखां महलसे छूटी और फिरसे कराचीके शारदा मंदिरमें पढ़ने लगी। अिस बीच अेक सावधानी रखी कि किसीके देखते हुअे चाहे जब रटना बिलकुल बन्द कर दिया, लेकिन कोअी न देखता तब रट भी लेती थी।

२३

चरखा-द्वादशीका अुत्सव

आगाखां महल, पूना,
२५-९-'४३

आज दोपहरको तीन बजे बाद कलके कार्यक्रमका विचार करनेके लिअे डॉक्टर साहब, मीराबहन, प्यारेलालजी और सुशीलाबहन बैठे। मैं अिस कमेटीमें नहीं रखी गअी थी, क्योंकि बात परसे बात निकल आये और मैं नादानीमें कुछ कह दूं तो अैसे विनोदका मजा किरकिरा हो जाय। परन्तु जब खानगी तौर पर कोअी बात होती है, तब कुछ ज्यादा अुत्कण्ठा जाग्रत हो जाती है। क्योंकि मुझे अितना तो पता था कि ये लोग कलके लिअे कोअी कार्यक्रम सोच रहे हैं। मुझे बुरा लगा। मैं जब कभी रूठती तब खाने और खेलनेसे अिनकार कर देनेका अेक मंत्र मैंने पकड़ रखा था। और अिन

बातोंसे अिनकार कर देती, तो सहज ही अुसका कारण भी मुझसे पूछा जाता। अिस नाराजीके आधार पर मैं अपना काम बना लेती थी।

अिस प्रकार शामको जब घंटी बजी तो मैंने खेलनेसे अिनकार कर दिया। सुशीलाबहन रूठे हुओको मना लेनेकी कला जानती हैं। अिसलिये अुन्होंने मुझसे अिस तरह बात की, जैसे मुझे सारा ब्यौरा दे रही हों कि कल क्या करना है। मुझे अुस समय तो संतोष हो गया। परन्तु अुन्होंने सारी बातें नहीं बताओं, अिसका पता दूसरे दिन ही लगा, जब हमने चरखा-द्वादशीका सारा दिन मना लिया। परन्तु अितना निश्चित है कि सुशीलाबहनने मुझे पांच ही मिनिटमें संतुष्ट कर दिया और मैं खेलने भी चली गओ।

मैं नीचे अुतरी, अिसलिये प्यारेलालजीने विनोदमें डॉ० गिल्डरसे कहा "मनुको यहांके अस्पतालमें भरती कराना पड़ेगा, 'स्क्रू' ढीला हो जाता है।"

मैंने बालकोंकी तरह अंगूठा बताकर कहा "आप सब भले ही कुछ भी कहा करें, परन्तु सुशीलाबहनने मुझे सब कुछ बता दिया है।" और सब खिलखिलाकर हंस पड़े। परन्तु हंसनेका कारण तो आज वर्षों बाद नोटबुक देखती हूं, तभी समझमें आता है।

अिस प्रकार फिर खुश होकर मैंने अपना सभी काम पूरा किया। प्रार्थनाके बाद बापूजीके लिअे थोड़ी मीठी पपड़ियां बनाओं। सुशीलाबहनने भी कैदियोंके लिअे मिठाओ बनाओ। बा और बापूजीके सो जानेके बाद सुशीलाबहन और मीराबहनने सिपाहियोंकी सहायतासे अशोकपल्लवके तोरण बनाये। मैं अुनकी मददमें रातके बारह बजे तक ही थी। बादमें सो गओ।

परन्तु मीराबहन और सुशीलाबहन दोनों ठहरीं कलाप्रेमी। अुन्होंने लगभग सारी रात जागकर अपनी-अपनी कला हमारे निवासस्थानमें अलग अलग तरहकी सजावट करनेमें अुंडेल दी थी। मीराबहन, प्यारेलालजी और सुशीलाबहनने रातमें मुश्किलसे डेढ़-दो घंटे नींद ली होगी।

जैसे दीवालीके बाद नव वर्षके दिन जल्दी अुठकर हम तैयार होते हैं, वैसे ही पू० बापूजी और बाके सिवा हम सब अपने-आप ही जाग गये थे और साढे चार बजे बापूजीके अुठनेसे पहले नहा-धोकर तैयार हो गये।

चरखा-द्वादशी
२६–९–'४३

सवेरे तड़के ही सबसे पहले बाने बापूजीको प्रणाम करते हुअे कहा "लीजिये, यह मेरा अन्तिम जयन्तीका प्रणाम है, अगली द्वादशीको मैं रहनेवाली नहीं हूं।'

अिसके बाद हम सबने बारी बारीसे बापूजीको प्रणाम किया। रातभर किये गये शृंगारमें — सारे बरामदेमें अलग-अलग रंगोंसे सुन्दर अक्षरोंमें लिखे गये संस्कृतके पवित्र सूत्र और श्लोक, आकर्षक कलामय चौक और फूलोंकी महक ये सब तो बाह्य आकर्षण थे; परन्तु बाकी मौजूदगीमें अुत्सवका कुछ अनोखा ही रूप हो जाना स्वाभाविक था। प्रार्थनामें आजका भजन था .

'और नहीं कछु कामके,
मैं भरोसे अपने रामके।
दोअू अक्षर सब कुल तारे,
वारी जाअू अुस नाम पे।
तुलसीदास प्रभु राम दयाघन,
और देव सब दामके।'

यह भजन बापूजीके अिक्कीस दिनके अुपवासके समय अेक बहनने खास तौर पर तारसे भेजा था और बापूजीको यह बहुत प्रिय था।

प्रार्थनाके बाद नित्यका क्रम चला। बा अुठीं। अुनके दातुन-पानीका अिन्तजाम कर और चाय देकर निपट जाने पर मुझे सुशीलाबहनने डॉ० साहबके कमरेमें आनेको कहा था। अिसलिअे मैं

वहा गअी। जाकर देखती हूं तो सभीका भेस बदला हुआ था। मीराबहनने दाढी लगाकर सिक्खो जैसा सफेद साफा बाध रखा था और डॉक्टर साहबके कोट-पतलून चढा लिये थे। अेक हाथमें सिक्खो जैसा कड़ा था। अूचाअी काफी और शरीरकी रचना बढिया थी। अिसलिअे बिलकुल सरदारजी जैसी लगती थी। डॉक्टर साहब पठान बने। मीराबहनकी चूडीदार सलवार और सिर पर पठानो जैसा तुर्रा निकालकर फेंटा बाधा था। सुशीलाबहनने पादरीका वेश बनाकर गलेमें क्रॉस डाल लिया था। प्यारेलालजी दक्षिणी साधु बने और मैंने फ्रॉक, अूची अेडीके बूट और सिर पर पारसी टोपी पहनी, जो कटेली साहबने जुटा दी थी। अिस प्रकार जब हम तैयार हो रहे थे तब बीचमें बा चुपकेसे अेक बार आकर देख गअी और बापूजीको परोक्ष रूपमें कह भी दिया।

अिसी अर्सेमें कटेली साहब बापूजीको कह आये कि आज आपका जन्मदिवस है, अिसलिअे शायद कुछ मुलाकाती आयें। परन्तु बापूजी थोड़े ही अिस प्रकार भुलावेमें आनेवाले थे?

हम मीराबहनके कमरेमें बैठे और कटेली साहबने बापूजीसे कहा "कुछ दर्शनार्थी कहते हैं कि वे सरकारसे मजूरी लेकर आपके दर्शन करने आये हैं।" बापूजीका घूमनेका समय ७॥ बजे (सवेरे) का हो गया था। अिसलिअे वे हमारे कमरेमें आये। ज्यो ही बापूजीने पैर रखा, त्यो ही मै सबसे पहले गअी और कहा "महाटमाजी, साल मुबारक। मेरा नाम जरबाअी जरीवाला है। खुडा आपको बहुट बहुट जिलाये।" मैंने अुसी भाषामें कहा, जो आम तौर पर पारसी बोलते हैं।

बापूजी और बा खिलखिलाकर हसे। बापूजीने मेरे कान अैंठकर खूब जोरकी धप लगाअी।

बादमें मीराबहन आअी पजाबी हलवेकी भेंट लेकर। स्वय ही अपना परिचय दिया और हलवेकी बडाअी की। बापूजीने अुनके भी खूब जोरकी धप जमाअी। फिर आये डॉ० गिल्डर खजूर

अित्यादि पठानी मेवा लेकर। और पादरीके बाद अन्तमें ब्राह्मण साधु अिस तरह आये मानो प्रणाम करने और आशीर्वाद देने खड़े हों।

हम सब पेट पकड़कर हंसे और वहांसे सीधे महादेव काकाकी समाधिकी तरफ जाने लगे। परन्तु हम ज्यों ही मैदानमें निकले त्यों ही कटेली साहबने जमादारको डरानेके लिअे डांटकर कहा: "ये कौन आदमी यहां आ गये? दौड़ो, दौड़ो।" बेचारा जमादार रघुनाथ साहबकी अैसी जोरकी धमकीसे घबराकर दौड़ा। दरवाजे पर पहरा देनेवाले गोरे सार्जेण्टोंने भी चकित होकर अपनी भरी बंदूकें संभाल लीं। रघुनाथ आकर हमारे मुंहकी तरफ देखने लगा और सबसे पहले बोला: "अरे ये तो सुशीलाबाबी और मनुबाअी हैं।" बेचारेके दममें दम आया। और किसीको जल्दी पहचाना नहीं जा सकता था।

घूमकर आनेके बाद हम अपने रोजमर्राके काममें लग गये। बापूजी नहाने चले गये। अिस बीच बापूजी जिस कमरेमें बैठनेवाले थे, वहां अनुके लिअे अनेक भक्तोंने स्वयं कातकर जो खादी भेजी थी अुसे अलग अलग ढंगसे सजाया, और फूलों तथा सूतके तोरण बनाये। बापूजीकी गद्दीके ठीक सामने फूलोंसे ॐ लिखा। बापूजीने फूलके ज्यादा हार बनानेकी मनाही की थी। सूतके हार भी अिस तरह बनानेको कहा था कि दूसरी बार तुरन्त ही वे बुननेके काममें लिये जा सकें।

लेडी प्रेमलीलाबहन ठाकरसीकी तरफसे कुमकुमके साथियेवाला नारियल आया था। अिसके सिवा तीन नअी कटोरियोंमें शक्कर, गेहूं, गुड़, चप्पलकी जोड़ी, बा और बापू दोनोंके लिअे मालायें वगैरा सभी थालोंमें भरकर कटेली साहब नीचे ले आये।

नहाकर बापूजी अपनी गद्दी पर बैठे। सबसे पहले ७५ बिंदियां कुमकुमकी बनाकर हम सबने अपने अपने हाथके काते हुअे ७५ तारोंका जो हार तैयार किया था अुसे पू० बाने बापूजीके माथे पर तिलक लगाकर पहनाया और प्रणाम किया; बादमें हमने बारी बारीसे तिलक करके मालायें पहनाअीं।

आज बाने बापूजीके हाथके काते हुअे सूतकी लाल किनारकी साड़ी पहनी थी। अिस साड़ीके लिअे मुझे बाने खास तौर पर

हिदायत दी थी कि "मेरे पास वापूजीके हाथकी काती हुअी यह अेक ही साडी है। अिसे जब मैं मरू तब तू मुझे ओढा देना।" मैं पजावी पोशाक पहनती थी, फिर भी बाने मुझे आज लाल किनारकी दूसरी साडी पहननेको कहा।

सुशीलावहनने भी लाल किनारकी ही साडी पहनी। वा कहने लगी "आज जीते जी तो अेक बार और आखिरी बार यह वापूजीवाली साडी चरखा-द्वादशीके दिन पहन लू। फिर कहा पहननी है?"

[अिसके बाद सचमुच ही वह साडी अुनकी मृतदेह पर ओढानेका कठिन काम मुझे ही करना पड़ा। अपने जीते जी बाने दूसरी बार वापूजीके हाथकी साडी आगाखा महलमें कभी नही पहनी।]

फिर हमने छोटीसी प्रार्थना की। 'वैष्णवजन' का भजन गाया। प्रार्थनाके बाद बापूजीके लिअे मैं भोजन लाअी। वा रोज तो वापूजीके खा लेनेके बाद खाने बैठती, परन्तु आज देर बहुत हो गअी थी अिसलिअे वापूजीने अनायास ही कहा "बाको भी परोस दे। मैं और बा अेक-दूसरेका ध्यान रखकर साथ ही खा लेंगे। और तुम लोग भी भोजनसे निपट लो।"

बाने वापूजीको आग्रहपूर्वक मीठी पपडी दी और दोनो खाने वैठे। बाके जीते जी आखिरी चरखा-द्वादशी हमने खूब शानसे मनाअी। अुसके दृश्य अभी तक मेरी आखोके आगे अितने ताजे है कि मैं चित्रकार होती तो अुनका हूबहू चित्र खीच देती। परन्तु हमें यह कल्पना थोडे ही थी कि वाके लिअे यह सब अन्तिम ही सावित होगा।

वापूजी और वाके भोजन कर लेने पर सब कैदी प्रणाम करने आये। लेडी ठाकरसीकी तरफसे जो सतरे और मोसबिया आअी थी, वे वापूजीके हाथसे दिलवानेके लिअे बाने मँगवाअी। कैदी प्रणाम करते गये और वापूजी आअी हुअी सारी भेंट अुन्हे बाटते गये। फिर आराम करनेके लिअे लेट गये।

मैंने बापूजी और बाके पैर जल्दी जल्दी मले, अितनेमें २॥ से ३॥ बजेका सामूहिक कताओीका वक्त हो गया।

२॥ से ३॥ तक सबने मौन-कताओी की।

४॥ बजे कैदियोंको मिठाओी, चिवड़ा और सेव-गाठिये दिये। यह सब कैदियोंकी सहायतासे घर पर ही बनाया गया था।

मीराबहन अपनी नओी धुनमें चार बजेसे ही बैठी थीं। वे अेक मिट्टीका मंदिर बना रही थीं, जिसमें मंदिर, मस्जिद और गिरजेका आकार दिख सके। छह बजे अुन्होंने यह काम पूरा किया। छह बजे जब बापूजी घूमने गये तो अुसी कमरेमें मीराबहनने फूलोंके पौधोंके गमले रखकर जंगलका दृश्य बनाया। पत्थर रखकर पहाड़ बनाया और अुसमें यह मंदिर रखा। सराअियोंमें सोलह दिये जलाये। मंदिरके भीतर शिवलिंगके रूपमें अेक चमकदार पत्थर रखा, जो रास्तेमें मिला था।

बापूजी घूमकर आये, अितनेमें तो अुस कमरेका दृश्य जंगल जैसा बन गया। मैं अिस काममें मीराबहनकी सहायिका थी। सब बत्तियां बुझा दी गओीं। अिन दियोंका प्रकाश सुन्दर मालूम हो रहा था। वह दृश्य अैसा अनुपम था मानो जंगलमें मंगल हो रहा हो।

बा तो बहुत ही आस्था और श्रद्धावाली थीं। अुन्होंने अुस पत्थरको शिवलिंग ही मानकर अुसे अपने तुलसीके गमलेमें रखवाया। वहां वे रोज प्रातः सायं पूजा करतीं और घीका दिया जलातीं। वह अुनका शान्ति प्राप्त करनेका स्थान था।

[अीश्वरकृपा और सौभाग्यसे मीराबहनका बनाया हुआ वह मिट्टीका मंदिर और वह पत्थर, जिसकी बा शिवलिंग मानकर पूजा करतीं, दोनों प्रसादियां मेरे पास अुस पवित्र चरखा-जयंतीके प्रतीक-स्वरूप मौजूद हैं।]

शामकी प्रार्थनामें बाका प्रिय भजन, 'हरिने भजतां हजी कोओीनी लाज जतां नथी जाणी रे' गाया। यह भजन आश्रम-भजनावलिमें है।

प्रार्थनाके बाद बापूजीने सोमवारका मौन लिया। अिस पर्वत और जंगलके दृश्यको देखकर किसीका भी जी नहीं भर रहा था।

जरासा मौका मिलते ही वहा जाकर खडे हो जाते । वापूजीने मौनसे पहले कहा . "मीरावहन प्रकृतिकी पुजारिन है, अत अुसके लिअे सृष्टि-सौन्दर्यका अवलोकन करके अुसे आचरणमें लाना वाये हाथका खेल है।" सुशीलावहनने अिस दृश्यका चित्र वना लिया। अिसलिअे अुन्होने अिस दृश्यको अपनी चित्रकलासे स्थायी कर दिया।

नौ वजे वापू विस्तर पर गये। मैंने अुनके पैर दवाकर और अुन्हे अतिम प्रणाम करके आजका यह मगल दिवस आनन्दमें समाप्त किया।

२४

दो वर्षगांठ

आगाखा महल, पूना,
२६–९–'४३

लॉर्ड लिनलिथगो भारतके वाअिसरॉयका पद छोडकर भारतसे विदा लेनेवाले थे। अिसलिअे पू० वापूजीने अेक मित्रके नाते अुन्हे पत्र लिखा। अुसका सार यह था :

> आप भारतसे विदा हो रहे है, अिसलिअे दो शब्द लिखनेकी अिच्छा हो रही है। आपके हृदयमे अीश्वरका निवास हो। आशा है अीश्वर आपको यह समझनेकी सद्वुद्धि देगा कि आप जैसे अेक महान राष्ट्रके प्रतिनिधिने अेक वडे साम्राज्यमें अितनी वडी झूठ चलाकर गभीर भूलें की। भगवान आपको यह सद्वुद्धि दे।

आगाखा महल, पूना,
२९–९–'४३

ववअी सरकारकी तरफसे मुझे आज फिर पत्र मिला कि तुम्हे छूटना हो तो अभी ही छूट सकोगी, वादमें जव अिच्छा हो तव नही छूट सकोगी। अिसके अुत्तरमें मैंने लिखा कि मैं यहा अेक सेविकाके रूपमें आअी हू और रही हूं, अिसलिअे आपकी सभी शर्तें मुझे मजूर हैं।

आगाखा महल, पूना,
२२–१०–'४३

आज डॉ० गिल्डरका बासठवा जन्मदिवस था। अिसलिअे सवेरे जरा धूमधाम रही। डॉक्टर साहब बापूजीको प्रणाम करने आये, तब बापूजीने अपने हाथके सूतके बासठ तारका हार अुन्हे पहनाया। बा और हम सबने तिलक करके डॉक्टर साहबको हार पहनाये। बाने तो शक्कर देकर सबका मुह भी मीठा किया।

कटेली साहबने खानेकी मेज पर अच्छी तरह पैक किये हुअे और अूपर पतेके लेबल चिपके हुअे छोटे बडे पार्सल अिस तरह जमा दिये थे, मानो डॉक्टर साहबके जन्मदिनके निमित्त बाहरसे भेंटें आअी हो। अेक पार्सल पर 'स्मोकलेस सिगार' लिखा हुआ था। अुस पार्सलमें दूध, कोको, गुड और मूगफलीका भूसा मिलाकर चुरुट जैसा ही रग और आकार बनाकर अूपर सच्चे चुरुटका ही सुनहरा कागज लपेटकर चुरुटके लकडीके डिब्बेमें (जिस कपनीकी तरफसे वे बने हो अुसका निशान कायम रखनेको) भर दिया। डॉक्टर साहबके चुरुट काममें लेनेके बाद जो डिब्बे खाली होते, अुन्हे हममें से जिसे आवश्यकता होती वह ले लेता। अैसे डिब्बोका अुपयोग किया गया था। चुरुट जैसी यह चाकलेट बनानेका परिश्रम प्यारेलालजीने किया था।

दूसरे पार्सलमें अेक कसीदा किया हुआ मेजपोश था। अुसे सुशीलाबहनने तैयार किया था।

अेक पार्सलमें मिट्टीके खिलौने—बकरी, बैल, गाय अित्यादि थे। वे मीराबहनके बनाये हुअे थे।

ये सब पार्सल डॉक्टर साहब सुबहकी चाय पीने मेज पर आये, तब कटेली साहबने गभीर चेहरा बनाकर अुन्हें सौंपे और वही पर खोले। अिस प्रकार आनन्द-विनोदमें प्रातःकालका समय कहा चला गया अिसका पता ही नही चला। अिसलिअे सुबह बैडमिटन खेलनेके लिअे हमें मुश्किलसे पन्द्रह मिनट मिले।

हम खेलने नीचे अुतरे। बाकी तमशा यह थी कि आज तो डॉक्टर साहबको ही जीतना चाहिये। अिसलिअे हमारे दल बनाये

गये। अेक दलमें कटेली साहब, डॉक्टर साहब और प्यारेलालजी, और दूसरेमें मीराबहन, सुशीलाबहन और मैं। हमारा दल हारा और डॉक्टर साहबका दल जीता। अिससे बाको खूब आनन्द हुआ।

आगाखा महल, पूना,
२९–१०–'४३

दीवालीका त्यौहार हमारे यहा खूब धूमधामसे मनाया जाता है। परन्तु बापूजीके लिअे तो सब दिन अेक प्रकारसे समान ही थे। क्योंकि सब जेलमें थे और भारतमें गुलामी थी, अिसलिअे आनन्द तो होता ही कैसे? परन्तु बा शकुन रखे बिना कैसे मानती? लगभग नौ बजे मैं रोज अुनके सिरमें मालिश करके कघी करती थी। मुझसे कहने लगी "आज दीवाली है न? अिसलिअे तू मेरी मालिश करके तुअरकी दाल चढा देना और पूरणपोली बनाना।" बादमें दक्षिण अफ्रीकाकी बात करते हुअे बोली "बापूजीको पूरणपोली अितनी अधिक प्रिय थी कि हर रविवारको जरूर बनवाते थे।"

मैंने कहा. "यदि हम शक्करके बजाय गुडकी बनायें और बकरीका घी काममें लें तो बापूजीको खानेमें क्या अेतराज हो सकता है?"

बा बोली "तू बापूजीसे पूछ लेना।"

मैंने बापूजीसे पूछा। बापूजी जरा मुस्कराकर बोले "यदि बा चखे तक नही तो मैं अुसके बदले खा लूंगा।" मेरी समझमें नही आया कि बापूजी यह शर्त क्यो लगा रहे है, अिसलिअे मैंने पूछा। सुशीलाबहनने समझाया "बाको दाल भारी पडेगी और हृदयकी धडकन बढ जायगी, अिसीलिअे बापूजीने अैसा कहा होगा।"

यह समझ लेनेके बाद जो शब्द बापूजीने कहे थे वही मैंने बासे कह दिये।

अुन्होने तो अेक क्षणका भी विचार किये बिना कह डाला, "यदि बापूजी खायें तो मुझे पूरणपोली चखनी तक नहीं।" बापूजी और हम सबको अुन्होने आनन्दपूर्वक पूरणपोली खिलाओी।

आगाखा महल, पूना,
नववर्ष
३०–१०–'४३

जल्दी अुठकर प्रार्थनासे पहले ही बा, प्यारेलालजी, सुशीला-बहन और मैंने बापूजीको प्रणाम कर लिया था। प्रार्थनाके बाद नहा-धोकर मैंने जब सबको प्रणाम किया, तब दुबारा बापूजीको भी किया। बापूजी विनोदमें कहने लगे. "तू सबसे छोटी है, अिसलिअे तुझसे अीर्षा होती है। तेरे लिअे कैसा मजा है कि आज तुझे सबके आशीर्वादकी घप मिलती है और मुझे किसीकी भी नही।"

अितनेमें डॉक्टर साहब भी प्रणाम करने पहुच गये, तो मेरे साथ हुअी बात डॉक्टर साहबको दुबारा सुनानेके बाद बापूजी बोले:

"यह थोडे ही नववर्ष है? सच्चा नववर्ष तो अुसी दिन मनाया जायगा, जब भारत आजाद होगा। और दीवाली या होली सभी त्यौहार तब ही मनाये जा सकते हैं जब हिन्दुस्तान आजाद हो। सबको पेटभर खानेको मिले, कपडे मिले, और रहनेको मकान मिले। आज चारो ओर होली जल रही है। परन्तु अैसे नववर्ष और दीवाली कितने ही चले गये और शायद कितने ही चले जायगे। अलबत्ता, मुझे पूरा धीरज है। जो होता है या हुआ है अुसमें हिन्दुस्तानका भला ही है, अैसा मानना चाहिये। आपने तो बहेरामजी मलबारीकी यह कविता पढी होगी न — 'सगा दीठा में शाहआलमना भीख मागतां शेरीअे?'* हम अुसीके वारिस हैं न? अुसके सम्बन्धी कहे तो भी गलत नही होगा। अीश्वर जाने हमें कब तक भीख मागनी पडेगी।"

आगाखा महल, पूना,
७–११–'४३

आज मीराबहनका जन्मदिन था। जन्मदिन तो आते ही है, परन्तु मीराबहनका जन्मदिन कुछ दूसरी ही तरहका था।

---

* शाहआलमके सगे-सबंधियोको मैंने गलियोंमें भीख मागते देखा है।

सवेरे वे बापूजीको प्रणाम करने आअी, तब बापूजीने अपने काते हुअे सूतकी अठारह तारकी माला मुझसे मागी।

मीराबहन बापूजीके पास ही थी, अिसलिअे मुझे आश्चर्य हुआ कि सिर्फ अठारह तार क्यो? परन्तु अुस समय यह सारा ब्यौरा पूछनेका मौका नही था। मैंने तुरन्त अठारह तारकी माला दे दी। मीराबहनको गाय, बकरी आदि पशु-पक्षियो पर खूब ही प्रेम है। अिसलिअे कटेली साहबने मिट्टीकी गाय, चिडिया आदि खिलौनोका पार्सल बनाकर बापूजीके द्वारा अुन्हे दिया।

अिस सारी विधिके बाद जब मीराबहन मेज पर दूध पीने बैठी, तब मैंने पूछा "आपको आज बापूजीने सिर्फ अठारह तारकी माला किसलिअे पहनाअी? आम तौर पर नियम यह है कि जिसका जो साल शुरू हुआ हो, अुसे अुतने ही तारकी माला पहनायी जाय।"

मीराबहनने मुझसे कहा "मैं अपना जन्म अुस समयसे मानती हू, जबसे मैं बापूजीके चरणोमें आअी हू। बापूजीकी दुनियामें जीना बडे सौभाग्यकी बात है। परन्तु बापूके भारतमें जीना तो अुससे भी अधिक है। जबसे मैं बापूजीके पवित्र चरणोमें आअी, तबसे अपना सच्चा जन्म हुआ मानती हू। ७ नवम्बर, १९२५ को अर्थात् आजसे अठारह वर्ष पहले मैंने बापूजीके चरणोमें सिर रखा। अिसलिअे आज मुझे अठारह वर्ष पूरे होकर १९ वा वर्ष लग रहा है। भले ही तुझे दीखनेमें मैं बडी लगती हू, परन्तु अपने मनमें मैं बापूजीके सामने अठारह वर्षकी बालिका ही हू।"

* * *

प्रबोधिनी अेकादशी
९-११-'४३

प्रबोधिनी अेकादशीके दिन तुलसीका ब्याह होता है। और बाको तुलसी पर असीम श्रद्धा थी। सुबह-शाम तुलसीके गमलेमें घीका दिया जलवाती। प्रार्थना या पाठ भी वही बैठकर करती और अेक तुलसीका गमला बरामदेमें रहता।

पू० बाने चार गमलोंका सुन्दर मंडप बनवाया। सुशीलाबहनने रांगोलीका अेक रंगीन बड़ा फूल बना दिया। अुस पर गमला रखवाया। सामने ॐ लिखा और तुलसीको फूलोंसे खूब सजाया गया। सूखे-गीले मेवोंका प्रसाद रखा। शामके समय बापूजी भी देखने आये। आरती अुतारी और रोजके समय प्रार्थना हुआी। जब तक नित्यके अनुसार रामायणकी चौपाअियां गाअी गअीं, तब तक धूप-दीप जलते ही रखे गये। प्रार्थनाके समय रोशनी बन्द कर दी जाती थी। रोशनी बन्द हो जानेके बाद अगरबत्ती और घीके दियेका तेज और तुलसीका बढ़िया शृंगार देखते ही बनता था। साथ ही प्रार्थना, रामधुन, भजन, रामायणकी चौपाअियां सुशीलाबहनके मजीरे और मीराबहनके तबूरेकी झंकारके साथ गाये जा रहे थे। रोजकी प्रार्थनाकी अपेक्षा आज कुछ अनोखा ही वातावरण बन गया था।

सप्ताहमें दो बार भजन गानेकी मेरी बारी रहती थी. सोमवार और शुक्रवार। आज सोमवार था। बाने नीचेका भजन गानेकी सूचना की :

दिलमा दीवो करो रे दीवो करो,
कूडा काम क्रोधने परहरो रे दिलमा०

दया दिवेल प्रेम परणायु लावो,
माही सुरतानी दिवेट बनावो,
माही ब्रह्म अग्निने चेतावो रे दिलमा०

साचा दिलनो दीवो ज्यारे थाशे,
त्यारे अंधारु मटी जाशे,
पछी ब्रह्मलोक तो ओळखाशे- दिलमा०

दीवो आभे प्रगटे अेवो,
टाळे तिमिरना जेवो,
अेने नेणे तो नीरखीने लेवो दिलमा०

दास रणछोड घर सभाळयु,
जडी कूची ने ऊघडयु ताळु,
थयु भोमडळमा ’ अजवाळु दिलमा०

[अर्थ - दिलमें दिया जलाओ। काम-क्रोधकी बुराओको छोडो। दयाका तेल और प्रेमका दीपक लाओ, अन्दर ध्यानकी बत्ती बनाओ और अुसमें ब्रह्मकी अग्नि प्रगटाओ। जब सच्चे हृदयका दिया जलेगा, तब अधेरा मिट जायगा। बादमें ब्रह्मलोकका ज्ञान होगा। दिया हृदयरूपी आकाशमें अैसा जले जिससे सारा अधकार नष्ट हो जाय। अुसे आखोसे अच्छी तरह देख लिया जाय। दास रणछोड कहते है कि ज्ञानकी कुजी मिल गअी, ताला खुल गया और हमें आत्मज्ञान हो गया। अिससे भूमडलमें अुजाला हो गया।]

अिस प्रकार आजका भजन भी बाने अिस वातावरणके अनुरूप ही ढूढ निकाला।

२५-११-’४३

डॉ० सुशीलाबहनकी भाभीके अेक दिनकी छोटी बच्ची छोडकर गुजर जानेका तार मृत्युके दस दिन बाद सुशीलाबहनके हाथमें आया। अिस सबधमें गृहविभागको तो पत्र लिखा गया था, परतु साथ ही बाने बापूजीसे अिस प्रकारका पत्र भेजनेका भी आग्रह किया था कि सुशीला-बहनको अुनकी माताजीके पास दिल्ली भेजा जाय। लेकिन यह असभव बात थी, क्योकि सरकार बापूजीके पास रहनेवालोमें से किसीको बाहर नही भेजना चाहती थी। तब बाने यह आग्रह किया कि सुशीलाबहनने अब तक अपने किसी भी सबधीको पत्र नही लिखा। लेकिन यह टेक अैसे समय छोड देनी चाहिये। सुशीलाबहनने कहा कि सरकारको जब अेक बार बता चुकी कि मै पत्र नही लिखूगी, तो अब कैसे लिख सकती हू? तब बा बापूजीके पास गअी और कहा कि सुशीला-बहन तथा प्यारेलालजी दोनो भाअी-बहनको घर पत्र लिखना ही चाहिये। बापूजीके समझानेसे दोनो भाअी-बहनने घर पत्र लिखा। परतु

मुझे मध्यप्रान्तकी सरकारने छोड़ा था और देवदास काकाके पत्रमें अुसका अुल्लेख किया गया था, जिससे कुछ गलतफहमी हुअी। सुशीला-बहनकी माताजी दिल्लीमें रहती थी, अिसलिअे समय समय पर देवदास काका अुनसे मिलते रहते थे। अुनकी स्थिति देखकर देवदास काकाने बाके नाम पत्र लिखा कि सुशीलाबहनने छूटनेसे अिनकार कर दिया, परन्तु अुन्हें अैसा नही करना चाहिये था। अुनकी माताजीको अुनकी सहायताकी बड़ी आवश्यकता है।

अैसी गलतफहमी होनेके कारण बाने थोडा अुलहना मुझे भी दिया, क्योंकि अुनके पत्र मैं ही लिखती थी। पत्र यद्यपि मैं लिखती, परन्तु बा दस्तखत तभी करती जब खुद पढ़ लेती कि क्या लिखा है। बाको अिससे बडा दुःख हुआ। अुन्होंने सोचा, सुशीलाबहनकी माको कहीं अैसा न लगे कि मेरी विपत्तिके समय भी मेरी पुत्री काम नहीं आती। अिसलिअे अुन्होंने बापूजीसे कहकर अेक तार दिलवाया कि 'सरकार सुशीलाको नहीं परन्तु मनुको छोड रही थी।'

सुशीलाबहनने तार देनेके लिअे बहुत मना किया, परंतु बाका हृदय मातृहृदय था। और बच्चोंको माताके प्रति कैसा बर्ताव करना चाहिये, अथवा लड़का या लड़की अपने माता-पिता या बडोंके प्रति जब अुनको अप्रिय लगनेवाला व्यवहार करता है, तब अुन्हें लड़के या लड़कीका व्यवहार कितना दुःख पहुंचाता है, अिसका बाको अच्छी तरह अनुभव था। अिसलिअे अुन्होंने सुशीलाबहनकी बात न मानी और तार दिलवाकर ही चैन लिया।

२५

जेलमें मुलाकातें

आगाखा महल, पूना,
२७-११-'४३

बापूजीने (भारत-सरकारको) अिस आशयका अेक पत्र लिखा था कि कार्य-समितिके सदस्योसे मिलनेके बारेमें नये सिरेसे विचार किया जाय, तो आज बगालमें जो भुखमरी फैली हुअी है, देशमें हजारो आदमी मर रहे हैं और सेवा करनेवाले जेलोमें सड़ रहे हैं, अुसका कोअी हल निकल सकता है। अुस पत्रका भारत-सरकारके मत्री रिचार्ड टॉटनहामकी तरफसे जवाब आया कि,

> ८ अगस्त, १९४२ के प्रस्तावके विषयमें आपके विचारोमें कुछ भी परिवर्तन हुआ नही दीखता। अिसी तरह अिस बातका कोअी चिह्न दिखाअी नही देता कि कार्य-समितिके सदस्योंमें से भी किसीका मत आपसे भिन्न हो गया हो। और यह तो दोनोको अच्छी तरह मालूम है कि किन शर्तो पर सहानुभूतिपूर्ण विचार हो सकता है।

अिसके अलावा बापूजीने अेक और पत्र लिखा। डॉ० गिल्डरकी पत्नी बीमार थी। परतु अुन्हे या बापूजीके साथ रहनेवाले दूसरोंको बापूजीके साथ होनेके कारण साधारण कैदियोको हकके तौर पर जो मुलाकातें मिलती वे भी नही मिलती थी। अिसलिअे बापूजीने लिखा कि,

> मेरे साथ रहनेवालोमें सिर्फ डॉ० सुशीला नय्यरको ही तार देरसे मिला हो अथवा अैसे अवसर पर भी कठिनाअी भुगतनी पडी हो सो बात नही है। डॉ० गिल्डर भी मेरे साथ रहनेके कारण अपनी पत्नी या पुत्रोंसे नही मिल

सकते। छोटीसी मनु गाधी अपने पिता या वहनोंसे नही मिल सकती, न कस्तूरबा ही अपने पुत्र या पौत्र-पौत्रियोंसे मिल सकती हैं।

अलबत्ता, मैं जानता हू कि ये प्रतिबंध मेरे साथियोको कड़े प्रतीत नही होते। यदि अैसा ही होता तो मनु गाधी वाहर जा सकती थी।

मुझ पर लगाये गये सरकारके प्रतिबंधोको मैं समझ सकता हू। परतु दूसरो पर लगाये गये प्रतिबंध मेरी समझमें नही आते।

अुपरोक्त पत्रका अुत्तर आया

डॉक्टर साहवकी पुत्रीने भी अपनी माताजीकी बीमारीके कारण डॉक्टर साहवसे मुलाकात करनेके लिअे सरकारको अर्जी दी है और अुस पर विचार हो रहा है।*

दोपहरको समाचार मिला कि कल अर्थात् २८-११-'४३ को डॉक्टर साहवको मुलाकात मिलेगी। सब खुश हुअे।

आगाखा महल, पूना,
२८-११-'४३

मुलाकातके लिअे कर्नल भडारी डॉक्टर साहवको साढ़े वारह वजे लेनेको आये। मुलाकात अुनके दफ्तरमें रखी गअी थी। शामको चार वजे डॉक्टर साहब लौटे।

* अिन पत्रोंकी अक्षरश नकल तो मैंने नही रखी थी, परतु अुस समय लिखे गये पत्र पढकर अुनका सार मैंने लिख लिया था। वही दे रही हू। अिसलिअे कोअी गलतीसे यह न समझ ले कि मैं सरकारके साथका पत्रव्यवहार अक्षरश. दे रही हू। मूल पत्रव्यवहार तो अंग्रेजीमें ही होता था। परतु मेरी अंग्रेजी सुधारनेके लिअे और अैसे पत्रव्यवहारसे मेरी जानकारी वढानेके लिअे ही सुशीलावहनने अिस पत्रव्यवहारका मेरे अंग्रेजी पाठोंमें समावेश कर दिया था। रोज मैंने क्या पढा अथवा कितना पढा—आदिकी मुझे नोंध रखनी पडती थी। अुनीमें यह लिखा हुआ है।

पू० बाकी तबीयत खराब हो गयी है। रातको सोया नहीं जाता। अिसलिअे आज तो ऑक्सिजन मगाना पडा।

आगाखां महल, पूना,
३०–११–'४३

बाकी तबीयत खराब ही रही। डॉ० गिल्डर और सुशीलाबहनने विचार करके बापूजीसे कहा कि मानसिक राहत मिलनेके लिअे यदि बाहरके व्यक्तियोसे बाकी बारी बारीसे मुलाकात होती रहे, तो कदाचित् अुन्हे लाभ हो।

दोपहरको अिसके सिलसिलेमें अेक पत्र भी लिखा गया।

आगाखा महल, पूना,
२–१२–'४३

आज कटेली साहबने खबर दी कि 'सबधियोकी सूची' बनाकर सरकारको भेज दी जाय तो क्रमश मुलाकातें दी जायगी।

दोपहरको बापूजी, बा और मैंने गाधी-परिवारके सदस्योके—जिनमें से आधे तो अफ्रीकामें रहते है—नाम बालको सहित याद कर-करके लिखे। स्त्री-पुरुष मिलकर लगभग ५०० नाम हुअे। (अिनमें विवाहिता लडकिया और अुनके लडके-लडकियोका भी समावेश कर दिया। तो भी कितने ही रह गये थे।)

मुझे तो लम्बी नामावली देखकर आज ही पता चला कि अितना विशाल कुटुम्ब है। मैंने बापूजीसे यह बात कही तो वे बोले "तब तो तेरी अपेक्षा मेरा परिवार कदाचित् सौ गुना बडा होगा।" बात सच्ची थी। बापूजी किसी 'गाधी' नामवालेको ही अपना कुटुम्बी नही मानते थे। अुनके लिअे तो सारे जगतके मनुष्य कुटुम्बियो जैसे ही थे।

आगाखा महल, पूना,
४–१२–'४३

कर्नल भडारीने सुबह खबर दी कि रामदास गाधीको तार दिया है कि वे चाहे तो कस्तूरबासे मुलाकात करने आ सकते है।

वे अभी बातें कर ही रहे थे कि अितनेमें अुनका नागपुरसे टेलीफोन आया कि निर्मला काकी (रामदास गाधीकी पत्नी) को भेजा है। कर्नल भडारीने कहा कि यदि आज आ जायगी तो आज ही मुलाकात कर सकेंगी, जिससे मुलाकातियोका समय भी खराब न हो, और मुलाकातके दरमियान बा और बापूजी ही मौजूद रह सकेंगे, दूसरा कोअी नही।

आगाखां महल, पूना,
४–१२–'४३

शामको चार बजे निर्मला काकी नागपुरसे मिलने आअी। मैंने केवल अुन्हे प्रणाम किया, बात तो हो ही नही सकती थी।

निर्मला काकी लगभग दो घटे रही। बाने परिवारके सभी लोगोंके कुशल-समाचार पूछे। मुझे अैसा लगा कि आश्रमकी छोटीसे छोटी बातें और आश्रमवासियोंके स्वास्थ्य अेव नित्यके कार्यक्रमके बारेमें सब कुछ अुनसे जानकर बाने मनमें ताजगी मेंहसूस की। आज वे खुश दिखाअी देती थी।

रातको समाचार आया कि कल देवदास काका आनेवाले हैं। रात अच्छी बीती, अैसा कहा जा सकता है। डेढ बजे सास चढी हुअी-सी लगने पर बाने मुझे जगाया। गरम पानी और शहद पिया। मैंने जरा पीठ पर हाथ फेरा। तुरन्त सो गअी। पिछले तीन दिनोकी अपेक्षा आज बाने अच्छी नीद ली।

आगाखा महल, पूना,
५–१२–'४३

बापूजीका मौनवार था, अिसलिअे सब कुछ शान्त लगता था। मुझे भूमिति पढानेके विचारसे बापूजी पिछले लगभग पन्द्रह दिनसे मेरी पाठशालाके पाठ्य-क्रममें रखी हुअी भूमितिकी पुस्तक (Plane Geometry) स्वय पढ रहे थे। आज वह पूरी हो गअी तो बापूजीने अेक पर्चे पर लिखा. "वर्षो बाद मैंने तेरी भूमितिकी पुस्तक पढ

ली। मुझे अिसमें बडा रस आया। तुझे पढाअूगा तो मेरा और भी पुनरावर्तन हो जायगा। कलसे हमें बिन्दुसे प्रारम्भ करना है और अिसमें जितने अंग्रेजी नाम हैं अुनके गुजराती नाम बनाने हैं।"

"हमें तो सात साल जेलमें बिताने हैं, अिसलिअे गुजरातीमें अेक पुस्तक भी तैयार हो जायगी।" मैंने बापूजीसे कहा तो वे हसने लगे।

आज देवदास काका आनेवाले थे। परन्तु बाने कहा कि, "निमू कल आ गअी थी, अिसलिअे देवदास भले आज न आकर कल आवे।" अिस पर बापूजीने लिखा "किसे पता रातको क्या हो जाय? आजका काम आज ही कर लिया जाय। हम यह भजन तो गाते ही हैं कि 'जो कल करना हो सो आज कर ले, जो आज करे सो अब कर ले'।"

निर्मला काकी भी ठहर गअी थी। परन्तु दोनोको साथ नही आने दिया। दोनो बारी-बारीसे आये, जिससे कटेली साहबको मुलाकातियोंकी डायरी रखनेमें सुविधा रहे।

बाकी तबीयत दिनमें ठीक रही। रातको फिर बिगडी। आजसे मैंने और बाने कमरेमें सोना शुरू किया। बापूजी और अन्य सब बाहरके बरामदेमें सोते हैं। रातको नींद न आनेसे बाको बेचैनी रहती थी। जिससे कही बापूजीको जागरण न करना पडे अिस खयालसे बाने यह फेरबदल करवाया।

आगाखां महल, पूना,
७-१२-'४३

आजकल बाकी देखभालमें रहनेके कारण और दोपहरको मुलाकातोंके कारण बापूजी खुदको संतोष हो अिस तरह मुझे पढा नही पाते। अिसलिअे सुबह ही पढा दिया।

तीन बजे देवदास काका और निर्मला काकी आये। निर्मला काकीका आज अंतिम दिन था। देवदास काका अभी दो दिन ठहर सकेंगे।

शामको हम घूमने निकले कि अेकाअेक बाकी तबीयत बिगडी। अिसलिअे तुरन्त सब अूपर आये। सुशीलाबहन और डॉ० गिल्डरने अुनकी परीक्षा की। जरा ठीक लगने पर प्रार्थना की।

सुशीलाबहन तो दस बजे तक खडे पैरों ही रही। मैं शरीर दबाने या कुछ जरूरी चीज ला देनेमें ही मदद कर सकती थी। परन्तु डॉक्टरके नाते वे तो तीन-चार घंटे तक लगभग सतत बैठी रहीं। दस बजे बापूजी थोडी देर बैठे। सुशीलाबहनको और मुझे बापूजीने आराम करनेके लिअे कहा। मैंने अिनकार किया, तो बापूजी बोले "मैं कहूं वैसा करती रहेगी तो ही पार अुतरेगी। जिसे बाकी सेवाका लाभ लेना हो, अुसे पहले अपनेको सभालना होगा।"

मैं चुपचाप अपने पलंग पर चली गअी। मेरे जानेके आधे घंटे बाद ही बाने बापूजीको भी आग्रह करके सोनेको भेज दिया। बापूजी सोनेको अुठे और प्यारेलालजी बाके पास बैठे। प्यारेलालजी दो बजे तक रहे। बीचमें अेक दो बार सुशीलाबहन और डॉक्टर साहबने बाकी परीक्षा की। ३॥ बजे बापू आकर मुझे अुठा गये। खांसी और सासका बडा जोर था। शरीर दर्द कर रहा था। ३॥ से ७॥ के बीच अेक बार ३० मिनिट और अेक बार २० मिनटके लिअे बाको अच्छी नींद आअी। सीधा नहीं सोया जाता था।

सवेरे दातुन करके गरम पानी और शहद पीकर ८ से ९॥ तक अच्छी नींद ली।

आगाखां महल, पूना,
८-१२-'४३

पू० बाको मालिश करनेसे सुशीलाबहनने मना कर दिया। नहानेकी भी मनाही कर दी। परन्तु स्पंज करवाया। दस बजे बाने अेक रकाबी काढा लिया। कुछ भाता नहीं। दूधमें आधा पानी डलवा कर अंजीर अुबाले और दोपहरके भोजनमें दिये। कमजोरी बहुत ज्यादा लगती है।

आज दोपहरकी मुलाकातमें हरिलाल काकाकी दोनो लडकियां थीं। रामीबहन कहती थी कि माधवदास मामाको मुलाकातकी अनुमति नहीं दी गअी (माधवदास मामा बाके भाअी हैं।)

छोटीनी अुर्मिने बढिया नाच करके दिखाया। बा अपने बेटेकी नात वर्षकी बेटी अुर्मिकी कला हसते हसते आनन्दसे देख रही थी। दादा-दादियोंको अपने पुत्रों, पौत्रों या पौत्रियोंके पराक्रम देखकर आनन्द होना स्वाभाविक है।

अिन सबके जानेके बाद माधवदास मामाकी बारी आअी। भाअीकी बहन अेक थी और बहनके भाअी अेक थे। अैसे भाअी-बहनकी जेलके भीतर मुलाकात होना अेक अनोखा दृश्य था। बाकी भाभी गुजर गअी थी, अिसलिअे माधवदास मामा मनसे कुछ अस्वस्थ और दुबले लगते थे। पहले तो मामाके प्रवेश करने पर हर्षके आवेगमें अेकदम कोअी बोल नहीं सका। दो मिनिट नीरव शान्ति छा गअी। मैंने मामाको बहुत वर्षों बाद देखा। प्रणाम किया।

बा अेकदम बोल अुठी "अितने दुबले क्यों हो गये हो? रामका नाम लो। सारी चिन्ता छोड दो। अब क्यों व्यर्थकी चिन्ता की जाय?"

बाने अुन्हें चाय देनेको कहा। चाय दी। निर्मला काकी नागपुरसे जाडेके लिअे मेथीपाक बनाकर लाअी थी, वह सब अुन्हें दे दिया और कहा "यह निमू बनाकर लाअी थी, तुम्हें वापस दे रही हूं। खा लेना और बेकारकी चिन्ता मत करना। अब अीश्वर-भजनमें जिन्दगी बितानेका समय है। जितना हो सके रामनाम लो।"

अन्तमें विदाअीके समय दोनों गद्गद हो गये।

तीसरी बारी देवदास काकाकी आअी। देवदास काकाने खबर दी कि नागपुर जेलमें किशोरलाल काकाका स्वास्थ्य बहुत ही खराब है। वजन ७५ पौण्ड हो जाने और दम अुठनेकी बात कही। अुन्हें

पैरोल पर छुड़वानेकी बात की। बापूजीने मना करते हुअे कहा: "किशोरलालको तो मैं खो चुका। अुन्हें मैं अच्छी तरह जानता हूं। वे बीमारीके कारण पैरोल पर छूटनेको राजी होनेके बजाय जेलमें मरना पसन्द करेंगे। नागपुर जेलमें ही महादेवकी तरह अुनके चले जानेकी खबर सुनूं तो मुझे आश्चर्य नहीं होगा। कौन जाने अैसे लोगोंके बलिदान ही शायद स्वराज्यकी कुंजी साबित हों।

२६
सरकारका बरताव

आगाखां महल, पूना,
२६-१२-'४३

पू० बाका स्वास्थ्य कभी अच्छा कभी बुरा चलता रहता है। आज शामळदास काका अपने परिवारके साथ, देवदास काका परिवारके साथ और जमनादास काका भी अिजाजत मिल जानेके कारण दोपहरको तीन बजे आयेंगे। यह समाचार कर्नल भंडारी दे गये।

सबकी बारी अेकके बाद अेक आयी। और सब परिवार बच्चोंके साथ होनेके कारण बहुत शोर हो रहा था। बापूने बच्चोंको सूखा मेवा दिया। शामळदास काकासे कहने लगे: "ले, तू भी तो बच्चोंमें ही गिना जायगा न? मेरी दृष्टिमें तो तू बालक ही है।" यों कहकर अुन्हें भी बापूने प्रसादी दी।

दूसरी बारी देवदास काकाकी थी। लक्ष्मी काकी, तारा, मोहन और रामू सभी आये थे। अुन सबको भी मेवेकी प्रसादी दी। मुझे अुन सबके साथ खेलनेका आनन्द मिल गया। मैं, तारा और मोहन दूसरे कमरेमें खेलने बैठ गये। अिनमें मैं अपना काम भूल गयी। परन्तु बापूजीको पढ़ानेका समय न मिलनेके कारण भाग्यवश बच गयी।

सबके जानेका समय हो गया। तब लक्ष्मी काकीने बाको प्रणाम करनेके लिअे बच्चोको बुलाया। बाने देवदास काकासे कहा "जयसुखलाल और मनुकी बहनको खबर देना और कहना कि अुन्हे सुविधा हो तो अेकाध बार मिल जाय।" ये शब्द मेरे कानो पर पडे और मैं प्रसन्न हो गअी। जाते जाते काकाने कहा "मैंने कराची समाचार भेज दिये हैं।" अिससे मैं बहुत ही खुश हुअी। डेढ वर्षसे किसीका मुह नही देखा था, अिसलिअे आनन्द होना स्वाभाविक था। बा कहने लगी "हम कानून नही तोड सकते, अिसलिअे तू कोअी बात न करना। परतु मिलना तो होगा ही।"

बा अपनेसे भी दूसरेका विचार कितना ज्यादा करती है! बात भी सही है। सभी मुलाकाती कोअी बाके साथ बातें नही करते, क्योकि अुन्हे बात करनेमें भी दम अुठता है। मुलाकाती तो केवल प्रणाम करते है। बा सबका कुशल-मगल पूछती है। बादमें तो सभी लगभग बापूजीसे ही बातें करते है। बाहर बा और बापूजीके समाचार पानेके लिअे तडपती हुअी जनताको मुलाकातियो द्वारा अुनके ताजे समाचार मिल जाय तो अुसे कितना धीरज बधे!

मुलाकात छह बजे तक चली। बाकी तबीयत ठीक रही। बापूजीका रक्तचाप बढ गया है। हम सब दिनभर पिछले बरामदेमें धूपमें ही बैठते है।

आगाखा महल, पूना,
२९–१२–'४३

सुबह ही साढे आठ बजे कटेली साहबने बासे कहा, आज मनुका कुटुम्ब आ रहा है। बाको बडी खुशी हुअी। वे बोली: "अच्छा, बेचारी छोटीसी लडकी यहा पड़ी है। अपनी बहन और बापसे मिलकर खुश हो जायगी। बच्चोको मिलनेकी अिच्छा तो होती ही है न?" मेरी तरफ देखकर कहने लगी. "ले, आज तो तेरे पिताजी और सयुक्ता आ रहे है, तुझे कुछ कहना हो तो मुझसे कह देना।"

आज सबको साथ आने दिया। कनुभाओी और मेरी बुआ भी थी। कनुभाओीने बाको भजन सुनाया। मेरी बहनने भी भजन सुनाया। बुआजीने बाके सिरमें तेल मला। मेरी अिन लोगोंसे बोलनेकी तो बहुत अिच्छा हुओी, परन्तु क्या करती?

बहनकी छोटी छोटी बच्चियां—अरुणा और हुमा थी। अुनमें से अरुणाको तो मैंने अनजाने ही अेकदम अुठा लिया। जरा खिलानेके बाद ही भान हुआ कि कानूनका अुल्लंघन कर दिया। परन्तु कटेली साहब बड़े भले हैं। मैंने ज्यों ही अरुणाको नीचे अुतारा वे मुझसे कहने लगे "छोटे बच्चोंको न खिलानेकी आज्ञा सरकार नहीं देती।" मैं और भी शर्मिन्दा हुओी। दो घंटे बाद सब चले गये।

आगाखां महल, पूना,
२–१–'४४

कटेली साहब अेक हुक्म लाये। मुलाकातके समय अेक ही नर्स मौजूद रह सकती है और बहुत जरूरत हो तो अेक डॉक्टर अुपस्थित रहे। अिसके अलावा बा डॉक्टर दिनशा महेताकी देखभालके लिअे तरस रही थी और शायद देशी दवासे कुछ राहत मिले, अिसके लिअे बार-बार अेक वैद्यको दिखानेकी मांग करती थीं। ये सब बातें जब कर्नल भंडारी या कर्नल शाह आते तब बा रूबरू अुनसे करतीं। परन्तु अुनका कोओी परिणाम न होने पर बापूने टॉटनहामके नाम अेक पत्र लिखा कि मुलाकातके समय सेवा-शुश्रूषा करनेवालों पर पाबंदी नहीं होनी चाहिये। बीमारके अशक्त होनेके कारण कमसे कम दो तीन सेवा करनेवालोंकी जरूरत होती है। कनुभाओीको हर तीसरे दिन आनेकी अिजाजत मिली है, अिसके बजाय अुन्हें आगाखां महलमें ही रहने देनेकी बात भी बापूजीने लिखी।

यह भी लिखा कि कस्तूरबाको मुलाकातियोंकी अिजाजत तो मिल गअी, परन्तु सेवा-शुश्रूषा करनेवाला अुस समय मौजूद न रह सके, अिसमें कोओी विवेक नहीं है। अिनके सिवा हरिलाल काका यहीं थे, परंतु कर्नल भंडारीको अुन्हें आने देनेकी अनुमतिकी कोओी

सूचना न होनेके कारण वे मिलने नही आ सके। यह बात जब बाको मालूम हुओी तो अुन्हे बहुत दुःख हुआ। अिसलिअे अिस बातका अुल्लेख भी पत्रमें किया कि हर बार मुलाकातियोको ववकीके दफ्तरसे ही अनुमति लेनी पडती है, अिसके परिणामस्वरूप देर होती है और मुलाकात नही हो पाती।

अिस पत्रका अतिम भाग तो अितना करुण था कि जब मैं सुशीलाबहनके पास पढ रही थी तब अुनकी आखोंसे भी आसू टपक पडे। अुसमें लिखा था कि :

> श्रीमती कस्तूरबा तो सरकारकी बीमार है। अुनके पतिके नाते मुझे कुछ नही कहना है। छोडनेके बजाय अुन्हें मेरे साथ अुनके भलेके लिअे यहा रखा गया है। परन्तु वे अच्छी हो जाय या मृत्युकी ओर चली जाय, अिस बीच और कुछ न हो सके तो भी अुन्हे मानसिक शान्तिकी राहत मिले, यह देखना मेरा और सरकार दोनोका कर्तव्य है। अुनकी किसी भी मानसिक भावनाको चोट पहुचानेका असर अुनके रोग पर बहुत ही बुरा होता है।

बापूजीका वजन अिस सप्ताह दो पौंड घट गया। आजकल लगभग रोज जागरण होता है। खुराक भी रोजके हिसाबसे घट गओी है।

आगाखा महल, पूना
८–१–'४४

संबंधियोकी मुलाकात लगभग रोज ही होती है। अेक दासी सरकारकी ओरसे दी गओी थी, जो आज चली गओी। बेचारी अपने बालबच्चोंको छोडकर आओी थी। अुसे भी रातदिन हमारे साथ नजर-कैदमें रहना पडता था। पर अुसे कैसे अच्छा लगता? अिसलिअे अन्तमें आज तो यह चली गओी।

तारके पास लगभग ३० फुटकी जगह है, जहा सुन्दर धूप आती है। बापूजी सवेरे यहीं घूमते हैं। आज हुक्म आया कि यहा न घूमें।

मैंने क्रोधमें कह दिया. "यहा आपके घूमनेमें सरकारका क्या जाता है?"

बापूजी कहने लगे· "हा और ना का तो वैर है न? बाको मुलाकातकी अिजाजत दिये विना तो छुटकारा नही था, अिसीलिअे दी है।"

मैंने कहा· "बाको छोड देनेमें क्या आपत्ति है?"

बापूजी बोले. "मान लो बा कहीं गुजर जाय तो अुसकी अन्त्येष्टिके लिअे तो मुझे छोडना ही पडे। अिसका अुन्हे डर है। न छोडें तो दुनियाके सामने काला मुह हो जाय। मौलाना साहबको कहा छोडा—हाल ही में अुनकी बेगम गुजर गअी तो भी? परन्तु बा गुजर जाय तो मुझे तो छोडना ही पड़े।"

अब मुझसे और सुशीलाबहनसे काम नही चल सकता था और आया भी चली गअी थी, अिसलिअे बाने प्रभावतीबहनकी माग की। सुशीलाबहन और डॉ० गिल्डर साहबने अिस बारेमें पत्र लिखा था। अुसका अुत्तर आया कि प्रभावतीबहन अेक दो दिनमें आ जायगी।

आगाखा महल, पूना,
९–१–'४४

आजसे बापूजीने मौन लेना शुरू किया है। सुशीलाबहन और मुझे पढानेके लिअे, मुलाकातियोंके साथ बात करनेके लिअे और बाके लिअे बोलेंगे और अधिकारियोंके साथ बहुत जरूरत होगी तो बोलेंगे। यह व्रत कब तक रहेगा, अिसकी मियाद नही रखी।

आगाखां महल, पूना,
१२–१–'४४

शामको प्रभावतीबहन भागलपुरसे आ गअी। साथमें यूरोपियन सार्जण्ट थे। मुट्ठीभर हड्डियोवाली प्रभावतीबहन अितने कड़े पहरेमें आअी। अुस वक्त हम घूमने जा रहे थे। बाके पास प्यारेलालजी थे।

दुबली-पतली प्रभावतीबहनके साथ अितने भरी बदूकोवाले सार्जेण्ट देखकर मै हस पडी। बापूजीसे मैंने कहा "मेरे साथ आनेवाले नागपुर जेलसे भेजे गये बेचारे दो सिपाहियोको यह पता नही था कि नागपुरसे पूना किधरसे जाते है। अिसलिअे सरकारी दृष्टिमें मै विश्वासपात्र मानी जाअूगी न?"

बापूजी कहने लगे. "तेरी बात सच है। सरकारी दृष्टिसे भले विश्वासपात्र तू हो, परन्तु मेरी दृष्टिसे प्रभा होगी। तू कभी भाग भी जाय, परन्तु प्रभा हरगिज नही भागेगी।" यो कहकर हम दोनोको बाके पास भेज दिया और प्रभाबहनको नहाने और मुझे अुन्हे खिलानेको कहा।

प्रभावतीबहन बाके पास गअी। बाने सबसे पहले जयप्रकाशजीके समाचार पूछे।

"अुनका स्वास्थ्य अच्छा नही रहता। वे जेलसे भागे और पकडे गये, अुसके बाद अुन पर जुल्म करनेमें सरकारने हद कर दी।" यो कहकर प्रेमाबहनने अपनी आपबीती भी सुनाअी।

प्रभाबहनने बहुत ही कष्ट सहन किया था। आते ही अुन्होंने काम सभाल लिया। बहुत ही मिलनसार और प्रेमल स्वभाव है।

मैंने कहा "गाडीकी थकावट तो अुतरने दीजिये!"

वे बोली "परन्तु मुझे तो तुम्हारी थकावट दूर करनी चाहिये न? बापूजी और बाकी सेवा करनेमें मेरी थकावट अपने-आप दूर हो जायगी।"

हम दोनोमें कामका बटवारा हुआ। सुबहसे अेक बजे तक मैं बाके पास रहू, १ से ६ तक प्रभाबहन। सुशीलाबहन या प्यारेलालजीको जरूरत पडने पर ही बुलाया जाय। वे बापूजीकी सेवामे रहे, ताकि किसी पर कामका ज्यादा भार न पडे।

अब तो ओश्वरसे अेक ही प्रार्थना है कि हम सबके बीच हमारी बाको फिरसे भली-चगी बना दें, जिससे हमारा आश्रय और भी बलवान हो जाय।

२७

वाके अंतिम दिन

आगाखा महल, पूना,
१४-१-'४४

आजकल शामको मुलाकातियोंके आनेके कारण वा रोज चार बजे गुजराती वाल्मीकि रामायण पूरी करनेके बाद भागवत सुनती। अेक बार तो सारी भागवतका पारायण हो गया था। परन्तु कुछ गूढ भाग मैं सादी भाषामें वाको समझा नही सकती थी, अिसलिअे सुशीलावहन पढने लगी।

पिछले चार-पाच दिनसे अुपरोक्त कारणसे पारायण वन्द रहा, यह वाको खटकता था। आज अुन्होंने मुझे कहा: "सुशीलासे कह दे कि वह मुझे दो बजे आकर पारायण सुना जाय।" परन्तु दो बजे सुशीलावहन रात्रिके जागरणके मारे सो रही थीं, अिसलिअे फिर मैंने ही पढ़ना शुरू किया। यद्यपि सुशीलावहनसे सुननेमें अुन्हे अधिक रस आता था, फिर भी मुझसे यह काम चल जाता था। अिसलिअे अुन्होंने मुझसे कहा: "तू कोअी नब्ज देखने वगैराका डॉक्टरका काम थोड़े ही कर सकेगी? परन्तु भागवत तो पढ़ ही सकती है। अिसलिअे तुझसे या प्रभासे जो काम हो सकता हो, वह काम सुशीलाको सौंपना अुसका वोझा वढाना है।"

यद्यपि सुशीलावहनको अिस वातका दुःख रहा कि मैंने अुन्हें सोतेसे नही जगाया, अिसलिअे वाकी अिस सेवासे वे वंचित रहीं, परन्तु अुन परसे ज्यादा भार अुतर जानेका वाको सन्तोष हुआ।

मैं भागवत सुना चुकी तो वाने पूछा: "आज तो मकर-संक्रान्ति है न?" यह त्योहार मैंने याद नही रखा, अिसके अुलहनेके रूपमें नही, परन्तु सब वातोंसे परिचित रहनेकी सीखके तौर पर कहा:

"अैसे त्यौहार मुझे याद दिलानेका तेरा कर्तव्य था न? आज तो गायोको घास डालना चाहिये। काठियावाडमें आजके पुण्यदानकी महिमा मानी जाती है। अिधर महाराष्ट्रियोंमें भी तिलगुडका रिवाज होता है। यह तू कब सीखेगी? जा, यहासे सीधी जाकर तिलके लड्डू बना डाल (तिल मगवा रखे थे)।"

मैं सीधी जाकर तिलके लड्डू बनाने लगी। बापूजी कहते थे कि अैसा खर्च हमें नही करना चाहिये, परन्तु बाको दुःखी न करनेके खयालसे चलने दिया।

शामको प्रत्येक कैदी और सिपाहीको बाने अपने हाथोंसे अेक-अेक तिलका लड्डू देते हुअे कहा "लो, अगली सक्रान्तिको मैं कहा जीती रहूगी? यह आखिरी है।"

बाका स्वास्थ्य बहुत ही नाजुक हो गया है। बिस्तरके पास दो जनोकी अुपस्थिति लगभग हमेशा ही चाहिये।

आजसे ही बापूजीने रातको जागनेकी बारिया बाध दी। अेक रात ९ से २ बजे तक सुशीलाबहन और २ से ७ तक मैं और अेक रात ९ से २ तक प्यारेलालजी और २ से ७ तक प्रभावतीबहन, ताकि किसी पर जरूरतसे ज्यादा बोझ न पडे।

आगाखां महल, पूना,
२६–१–'४४

बाके स्वास्थ्यमें कोअी खास फर्क नही है। अब मुलाकाती अपनी अपनी पारीके अनुसार आते रहते है। रोजकी तरह काम चल रहा है।

आज स्वातन्त्र्य-दिवस होनेके कारण हम सबने अुपवास किया और नियमानुसार अपना खाना कैदियोंको दिया।

शामको ध्वजवदन हुआ। डॉ० गिल्डरने ध्वजवदन करवाया। 'झडा अूचा रहे हमारा', 'सारे जहासे अच्छा हिन्दोस्ता हमारा' और 'वन्देमातरम्' के तीन गीत गाये गये। जिनके बाद बापूजीने जो प्रतिज्ञा (हिन्दीमें) फिरसे ली, अुसे लिखित रूपमें डॉ० गिल्डरने पढा। वह अिस प्रकार है-

"हिन्दुस्तान सत्य और अहिंसाके रास्तेसे सभीकी सभी और हर मानीमें पूरी आजादी ले, यह मेरा जिन्दगीका मकसद है, और बरसोंसे रहा है। मेरे अिस मकसदको पूरा करनेके लिये मैं स्वतंत्रता-दिनकी चौदहवीं बरसी पर आज फिरसे अिकरार करता हूं कि वह न मिले तब तक मैं न तो खुद चैन लूंगा, और न जिन पर मेरा कुछ भी असर है अुन्हें चैन लेने दूंगा। मैं अुस महान अीश्वरी शक्तिसे, जिसे आंखसे किसीने नहीं देखा और जिसे हम गॉड, अल्लाह, परमात्मा जैसे परिचित नामोंसे पुकारते हैं, प्रार्थना करता हूं कि मेरे अिस अिकरारको पार अुतारनेमें वह मुझे मदद दे।"

रातको मेरा २ से ६ बजे तक जागरण हुआ था, अिसलिये ६ बजे बापूजीने मुझे फिर सोनेको कहा। ६ से ८ तक मैं सोयी। बापूजीने कहा, जो जागनेवाले हैं अुन्हें किसी भी तरह समय निकाल कर आगे-पीछे नींद ले ही लेनी चाहिये, तभी वे सेवा कर सकेंगे।

आगाखां महल, पूना,
३०-१-'४४

आज तो बाकी तबीयत बहुत ही खराब रही। दमेका बहुत जोर था, अुस पर बापूजीका मौन भी था।

दोपहरको कनुभाअी आये। ७ बजे तक रहे। मेरी और सुशीलाबहनकी जागनेकी रात थी। हम दोनोंने अपने-अपने समयमें बाको भजन सुनाये। सारी रात भजन, धुन और गीताजीके बारहवें अध्यायके श्लोक सुनानेकी ही मांग बा बार-बार करती रहीं। आजकी-सी खराब रात तो अभी तक अेक भी नहीं गअी होगी। बापूजीका भी रक्तचाप अूंचा रहता है।

अैसी स्थिति होनेके कारण बापूजीने बा द्वारा की जानेवाली डॉ० दिनशा महेताकी मांगके बारेमें अेक पत्र सरकारको लिखा था। परन्तु अभी तक अुसका अुत्तर न मिलनेके कारण दूसरा पत्र लिखा कि .

बीमारकी हालत बहुत खराब है और अुनकी सेवा करनेवाले केवल चार ही आदमी हैं, रातको हर तीसरे दिन अेक साथ दो जनोको काम करना पडता है। और दिनमें तो चारोको काम करना पडता है। अब बीमारका भी धीरज टूट गया है, वह पूछती ही रहती है कि डॉ० दिनशा कब आयेंगे?

१ अुनीके लिअे डॉ० दिनशा महेताकी सेवाअें मिल सकेगी?

२ मुलाकातके समय सेवाके लिअे मौजूद रहनेवालोंकी सख्याका प्रतिबन्ध दूर हो सकेगा?

३ कनु गाधीको पूरे समय रहनेकी अिजाजत मिल सकेगी?

मैं अितना ही चाहता हू कि यह कहनेका मौका न आये कि राहत देरसे मिली। और यह चाहता हू कि अुपरोक्त स्पष्टीकरण जल्दी मिले।

अिन दिनो किसीको अेक मिनिटकी भी फुरसत नहीं रहती। सब मशीनकी तरह काम करते रहते है। बाकी बीमारीके कारण वातावरण खूब गभीर बन गया है।

आगाखा, महल, पूना,
१–२–'४४

आज कनुभाअीको पू० बाकी सेवाके लिअे आनेकी मजूरी मिल गअी। वे रातको ही आ गये और डॉ० गिल्डर और सुशीला-बहनने सबकी बाकायदा 'ड्यूटी' लगा दी। मेरी रातको जागनेकी 'ड्यूटी' बिलकुल हटा दी, क्योंकि मुझे बा और बापूजी दोनोंका फुटकर काम करना होता है। परन्तु यह नया फेरबदल मुख्यत मेरी आखोंको बचानेके लिअे था, यद्यपि मुझे यह कारण बताया गया कि "सभी यदि रातको जागनेका आग्रह रखे, तो हमें खिलायेगा कौन?" यो कहकर डॉ० गिल्डरने अपने स्वभावके अनुसार मुझे मनाकर समझा दिया।

अिस प्रकार मेरी ड्यूटी सुबह ५ से ९, दोपहरको १ से ३ और शामको ६ से ९ लगी। रातको अेक दिन सुशीलाबहन तथा कनुभाअी

और अेक दिन प्रभावतीबहन और प्यारेलालजी। कर्नल भंडारी डॉ० जीवराज महेताको यरवडा जेलसे ले आये थे। अुन्होंने बाकी परीक्षा की, परन्तु अुन्हे बापूजीसे नही मिलने दिया गया।

बापूजीसे पूछा गया था कि अुनके ध्यानमें कोअी खास वैद्य हो तो बतायें। अिसका अुत्तर भी बापूजीने तुरन्त तैयार कराया। वैद्य शिवशर्माको, जिनके बारेमें देवदास काका कह गये थे, परीक्षा करने देनेकी अिजाजत मांगी गअी।

दिन दिन बाकी तबीयत बिगड़ती जा रही है।

आगाखां महल, पूना,
४–२–'४४

आज दिनमें बाकी तबीयत बहुत ही खराब रही। भजन, रामधुन गाते है और ज्योतिका रे के मीराबाअीके भजन सुनना बाको पसन्द होनेसे ग्रामोफोन पर रिकार्ड बजाते हैं।

रातको २॥ बजे मुझे अुठाया, दो दो मिनिटमें भयंकर खांसी आती थी। शरीर खूब दर्द करता था, अिसलिअे बा बोली "बेटी खून दबा। अब तो मेरा आखिरी समय आ गया है . . . ." मेरी आंखोंसे आंसूकी अविरल धारा बह निकली। अुसे बाने देख लिया। "अिसमें रोनेकी क्या बात है? सबको अेक दिन तो जाना ही है। तेरी मा भी तो चली गअी न? अुस रास्ते सभीको जाना है। और अैसा झूठा मोह क्यो? तुझे तो अभी दुनियामें बहुत कुछ देखना है। बापूजीकी संभाल रखना, पढना और जो सेवा हो सके करना।"

नीसके ये शब्द बा मुझे भारी परिश्रमसे ज्यो ज्यो कहती गअीं, त्यों त्यो मेरे लिअे हिम्मत रखना कठिन होता गया। परन्तु अुसी क्षण अर्थात् २–४० पर बापूजी आ गये। मैं वहांसे अुठ गअी। बापूजीने बाका सिर अपनी गोदमें ले लिया और मेरी जगह बैठे। मैं सीधी स्नानघरमें जाकर मुंह धो आअी। बाने बापूजीसे कहा "अब तो मैं चली।" बापूजी बोले, "जा, परन्तु शान्ति है न?"

बाने तुरन्त गीताजीके १२ वे अध्यायके श्लोक सुननेकी अिच्छा प्रगट की। बापूजीने १२ वा अध्याय सुनाया। बादमें अुन्हे खटका कि बापूजीकी नीद बिगडेगी। अिसलिअे अुन्होने बापूजीसे सो जानेको कहा। मुझे अपने पास ही रहनेको कहा। डॉ० गिल्डर और सुशीलाबहन अिस अुधेडबुनमें थे कि किस तरह बाको राहत पहुचाअी जाय। कनुभाअीसे गीताका ११ वा और ९ वा अध्याय और भजन सुननेके बाद बाने अुन्हे सोनेको कहा।

अेक बार रिकार्ड पर नीचेके बहुत प्रिय भजन सुने। बादमें अुन्हे लगा कि रिकार्ड बजेंगे तो बापूजीकी नीदमें खलल पडेगा, अिसलिअे ग्रामोफोन बद करवा दिया। और धीमे स्वरसे ये भजन सुबह तक सुने

जाअू कहा तजि चरन तिहारे,
जिसका नाम पतित पावन है
जिसे दीन अति प्यारे . जाअू०

तन दे डारा, मन दे डारा,
दे डारा जो कुछ था सारा . जाअू०

अिन चरननका लिया सहारा
कह दे तू हो गया हमारा .. जाअू०

* * *

आया द्वार तुम्हारे, रामा,
आया द्वार तुम्हारे,

जब जब भीर परी भक्तन पर,
तुमने ही दुख टारे, रामा,
तुमने ही दुख टारे। आया०

मनमें छाया गहन अंधेरा,
दीपक कौन अुजारे? रामा,
दीपक कौन अुजारे? आया०

नैया मोरी बीच भवरमें,
तू ही पार अुतारे, रामा
तू ही पार अुतारे! आया०

अिस दूसरे भजनका अुन्होंने अुल्लेख किया कि "हे भगवान! अिस भजनके अनुसार मेरी नैयाको तू पार अुतार दे। मुझसे तो किसीकी भी सेवा नही हो सकी। प्रभु! तुझसे अेक ही प्रार्थना है कि महादेवकी तरह बापूजीकी गोदमें मुझे भी सुलाना।"

बा रातको तीन साढे तीन बजेकी नीरव शांतिमें अीश्वरसे अिस प्रकार करुण प्रार्थना कर रही थी। दमके मारे सोया नही जाता था। अुनका सिर मेरी गोदमें था। मैं छाती पर धीरे धीरे हाथ फेर रही थी। हृदयकी धडकन तेजीसे चल रही थी। सांसकी आवाज आ रही थी।

अितनी अधिक हांफमें भी अेकाअेक अुन्होंने टूटे हुअे स्वरमें गाना शुरू किया

हे गोविन्द, हे गोपाल, हे गोविन्द राखो शरण,
अब तो जीवन हारे।
नीर पिवन हेतु गयो सिन्धुके किनारे,
सिन्धु बीच बसत ग्राह, चरन धरि पछारे।
चार प्रहर युद्ध भयो, ले गयो मझधारे,
नाक कान डूबन लागे, कृष्णको पुकारे।
द्वारकामें शब्द भयो, शोर हुआ भारे,
शंख, चक्र, गदा, पद्म, गरुड ले सिधारे।
सूर कहे श्याम सुनो, शरन है तिहारे,
अबकी बार पार करो, नंदके दुलारे!

बा यह भजन अपने ढंगसे रोगके विरुद्ध युद्ध करते करते भी साहसके साथ गा रही थी। अितनेमें सुशीलाबहन आ गअी। बाकी नाडी हाथमें ली। अुन्हें कुछ ठीक मालूम हुआ। परन्तु बा कहने लगीं "सुशीला! तू आज सोअी ही नही। बेटी, बीमार

हो जायगी। सब मेरे लिअे परेशान होते हो। मेरी तबियत जरा ठीक है, तू सो जा।"

सुशीलाबहन बोली "बा! हमसे कहिये न, हम आपको भजन सुनायेंगी। आपको बोलनेका श्रम नही करना चाहिये।"

"अिसमें कोअी हर्ज नही। भगवानके नामसे भी कही थकावट आती है? तुम लोग कहा अिनकार करते हो? परन्तु अच्छा लगता है, अिसीलिअे अभी अभी बोली। मनु, कनु सभीने बारी बारीसे अब तक मुझे सुनाये ही है न?"

चार बजने पर बापूजीके अुठनेका समय हुआ। प्रार्थना बाके पास की। गीता-पारायणके समय अुन्हे जरा नींदका झोका आ गया, अिसलिअे पाठ धीमी आवाजसे किया। सारी रातमें साढे चार बजे बाद कुछ शाति मिली।

मैं सवा पाच बजे तक रही, सवा पाच बजे प्रभावहनकी गोदमें बाका सिर धीरेसे रख दिया। वे सोती ही रही।

सवा पाचसे साढे छह तक बापूजीने मुझे सो जानेको कहा। साढे छह बजे घूमने जानेसे पहले बापूजी मुझे अुठा गये।

बापूजी बाकी देखरेख करते हुअे हम सबकी अधिक देखरेख रखते है। सबको आगे पीछे खिलाने, सुलाने और अुठाने जैसी सारी छोटी छोटी बातोंका वे ध्यान रखते है। बापूजी कहा करते है कि "कोअी भी बीमार हो जायगा, तो अुसे सेवाके अयोग्य समझूंगा।" अिसलिअे बापूजीका जो आदेश होता अुस पर तुरन्त अमल करना ही पडता था। अुसके विरुद्ध कोअी भी दलील असगत मानी जाती थी।

आजकी रात बडी सकटकी रात कही जायगी। बा बाल-बाल बची। रातमें सबको यह डर लग रहा था कि शायद कुछ हो जायगा। परन्तु अीश्वर-कृपासे कुछ तबीयत सुधरी।

बापूजीने अपना भोजन बहुत कम कर डाला है और अुबला हुआ साग, पानी पिने हुअे बादाम, अेक औंस मक्खन और दूध सभी

अिकट्ठा बनवा डालते हैं। शाकका कचूमर बनवा लेते हैं। अिसलिअे खानेमें बहुत देर नहीं लगती। दस मिनिटमें ही पी लेते हैं।

फलोंमें तीन छीले हुअे संतरे (अुनको छीलनेमें मेरा या जो छीले अुसका वक्त जाता है अिसलिअे) पिछले दो दिनसे बन्द कर दिये हैं। और अुनके बजाय दोपहरको रस पीना शुरू किया है। शामको केवल आठ औंस दूध और अेक औंस गुड ही लेते हैं।

आगाखां महल, पूना,
१२–२–'४४

बहुत समयसे पू० बाकी किसी देशी वैद्यसे अिलाज करानेकी अिच्छा होनेके कारण कल बापूजीने अिस बारेमें सरकारको पत्र लिखा। कोअी अुत्तर नहीं आया, अिसलिअे अेक कड़ा पत्र लिखा। परन्तु शामको ही पत्र जानेसे पहले वैद्य, हकीम या जरूरी डॉक्टरी मददकी बात जेलके डॉक्टर कर्नल शाह पर छोड़ दी जाने पर अुन्हें फोन करके पूनाके वैद्य श्री जोशीको बुलवाया।

अुन्होंने पू० बाकी जांच करके दवा तो दी, परन्तु रातको बेचैनी बढ़ गअी। और वे रातको अेकाअेक अेक ही बात कहने लगी: "मुझे मेरे कमरेमें ले चलो, मेरे पलंग पर सुला दो।" अिस तरह वे कभी नहीं बोली थी। बापूजी, सुशीलाबहन जो भी कोअी अुनके पास होता, अुससे यही कहती। परन्तु अन्तमें पांच बजेके करीब सो गअी।

नौ बजे डॉ० गिल्डर बाके पास आये। अुनसे बाने कहा: "मेरी बेचैनी बढ़ गअी है। मुझे वैद्यकी दवा नहीं लेनी।" परन्तु सुशीलाबहनने कहा: "दो चार दिन देख ले, कोअी लाभ नहीं होगा तो छोड़ देंगे।" और कस्तूरबा अुनकी दवा ले रही हैं, अिसलिअे वैद्यजी भी अपने को धन्य मानते थे। वे भावना और सावधानीपूर्वक अिस बातकी कोशिश कर रहे थे कि अुन्हें किसी भी प्रकारसे यश मिले। परन्तु अुनकी मेहनत व्यर्थ सिद्ध हुअी।

आगाखा महल, पूना,
१३–२–'४४

आजसे लाहौरसे आये हुअे पंडित शिवशर्माकी दवा शुरू हुअी। आज दिनभर तबीयत बड़ी अच्छी रही। हमें लगा कि अिन वैद्यराजको अवश्य यश प्राप्त होगा। शामको तो बा कहने लगी, "मुझे बालकृष्णके पास ले चलो।" मीराबहन अपने कमरेमें बालकृष्ण रखती थी और बा अच्छी हालतमें वहा रोज जाती थी। बाको पहियेवाली कुरसीमें बिठाकर मैं वहा ले गअी। बापूजी, सुशीलाबहन और प्रभावतीबहन सब घूम रहे थे। और बा बालकृष्णकी प्रार्थनामें लीन हो गअी थी। यह देखकर बापूजी अूपर आये। बापूजीको देखकर बा मुस्कराकर कहने लगी "आप घूमने जाअिये न? घूमते घूमते यहा क्यो आ गये?" बापूजी हस पडे और कहने लगे "बोल, अब सिंह या सियार?"*

कुछ देर यो विनोद करके बापूजी फिर वही चक्कर लगाने लगे। प्रार्थनासे पहले बाने तुलसीके पास दिया जलवाया। प्रार्थना भी बहुत दिन बाद अच्छी तरह की।

परन्तु रातको फिर बेचैनी शुरू हुअी। अेक बजे सुशीलाबहनने कटेली साहबको जगाया और वैद्य शिवशर्माको फोन किया। अुन्होने आकर अेक गोली दी। सरकारने वैद्यजीको रातको आगाखा महलमें रहनेकी अिजाजत नही दी थी। परन्तु अुनका अिलाज चल रहा था, अिसलिअे यह तो कैसे कहा जा सकता था कि दुबारा कब अुनकी जरूरत पड़ जायगी? अिसलिअे वैद्यजी स्वय दरवाजेके बाहर मोटरमें सो गये ताकि जरूरत पडने पर तुरन्त आ सकें।

आगाखा महल, पूना,
१६–२–'४४

परसो जैसा परिवर्तन मालूम हुआ था, वैसी तो तबीयत नही रही। परन्तु सबका मानना था कि तीन दिन लगातार दवा करनी

* बापूका मतलब है कि बीमारीका शेरकी तरह सामना करोगी या सियारकी तरह हार मान लोगी?

ही चाहिये। अिस प्रकार आज तीसरा दिन है। बेचारे वैद्यजी रातको ठंडमें दरवाजे पर सो रहते हैं और दिनमें यहीं रहते हैं। किसी दवाकी जरूरत होने पर ही शहरमें जाते हैं। बाहर ठंडमें सोनेसे अुन्हें भी कुछ जुकाम-सा हो गया है।

आज अुनके बाहर सोनेकी तीसरी रात थी। शिवशर्माजीको जगानेमें भी दूसरे चार जनोंकी नींद बिगड़ती। पहले अेक सिपाही जागता, वह जमादारको जगाता, जमादार कटेली साहबको जगाकर कुंजी लेता, दरवाजे पर रातको पहरेके लिअे रहनेवाले सार्जण्ट अूंच रहे हों तो वे भी जागते, तब कहीं शिवशर्माजीको अंदर लाया जाता। रोजकी तरह आज रातको साढ़े बारह बजे बाके स्वास्थ्यमें परिवर्तन मालूम हुआ और अुपरोक्त विधिसे वैद्यजीको बुलाना पड़ा।

वैद्यजीने साढ़े बारह बजे अन्दर आकर बाको गोली दी। अुन्हें जरा आराम मालूम हुआ तो डेढ़ेक बजे सोनेके लिअे दरवाजेके बाहर लौट गये। अुनके दरवाजेके बाहर चले जानेके बाद तुरन्त सिपाहीने फिर ताला लगा दिया। और जमादारने कुंजी कटेली साहबको सुपुर्द की, तब वे अूपर सोने जा सके।

बापूजीको अिस वेदनामें नींद नहीं आयी। वे दो बजे अुठे। प्यारेलालजीको बुलाया। बापूजीको आवश्यक कागजात देकर अुन्होंने कहा "मुझे आप लेटे लेटे लिखाअिये न?" बापूजीने अिनकार कर दिया। स्वयं ही अेक कड़ा पत्र लिखा। अुसमें अुपरोक्त स्थितिका वर्णन किया और सबको कितना कष्ट होता है यह बताकर लिखा कि:

> मैं जानता हूं कि अिस स्थितिको दूर करनेका अुपाय सहल है। जब मेरी पत्नीके लिअे सारी रात व्यर्थ अितने लोगोंको जागते रहना पड़े और वह भी अेक रातके लिअे नहीं बल्कि अनिश्चित कालके लिअे, यह मुझे असह्य लगता है। सुशीला-बहन और डॉ० गिल्डर डॉक्टर हैं। परन्तु ये देशी अिलाज द्वारा ही [illegible] होते हैं, अिसलिअे ये लोग अिनमें सहायक

नही हो सकते। अिससे बीमार और जिसका अिलाज हो रहा हो अुसके साथ कदाचित् अनजाने अन्याय हो सकता है। अिस कारण बीमारके भलेके लिअे जब तक वैद्यकी दवा हो रही है तब तक अुन्हे रात-दिन यही रहने दिया जाय। यदि सरकार अैसा न कर सके, तो बीमारको पैरोल पर छोड दिया जाय। और सरकार अैसा भी न कर सकती हो और बीमारके पतिकी हैसियतसे मै सरकारसे अुसकी अिच्छानुसार सार-सभाल तथा अिलाजकी सुविधा प्राप्त न कर सकू, तो मेरी यह माग है कि सरकार अपनी पसन्दके किसी और स्थान पर मुझे भेज दे। बीमार जो वेदना अनुभव कर रही है, अुसका मुझे अेक नि सहाय साक्षी नही बनाना चाहिये।

यह पत्र रातके २ बजे कस्तूरबाके बिछौनेके पास बैठकर लिख रहा हू। परन्तु वह तो अब जीवन और मृत्युके बीच झूल रही है, और यदि कल (१७ फरवरीको) रात तक वैद्यजीके बारेमे आप सतोषजनक अुत्तर नही देंगे, तो मै अिलाज बन्द करा दूगा।

रातको ३॥ बजे प्यारेलालजीने अिसे टाअिप किया। बादमें प्रार्थना हुअी। बापूजी लगभग सारी रात जागे है। बाकी जीवन-नौका मझधारमें है। मै प्रभुसे अेक ही प्रार्थना करती हू कि प्रभु यह असह्य वेदना देखी नही जाती, तुझे जो भी करना हो जल्दी कर। सब कुछ तेरे हाथमें है।

आगाखा महल, पूना,
१७–२–'४४

कलके कडे पत्रका अुत्तर सतोषजनक आया और आजसे जब तक जरूरत हो तब तक वैद्यजीको भीतर रहनेकी अिजाजत दे दी गअी।

नीदकी दवाके असरसे बा दिनमें शातिसे लेटी ही रही। आख अूपर नही अुठा सकती थी, अितना नशा था। अेक बार तो सुशीलाबहनने जबरदस्ती जगाकर खुराकके तौर पर ग्लूकोसका पानी

अुन्हें दिया। मुश्किलसे दो ही चम्मच पिये और बोली "मुझे शांतिसे सोने दे. ।" परंतु हालत अच्छी मालूम नहीं होती। पैरों पर सूजन दिखाओी देती है। शरीरमें शक्ति ही नहीं, तब बेचारी खांसी क्या जोर मारे? परंतु ये नशेके चिह्न अच्छे नहीं मालूम होते, अैसी बात डॉ० गिल्डर, सुशीलाबहन और वैद्यराजकी बातचीतसे मेरे कानों पर पड़ी। मेरे जाने पर अुन लोगोंने बातें बंद कर दीं।

डॉ० गिल्डरसे मैंने पूछा. "मुझे कहिये तो सही कि बाकी तबीयत कैसी है?"

प्रेमसे मेरे सिर पर हाथ रखकर डॉक्टर साहब कहने लगे: "तू देखती है न कि बा पहले सो ही नहीं सकती थी, लेकिन अब शांतिसे सो रही है? अिसमें भी कोओी रोनेकी बात है?" अैसा कहकर मुझे बाहर भेज दिया।

लेकिन मुझसे कुछ छिपाया जा रहा है, अैसी गन्ध मुझे आती ही रहती थी। फिर भी डॉक्टर साहबकी बातसे आश्वासन पाकर मैंने मान लिया कि बात सच्ची है, बीमार आदमी जितना सोये अुतना ही अच्छा है। अिसलिअे अब बा अच्छी हो जायगी। मुझे आघात न पहुंचे और काममें विघ्न न आये, अिसलिअे वे प्रेमपूर्वक अलग अलग रीतिसे कहते रहे "बेटी, बा ठीक है, अथवा थोड़ी ठीक नहीं हैं। अच्छी हो जायगी।" मेरे जैसा अनुभव बहुतोंको हुआ होगा। अिसलिअे लोग कहते है कि. "डॉक्टर तो जब तक मनुष्य मर नहीं जाता, तब तक कहते नहीं है।"

आगाखां महल, पूना,
१८–२–'४४

बेचारे वैद्यराज आज पूनाके बाजारसे स्वयं ढूंढकर कालोंके लिअे दवा लाये। परंतु अुन्होंने निराशा अनुभव की। बापूजीसे कहा कि. "जितना हो सका किया, परंतु कोओी फर्क नहीं पड़ा। अब यदि डॉ० सुशीलाबहन या गिल्डर साहबको कोओी नया अुपाय सूझे तो करें।"

वे बेचारे अितना कहकर गद्‌गद हो गये। परतु बापूजी बोले: "आप क्या करे? आपने भरसक प्रयत्न किया। तकलीफ अुठानेमें कसर नही रखी। मनुष्य शक्तिभर प्रयत्न ही कर सकता है, फल अीश्वरके अधीन है।"

अब बापूजीकी अिच्छा बाको सर्वथा रामनाम पर रखनेकी थी। परतु दोनो डॉक्टर माननेवाले नही थे। अुन्होने दोपहरको सेलिर्गेनका अिजेक्शन दिया। अुससे बाको कुछ फायदासा जान पडा। बुखार था। त्रिदोपसा लगता था। अेक बार अिजेक्शनसे लाभ मालूम हुआ, अिसलिअे रातको दूसरा लगाया। परतु सुशीलाबहन कह रही थी कि विशेष लाभ नही दिखाओी देता। वैद्यजी अभी तक यही है। अुनकी दवाका भी अुपयोग किया जाता है। परतु अब तक अकेले वैद्यजी ही सब कुछ करते थे, अुसके बजाय दो डॉक्टर और वैद्यराज तीनो मिलकर अिलाज कर रहे हैं।

आगाखा महल, पूना,
२०–२–'४४

आज सारी रात बा ऑक्सीजनकी नली डालकर सो रही। परतु सवेरे पुकारने लगी· "हे राम! हे राम! अब कहा जाअू?" बापूजी आये। अुन्होने सिर पर हाथ फेरा तो शान्त हुअी और "श्री राम भजो दुखमें सुखमें" यह चट्टोपाध्यायका रिकार्ड सुना।

सुशीलाबहनने नशेकी दवा दी। नौ बजे तक सोअी। अुठकर दातुन-कुल्ले किये और मुझे काढा ले आनेको कहा। वह काढा फीडिंग कपसे अेक रकाबीभर पिया।

परतु प्रात काल जैसी बेचैनी फिर शुरू हो गअी। भजन, गीता-पाठ और धुन तो सतत चल ही रहे थे। अब तो बा भी दवा लेनेसे अिनकार कर रही हैं। बापूजीने भी कहा कि: "अब अिसके लिअे रामनामकी ही दवा ठीक है। अुसके सिवा और सब चीजें बन्द कर दो। खुद अुसे भी अिसीमें शान्ति है।" बापूजी तो अपना

सब काम-काज बन्द करके बाकी सेवा करनेमें ही लीन हो गये हैं। अधिकाश समय अुनके पास बैठनेमें ही बिताते हैं। बाको साफ करनेमें बार बार छोटे रूमाल खराब होते थे, जिन्हे हममें से कोअी मौजूद न हो तो बापूजी स्वय धोते थे।

२८

बाका अवसान

महाशिवरात्रि,
महानिर्वाण दिवस,
२२–२–'४४

कल देवदास काका आ गये। परतु आजका दिन भयकर है, अिसकी आगाही सबके मनमें थी। सब रातभर जागे थे। प्रात बा सुशीलाबहनकी गोदमें थी। बापूजी अपने दैनिक भोजनकी 'कैलरीज' लिख रहे थे। मै बाके पैर दबा रही थी। वे सुशीलाबहनसे कहने लगी "मुझे बापूजीके कमरेमें ले चलो।" अिस पर सुशीलाबहनने मुझे अिशारेसे समझाया कि बा घूमनेकी तैयारी कर रही है, तू उठ और चादर वगैरा दे।

बापूजी कैलरीज लगभग लिख ही चुके थे। कटेली साहब कोअी कागज लेकर आये (मुझे याद नही वह कागज किस बारेमें था)। परतु बापूजीने कहा "चर्चिल मुझे अपना सबसे बडा शत्रु मानता है। मुझे या जिन पर जनताका विश्वास है अुन्हें जेलमें बन्द करके वह देशको हरगिज नही दबा सकता। यदि जनताने सच्चे दिलसे विश्वास प्रगट किया होगा, तो मैं यहा खप जाअूगा तो भी अपना काम पूरा हुआ मानूगा। परतु मुझे स्वराज्य लेनेके लिअे जीना तो है ही। मैं जीनेका प्रयत्न भी कर रहा हू। यह कैलरीजका हिसाब लिखना भी मेरे जीनेके प्रयत्नका अेक भाग है। अिसलिअे बाकी बीमारीमें और सब कुछ छोड दिया, परंतु यह काम नही छोड़ा।"

अितना कहकर बापूजी मुह धोकर बाके पास गये। सुशीलाबहन अुठी और मैं वहा बैठी। बापूजीने कहा "मै टहलने जाअू न?" बाने मना कर दिया। रोज अुन्हे कितनी भी तकलीफ क्यो न हो, वे बापूजीको टहलनेसे मना नही करती थी। लेकिन आज मना कर दिया।

मेरी जगह बापूजी बैठे। रामधुन अित्यादि हो रहा था। परतु बापूजीकी गोदमें अुन्हे थोडी शान्ति मिली। आध घटे बाद बापूजीने दुबारा कहा "अब मैं जाअू?"

"हे राम! अब कहा जाअू?"

बापूजीने कहा "जाना कहा? जहा राम ले जाय वही।"

दस मिनिट बाद बाने अढाअी औस गरम पानी और शहद लिया।

लगभग दस बजे बापूजीको छुट्टी मिली। बापूजी कहने लगे. "बिलकुल न टहलू तो बीमार पड जाअू, अिसलिअे थोडा टहलना जरूरी है।" सुशीलाबहन वहा बैठी। घूमते समय बापूजी कहने लगे "अब बा थोडे ही समयकी मेहमान है। मुश्किलसे चौबीस घटे निकाले तो निकाले। देखना है किसकी गोदमें वह अन्तिम निद्रा लेती है।" पाच चक्कर लगाकर अूपर आये। पाच पाच मिनटमें डॉ० गिल्डर आकर देख जाते। बापूजी घूमकर जल्दीसे मालिश और स्नानसे निपट लिये। पिछले दो दिनसे सतत जागरण होनेके कारण पिसे हुअे बादाम लेना भी अुन्होने बन्द कर दिया है। मैने बापूजीसे कहा. "आज भी बादाम-काजू नही लेंगे?"

बापूजी बोले "या तो बा अच्छी हो जाय तब लिया जाय या बा रामजीके पास चली जाय तब लिया जाय। चबानेमें समय लगाना ही चाहिये। न खाया जाय तो कुछ भी हानि नही, परतु अधकचरा पेटमें जाय तो मुझे खटिया ही पकडनी पडे।" अिसलिअे अुबाले हुअे शाकके कचूमरमें दूध डालकर मैनें बापूजीको दिया, जिसे वे पी गये।

बापूजी साढे बारह बजे बाके पास गये। सबका यह खयाल हो गया था कि बा किसी भी क्षण चली जा सकती है। देवदास मामा,

मेरे पिताजी और हरिलाल काकाकी पुत्रिया आ गअी थीं। अिसलिअे बापूजी जरा देखकर आरामके लिअे लेट गये। मैंने बापूजीके पैरोंमें घी मला। बीस मिनिट बापूजीने आराम किया। डेढ़ बजे कनुभाअीने कुछ फोटो लिये और देवदास काका गीतापाठ पूरा करके बाके पास आये। बा अुनसे कहने लगी "बेटा, तूने मेरे लिअे बहुत धक्के खाये। रामदासको मना कर देना। वह बेचारा बीमार है। यहां तक क्यो अुसे दौडाया जाय? तुम सब खूब सुखी रहो।"

साढे तीन बजे देवदास काका गगाजल और तुलसीके पत्ते ले आये। अिसे पीनेके लिअे बाने मुह खोला। देवदास काकाने थोडा जल पिलाया और बा शान्त पडी रही। साढे चार बजे फिर बापूजीकी तरफ देखकर वे कहने लगी "मेरे लिअे लड्डू खाने चाहिये। दु:ख कैसा? हे अीश्वर, मुझे क्षमा करना, अपनी भक्ति देना।" दूसरे सबभी आये थे अुन सबसे बा बोली· "कोअी दु:ख न करना।"

पाचेक बजे बाद मुझसे कहने लगी. "बापूजीकी बोतलमें गुड़ खतम हो रहा है। तूने दूसरा बनाया?"

मैंने कहा. "हा, बा, गुड अगीठी पर ही है, अभी तैयार हो जायगा।"

"देख, मेरे पास तो बहुत लोग हैं, बापूजीके दूध-गुड़ (खाने) का अिन्तजाम करके तू भी खा लेना।"

जिन्दगीभर बापूजीकी हर तरहकी सेवामें रहने और मुख्यत अुनके दोनो समयके भोजनकी बारीक जाच रखनेका काम बाने कभी नहीं छोड़ा। आज आखिरी दिन भी बीमारी और भगवानसे लड़ते लड़ते अुन्होंने अेकाअेक मुझे सचेत किया। अिस समय वे मेरे पिताजीकी गोदमें थी। मुझसे बोली "जयसुखलाल यहा है, तू जा।"

पेनिसिलिनका अिजेक्शन विशेष वायुयान द्वारा आ गया था। अिसलिअे बापूजी, देवदास काका, डॉ० गिल्डर, सुशीलाबहन, प्यारेलालजी कर्नल शाह, भंडारी, कटेली साहब सब अिस चर्चामें मशगूल थे कि अिजेक्शन दिया जाय या नहीं।

मै भोजनालयमें गअी। गुड बना लेनेके बाद अुसे ठडा करनेको पानीमें रखा। बेचारी सुशीलाबहनने सुबहसे कुछ खाया नही था, अिसलिअे वे खाने आअी। और लोग भी खानेवाले थे, अिसलिअे मैंने खिचडी, कढी, रोटी वगैरा बनाया। और जिन दो-चार लोगोका शिवरात्रिका अुपवास था, अुनके लिअे अलग मेज पर फलाहार तैयार किया। सब कुछ तैयार करके सबको साढे पाच बजे बुलाया। सबके खा-पीकर निपटते-निपटते साढे छह बज गये। (आम तौर पर भी हम साढे छह बजे ब्यालू कर लेते थे।)

अभी तक पेनिसिलिनके अिजेक्शन देने न देनेकी चर्चाका अत नही हुआ था। खाते-खाते भी बातें हो रही थी कि पेनिसिलिनसे शायद फायदा हो जाय।

अन्तमें लगभग सातेक बजे सुशीलाबहनने मुझे अिजेक्शनकी सुअिया अुबालनेको दी। मैंने बिजलीके चूल्हे पर बर्तनमें अुन्हे रखा और शाम हो जानेसे तुलसीके पास धूप-दीप करनेकी तैयारी की।

अिधर बापू दूध पीकर मुह धोने गये। स्नानघरमे मुह धोकर थोडा घूमना था। परतु प्यारेलालजीके कमरेमें देवदास काका थे, अिसलिअे अुनसे बातोंमें लग गये। मैं भी दिया जलानेके लिअे स्नानघरकी मेजके खानेमें दियासलाअी लेने गई, जहा यह अिन्जेक्शन सबधी चर्चा हो रही थी। मैंने अेकाअेक सुशीलाबहनसे कहा "आपकी दी हुअी अिजेक्शनकी सुअिया तो कभीसे अुबल गअी होगी। मैं तो भूल ही गअी।" वे बोली "बापूजीने अिजेक्शन देनेको मना कर दिया, अिसलिअे मैंने चूल्हा बुझा दिया है।"

मेरे कानो पर बापूजीके अितने ही शब्द पडे कि "अब तेरी मरती हुअी माको सुअी क्यो चुभोअी जाय?" परतु ये शब्द सुने न सुने कि मैं दिया जलानेकी जल्दीमें होनेसे वहासे चली गअी। मैंने दिया जलाया। बाने सबसे जयश्रीकृष्ण कहा। प्रभावतीबहन और मेरे पिताजी अुनके पास थे। अितनेमें बाके भाअी माधवदास मामा आ गये। अुन्हे देखा। बोलना चाहती होंगी, परतु कुछ बोल

नहीं सकी। अेकाअेक कहा: "बापूजी"। सुशीलाबहन आ रही थीं। बापूजीको याद करते ही अुन्हें बुलाया। बापूजी हंसते-हंसते आये। कहने लगे. "तुझे यह खयाल होता है न कि अितने सारे सबंधियोंके आ जानेसे मैंने तुझे छोड दिया?" यों कहकर बापूजी मेरे पिताजीके स्थान पर बैठे। धीरे धीरे बाके सिर पर हाथ फेरा। बापूजीसे कहने लगीं. "अब मैं जा रही हू। हमने बहुत सुख-दुःख भोगे। मेरे लिअे कोअी न रोये। अब मुझे शान्ति है।" अितना बोलीं कि सांस रुक गया। कनुभाअी फोटो ले रहे थे, परतु बापूजीने रोक दिया और रामधुन गानेको कहा।

हम सब 'राजा राम राम राम, सीता राम राम राम' गाने लगे। राम रामके अन्तिम स्वर सुने न सुने कि दो मिनिटमें बाने बापूजीके कधे पर सिर रखकर सदाके लिअे नींद ले ली!

बापूजीकी आंखोंसे दो बूद आंसुओंकी निकल पडीं। अुन्होंने चश्मा अुतार दिया। मैं तो मूककी तरह देखती ही रह गअी। क्या अगम्य पहलेकी बाकी प्रेमपूर्ण आवाज अब सुनाअी नहीं देगी? मनुष्य दो ही क्षणमें किस प्रकार सबको छोड़कर चला जाता है, यह दृश्य मेरी जिन्दगीमें पहला ही था।

बापूजी दो ही मिनिटमें स्वस्थ हो गये, परतु देवदास काकाका रुदन देखा नहीं जाता था। मांसे बिछुड़े हुअे छोटे बच्चेकी भांति वे बाके पैर पकड़कर करुण क्रन्दन करने लगे। अैसी हालतमें हमारी किसीकी क्या हिम्मत रहती? अुस दु:खद घड़ीका शब्दोंसे वर्णन करनेकी मुझमें शक्ति नहीं है।

७ बजकर ३५ मिनिटकी सन्ध्या महाशिवरात्रिकी थी। मंदिरोंमें आरती हो रही थी। अैसे समय हमें रोते-बिल्लखते छोड़कर भगवान बाको अपने धाममें ले गये।

पांचेक मिनट बाद बापूजीने बाको तकिये पर सीधा सुलाया और अुठे। देवदास काकाको शान्त किया। मुझसे बोले. "तेरी सेवा तो अभी पूरी नहीं हुअी। यों रोयेगी तो बाका जी कितना दुखेगा? आखिरी वक्तकी अुनकी जो अिच्छा थी वह तो तुझसे कह ही दी

है। तू रोने बैठ जायगी तो बा जो चाहती थी सो नहीं हो सकेगा, तब अुसकी आत्माको शान्ति कैसे मिलेगी?" मुझे अुठाया। दरवाजेके बाहर भी बहुत रिश्तेदार थे, परतु सरकारी हुक्मके बिना भीतर कैसे आते?

बाके शवको स्नानागारमें लाये। आगाखा महलमें आअी तबसे बाके सिरके बाल मैं ही धोती और कघी भी मैं ही करती थी। आज मैंने अुनके बाल शिकाकाअीके साबुनसे आखिरी बार धोये। नहलानेमें और लोग भी मेरे साथ थे। बाल धोकर जिस कमरेमें बाने अतिम श्वास लिया अुसकी सफाअीमें कनुभाअीका हाथ बटाने गअी। गोमूत्र और गोबरसे जगह लीपकर पवित्र की। मीराबहनने जितने भागमें शव रहे अुसमें चूनेसे चौरस बनाकर सिरकी ओरके हिस्सेमें फूलोसे ॐ बनाया और पैरोकी तरफके हिस्सेमें स्वस्तिक बनाया।

१९४२ में बापूजीके हाथके सूतकी जो साडी पहनकर अग्निदेवकी आहुति बन जानेकी अतिम अिच्छा बाने प्रकट की थी और मुझे सौंपी थी, वही साडी मैंने कापते हाथो अुन्हे ओढायी। क्या अुन्हे अुसी समय यह भविष्य दीख गया होगा कि यह साडी वे मेरे ही हाथो ओढेंगी? क्या अिसीलिअे अुन्होने मुझे यह सौंपी होगी?

लेडी प्रेमलीलाबहन ठाकरसीने गगाजलमें भिगोअी हुअी एक साडी भेजी थी। वह भी ओढा दी गअी।

सतोक काकी (मगनलालभाअी गाधीकी पत्नी) ने वर्षो पुरानी सोनेकी पट्टी जडी हुअी चूडिया और कठी अुतारी, कठी नअी पहनाअी और चूडियोके बजाय पू० बापूके हाथ-कते सूतके तार कलाअी पर बाधे। अिसके बाद शवको वहा लेटा दिया जहा गोमूत्रसे जगह पवित्र कर ली गअी थी।

लाल किनारकी सफेद साडी पहनाकर, बालोंमें कघी करके अुनमें फूल गूथे, कपाल पर चदन और कुमकुमका लेप किया, पासमें घीका दिया और अगरबत्ती रखी। बाके चेहरे पर अैसा अपूर्व तेज चमक रहा था, मानो साक्षात् जगदम्बा हो।

कर्नल भंडारीने आकर पूछा कि शवकी क्रियाके लिअे बापूजीकी क्या अिच्छा है। बापूजीने कहा : "या तो शवको अुनके लड़को और सबंधियोंको सौंप दिया जाय। अैसा हो तो अग्नि-संस्कारमें चाहे जितनी जनता भाग ले सकती है। सरकार जरा भी दखल नही दे सकती। यदि यहीं अग्नि-संस्कार किया जाय तो सगे-संबंधियोंको अुपस्थित रहनेकी अिजाजत मिलनी चाहिये। परन्तु यदि सरकार सगे-संबंधियोंको भी मना कर दे, तब तो हम जो छह आदमी यहां हैं वे ही अिस क्रियाको निपटा लेंगे।" अंतमें यह तय हुआ कि जेलमें ही अग्नि-संस्कार हो और जो स्नेही व संबंधी आयें अुन्हें आनेकी अिजाजत दी जाय।

अिधर बाके शवके पास 'वैष्णवजन' के भजनसे प्रार्थना शुरू की गयी और गीताका पूरा पारायण किया गया। गीतापारायणके समय अठारह आदमी थे। बापूजी शवके पास ही सिरकी तरफ सीधे तनकर आंखें बंद किये बैठे थे।

प्रार्थना लगभग रातके ग्यारह बजे पूरी हुआी। साढे ग्यारह बजे खबर आयी कि लगभग सौ आदमियोंको सरकार महलमें आने देगी। बम्बअी अलग अलग टेलीफोन करनेमें खर्च होगा, अिसलिअे बापूजीने केवल शामळदास काकाको 'वन्देमातरम्' कार्यालयमें खबर देनेको कहा।

साढे बारह बजे जो लोग बाहरसे आये थे अुन्हें बाहर जाने और सवेरे जल्दी आनेकी सूचना दी गयी।

बापूजी अपने बिस्तर पर लेटे। रातभर प्रार्थना, रामायण और गीतापारायण करना तय किया गया था। मैंने बापूजीके सिरमें तेल मला। सुशीलाबहन और प्यारेलालजी पैर दबा रहे थे। मुझे बापूजीने सो जानेको कह दिया था, परन्तु मेरी जागनेकी अिच्छा थी। 'सवेरे जल्दी अुठ जाना' यों कहकर बापूने मुझे सोनेको कहा।

बा जब अन्तिम क्षण गिन रही थी, तब मैं थोड़ी देर रो ली। परन्तु चीजवस्तु देने लेने और दूसरे कामोंमें यह भूल गयी कि बा नहीं है। वे अैसी दिखाअी देती थीं मानो सो ही रही है।

परतु पलग पर सोअी तब सचमुच यह खयाल हुआ कि नही, अब बाके पास सोनेको नही मिलेगा। पिछले कअी दिनोसे मै रातको लगभग बाके साथ ही सोती थी। आज अकेली रह गअी! मेरे पास सुशीलाबहन आअी। हम दोनो अेकसी दुखी थी। फिर भी अुन्होने मुझे खूब प्यारसे समझाया। परतु कभी-कभी जब कोअी अधिक आश्वासन देने आता है तब अधिक आघात लगता है। वैसा ही हुआ। सुशीलाबहन और मैं अेक दूसरेसे लिपटकर रो रही थी। दो-ढाअी बजे बापूजी जागे। मुझे अपने पास बुलाया और बडे प्रेमसे भीचकर कहा "बाने मेरे सामने तेरी बहुत बार सिफारिश की है। बा कही नही गअी। तू यो रोयेगी तो तेरा मुझसे रोज गीता पढना बेकार हो जायगा। तुझसे बाको बडी आशा थी, तेरी माके बजाय बा मिली, और बाके बदले अब मैं हू। तू मुझे अपनी मा समझ ले। अभी सवेरे बहुत काम करना है। अिस वक्त तुझे सब समझाअूगा तो जागरण होगा। अिसलिअे शान्तिसे बाका नाम लेकर सो जायगी तो मैं भी सो सकूगा।"

मुझे याद नही कि बापूके पास मैं कब सो गअी। ठेठ चार बजे प्रार्थनाके समय जगाया तभी अुठी।

२१
अंत्येष्टि

आगाखा महल, पूना,
२३–२–'४४

सुबहकी प्रार्थनाके समय बापूजीने मुझे जगाया। नित्यके अनुसार प्रार्थना की। प्रार्थनाके बाद बापूजीने साढे पाच बजे गरम पानी और शहद लिया। साढे सात बजे फलोका रस लिया।

लगभग साढे सात बजेसे लोग भीतर आ जा रहे थे। पूनाके नागरिकोकी तो दरवाजे पर बडी भीड़ लगी हुअी थी। साढे नौ बजे तक बम्बअीके स्नेही और सबधी फूलमाला लेकर आ पहुचे। सारा

शव रंग-बिरंगे सुगंधित फूलोंसे ढक गया, केवल चेहरा ही खुला रखा गया था।

साढे नौ बजे प्रार्थना, 'वैष्णवजन'का भजन और गीताका बारहवां अध्याय पढ लिये जानेके बाद हम सबने अेक बार बाको अंतिम प्रणाम किये और शवको बाहर बरामदेमें लाये।

वहां पुरोहितजीने थोडीसी धार्मिक क्रिया करायी और देह पर अंतिम यात्रा-सामग्री रखी। जिस सामग्रीमें जौ, तिल, नारियल और सौभाग्यके चिह्न-स्वरूप पांच हरे कांचकी चूडियां रखवाओ। शवको रामरटनके साथ चिता-स्थान पर ले जाया गया। सबसे पहले बापूजीने हाथ लगाया और अुनके बाद बारी बारीसे सबने शवको कंधे पर लेनेका पुण्यलाभ लिया। मेरे हाथमें पुरोहितजीने कुमकुम और हल्दीकी रकाबी दी थी, जिन्हें मैं शवके पीछे पीछे छींटती हुअी गअी।

शान्तिकुमारभाअीने चंदनकी लकडीके लिअे बापूजीसे खूब आग्रह किया। परंतु बापूजी बोले: "बा तो गरीबकी पत्नी थी। गरीब आदमी अपनी पत्नीके लिअे चंदनकी लकडी कहांसे ला सकता है? तुम मुझे देनेको तैयार हो, परंतु मुझे यह पसन्द नहीं। हां, सरकार देती तो बात अलग थी। बा सरकारकी कैदी है, अतः जैसे सरकारने सेवा-शुश्रूषाकी सहायता दी और मैंने ली, वैसे ही चन्दन भी ले लेता। जैसे सेवाग्राममें तो मैं मिट्टीकी झोंपडीमें रहता हूं, परंतु यहां महलमें रहता हूं।"

यह बात कटेली साहबने सुन ली। अुन्होंने कहा कि मेरे पास चंदनकी लकडी है। (आगाखां महलके बगीचेमें चंदनका पेड था। अुनके सूख जाने पर अुसकी लकडियां कटवाकर रख ली थीं।) जिस-लिअे बापूजीने अुनका अुपयोग करना स्वीकार कर लिया।

शवको अुन लकडियों पर लिटाया, अुस समयका दृश्य बडा हृदयद्रावी था। महादेव काकाकी समाधिके पास ही चिता बनाअी गअी थी। "मुझे तो अब महादेवके पास ही सोना है", यह रटनेवाली बा आज सचमुच वहीं सोअीं।

फिर अेक बार हिन्दू, पारसी, अीसाअी और मुस्लिम धर्मोंकी छोटीसी प्रार्थना हुअी। गीताका बारहवां अध्याय बोला गया और

'मगल मदिर खोलो, दयामय! मगल मदिर खोलो' भजन पूरा होते ही वेदोका मन्त्रोच्चार हुआ और देवदास काकाने शवकी प्रदक्षिणा करके चिता सुलगाअी। क्षणभरमें चिताकी ज्वालायें फैल गअी और बा सरकारके बन्दी-गृहसे सदाके लिअे मुक्त हो गअी।

बापूजी अिमलीके पेडके नीचे कुरसी पर बैठे थे। कुछ लोगोंने बापूजीको आरामके लिअे जानेको कहा। बापूजी बोले "अब तो आराम ही करना है न? चिता सुलगते ही मैं यहासे चला जाअू तो बा मुझे माफ नही करेगी। तुम देखो न कि मैं तो टहलने जा रहा था। देवदाससे बातें करने खडा रह गया और बाने मुझे अंतिम समय याद किया। यदि मैं नीचे अुतर जाता तो कहासे पहुच पाता? पाच ही मिनिटका वक्त था। अिसलिअे अब मैं अबबीचमें चला जाअू तो बा मुझ पर नाराज हो हो जायगी!" बापूजीने तो यह हसते-हसते ही कहा था, परतु अिसके पीछे रही अुनकी मनोवेदनाका चित्र आज भी मेरी आखोंके सामने खडा हो जाता है।

हम लडकिया रो रोकर अपना जी हल्का कर रही थी और बापूजी आश्वासन देनेवाले थे। अिनसे शान्ति भी मिल जाती थी। रामदास काका अभी तक नही आ पाये थे और देवदास काका भी अेक जगह बैठ गये थे।

चिता ठीकसे नही जमाअी गअी थी, अिसलिअे अुसमें और लकडिया डालनी पडी। यह सब बडा भयकर था। मानव-देहको अिस प्रकार धधकती हुअी चितामें जलते देखा और अुस पर भी चौबीसों घटे सतत प्रेम रखनेवाली बाको अिस प्रकार चितामें भस्म होते देखा। यह मेरे लिअे अनेक तर्क-वितर्क पैदा करनेवाली बात हो गअी।

ठीक ४ बजकर ४० मिनिट पर बाकी देह भस्मीभूत हो गअी। सब अुठे। अुदास मुह लिये सब अन्दर आये। बाहरसे आये हुअे लोगोंने बापूजीको प्रणाम किया। [illegible] आनेके बाद [illegible] बापूसे अनिश्चित अवधिके लिअे बिदा ले रहे थे। [illegible] भय डालनेवाला था।

मेरे पिताजीने प्रणाम करके विदा ली, तब बापूजीने कहा "कल रातसे अब मैं मनुकी मा बन गया हू, भला! तुम चिन्ता न करना। अब तक तो वह जिस सेवाके लिअे आअी थी वह अुसने पूरी कर दी। अुस सेवासे बचनेवाले समयमें अुसकी पढाअी होती थी। परन्तु यदि अब सरकार अुसे रहने देगी तो यही रखकर अुसकी पढाअी करानेकी मेरी अिच्छा है।"

मेरे पिताजीके लिअे तो मुझे बापूजीको सौंपनेसे अधिक निश्चिन्तता और क्या हो सकती थी? मैं कुछ नही बोल सकी, प्रणाम किया और हम जुदा हुअे।

३०

सूनापन

सबके जानेके बाद बापूजी नहाने गये, हम सब भी नहाने चले गये। चारो तरफ सुनसान लगता था। नहानेके बाद हम सबने नीबूका शर्बत पिया। चौबीस घटे बाद पानी पिया। बापूजी भी खूब थक गये थे।

बापूजी शामको अुबाला हुआ शाक और दूध ले रहे थे, अितनेमें कर्नल भडारी आये। प्रभावतीबहनके और मेरे बारेमें बातें हुअी। बापूजीने कहा "यदि प्रभावती और मनुको यहा रखें तो मुझे अच्छा लगेगा। मैंने अभी अभी मनुके पितासे बातें की है। अुसके यहा रहनेमें अुन्हे कोअी अेतराज नही है। प्रभावतीको यदि सरकार मेरे साथ रहने न देना चाहे तो वह भागलपुरसे आअी थी अिसलिअे वहीं जाना चाहती है। मनुको तो सी० पी० सरकारने छोड ही दिया है। अिसलिअे यदि सरकार अुसे यहा रहने न दे तो वह अपने पिताके पास जायगी। और कनुभाअी तो बाहरसे ही आये हैं, अिसलिअे अुनका कोअी सवाल नही है।"

अितनी बातें समझकर भडारी चले गये। अितनेमें रामदास काका आ पहुचे। गद्गद हृदयसे बापूजीको प्रणाम किया। अेक बार

जीते-जी वासे मिलनेकी वात अुनके मनमें ही रह गअी। वापूजी कहने लगे "वा जीवित होती और तू आया होता तो अुसका दु ख ही देखता न?"

सब खाना खाकर दुबारा चिता स्थान पर फूल रखने गये। अभी आग चल ही रही थी। वहा फूल रखकर लौट आये। प्रार्थना अित्यादिका कार्यक्रम पूरा हुआ।

शामको (भजन गानेकी वारी मेरी थी अिसलिअे) वापूजीने मुझे भजन गानेका कहा। मैंने कहा "अीश्वरने मेरी वाको मुझसे छीन लिया। अब तो मैं न प्रार्थनामें भाग लूगी और न रामनाम ही लूगी।" वापूजी हसे, "मूर्ख कही की।" "परन्तु आज तो देवदास काका गायेंगे," यह कहकर मैंने भजन गानेकी वात टाल दी।

रातको सोनेसे पहले पू० वाके काममें आनेवाली चूडिया, कठी, पादुका, कुमकुम अित्यादि चीजें मुझे सौंपी।*

प्रार्थनाके वाद वापूजीके पैर दवाकर साढे नौ वजे मैं सो गअी, मानो अब कोअी काम ही न हो। देवदास काका और रामदास काका दोनोको तीन दिनके बाद अस्थिया अिकट्ठी हो जाने पर गगाजीमें विसर्जन करनेको ले जानेके लिअे सरकारने रहनेकी अिजाजत दी है। अिसलिअे यद्यपि मनुष्योंकी सख्यामें तो वृद्धि हो गअी थी, परन्तु अेक वाके चले जानेसे अैसा सूनापन छा गया था मानो सारे महलमें मैं अकेली ही हू और मेरे पास कोअी काम ही न हो।

आगाखा महल, पूना,
२४–२–'४४

रातको भूलसे दो वार अुठ बैठी और मेरी 'ड्यूटी' अदा करने अुस कमरेमें गअी, जहा वाका बीमारीका बिछौना था। कोअी वारह वजे होंगे। सुशीलाबहन लिख रही थीं। मुझे देखकर [illegible]

---

* अिस सारे ब्यौरेके लिअे देखिये नवजीवन द्वारा प्रकाशित 'बापू — मेरी मां', पृ० ६–७।

गअी। हम दोनो थोडी देर री ली। मैं अुनके पास सो गअी। कोअी दो वजे फिर अैसा ही हुआ। अुस वक्त वापूजी जाग रहे थे। अुन्होने मुझे रामनाम लेकर सो जानेको कहा।

प्रात. चार वजे प्रार्थना हुअी। प्रार्थनाके वाद वापूजी भी नही सोये। मैंने वहुत दिनो वाद घटेभर काता।

वापूजी, रामदास काका और देवदास काका वाते कर रहे थे। अुनमें वीमारीके समय सरकारका व्यवहार और देशकी दूसरी राजनीतिक वातें थी। मैं तो सुवह ही नहा-धोकर निपट गअी थी। सव साथ टहलने गये। आज किसके लिअे रुकना, था?

टहलते टहलते वापूजी कहने लगे: "यदि वाका मुझे साथ न मिलता तो मैं अितना हरगिज नही चढ सकता था। मेरी प्रवल अिच्छा थी कि वा मेरे हाथोमें ही जाय, मुझसे पहले ही चली जाय। वा मेरे हाथोंमें ही गअी, अिससे अेक प्रकारसे मेरा वोझ आज हलका हो गया। अलवत्ता, अुसकी कमी तो कभी पूरी नही होगी। जाने-अनजाने मेरे पीछे पीछे चलना ही अुसने अपना धर्म माना था।" अिस प्रकार वाके सस्मरणोंकी वातें हुअी।

थोडेसे चक्कर लगाकर वाकी अस्थियां अिकट्ठी करने लगे। वहा अेक वहुत आश्चर्यजनक घटना हुअी। पू० वाके शव पर रखनेके लिअे जो पाच चूडिया मैंने दी थी, अुनमें से दो प्रभावतीवहनको, अेक सुशीलावहनको, अेक वापूजीको और अेक मुझे मिली।

जैसा मैंने अूपर लिखा है, चिता ठीकसे नही जमाअी गअी थी, अिसलिअे दूसरे वडे-वडे लक्कड़ दूरसे डालने पड़े थे। अितनी दूरसे डालने पर भी ज्वालासे कनुभाअीकी आखोकी वरौनी थोडी जल गअी थी। शान्तिकुमारभाअीने तो अिन लक्कडोंको अुठानेमें खूव मेहनत की। वे भी थोड़े झुलस गये। महाराजने कहा: "मैंने अपने जीवनमें अैसी क्रियायें वहुतेरी कराअी है, परन्तु अैसी घटना मैंने कभी नही देखी।" वापूजी वोले "मुझे अिसमें आश्चर्य नही होता, क्योकि वा अैसी ही थी!"

भारतमें सतियोके सतीत्वकी परीक्षाके अनेक अुदाहरण है। अुनमे से अेक यह था। अुनका सारा जीवन सती सीताकी तरह अग्नि-परीक्षामें ही बीता। और अुनके सौभाग्य-चिह्न चूडियोको अग्निदेवने अविच्छिन्न रूपमें लौटा दिया।

अस्थिया और भस्म लेकर मैं अूपर आअी। मैंने जो चूडिया दी थी, अुसी रगकी और अुन्हींमें से अेक चूडी मैंने अगीठीमे डाली। तुरन्त अुसके टुकडे टुकडे हो गये।

दोपहरको पू० बाकी तमाम चीजोकी सूची बनाअी और देवदास काकाको सौंपी। वे किस समय क्या काममें लेती थी, कौनसी चीज बिलकुल काममें नही ली गअी आदि सब कुछ रातके बारह बजे तक लिखकर देवदास काकाको दिया। बापूजीने मुझे सौंपी हुअी प्रसादीमें से चूडी मुझे ही दे दी। प्रभाबहनको मिली हुअी चूडिया अुन्हे दीं और सुशीलाबहनको मिली हुअी अुन्हे सौंपी। बापूजीने वर्षों पुरानी सोनेकी पट्टीवाली जो चूडिया मुझे प्रसादीके तौर पर दी थी, अुनमें अिस पवित्र चूडीने अनोखी शोभा पैदा कर दी। कहावतके अनुसार सोनेमें सुगन्ध मिली और आज मैं कठी, रूमाल, पवित्र पादुका, कुमकुम और अुन चूडियोकी प्रसादी प्राप्त होनेके लिअे अीश्वरका सच्चे अन्त करणसे आभार मानती हू।

अब तो कोअी जल्दी सो जानेको नही कहता और आज यह डायरी रातको साढे बारह बजे लिखकर पूरी की।

आगाखा महल, पूना,
२५–२–'४४

आश्वासनके ढेरो तार देश-विदेशसे आ रहे है, पत्र भी बहुत आ रहे हैं। पडित मालवीयजी महाराजका तार पू० बाके अस्थि-पुष्प प्रयाग ले आनेके लिअे आया है।

सुबह पुरोहितजीने विधिपूर्वक अतिम पूजा कराअी। अस्थियोका पात्र लेकर देवदास काका और रामदास काकाने बापूजीसे विदा ली। बापूजी दोनो भाअियोको द्वार तक छोडने गये।

३१

सरकारका झूठ

आगाखा महल, पूना,
२६-२-'४४

मुझे कलसे बुखार आता है। अैसा लगता है कि अब शायद सरकार मुझे और प्रभावतीबहनको यहां नहीं रहने देगी। मेरे विषयमें आज खूब चर्चा हो रही थी। पू० बापूजीसे भी जुदा होना पड़ेगा! बापूजी मुझे देखने आये थे। और अभी घूमने गये हैं। मैं यह शामके छह बजे लिख रही हूं।

बापूजी मुझसे कहने लगे. "देखता हूं कि तेरी श्रद्धा मेरे प्रति बा जैसी है या नहीं? यदि मुझे बासे जरा भी कम समझेगी तो सरकार तुझे छोड़ देगी। परन्तु तेरा बीमार पड़ना ही बताता है कि बाके बनिस्बत मैं तुझे कम प्यार करता हूं। नहीं तो तू बीमार क्यों पड़े?" यद्यपि यह सब विनोदमें कहा गया, परन्तु मेरा खयाल है कि मेरे बीमार पड़नेमें बापूजी अपना कसूर मानते हैं अथवा यह मानते हैं कि पूज्य बाकी अपेक्षा मेरे प्रति अुनके व्यवहारमें कुछ कमी है। अिसमें अेक प्रकारसे अुनके मनकी तीव्र वेदना मुझे मालूम हुआी।

शामको बापूजीका मौन शुरू होगा। पूज्य बाके जानेके बाद यह पहला मौन-दिवस है।

आगाखा महल, पूना,
२७-२-'४४

कल बुखार रहा और आज भी अभी (सवेरे साढे सात बजे) तक अुतरा नहीं है। १०० डिग्री है। बापूजी टहलने जानेसे पहले मुझे अेक भव्य पत्र दे गये।

कलके बापूजीके विनोदमें बहुत बड़ी गूढता थी। मेरी अुन्हे कितनी चिन्ता हो रही थी, यह अिस पत्रने साबित कर दिया। और मेरी यह धारणा सच निकली कि बापूजीने मेरी खाटके पास आकर पाचेक मिनिट मेरे सिर पर हाथ रखकर विनोद किया, अुसमें मेरे लिअे अुनके मनकी तीव्र वेदना छिपी थी।

यह भव्य पत्र 'बापू — मेरी मा' (पृष्ठ ७) में प्रकाशित हो चुका है, फिर भी अिसका सिलसिला बनाये रखनेके लिअे अुसे दुबारा दे दू तो अनुचित नही होगा। क्योकि परम पूज्य बापूजीके मेरे पवित्र सस्मरणोमे यह पत्र अद्वितीय है। मेरे नाम पू० बापूजीका अपने हाथसे लिखा यह पहला ही पवित्र पत्र है।

चि० मनुडी,

तू अच्छी तरह सोअी न? तुझें और प्रभावतीको रखनेके बारेमें कल लबा पत्र लिखा। परन्तु रातको विचारमें नीद नही आअी। अन्तमें प्रकाश दिखाअी दिया। अैसी माग नही की जा सकती। करे तो जेल कैसी? हमें अेक-दूसरेका वियोग सहन करना ही होगा। तू तो समझदार है। दुखको भूल जा। तुझे बड़े बड़े काम करने है। रोना छोड दे। खुश हो जा। बाहर जाकर जो सीखा जा सके सीखना। अितनी सेवाके बाद तेरा हर हालतमें कल्याण ही होगा। मुझे तेरी बडी चिन्ता रहती है। तू अपने जैसी अेक ही है। भोली, सरल और परोपकारी है। सेवा, तेरा धर्म हो गया है, परन्तु तू अभी अपढ है। मूर्ख भी है। तू अपढ रह जाय तो तू भी पछतायेगी और जीता रहा तो मैं भी पछताअूगा। तेरे बिना मुझे अच्छा नही लगेगा, फिर भी तुझे अपने पास रखना मुझे पसन्द नही। क्योकि वह दोष और मोह होगा। मैं निश्चित रूपसे मानता हू कि अभी तुझे राजकोट जाना चाहिये। वहा तुझे नारायणदासका सत्सग मिलेगा। वहा तू अुपयोगी कला सीखेगी और सगीत तो सीखेगी ही। अिसके अलावा जो भी सीखनेको मिले सीखना। कमसे कम अेक

बा–१२

वर्ष वहां वितायेगी तो तू समझदार बन जायगी। फिर कराची जाना हो तो वहां जाना या और कहीं जाना। कराचीमें गुरु-दयाल मल्लिक हैं, पर वे अब वहां नहीं रहेंगे। अिसलिअे वहां तो केवल पढाअी ही हो सकेगी। वह भी कामकी चीज है। बहुतसी लडकियोंमें रहना भी अच्छा है। परन्तु जो चीज राजकोटमें है, वह कहीं नहीं है। अिससे अधिक तो मेरा मौन खुलेगा तब। तेरी मां तो मैं ही हूं न? अितना समझ ले तो काफी है।

यह पत्र तू संभालकर रखना।

बापूके आशीर्वाद

लगभग नौ बजे कर्नल भंडारी आये थे। कर्नल शाह भी साथ थे। अुन लोगोंको भी पू० बाके बिना सूना-सूना लगता है।

अखबारोंमें समाचार आ रहे हैं कि बाके अवसानके बारेमें देश-विदेशके लोगोंने शोक प्रगट किया है। जगह जगह प्रार्थनाका क्रम रखा गया है। जेलमें मृत्यु होनेसे बा अधिक अमर हो गअी।

आगाखां महल, पूना,
२९-२-'४४

आज पू० बाको गये पूरा सप्ताह हो गया। साप्ताहिक तिथि होनेसे शामको ७-३५ से चौबीस घंटेका अखंड चरखा शुरू हुआ। पू० बापूजीने शुरू किया।

हममें जैसे बारहवां-तेरहवां दिन श्राद्ध दिवस माना जाता है, अुसी तरह हमने पू० बाका श्राद्ध दिवस मौन कताअी — जो पू० बाका अत्यंत प्रिय काम था — गीतापाठ और कैदियोंको भोजन कराकर मनानेका निश्चय किया। मेरी पढाअी बापूजीने व्यवस्थित कर दी, और सारा दिन कार्यक्रमने अिस तरह भर दिया कि मुझे अैसा न लगे कि मेरे पास कुछ काम नहीं है।

आगाखा महल, पूना,
१–३–'४४

चौबीस घटेके अखड चरखेकी आज शामको ७–३५ पर बापूजीने पूर्णाहुति की।

आगाखा महल, पूना,
२–३–'४४

गीतापाठ, प्रार्थना वगैरा रोज होते है। यद्यपि बापूजी खूब आनन्दमें रहते है, परन्तु मुझे अैसा लगता है कि शायद अुनके मनमें थोडी व्यथा बनी रहती है। कभी-कभी यह खयाल होता है कि कि वे विचारोमें मशगूल रहते हैं। बाके चितास्थान पर मिट्टीकी कच्ची समाधि बना दी गअी है और अुस पर 'हे राम !' लिख दिया गया है, जिसकी बा रातदिन रटन किया करती थी। हम दोनों वक्त अिस समाधिकी यात्रा करने जाते हैं। बापूजी स्वय फूलोसे क्रॉस बनाते है और हम सब मिलकर बारहवा अध्याय बोलते हैं।

आगाखा महल, पूना,
५–३–'४४

मुझे बुखार आता है। आज शामको बढ गया है। बापूजी अिस समय (शामके छह बजे) टहलने गये है। मैं अकेली ही बैठी यह लिख रही हू। बापूजी अब सोचते है कि अुनके लिअे होनेवाला आगाखा महलका खर्च बहुत अधिक है; अुसे हो सके तो किसी तरह कम किया जाय। मेरी भी चर्चा होती है कि सरकार अब मुझे क्यों रखे? प्रभावतीबहन अभी तक सरकारकी कैदी है। अिसलिअे अुन्हे जैसे अन्यत्र रखेगी वैसे यहा रख सकती है, परन्तु मुझे क्यो रखे? असलमें अिसमे मेरी श्रद्धाकी परीक्षा है। यदि बापूजीके प्रति मैं हार्दिक श्रद्धा रखती हू तो जब बापूजी छूटेंगे तभी मैं छूटूगी; यही अीश्वरसे मेरी प्रार्थना है।

आगाखां महल, पूना,
६–३–'४४

२ मार्चको अिंग्लैण्डकी लोकसभामें पू० बाकी सेवा-शुश्रूषा और बीमारीके दरमियान सरकारी व्यवहारके प्रश्नोंकी चर्चा हुअी। अुसमें बटलरने बिलकुल गप लगाअी। अिसके सिवा अंत्येष्टि क्रियाके बारेमें भी अैसी ही झूठ बात पत्रोंमें आअी है कि बापूजीकी पसन्दसे ही आगाखां महलमें अंतिम क्रिया की गअी।

बापूजी कहने लगे, "यदि मेरी ही पसन्दकी बात होनी तब तो मैं स्मशानभूमि ही पसन्द करता।" परन्तु यह सब बाके नामसे हो रहा है, यह शोभास्पद नहीं। अिसीलिअे बापूजी अुद्विग्न हो अुठे हैं। परसों सरकारको अेक पत्र भी लिखा। अुसमें लिखा कि सरकारकी तरफसे जो सुविधाअें दी गअीं, वे बहुत देरसे मिलीं। और वे भी तभी दी गअीं जब बापूजीने सरकारको जतला दिया कि मुझे बीमारका मूक साक्षी न बनाकर सरकार या तो बाको दूर कर दे अथवा अिलाजकी पूरी सुविधा दे। डॉ० दिनशाकी देखरेखके लिअे भी अितना ही विलम्ब किया गया। क्योंकि डॉ० दिनशाकी मांग जनवरीमें की गअी थी और अुसकी मंजूरी मिली फरवरीमें। डॉ० विधान रॉयकी मांग पर तो कोअी ध्यान ही नहीं दिया गया।

अिसके सिवा बटलरने कहा है कि बाको पैरोल पर छोड़नेकी तो मांग ही नहीं हुअी, परन्तु अुन्हें न छोड़नेमें सरकारने समझदारी की।

अिसके अुत्तरमें बापूजीने लिखा कि यह बात सही है कि बाको छोड़नेके लिअे प्रार्थना नहीं की गअी थी। परन्तु यदि सरकारने छोड़नेकी बात की होती तो? अिसके सिवा, सत्याग्रहीके लिअे अिस प्रकार छोड़नेकी बात करना शोभा नहीं देता।

बाकी अन्तिम क्रियाके ब्योरेका जवाब देते हुअे बापूने वे ही तीन शर्तें अुद्धृत कर दीं, जो २२ तारीखकी शामको कर्नल भंडारीको दी गअी थीं, और अन्तमें लिखा कि अिस बारेमें तो सरकार ही

माक्षी है। परन्तु अिस मामलेका राजनीतिक अुपयोग करनेकी बापूजीकी अिच्छा नही है।

बापूजीने लिखा है

> मेरी जीवन-संगिनी कस्तूरबाका जीवनदीप तो अब बुझ गया है। मगर अब अितनी आशा तो जरूर रखता हू कि बाकी पवित्र स्मृतिमें, मेरे मनके संतोष और शान्तिके लिअे और सत्यके नाम पर सरकार अपनी हो चुकी भूलोंमे और अमरीकामें भारतीय प्रतिनिधिने जो आश्चर्य-जनक बयान कस्तूरबाके संबधमें दिया है, अुसमें अुचित सुधार करेगी, यदि मेरी शिकायत सही हो। अथवा अखबारोंमें प्रकाशित बयान और बटलरके दिये हुअे बयानमें फर्क हो तो सरकार सच्चा बयान प्रकाशित करे।

बापूजीको दु ख अिसी बातका है कि जब बा जैसोंके लिअे अितना झूठ चलता है, तब बेचारे मामूली कैदियोंका क्या हाल होता होगा?

प्यारेलालजीने दोपहरका सारा समय यह पत्र समझानेमें लगाया।

मुझे प्यारेलालजी कहते थे कि "बहुत सभव है तुझे सरकार छोड देगी। अिसलिअे आजकल बापूजी सरकारको जो कुछ लिखें अथवा सोचें, वह सब तुझे ध्यानमें रखना है। क्योंकि वह बाहरके लोगोंके लिअे बडा अुपयोगी होगा। अिसलिअे डायरीमें लिखकर तो रखा ही जाय; परन्तु डायरियां सरकार कदाचित् बाहर न जाने दे, अिसलिअे सब दिमागमें ही रखा जाय।"

यह पढाअी अनोखी थी। जैसे अंग्रेजी, अितिहास, भूगोल, गणित अित्यादिके पाठोंमें कभी कभी भूल हो जाय तो याद रहनेके लिअे मास्टर चार पाच बार लिखनेको कहते हैं, वैसे ही यह नया राज-नीतिक अध्ययन-क्रम प्रारंभ हुआ। लेकिन अैसे पत्र याद रखना मेरे लिअे कठिन होनेके कारण बापूजीको मुझ पर यह बोझ लादना पसन्द नही था। अिसके बजाय वे चाहते थे कि मेरी पाठशालामें होनेवाली पढाअी ही करायें। परन्तु बापूजी बापू थे और प्यारेलालजी मत्री! अत मेरे याद रखनेके लिअे वे अैसे पत्रोंका अंग्रेजीसे गुजराती

अनुवाद करके लिख देते और अुनका गुजराती सार मैं रट लेती। किसी भी पत्रके बारेमें चाहे जिस समय पूछताछ कर लेते।

अिस प्रथम पत्रसे यह प्रयोग आरम्भ हुआ और आज दोपहरमें यह पत्र पांच बार लिखा जा चुका है।

अन्तमें शामको चार बजे तो मैं अुकता गअी। परन्तु अुन्होंने मुझे तभी छोड़ा जब यह पत्र कंठस्थ हो गया।

यह नअी पढ़ाअी करते समय खयाल हुआ कि यह नअी मिल्लत कहांसे आ गअी? यह नया विषय पढ़नेसे मुझे जितनी अरुचि थी, अुतनी और किसी विषयसे नहीं थी। परन्तु जैसे कभी कभी नापसन्द चीज अद्भुत काम देती है, वैसे ही पढ़ाअीके तौर पर लिखे गये ये पत्र भी अेक अद्वितीय साहित्यके रूपमें मेरी डायरीमें रह गये हैं।

३२

वेवेलको पत्र

आगाखां महल, पूना,
१०–३–'४४

लॉर्ड वेवेलका समवेदनाका पत्र आया है। अुसका अुत्तर बापूजीने कल दिया। अुसमें पू० बाके बारेमें जो कुछ लिखा है, वह खूब समझने लायक है। प्यारेलालजीने तो यहां तक कहा कि: "बापूजी बाके संस्मरण तो जब लिखेंगे तब लिखेंगे, परन्तु यह पत्र अितना हृदयस्पर्शी है कि अिसमें सारे संक्षिप्त संस्मरण आ जाते हैं।" अिस पत्रमें बापूजीने पहले तो लॉर्ड और लेडी वेवेलका आभार माना है। बादमें बाके विषयमें जो कुछ लिखा अुसमें कहा:

> बेशक मैंने माना था अुससे कस्तूरबाकी कमी कुछ ज्यादा मुझे खटक रही है। परन्तु मैं यह जरूर चाहता था कि अिस बीमारीके दारुण दुःखसे छूटनेके लिअे वे अिस देहसे जल्दी

मुक्त हो जाय। हम कुछ दूसरी ही तरहके दम्पति थे। १९०६ में हमने अेक दूसरेकी स्वीकृतिसे आत्मसयमका नियम पालनेका निश्चय किया। अुससे हम अेक-दूसरेके ज्यादा और ज्यादा निकट आये।

यद्यपि वे अत्यन्त दृढ अिच्छाशक्तिवाली थी, फिर भी अुन्होने मुझमें ही समा जाना पसन्द किया। जब सन् १९०६ में मैंने पहली बार राजनीतिक प्रवृत्तिमें अुनका प्रवेश कराया, तब दक्षिण अफ्रीकामें जेल जानेवाले भारतीयोकी सूचीमें कस्तूरबाका नाम सबसे पहला था और शारीरिक कष्ट अुन्होने मुझसे अधिक भोगा। कअी बार जेल हो आने पर भी अिस महल जैसी जेलमें, जहा सभी सुविधायें मौजूद है, अुन्हे अच्छा नही लगता था। दूसरे नेताओकी और अुसके तुरन्त बाद मेरी और कस्तूरबाकी गिरफ्तारीसे अुन्हे बहुत दु ख हुआ, क्योकि मैंने बहुत बार अुन्हें यह आश्वासन दिया था कि सरकार मुझे हरगिज नही पकडेगी। अिसलिअे अिस बारकी गिरफ्तारीका अुनके मन पर अितना भारी आघात पहुचा कि अुन्हे दस्त लग गये। परन्तु सौभाग्यसे डॉक्टर सुशीला नय्यर साथ थी। अुन्होने तुरन्त अिलाज किया। जिससे वे बच गअी, नही तो मुझसे मिलनेके पहले ही मृत्युको प्राप्त हो जाती। परन्तु मुझे देखनेके बाद तो अुपचारके बिना ही अुनके दस्त बिलकुल बन्द हो गये। फिर भी मानसिक वेदनासे अुनके मन पर जो आघात लगा था और दिल खट्टा हो गया था, वह मिटा ही नही। परिणामस्वरूप पीडा भोगते भोगते वे चल बसी।

अैसी कस्तूरबाके लिअे अखबारोमें सरकारकी तरफसे जो झूठ बयान छपते है, अुनसे मुझे कितना दु ख होता होगा, यह आप आसानीसे समझ सकेगे। वे मेरा अनमोल रत्न थी। अुनके बारेमें असत्य बातें लिखी जाय, अिससे दु खद वस्तु और क्या हो सकती है? मैंने अिस बातकी शिकायत गृह-विभागको भेजी है। अुसे पढनेका आपसे अनुरोध करता हू।

अितना भाग पूज्य बाके बारेमें था और अुनके बादका लॉर्ड वेवेलके भाषण और मीराबहनके बारेमें था — मीराबहनको जेलसे छोडनेके विषयमें। अुन्हें जेलमें बन्द करनेका कारण अितना ही था कि वे बापूजीकी भक्त हैं। "परन्तु अुन्हे छोड दिया जायगा, तो वे गरीब लोगोंकी सेवा ही करेंगी।"

बापूजीने वेवेल साहबको यहां आनेका निमंत्रण दिया है।

> "हवाअी जहाजसे बंगाल और वहांके दुःखी लोगोंके बीचमें जाते हैं, तो अेकाध बार अहमदनगर और यहां (आगाखां महलमें) भी आअिये। आप अपने कैदियोंके मनकी जांच कर सकेंगे। हम आपकी आलोचना करते हैं, परन्तु अितना विश्वास रखिये कि हम आपके मित्र ही हैं।"

अिस प्रकारका पत्र वेवेल साहबको लिखा। पूज्य बाके बारेमें जो कुछ लिखा है, वह तो लगभग बापूजीने अंग्रेजीमें जो पत्र लिखा अुसका अनुवाद ही है। परन्तु बाकीका सारांश तो जिस तरह मैंने समझा अुस तरह अपनी डायरीमें लिखा हुआ ही अूपर अुद्धृत कर दिया है।

बापूजी आजकल अपना समय सुशीलाबहनसे संस्कृत रामायणका अनुवाद करानेमें बिताते हैं और प्रभावतीबहनको गीता और गुजराती पढाते हैं। कभी कभी मेरा भूमितिका पाठ भी लेते हैं। शामको मीराबहन आध घंटे अखबार व बाअिबल पढती हैं। अभी तक डाक तो बहुत आती है। यहांसे डाक लिखनेवाली मैं अकेली ही हूं, अिसलिअे जिन जिनको बा पत्र लिखती थीं अुनको बारी बारीसे मैं लिखती रहती हूं। कर्नल भंडारी और कर्नल शाह लगभग रोज ही आते हैं। समाचारपत्रोंमें आया था कि हमारा मासिक खर्च ५५० रुपये होता है। अिस बातसे बापूजी बड़े बेचैन हो गये। यद्यपि यह आंकडा केवल हमारे ६-७ आदमियोंके खर्चका नहीं है, फिर भी बापूजीको यह खयाल तो है ही कि केवल अुन्हींके लिअे अितना सुन्दर महल खास तौर पर रखा गया है। भले अुसमें सरकारी नौकर काम करते हैं,

परन्तु सरकार अुनके वेतनका रुपया तो गरीब लोगों पर कर लगाकर ही पैदा करती है न? यदि बापूजीको साधारण जेलमें रखा जाय, तो खर्चमें जरूर फर्क पड़ेगा। यह बात मुझे समझाते हुअे बापूजी कहने लगे "दो सगे भाअी हों और वे साथ ही रहें तो कम खर्च होगा और अलग रहें तो दुगना खर्च होगा। फिर भले ही दोनों भाअी अेकसा भोजन बनायें और अेकसा ही खायें। मैंने तो अैसे बहुत प्रयोग किये हैं। मेरा सारा जीवन ही 'प्रयोग' है।"

आगाखां महल, पूना,
१५-३-'४४

अुपरोक्त खर्चके बारेमें बापूजीने अेक पत्र सरकारको लिखा था। वह पत्र लिखा तो गया ४ मार्चको, परन्तु बहुतसे पत्रोंके अनुवाद करने थे। अुनमें यह छोटासा पत्र रह गया था, सो आज ही मिला। साथ ही कांग्रेस पर लगाये गये सरकारी आरोपोंका जवाब बापूजीने पूज्य बाकी बीमारीके दिनोंमें १९४३ में दिया था, अुसका भी थोड़ा-थोड़ा अनुवाद करती हूं। परन्तु वह मेरी समझमें नहीं आता। अिसलिअे बापूजीने कहा "यह तेरे लिअे अत्यन्त कठिन है। अिसमें समय लगाना व्यर्थ है। तू आजकलके पत्र समझ लेगी और पचा लेगी, तो भी मैं समझूंगा कि तूने बहुत कर लिया।" अिसलिअे आज ४ मार्चको लिखा गया पत्र पढ़ा। अुसमें बापूजीने लिखा है:

> धारासभामें पूछे गये अेक प्रश्नके अुत्तरमें गृह-विभागकी ओरसे यह अुत्तर दिया गया है कि हमारा मासिक खर्च लगभग ५५० रुपया होता है।
>
> मैंने तो अक्तूबर १९४३ में ही लिख दिया था कि मुझे अितने बड़े आलीशान बंगलेमें रखा जा रहा है, अुससे मुझे लगता है कि मैं हिन्दुस्तानकी गरीब जनताके पैसेका अपव्यय ही कर रहा हूं। मुझे किसी भी जेलमें रख दिया जाय, वहां मैं अपने दिन आनन्दसे बिताअूंगा। परन्तु अिसके बजाय धारासभामें

पूछे गये प्रश्नका अुत्तर शायद मुझे यह सत्य याद दिलाता है कि मुझे अपनी बात पर डटे रहना चाहिये था। परन्तु 'जब जागे तभी सवेरा' — भूल तो किसी भी क्षण सुधारी जा सकती है। अिसलिअे मैं ही अब अिस प्रश्नको छेड़ता हू। मेरा और मेरे साथ रहनेवाले लोगोका खर्च केवल ५५० रुपये ही नहीं है। परन्तु अिस आलीशान बगलेका किराया — जिसका बडा भाग बन्द ही रहता है, केवल छोटासा भाग हमारे लिअे खुला है — और पहरेदारो, जेल सुपरिन्टेन्डेन्ट, जमादार और दूसरे सिपाहियोंका खर्च भी अिसमें शामिल करना चाहिये। यहाके बगीचेकी देखरेख और बगलेकी सफाओके लिअे यरवडा जेलसे कैदियोंको लाना पडता है। यह सारा खर्च मुझे तो अनावश्यक ही प्रतीत होता है। और अिसमें भी जब आज देशमें अैसा (बगाल जैसा) अकाल पड़ा हो, तब तो मेरे जैसा प्रत्येक भारतवासी आम जनताका अपराधी माना जायगा। मेरी माग है कि सरकार मुझे और मेरे साथियोको किसी भी साधारण जेलमें रख दे। अन्तमें अितना ही कहूगा कि यह सारा खर्च भारतके करोड़ो मूक और गरीब लोगोंसे लिया जाता है, यह कष्टमय विचार मेरे मनमें सदा खटकता ही रहता है।

अिस पत्रके बाद तो मालूम होता है अब मुझे जरूर छोड़ देंगे और प्रभावतीबहनको भी जहासे वे आओी थी वहा ले जायगे। क्योंकि अैसे खर्चके प्रश्नोंके विरुद्ध तो बापू जिद करके भी स्वय साधारण जेलमें ही जायगे। बापूजी कौन कम हठीले हैं?

२२

और अधिक झूठ

आगाखा महल, पूना,
२२–३–'४४

आज पू० बाकी मुक्तिको अेक महीना बीत गया। सब कुछ स्वप्नवत् हो गया दीखता है। जैसे बा कभी थी ही नहीं। अुनकी गैर-मौजूदगीका सूनापन तो दिन-दिन कुछ अधिक प्रबल होता दिखाअी देता है। यद्यपि हम सबका अेक-अेक क्षण काम-काजसे भर दिया गया है, बापूजीने किसीको अेक मिनिटकी भी फुरसत नही रहने दी। फिर भी किसीको अभी तक मानसिक शान्ति नही मिली है।

यह पूछने पर कि आज खास तौर पर क्या करना है, बापूजी कहने लगे· "बाके बिना अेक महीना बीत गया। ! बाके मनको पसन्द था कैदियोको भोजन कराना, कातना और गीतापाठ। हम वही करे। "

हमने अुपवास रखा और कैदियोको भोजन कराया। परन्तु कैदियोके आजके भोजनमें न तो हमेशाका आनन्द था और न भोजन करनेवाले कैदियोका मुस्कराता हुआ चेहरा था। अिसी प्रकार हर बार खानेवालोके बीचमें जिस कुरसी पर बा वात्सल्य भावसे सबको खिलाने बैठती, वह बीमारीके दिनोमें सदा काममें आनेवाली पहियेदार आरामकुरसी भी नही थी।

शामको साढे पाच बजे बापूजीने कैदियोको खिचडी, कढी और साग परोसा। हमने भी बारी बारीसे परोसा और कैदियोने अुदास और दुःखी मनसे खाया। जिन कैदियोने पू० बाकी बीमारीके दौरानमें सेवा की थी, अुनमें से दो तीनने तो मासिक तिथिके निमित्तसे अुपवास भी किया था।

७–३५ बजे अर्थात् जिस क्षण बाकी आत्माने अिस मानवदेहसे और सरकारी जेलसे सदाके लिअे मुक्ति प्राप्तकी थी, ठीक अुसी क्षण अुनकी पसन्दकी प्रार्थना, भजन और गीतापाठ शुरू किये गये। अुस वक्त अैसा लग रहा था मानो आखोंके सामने बाका हसता चेहरा तैर रहा हो। सारा कमरा प्रार्थनाके पवित्र अुच्चारणोंसे गूज अुठा था और अैसा लगता था जैसे, बा फिर अेक बार हम लोगोंके बीच आ गअी है। और कुछ समयके लिअे हम भूल गये कि यह प्रार्थना अुनके श्राद्धके निमित्तसे हो रही है। वे हमारे साथ प्रार्थनामें भाग भी अवश्य ले रही होगी; शायद हम अपने अज्ञानके कारण अुन्हे प्रत्यक्ष न देख पाते हो। कुछ भी हो, लेकिन आजकी प्रार्थनामें कुछ दूसरा ही वातावरण था।

बाके बारेमें चलाये गये सरकारके झूठके सिलसिलेमें पत्रव्यवहार अभी तक जारी है। परन्तु मुझे तो विनाशकाले विपरीत बुद्धिवाली बात लगती है। सरकार अितनी अधिक गिर गअी है कि पार्लमेण्टमें पूछे गये सारे प्रश्नोके अुत्तर अुसने बिलकुल झूठे दिये है। अेक जिम्मेदार सरकार अितना अधिक झूठ बोल सकती है! और किस व्यक्तिके बारेमें झूठे जवाब दिये जा रहे है, यह देखनेकी भी अिस समय ब्रिटिश सरकारको चिन्ता नही रही। जो बा सीधी-सादी, भली, भोली, दाव-पेच या षड्यन्त्र बिलकुल न समझनेवाली, जिसकी बात हो अुसे मुह पर ही कह देनेवाली और बादको पेटमें कुछ पाप न रखनेवाली थी, अुन शुद्ध, साफ दिल और प्रेमपूर्ण बाके विरुद्ध जो सरकार झूठी बाते फैला रही है, वह अपने सत्ताके बल पर भी सत्यका पराजय नही कर सकेगी। किसी समय जब यह सत्य प्रगट होगा, तब वह कितनी नीच समझी जायगी? मुझे तो अिन पत्रोका अनुवाद करना अच्छा ही नही लगता। अैसे सरासर झूठसे भरे पत्रोंको कौन याद रखे?

बापूजीने कहा "मुझे तो यह पसन्द है। मेरे मनमें अिसमे जरा भी क्लेश नही होता। क्योंकि अिससे बाका मूल्य घटता नही, परन्तु बढता है। कोअी हमें गाली दे तब समझ लेना चाहिये कि हमारे पाप

घुल रहे हैं। अिसलिअे तुम्हारी तरह गुस्सा आनेके बजाय मुझे सरकार पर दया आती है। जैसे किसी मनुष्यको चोट लग जाने पर मनमें दयाकी भावना पैदा होती है कि अरे, बेचारेके चोट लग गअी! वैसे ही मुझे खयाल होता है कि अिन बेचारोको झूठ बोलना पड रहा है। गुनाह गरीब होता है। मेरे लिअे अैसे लोग क्रोधके पात्र नही, बल्कि दयाके पात्र हो जाते हैं। यह ज्ञान आसानीसे समझमें आने लायक नही है। मनमें किसीके लिअे लेशमात्र भी क्रोध करना मेरी दृष्टिसे तो हिंसा ही है। जब यह अुत्तेजनाकी भावना ही मनुष्यमें न रहे, तब वह सच्चा अहिंसक कहलाता है।"

आगाखा महल, पूना,
३१-३-'४४

बासे सम्बन्ध रखनेवाले काण्डमें सरकारने कर्नल भडारी और डॉ० गिल्डरको भी लपेट लिया है। कर्नल भडारीने सरकारसे कहा था कि "डॉ० गिल्डरका यह मत है कि बाकी बीमारीमें डॉ० दिनशा महेता कोअी खास मदद नही कर सकते।" यह बात बिलकुल गलत है। परन्तु बापूजी डॉक्टर साहबसे कहने लगे "मुझे यह सब अच्छा लगता है।" अिसके स्पष्टीकरणके रूपमें डॉक्टर साहबने पत्र लिखा है

> दिसम्बर १९४३ में कर्नल अडवानी, जो कर्नल भडारीके छुट्टी पर जानेसे अुनकी जगह काम करते थे, मुझसे मिलने आये थे। अुन्होंने मुझसे पूछा कि डॉ० दिनशा महेताका कुछ अुपयोग हो सकेगा? मैंने गाधीजी या डॉ० सुशीलाबहनके साथ कोअी बात नही की थी, अिसलिअे अुस समय कोअी पक्की राय नही दी। परन्तु दूसरे दिन मैंने कह दिया था कि डॉ० महेता बहुत ही अुपयोगी साबित होंगे।
>
> फिर भी ३१ जनवरी, १९४४ तक डॉ० महेताके लिअे मागी गअी अिजाजतके बारेमें कुछ भी नही हुआ। तब हमने दूसरी बार लिखित याददिहानी करायी। अिसके सिवा

डॉ० विधानचंद्र रॉयके बारे में भी लिखा था, और बार बार कहा था। लेकिन अुसका तो कोअी जवाब ही नही मिला था।

और तालीम पाअी हुअी दाअीके बारेमें सरकारने जो भूल-भरी बात कही है, अुसका स्पष्टीकरण करनेकी अिजाजत लेते हुअे मैं कहूंगा कि तालीम पाअी हुअी अेक भी दाअी कभी यहां नही आअी। पागलोंके अस्पतालमें काम कर चुकी अेक आया दी गअी थी। अुसने आठ दिन बाद ही मुक्त कर देनेके लिअे कटेली साहबसे कहा और वह चली गअी।

अिस प्रकारका पत्र लिखकर गिल्डर साहबने दोपहरको रवाना किया।

यह पत्र रवाना हो ही रहा था कि अितनेमें लिखनेके लगभग अेक घंटे बाद अखबारोंमें आया कि नअी दिल्लीकी राज्यपरिषद्में श्री रामशरणदासने अेक प्रश्न पूछा कि वैद्य शिवशर्माको बाका अिलाज करनेकी अनुमति कब दी गअी थी? अुसके अुत्तरमें कहा गया कि हमसे ९ फरवरीको मंजूरी मांगी गअी थी, १० फरवरीको हमने मंजूरी दी थी और अेक-दो दिनमें बीमारकी चिकित्सा शुरू हो गअी थी। अखबारमें आया है कि यह जवाब गृह-विभागके मंत्री कोनरान स्मिथने दिया है।

परंतु सही बात यह है कि ३१ जनवरी (१९४४) के दिन ही शामको बापूजीने कटेली साहबको लिखित पत्र दिया था। अुस समय मैं वहीं बैठी थी, क्योंकि बापूजी मुझे 'मार्गोपदेशिका' का पाठ समझा रहे थे।

'बम्बअी समाचार' में आयी हुअी यह रिपोर्ट मैंने काट ली। बापूजी भी अिस तरहकी बातें जो अंग्रेजी अखबारोंमें आती हैं, अुनकी कतरन कभी तो स्वयं ही काट लेते हैं, या काटनेकी सूचना दे देते हैं और अैसी कतरनोंकी फाअिल रखते हैं। अिसलिअे मैंने गुजराती अखबारोंकी कतरनोंकी फाअिल बना ली है। गुजराती अखबार पढ़नेवाली पहले केवल बा थीं; और अब मैं अकेली हूं।

३४

प्रभावतीबहनका तबादला

आगाखा महल, पूना,
९–४–'४४

आज दोपहरको कटेली साहब प्रभावतीबहनको भागलपुर जेलमें भेज देनेका सरकारी हुक्म लेकर आये। प्रभावतीबहनके बारेमें किसीको जरा भी आशा नही थी कि अुन्हे हटाया जायगा। अुल्टे मेरे छूटनेका हुक्म कब आयगा, अिसीकी रोज आतुरतापूर्वक राह देखी जा रही थी। रोज रात होने पर यह खयाल होता है कि चलो, आजका दिन तो निकला! अिससे सबको आश्चर्य भी हुआ। दो दो बार वह हुक्म पढा गया और खयाल हुआ कि 'कही मनुको छोडनेके बजाय भूलसे तो अैसा नही हो गया?'

अिस हुक्मसे मै जरा अुत्तेजित हो गअी। मैंने कहा, मेरा तो भगवान है! देखना, हम तो साथ ही छूटेंगे। बापू कहने लगे "तेरा भगवान जरूर सच्चा है, पर तुझे पता है कि जहा स्वार्थ हो वहा भगवान नही होता।"

मैंने कहा · "मेरे स्वार्थकी अपेक्षा भगवानका स्वार्थ अधिक जान पडता है। आपने ही कअी बार कहा है कि भगवानकी दृष्टिमें हम सब बालकके समान है। जैसे माता-पिता सदा यह चाहते है कि मेरा बच्चा पढे-गुने और तरक्की करे वैसे भगवानको भी यह स्वार्थ तो होता ही होगा? कारण, मेरे माता-पिताने तो हृदयपूर्वक मुझे भगवानके हाथोमें सौंप दिया है। अिसलिअे भगवान जानता होगा कि आपके पास रहनेमें मेरा अधिक हित है।"

बापू हसने लगे। मैं अिससे मनमें जितना आनद अनुभव कर रही थी अुतना ही प्रभाबहनके लिअे दुःख हो रहा था। प्रभाबहन यद्यपि

कुढ तो रही थी, परन्तु किसी पर प्रगट नहीं होने दे रही थी। वे हंसते मुंह सब सामान बांध रही थीं, क्योंकि बापूके आध्यात्मिक जीवनका रस वे वर्षोंसे पी रही थीं। अैसे आध्यात्मिक जीवनके दर्शनोंका लाभ तो बहुतोंको मिला होगा, परन्तु प्रभाबहनने अुसे अपने जीवनमें अुतार लिया है। अिसलिअे अुनके लिअे यह अवसर कठिन होने पर भी वे आनंदपूर्वक अुसका सामना कर रही थीं। परन्तु यदि अुनके स्थान पर मैं होती तो मुझे नम्रतापूर्वक स्वीकार करना चाहिये कि हुक्म मिलते ही शायद मैं रोना शुरू कर देती।

शामको घूमने जाते समय बापूजी बोले "देख, प्रभा कितनी बहादुरीके साथ तैयार हो रही है? यही दिन यदि तेरे लिअे आ जाय तो अब तुझे हरगिज आश्चर्य नहीं होना चाहिये। प्रभाको तो फिर भागलपुर जेलमें ही जाना है, जब कि तुझे अपने सम्बन्धियोंके पास जाना होगा। दोनों स्थितियोंमें कितना अंतर है! यद्यपि प्रभा तुझसे बहुत बड़ी है, और यह भी सच है कि अुसने बहुत कुछ देखा है। परन्तु मेरी दृष्टिमें तो वह वैसी ही बारह-तेरह वर्षकी लड़की है जैसी वह पहले-पहल मेरे पास आअी थी। अुसके बजाय तेरी रिहाअीका हुक्म आया होता तो?"

मेरे जवाब देनेसे पहले ही हममें से कोअी बोल अुठा 'गरम पानी' का नल ही खुल जाता!

मैं जोशमें थी, अिसलिअे मैंने कहा, "आप सब भले कुछ भी कहें, परन्तु मेरा तो भगवान है। देख लेना, बापूजीको लिये बिना नहीं जाअूंगी।" अिस प्रकार कह तो रही थी, परन्तु मनमें लग रहा था कि छूटनेका हुक्म आयेगा तब पता चलेगा।

आगाखां महल, पूना,
१२-४-'४४

आज प्रभावतीबहनके जानेका दिन था। बारह बजे खा-पीकर सब बैठे थे कि अितनेमें अेक पुलिस ट्रक आयी। वह चारों ओर जालीसे बन्द की हुअी थी। गोरे सार्जेण्ट, चार-पांच पुलिस और अेक

मेट्रन थी। पुलिसवाले सब खुली बदूकें लिये हुअे थे। मैंने कहा "ये दुबली-पतली प्रभावतीबहन कहा भागकर जानेवाली है जो अितने पुलिस लेने आये है?"

बापूजी हसते हसते बोले "यह तो भागनेवाली नही है, परतु अिसका पति (जयप्रकाशजी) भागता है न?"

बापूजी और हम सब प्रभाबहनको बस तक छोडने गये। अुस समयका दृश्य बडा करुण था। बाको सदाके लिअे छोडकर बापूजीसे दुखद विदा ली जा रही थी। सबकी आखोमें पानी आ गया था।

बापूजीकी तबीयत कुछ खराब हो गअी है। रातको शरीरमें जरा बुखारसा लगनेके कारण आज अुन्होने खाना छोड दिया।

३५
बापूजीकी बीमारी

आगाखा महल, पूना,
१७-४-'४४

पू० बापूजी मलेरियासे पीडित है। बुखार बहुत रहता है। आजसे बारी बारीसे अुनके पास दिन-रात रहनेकी 'ड्यूटी' लगा दी गअी है। कुनैन लेनेसे अिनकार करते है। अिस बीमारीमें बाकी कमी अवश्य महसूस होती है। अीश्वरसे प्रार्थना करती हू कि बापूजीको जल्दी तदुरुस्त बना दे।

शामको हम समाधिकी यात्राको जा रहे थे। बापूजी बोले कि मुझे भी चलना है। लेकिन डॉ० गिल्डर साहबने समझाया तो मान गये। रातको लगभग १०४ डिग्री बुखार था। डॉक्टर साहब कह रहे थे कि आज यही हाल रहा तो कल कुनैन देनी ही पड़ेगी। आज मालिश और स्नान नही कराया गया।

२५–४–'४४

डॉ० विधानबाबूको बुलानेकी माग की गअी। वे और डॉ० गज्जर आये। बापूजीके खूनकी परीक्षा करनेको सवेरे खून ले गये थे। सरकारने अिस बीमारीमें बहुत ढिलाअी नही की। हमें आशा नही थी कि डॉ० विधान रायको अनुमति मिल जायगी। वैद्यराजने भी कहलवाया है कि जरूरत पड़ने पर मुझे सूचना दें।

कुनैन लेना तीन ग्रेनसे आरंभ किया है। कानमें बहरापन लगता है। दूध तो बापूजी नही लेते। फलोंका रस लेते हैं।

सुना है सदस्योंने भी मुलाकातकी मांग की है। सारा देश चिन्तामें पड़ गया है।

३०–४–'४४

जमनादास काकाको मिलने आनेकी अिजाजत मिल गअी है। खबर है कि वे कल आयेंगे। कनुभाअीने भी सेवा करनेके लिअे सरकार आने दे तो आनेकी अिच्छा प्रकट की है। बापूजीकी तबीयत सुधार पर तो है। परंतु कमजोरी और फीकापन बहुत बढ़ गया है।

२–५–'४४

जमनादास काका मिलने आये थे। भीतर-बाहरके बहुतसे समाचार लाये। परंतु बापूजीको यह अच्छा नही लगा। "जमनादास 'गांधी' है, अिसलिअे अुसे अिजाजत मिल जाय और आश्रमवासियोंको, जो सदस्योंसे भी अधिक हैं, अिजाजत न मिले?" यह खयाल होने पर बापूजीने सरकारको अेक पत्र लिखवाया:

"भविष्यमें कोअी अधिक निराशाजनक परिणाम न हो अिसके लिअे मैं जमनादाससे मिला तो सही, परंतु मैंने अपने लिअे दूसरा ही नियम बनाया है कि जिन स्नेही आश्रमवासियोंको मैंने अपने संबंधी ही कहा है, वे यदि गांधी परिवारके न होनेके कारण यहां नही आ सकते तो गांधी परिवारवालोंसे मिलनेका मोह भी मुझे छोड़ देना चाहिये, यद्यपि अुनसे मिलना मुझे

अच्छा लगता है। मैं मानता हूं कि मेरे अुपवासके समय मुझे हरअेकसे मिलनेकी जो छूट दी गअी थी, अुसका कोअी विपरीत परिणाम नहीं हुआ। तब क्या मेरी तबीयत अच्छी न हो जाय तब तक सरकार वैसा ही फिर कर सकेगी?"

४–५–'४४

आज कनुभाअीको आनेकी मंजूरी मिल गअी है। वे मदद करने आ गये हैं।

३६

छुटकारा

आगाखां महल, पूना,
५–५–'४४

आज शामको साढ़े छह बजे हम खानेसे निपटे तब श्री भंडारी और डॉ॰ शाह आये। मुझसे कहने लगे, "बापूजीको साथियों सहित छोडनेका हुक्म आया है। परंतु तुम्हारा कहीं नाम नहीं है। अिसलिअे तुम्हें तो नहीं छोड़ना चाहिये न?" यह बात हमने बिलकुल झूठ ही मानी। बापूजीके पास गये। सब कैदियोंको शामको बहुत जल्दी यरवडा जेलमें ले गये। अिससे हमें आश्चर्य हुआ कि अिस प्रकार जल्दी क्यों ले गये होंगे? मुझे लगा कि बापूजीको अिस खबरसे दुःख हो रहा है। स्वास्थ्यके लिअे और अितने साथियोंके अभी तक जेलमें रहते हुअे अुन्हें छूटना पसन्द नहीं था। परंतु सरकार तीसरा बलिदान नहीं चाहती, अिसलिअे प्रसन्न हो गअी होगी!

मेरा पू॰ बापूजीके साथ ही छूटनेका जो निश्चय था और अुन बारेमें अीश्वर पर जो श्रद्धा थी अुसने कैसा अद्भुत काम किया!

जिससे मुझे अपार आनन्द हुआ। मैं अुछलती-कूदती डॉक्टर साहब, कटेली साहब, प्यारेलालजीके पास गअी और सबको छोटे बच्चोंकी तरह अगूठा दिखाते हुअे कहा "क्यो, देखा, बापूजीको लेकर ही बाहर जाअूगी न? भगवान किसका? आपका या मेरा?"

शामको बापूजी थोडे चक्कर लगाने आगनमें आये। "सब अच्छी तरह पैक करना" वगैरा बातें कही। और अतमें बोले "न जाने क्यो मुझे छूटनेका कोअी अुत्साह नही है। अुलटे मुझे अपने हृदयके भीतर अधेरा लग रहा है। देखता हू, बाहर जाकर क्या कर सकूगा। मेरा तो खयाल है कि सरकार अधिक समय मुझे बाहर नही रहने देगी। दिमाग पर खूब बोझा लगता है।"

प्रार्थनाके बाद पू० बापूजीके पैर दबाकर हम सब सामान बाधनेमें जुट गये।

पुस्तकें, स्टेशनरी और दूसरा भी अितना सामान पैक करना था कि मीराबहनके सिवा रातभर हममें से किसीने पलक तक नही मारी। अेकाअेक रिहाअीका हुक्म! हमने तो बाकायदा घरकी तरह सब अितजाम कर लिया था। प्यारेलालजी और सुशीलाबहन तो अपने कागजोंमें से ही सिर न अुठा सके। डॉ० गिल्डरने अपना पैकिंग रातको अढाअी बजे पूरा किया।

६-५-'४४

मैं सुबह ४ बजे निपटकर नहाने-धोने गअी। साढे चार बजे प्रार्थना हुअी। बापूजीको गरम पानी और शहद दिया। कटेली साहबने गद्गद हृदयसे ७५ रुपयेकी थैली बापूजीको अर्पित की। वे प्रेमी भक्त थे। सात बजे समाधि पर गये। वहा चिर समाधिमें लीन हुअी दो महान आत्माओंसे सच्ची विदा तो आज लेनी थी। अब तक रोज फूल चढानेसे वहाने भी मानो साक्षात् मिलन हो जाता था। अब पता नहीं बापूजी कब आयेंगे? खूब सजावट और धूप-दीप किया। पूरी प्रार्थना और बारहवा अध्याय बोलते बोलते सभी गद्गद हो गये। अिक्कीस महीनोंमें दो दो प्रियजनोंने यहा कठोर विदा ली थी। पत्थर जैसे हृदयको

भी पिघला देनेवाला दृश्य था। बापूजीने आगाखा महलके बाहर पैर रखते हुअे अेक पत्र तैयार कराया। अुसमें लिखा

> महादेवभाअी और बा दोनोकी अतिम क्रिया यहा हुअी थी। अिसलिअे अिन दोनो समाधियो पर नजरबन्दियोने पुष्प चढाकर रोज दोनो समय अजलि अर्पण की है। अग्निदाहके अिस स्थान पर जानेकी अिच्छा रखनेवाले सगे-सबधी जब चाहे तब जा सकें, अिसके लिअे मैं आशा रखता हू कि सरकार माननीय आगाखाकी जमीनमें से वह भाग प्राप्त कर लेगी। मैं यह बन्दोबस्त करना चाहता हू कि अिस पवित्र स्थान पर दोनो समय प्रार्थना हो। मेरी धारणा है कि मेरी प्रार्थनाके अनुसार अवश्य किया जायगा।

ठीक आठ बजते ही भडारी आ पहुचे। सब पहरेदारोको आज अिक्कीस महीनेके बाद हटा लिया गया। आठ बजे बापूजीने मोटरमें पैर रखा। पीछे थोडा सामान रह जानेसे मैं दूसरी मोटरमें आअी। पहलीमें बापूजी, सुशीलाबहन, कर्नल भडारी और डॉ० शाह तथा दूसरीमें डॉक्टर साहब, मीराबहन और मैं। तीसरीमें कनुभाअी और प्यारेलालजी थे।

पर्णकुटी पहुचे। वहा तो लोगोंके मनमें आज दीवाली या नव-वर्ष जैसा आनद था। बापूजीके दर्शन करनेको लोग चीटियोकी तरह अुमड़ रहे थे। जाते ही सुशीलाबहनने स्वास्थ्य-सबधी बुलेटिन जारी किया। मैंने बापूजीके लिअे खानापीना तैयार करना शुरू किया। बापूजीसे मिलनेवालोका पार नही था। आठसे बारहके बीच अेक मिनट भी चैन नही ले सके। बारह बजे श्रीमती प्रेमलीला-बहनने अिसका बन्दोबस्त रखनेका भार अपने सिर लिया तभी शान्ति हुअी।

बापूजीने आराम किया। मैंने पैरोमें घी मला। शामको पाच बजेकी प्रार्थनामें तो दर्शनोंके लिअे अितनी भीड़ अुमड़ आअी कि पर्ण-कुटीके सुन्दर बगीचेका कचूमर निकल गया। प्रार्थनाके लिअे स्थानाभाव

होनेके कारण लोग पेड़ों पर चढ गये। प्रार्थनाके बाद बापूजी थोड़ा घूमे और खूब थक जानेके कारण थोड़ा आराम करके दूध पिया। डॉक्टरोंने जांच की।

रातको जब मैं बापूजीके सिरमें तेल मल रही थी, तब मुझे अुन्होंने अितना ही कहा- "देख लिया, मनुष्य जैसी श्रद्धा रखता है वैसा ही फल मिलता है। हृदयसे की गअी निःस्वार्थ प्रार्थना कभी निष्फल नहीं जाती, अितना तूने प्रत्यक्ष अनुभव कर लिया। मैं और दूसरे सब अब तक विनोद करते थे। परंतु यह मैं तुझे विनोदमें नहीं कह रहा हूं। अितना तू ज्ञानपूर्वक समझ लेगी तो बहुत है। श्रद्धा ज्ञानपूर्ण हो तभी वह महत्त्वपूर्ण काम करती है। अिसको तू हृदयमें अंकित कर लेना।"

३७
पर्णकुटीमें

पर्णकुटी, पूना,
७-५-'४४

पू० बाका स्थूल शरीर हमारे बीचसे अुठ गया था, फिर भी अुनकी समाधिके दर्शनोंसे असा खयाल होता था कि वे हमारे बीचमें ही हैं। परंतु आज पहला दिन असा अुगा जब मेरे मनमें और हमारी मंडलीमें भी — यद्यपि पर्णकुटीमें आदमी समा नहीं रहे थे — कुछ न कुछ कमी मालूम हुअी और वह थी पू० बाकी शीतल छाया-की। कार्यक्रममें अेकाअेक परिवर्तन हो जानेका भान पहले-पहल आज हुआ। कल सुबहके आठ बजेसे आज सुबहके आठ बजे तकके समयमें सारा कार्यक्रम बदल गया, अिसका मनमें कोअी खास खयाल नहीं था।

सवा आठ बजे। बापूजी मालिशके लिअे जानेसे पहले मुझसे बोले "मैं घूम रहा था तब क्षणभर यह खयाल आया कि समाधि पर जा कर श्लोक बोल कर अूपर जायंगे। परंतु यह विचार आते ही भान

हुआ कि आज हम बा और महादेवसे सचमुच जुदा पड गये हैं। क्योंकि कल सवेरे तो दर्शन करके चले ही थे। यदि तुझे या दूसरे किसीको जाना हो और समय मिले तो हो आना। सुशीलाबहन तो काममें अितनी डूबी हुअी है कि अुसे बिलकुल वक्त नही मिलेगा। परन्तु वह वहा जाना पसन्द करेगी। अिसलिअे अुसे पूछ लेना। मुझे आकर खाना देगी तो चलेगा।"

वहा जानेवालोंमें तो हम बहुतसे हो गये। सब वहां गये और दर्शन करके वापस आये।

आकर साढे ग्यारह बजे बापूजीको खाना दिया। बीमारीके बाद आज यह पहला भोजन था अेक खस्ता पतली रोटी (खाखरा), जरासा मक्खन, छह औंस दूध और अुबला हुआ साग। बापूजीको अभी तक कमजोरी तो है ही। मुलाकातियोंका पार नही है। अिससे बापूजीको थकान भी महसूस होती है। शामकी प्रार्थनामें लोग जगह न होनेसे पेडों पर चढ जाते हैं। शामको कर्नल भंडारी आये थे। कटेली साहब अभी तक आगाखा महलमें ही हैं। कहते थे कि वहा अुन्हें सब कुछ सौंपनेमें अेक दो दिन लग जायगे।

पर्णकुटी, पूना,
१०-५-'४४

पू० बापूजीको कहा रहनेसे आराम मिलेगा, अिसकी डॉक्टरों और बापूजीके बीच खूब चर्चा हो रही है। बापूजी तो सेवाग्राम ही जाना चाहते हैं। परन्तु वहा सख्त गरमी होनेके कारण सभी मना करते हैं। खास तौर पर हवा खानेको ही कहीं जाना तो बापूजी हरगिज नही चाहते। परन्तु हवा खाने [illegible], [illegible] सुधरने तक बापूजी कुछ महत्त्वपूर्ण काम कर सकें, अैसा स्थान तो [illegible] ही है। अन्तमें तय हुआ कि जुहू पर जाकर रहें। बडे अनुनय-विनयके बाद बापूजीने शान्तिकुमारभाअीके मेहमान बनना स्वीकार किया। अिसलिअे आज शान्तिकुमारभाअी बम्बअी [illegible] हैं। [illegible] हमारा जाना तय हुआ है।

शामको हम सभी समाधि पर गये थे। बापूजी भी साथ थे। शामको बापूजीने दूध नहीं लिया। केवल दो सतरे, गरम पानी और शहद लिया। अभी तक जितनी चाहिये अुतनी खुराक शुरू नहीं की है। चेहरे पर पीलापन अधिक लगता है।

रातको कह रहे थे : "कानोंका बहरापन पूरा नहीं गया। अिसमें कुछ हद तक रामनाममें श्रद्धाकी कमी भी पाता हूं। यदि राम-रटनमें दृढ श्रद्धा जम जायगी, तो बहरापन अवश्य चला जायगा।"

३८

बंबअीमें

जुहू,
११-५-'४४

हमें सुबह जल्दी ही रवाना होनेवाली गाड़ीमें बम्बअी जाना था। अिसलिअे हम प्रार्थनासे आध घंटे पहले अुठ गये थे। ज्यादा सामान तो सीधा मोटर-लारीमें बम्बअी गया और बाकीका पैक करके मनुभाअी और नारायणभाअीको सौंप देना था। प्रार्थनाके बाद बापूजी आधा घंटा सोये। प्रेमलीलाबहनकी पर्णकुटी अेक मुसाफिरखाने जैसी बन गयी है। अुन बेचारीको भी अेक मिनिटका आराम नहीं मिलता।

सुबहसे ही पूना स्टेशन पर लोगोंकी अपार भीड़ जमने लगी थी। तब बापूके बम्बअी पहुंचने पर बम्बअी नगरीमें क्या हाल होगा? लगभग सवा दस बजे हम अेक छोटेसे स्टेशन पर अुतरे। बड़े स्टेशन पर बहुत भीड़ होगी, अैसा सोचकर हमें अिस प्रकार बीचके स्टेशन पर दो मिनिट गाड़ी [illegible] थी। [illegible], सुशीलाबहन और मैं [illegible] गये। [illegible] हो गया था कि बापूजी [illegible]। अिसलिअे [illegible] पू० बापूजीसे [illegible] थे। [illegible]

लोगोको पता न चलने देनेके लिअे ड्राअिवर बडी होशियारीसे मोटरको तेजीसे ले जा रहा था। परन्तु कितनी ही जगह जनताके प्रेमके आगे अुसकी होशियारी नही चल पाती थी और लोग मोटरके पास आकर 'गाधीजी जिन्दाबाद' के नारे लगाते थे।

मोटरमें अेक तरफ मैं, अेक तरफ सुशीलाबहन और बीचमें बापूजी बैठे थे। बापूजीका खयाल था कि "जुहू पहुचनेमे अेक घटा लग जायगा, अिसलिअे मै सो लूगा।" परन्तु वे सो न सके।

ग्यारह बजे घर पहुचे। सुमतिबहन (श्री शान्तिकुमारभाअीकी पत्नी) ने बापूको तिलक लगाकर माला पहनाअी। अम्माजान (श्री सरोजिनी देवी) वही थी, अुन्होने बापूजीका आलिंगन किया।

मैंने अुन्हे प्रणाम किया कि तुरत अुनके मुहसे ये शब्द निकले.

"क्यो बेटी, बा तो हम सबको छोडकर चली गअी न? आज बाके बिना बापूको अकेले देखकर हृदयको चोट लगती है। बाने मरकर तीन ही महीनोमे बापूके लिअे जेलके द्वार खोल दिये। मुझे बाकी आखिरी बातें सुननेकी अिच्छा है। तुम तो बडी भाग्यवान हो कि आखिर तक वही रही, लेकिन मै अुनकी आखिरकी बातें सुनकर ही अपनेको पवित्र कर लू।"

मेरे मनमें अम्माजानके लिअे पूज्यभाव तो था ही, परतु अुनके अैसे प्रेममय शब्द सुनकर अुनके स्नेहशील स्वभावसे मैं अधिक परिचित हुअी।

बा और सरोजिनी देवीके बीच कैसा कौटुम्बिक सम्बध था अुसका यहा वर्णन करना अप्रस्तुत होगा। अभी मैंने सामान भी ठीकसे जमाकर नही रखा था, लेकिन अिस खयालसे कि अुनके वे शब्द कहीं भूल न जाअू, अुन्हे मैंने अपनी डायरीमें नोट कर लिया।

बापूजी आधे घटेमें सबसे मिलजुलकर मालिश करवाने गये। मैं बापूजीके खानेकी तजवीजमें लगी।

लगभग साढे ग्यारह बजे बापूजी सब कामसे निबटकर आराम करनेके लिअे लेटे। मैं पैरोंमें घी मलने लगी थी। मुझे पढने लगे

"आज मुझे तेरे बारेमें सच्ची चिन्ता हो रही है। मुझे सरकार कितने दिन बाहर रखेगी यह मैं नही जानता, और अब मुझे पकडे तो सरकार तुझे या सुशीलाको मेरे साथ नही रहने देगी। लेकिन सुशीलाबहन तो डॉक्टर है, अिसलिअे शायद अुसे मेरे साथ रखे। अिसलिअे जैसे सुनारके पास सोना तो सुन्दर होता है, परतु अुसे आकार कैसा देना अिसकी अुसे चिन्ता रहती है, अुसी तरह मुझे आज तेरे विषयमें चिन्ता हो रही है। तेरी पढाअी ठीकसे होनी चाहिये, लेकिन अब मैं जेलसे बाहर हू तो भी तुझे अच्छी तरह पढाना मेरे लिअे कठिन होगा। जेलमें दूसरा कुछ काम नहीं होता था। लेकिन यहां तो अितना काम, डाक और मुलाकाती रहेगे कि मैं अेक मिनिटको भी फुरसत नही निकाल सकूगा। अिससे तुझे जरा भी घबराना नही चाहिये। परतु अब तेरे दिमागको मुझसे जुदा होना ही पड़ेगा। अिस तरह तू तैयारी कर सके, अिसीलिअे अितना मैंने समझाया। अिसका अर्थ यह तो नही है कि मैं आज ही तुझे भेज दूगा। परतु तेरी मा बना हू अिसलिअे जैसे मेरे मनमें दूसरे प्रश्न हल करनेकी चिन्ता है अुसी तरह तेरा प्रश्न भी हल करनेकी चिन्ता है। तू भी मलकर जितनी बात मैंने कही वह सब लिखकर मुझे बता दे और जयसुखलालको कराची भेज दे। वह भी मुझे अिस बारेमें कुछ सुझायेगा।"

अितनी बात करके बापूजीने दसेक मिनट नींद ली। अुठकर तुरन्त ही पिताजीके पत्रमें मैंने बापूजीको अूपरकी बातें लिखी और अुनके विषयमें पूछताछ की। लेकिन अक्षरश मैं पूरी बातें नही लिख सकी, क्योकि बापूजी बहुत जल्दी अुठ गये। अुठकर तुरन्त शहद डालकर गरम पानी पीनेकी अुनकी आदत थी। वह देनेके लिअे मैं लिखना छोड कर अुठने लगी, लेकिन मुझे रोककर बापूजीने कहा . "पहले लिखकर मुझे दे जा। बादमें पानी लाना।"

मैंने पिताजीका पत्र पूरा किया और अुनके हाथमें रखा। फिर पानी दिया।

मुझे भी लगा कि मेरी ठीक तालीम और चरित्र-गठनको बापूजीको आजसे कितनी चिंता होने लगी है! मेरे बारेमें अुनके मनमें

अितनी चिन्ता होगी, अिसकी कल्पना मुझे तभी हुअी जब अुन्होंने गरम पानी पीनेमें दस मिनिट देर की।

दिनभर दर्शनार्थियोंकी भीड फाटक पर जमी रही। परतु प्रार्थनाके समय ही सबको भीतर आने देना तय हुआ।

शामको सूर्यास्तके समय जुहूके तट पर बापूजीकी हाजिरीमें गर्जन करते हुअे सागरके साथ मानव-सागरके मिलने पर भव्य प्रार्थना हुअी। जनताने २१ महीने बाद बापूजीके दर्शन किये। प्रार्थनाके बाद बापूजीने भेंटमें आये हुअे फल बालकोंको बाट दिये, हरिजन फड अिकट्ठा किया और घर आकर थोडा घूमे। नौ बजे दूध पिया और घरके लोगोंसे बात करके सो गये।

अिस प्रकार बबअीका पहला दिन बीता।

जुहू,
१५–५–'४४

बापूजीको जितना आराम चाहिये अुतना नही मिल पाता। मुलाकातियोंकी बबअीमें झडीसी लगी रहती है और बापूजी बातें किये बिना रह नही सकते। अिसलिअे डॉक्टरोंने सोचा कि कोअी अैसा चौकीदार होना चाहिये, जो बापूजीको भी बूतेसे बाहर जाने पर कह सके और मुलाकातियोंको भी काबूमें रख सके। बापूजीको नाराज करना और प्रजाका अपयश लेना — यह बहुत कठोर हृदयके चौकीदारके बिना नही हो सकता था। सबकी नजर अम्माजान पर थी। अुन्होंने यह जिम्मेदारी हर्षसे स्वीकार की।

शामको मैं कुछ पत्र बापूजीको पढकर सुना रही थी। अुसी समय अम्माजान आअी। अपने लाक्षणिक ढगसे चेहरे पर हास्य लाकर कहने लगी, "अब मैं कोअी अिस छोकरीकी अम्माजान ही नही हू, आपकी चौकीदार भी बनी हूं। कोअी भी बेजा काम किया तो फिर देखिये मजा!!" बापूजी खिलखिलाकर हस पडे।

अुन्होंने सबको अितना काबूमें रखा और अपने कर्तव्यका अिस हद तक पालन किया कि वहा ठहरी हुअी पडित विजयालक्ष्मीको या

खुद पद्मावतीबहनको भी आना हो तो अम्माजानकी अिजाजतके बिना बापूजीके पास नही आ सकती थी। वे खुद भी बिना कामके नही आती थी। जिन्हें अम्माजानकी चिट्ठी मिले, वे ही अन्दर जा सकते थे।

सारे दिनमें बापूजीने क्या क्या काम किया, क्या खुराक ली वगैरा सारे दिनकी डायरी देने मैं रातको अुनके पास जाती। और रातको वहा जाती तब मुझे खिलाये बिना वे कभी वापस नहीं आने देती। खिलानेका अुन्हें बडा शौक था। वात्सल्य भाव भी अैसा ही था। रोजकी तरह जब आज रातको मैं वहा गअी, तो मैंने कहा. "मै यहा कुछ न कुछ खा लेती हू। पर बापूजी कभी मुझे खूब फटकारेंगे।"

अम्माजान बोली "बुड्ढेजी यदि तुझे डाटे तो तू साफ कह देना कि डाटनेमें आपको श्रम पड़ेगा। और जब तक नया श्रम करनेकी लिखित अनुमति अम्माजान न दें, तब तक श्रम न करनेका आपका वचन है। अिसलिअे मुझे डाटना हो तो पहले अम्माजानसे अिजाजत ले आअिये।"

अिस प्रकार पूज्य बापूजीकी सेवा करनेका मौका मिलनेके साथ-साथ अम्माजानके वात्सल्यकी बौछार पाकर मुझे बडा आनन्द हुआ।

बापूजीने पूर्ण आराम मिलनेकी दृष्टिसे आजसे १५ दिनका मौन लेना तय किया है।

जूहू,
१८-५-'४४

मनको आनंदित रखनेके लिअे रोज चारसे छहके बीच (यदि अच्छे गानेवाले हो तो) सगीत (भजन) सुनना बापूजीने स्वीकार कर लिया। अिसलिअे आज श्री झवेरचद मेघाणी गानेके लिअे आये। अुनके कठसे अुन्हींके गीत सुननेको मिलें, फिर तो कहना ही क्या! बापूजी खुश हो गये। अुनका साफा देखकर बापूजी कहने लगे- "मुझे

अपना साफा याद आता है।" श्री मेघाणीने भी बापूजीको बहुत श्रद्धासे गीत सुनाये।

बबओीमें स्टीमरका जो भडाका हुआ था, अुसका दृश्य देखनेके लिये बापूजी और हम गये। बहुत भयकर घटना घटी है।

३९

चरखा — अहिंसाका प्रतीक

जुहू,
२०-५-'४४

जबसे पूज्य बापूजी जेलमें गये तबसे अुन पर सरकारने यह शर्त लगा दी थी कि सबधियो (गाधी-कुटुम्ब) के सिवा वे किसी औरको पत्र नही लिख सकते। अिसलिअे अुन्होने अिक्कीस महीने तक किसीको पत्र न लिखनेकी प्रतिज्ञा निभाअी। अिस प्रतिज्ञाकी पूर्णाहुति करके अेक पत्र मेरे बारेमें पूज्य नारणदास काकाको लिखा। अुसकी नकल रख लेनेकी मुझे सूचना दी। पत्र पढा अुस समय तो अितनी समझ नही थी। परतु आज समझ बढने पर अैसा लगता है कि प्रत्येक सयानी माता चौदहसे सोलह वर्षकी पुत्रियोका सच्चा चरित्र निर्माण करना अपना फर्ज मानती है, क्योकि अिन तीन वर्षोमें कन्याओंको जिन संस्कारोका खजाना मिलता है वह जिन्दगीभर चले अितना महत्त्वपूर्ण होता है। अिस प्रकार बापूजी मेरी मा बननेके बाद जब तक जेलमें रहे तब तक तो अुन्हे मेरी कोअी चिन्ता न थी। लेकिन अीश्वरने तो युग ही पलट दिया, महीनेभरमें नया ही फेरबदल हो गया। अिस फेरबदलमें देशकी व ससारकी जो भारी जिम्मेदारी बापूजीके सिर पर आअी, अुसमें भी वे मेरी जिम्मेदारी कितनी बारीकी और सावधानीसे निबाह रहे थे, यह नीचेके पत्रसे स्पष्ट होता है:

जुहू,
२०-५-'४४

चि० नारणदास,

लेटे-लेटे तुम्हारे लिये लेख लिखा। मुझे डर था कि कुछ भूले होंगी, लेकिन हुआी नही। दुबारा स्याहीसे लिखनेका अुत्साह नही था। मेरे लेखमें फेरबदल करना चाहो तो मुझे वापस भेज देना। तुम्हारे सुधार देखकर फिरसे लिख भेजूगा। समय तो अभी है ही।

दूसरी बात। (जयसुखलालकी) मनुको तुम जानते हो। मुझ पर अुसने बहुत अच्छी छाप डाली है। अपने कुटुम्बमें मैंने अैसी सहज सेवाभाववाली लडकी दूसरी नही देखी है। अुसने जिस श्रद्धा और भक्तिसे बाकी सेवा की, अुससे अुसने मेरा मन जीत लिया है। वह अभी मेरे पास रह सकती है। परतु मैं अैसा नही चाहता। मैं तो अिस समय टूटे हुअे बरतनकी तरह हूं। अिसलिअे अुसे कुछ दे नही सकता। दूसरे लोग अपने-अपने कामोंमें लगे हैं। और वे अब अुसे क्या देंगे? अुसकी पढ़ाअी नियमपूर्वक होती रहनी चाहिये। वह तुम्हारे ही पास हो सकती है। तुम्हे तग करे अैसी लड़की नही है। बड़ी भोली है। पढ़ाअीमें ठीक है। कण्ठ अच्छा है। शरीर ठीक माना जा सकता है। पर शरीरकी सभाल रखकर पटती नही। सेवामें सब कुछ भूल जाती है। मैं यह अवश्य चाहता हू कि अिसकी सस्कृत और गुजराती अच्छी हो जाय। गीता मैंने ही पढ़ाअी है। अुच्चारण ठीक कर सकती है। पुरुषोत्तम या तुम अुन्हे और सुधार सकते हो। अुसका खर्च लेना आवश्यक हो तो वह जयसुख-लालसे मिल जायगा। अुसे अपनी संस्थामें लेना है या नहीं, अिसका तार देना। पहला साथ मिलते ही भेजना चाहता हूं। अिनकार करना हो तो संकोच न करना।

बापूके आशीर्वाद

चरखा-जयंतीके संबंधमें बापूजीने लिखा था, जिसका अुल्लेख अूपरके पत्रके पहले भागमें है। अुस लेखमें बापूजी लिखते है.

तुम्हारा वार्षिक वक्तव्य ध्यानपूर्वक पढ लिया। अभी कुछ लिखना शुरू नही किया। केवल बीमारोको तीन पत्र लिखे हैं। परतु दुनियामें दरिद्रनारायण जैसा बीमार कोअी नही। तुम तो अुनके अनन्य भक्तोमें से हो। मेरी ही जयंतीके निमित्त चरखा-द्वादशी मनाते हो और अपनी सेवाको प्रखर बनाते जा रहे हो। अिस वर्ष बहुत कडी परीक्षा है। भगवान करे अुसमें तुम्हे विजय प्राप्त हो। जेल-महलमें अिस बार मार्क्स और अेंगल्सके रूसके महान प्रयोगका साहित्य हाथमें आया। पढ लिया। परतु कहा वह प्रयोग और कहा हमारा चरखा? वहा भी हमारी तरह सारी जनताको यज्ञमे निमत्रित किया जाता है। परतु यहा और वहामें अुत्तर-दक्षिण और पूर्व-पश्चिमका भेद है। कहा हमारा चरखा और कहा वहाके भाप और बिजलीसे चलनेवाले यत्र? अितने पर भी मुझे कछुअे जैसी चरखेकी चाल प्रिय है। चरखा अहिंसाकी निशानी है। और अतमें विजय तो अहिंसाकी ही होगी। पर हम अुसके पुजारी मद होगे तो अपनेको भी लजायेंगे और अहिंसाको भी लजायेंगे। प्रवृत्ति अुत्तम है। अब अुसमें नवीनता लानी चाहिये। चरखेका भी शास्त्र है, जैसे यत्रोका है। चरखेका टेकनिक अभी तक हमने हस्तगत नही किया। अुसके लिअे गहरा अध्ययन चाहिये। जैसे श्रद्धाके बिना ज्ञान व्यर्थ है, वैसे ही ज्ञानके बिना श्रद्धा अधी है।

अेक पत्रमें बापूजी लिखते है.

मेरा तो अिस समय सब कुछ अव्यवस्थितसा समझना चाहिये। महात्माओका मद अीश्वर रहने नही देता। ये पक्तिया सब समझ ले।

पत्र लिखने लगू तो सभी मेरे पत्रकी आशा रखेंगे, और अुसे पूरा करनेकी हद तक मेरी तबीयत सुधरे अुससे पहले

तो मैं वहीं (सेवाग्राम) पहुंच जाअूंगा। मुझे ब्यौरेवार लिखा जाय। जिसे अुमंग हो वह लिखे।

बापूके आशीर्वाद

पंडित मदनमोहन मालवीयजी महाराजकी अिच्छा थी कि बापूजी गंगाके किनारे आराम लेकर भले-चंगे हो जायं। अुनको बापूजीने (हिन्दीमें) लिखा:

पूज्य भाअीसाहब,

अैसे खत लिखनेकी सम्मति डॉक्टरोंने दी है। आपके प्रेमका पात्र मैं कहां हूं? मैं जानता हूं कि आपकी अिच्छाकी पूर्ति मैं नहीं कर पाता।

डॉक्टरोंकी सम्मति लंबी मुसाफिरी करनेकी नहीं मिल सकती है। बात यह भी है कि जेलके बाहर हूं अैसी प्रतीति मुझे नहीं होती है। बीमारीके कारण छूटना ही कहा है? देखें, अच्छा होने पर अीश्वर मुझे क्या मार्ग बतायेगा?

आपका छोटा भाअी

जुहू,
२२–५–'४४

आजकल बापूजी सुबह टहलने जाते समय समुद्रमें कुरसी रखकर आंखें बन्द करके दसेक मिनट बैठते हैं। सुबह घूमते समय दूर दूरसे भी लोग आते हैं, परन्तु सब शान्ति रखते हैं।

आज पू० बाकी त्रैमासिक तिथि है। सवेरेकी तरह प्रार्थनाके बाद सारी गीताका पारायण किया। मीराबहनने रामधुन और 'Wondrous Cross' नामक अीसाअी भजन गाया।

पिछली दो मासिक तिथियोंमें यह महसूस नहीं होता था कि तिथिकी प्रार्थना पू० बाकी श्राद्ध-तिथिके निमित्त हो रही है, क्योंकि आगाखां महलमें बाका अस्तित्व न होने पर भी वातावरण

वा-मय था। फिर आज यह बात और भी खटक रही थी कि दोनो पवित्र समाधियो पर मस्तक टेककर प्रणाम करनेका अवसर नही मिला। और अब तो कौन जाने कब यह यात्रा करनेका सौभाग्य प्राप्त होगा।

४०

घुंघरूसे शिक्षा

जुहू,
८-६-'४४

अितने कामोंमें भी बापूजीको मेरी शिक्षाके विषयमें बडी चिन्ता रहती थी। कराचीके श्री शारदा मंदिरके संचालकजीका पत्र मेरे नाम आया। अुन्होंने मुझे कराची आनेको ललचाया था। अिसलिअे अन्तमें राजकोटके बदले मेरे कराची जानेकी स्वीकृति पू० बापूजीने दे दी।

मुझे बम्बअीसे कराचीके लिअे जहाजमें रवाना होना था। मैं, सुशीलाबहन, प्यारेलालजी, डॉक्टर साहब, मीराबहन सब साथ साथ अेक परिवारकी भांति जेलमें रहे थे। सुशीलाबहन और प्यारेलालजीके दूसरे भाअीके यहां पहली ही पुत्री हुअी थी, अिस बातका मेरे कुटुम्बवालोंको पता था। हमने यह समझा कि अिस बच्चीको हमें कोअी भेंट देनी चाहिये और हम बबअीमें भूलेश्वरमें बच्चीके लिअे कोअी चीज खरीदने निकले। भूलेश्वरमें अच्छे अच्छे लोग भुलावेमें पड जाते हैं। मैं भी अुसका शिकार हुअी। मैंने अेक चांदीका प्याला और घुंघरू खरीदा व पैक करके मुझे वक्त न होनेसे किसीके साथ जुहू सुशीलाबहनको भेज दिये।

सुशीलाबहनने ये वस्तुअें पू० बापूजीको बताअीं। बापूजी सख्त नाराज हुअे। तुरन्त शान्तिकुमारभाअीको बुलवाया और अेक पत्रके साथ घुंघरू और प्याला जहाज पर मुझे वापस देनेके लिअे बेवक्त

मोटरमें भेजा। बेवक्त अिसलिअे कि जहाजके चलनेकी सीटी हो चुकी थी। अुन्होंने मुझे कहा . 'बापूजीने यह बंडल भेजा है।' बापूजी जानते थे कि मेरे मनमें अुन्हे छोडनेका अत्यत दु.ख था। अिसलिअे मुझे खयाल हुआ कि कोअी अैसी चीज भेजी होगी, जिससे मैं खुश हो जाअू। दूसरी कल्पना तो होती ही कैसे? परन्तु यह तो जो सोचा अुससे दूसरा ही निकला। और वह था जीवनका पाठ।

हममें बच्चोंका जन्म होने पर पहननेका कोअी कपडा या दूसरी कोअी चीज देनेका रिवाज है। अिस रिवाजमें देनेवालेका और बच्चेका कितना अहित है, यह कल्पना अिस बडलके साथ बापूजीने मुझे जो पत्र लिखा अुससे हुअी। वह पत्र अक्षरश यहां देती हू:

८-६-'४४

चि० मनु,

तुझे अब मनु कहनेके बजाय मृदुलाबहन कहना चाहिये। अभी तो तूने बबअी भी नही छोडा और आज्ञा-भग कर दिया। अिस तरह तू मेरी शिक्षायें कितनी मानेगी? तूने स्वय अेक कौडी कमाअी नही। अुदार पिता मिल गये हैं, अिसलिअे अुनका रुपया तू अुडाती है। बच्चीको तू बिगाड़ना चाहती है? परन्तु मेरे देखते हुअे तू अुसे नही बिगाड सकती। चादीके घुघरू और प्याले तुझे शोभा दें तो तुझे मुबारक हों। अथवा तुझे न चाहिये तो तेरे जैसा कोअी हो अुसे दे देना। मेरी अिच्छा तो यह है कि तू अिन्हें अपनी मूर्खताके चिह्न-स्वरूप संभालकर अपने पास रखना। प्याला और घुघरू साथमें लौटा रहा हू।

दु खी बापूजीके राम राम

मेरे पास तत्काल देनेको कुछ नही था और बेबीके पास कोअी स्मरण-चिह्न रहे, अैसी कुछ बुजुर्गोंकी भी राय होनेसे मैंने अुत्साहसे ये चीजें खरीदी थीं। अिसका अैसा भयकर परिणाम होनेसे मनमें मैं खूब कुढी। परन्तु अपनी भूलके प्रायश्चित्तके रूपमें कराची पहुचने

तक अुपवास किया, और मैंने अपनेको समझाया कि अिसमें दु:खी होनेकी कोअी बात नही, यह तो जीवनका अेक पाठ है।

कराचीके बन्दर पर पहुचते ही मैंने अपने पिताजीके हाथोमें बापूजीका पत्र रख दिया। वे हस दिये। मुझे लगा कि "दु:खी बापूजीके राम राम" और अूपर चि० मनुडीके बदले मनु लिखनेसे शायद मेरे पिता मुझे बहुत अुलहना देंगे। परन्तु यहा भी मेरी धारणा अुलटी निकली और मेरे पिताजी कहने लगे: "तूने खर्च किया सो भी मुझे बहुत अच्छा लगा और बापूजी नाराज हुअे यह भी अच्छा लगा, क्योंकि आजके बाद तू अैसा काम नही करेगी।" परन्तु बापूजीके "राम राम" शब्दोसे तो यह पत्र अैतिहासिक बन गया। घर जाते ही मैंने बापूजीको पत्र लिखा। भूलकी माफी मागी, आयदा अैसी गलती न करनेका वचन दिया और नीचे मेरे पिताजीने भी दो पक्तिया लिखी कि 'मनु अभी अितनी समझदार कहा हो गअी है कि अैसी भूल न करे? अुसने भूल की अिससे मैं खुश हुआ, क्योंकि जिन्दगीभरका सुख हो गया।'

आज भी अपनी मूर्खताकी निशानीके तौर पर अुपरोक्त दोनो वस्तुअें मेरे पास हैं। जो बालक खेलने योग्य भी न हो अुसे यह भान कहासे होगा कि यह धातु कीमती है? अैसे समय हम अपने पुराने रिवाजके अनुसार अनावश्यक खर्च करके फैशनकी चीजें अुसे देते हैं। हमारा देश गरीब है। कोअी बालक गरीब होगा या भविष्यमें कैसा होगा, यह कोअी नही जानता। फिर भी हम बचपनसे ही अैसी वस्तुअें देकर और लाड लडाकर अुसे पगु बना देते है।

अपने परिश्रमसे तैयार की हुअी चीज भेंटमें देने पर बापूजीको कोअी अेतराज नही था। अैसी चीज अगर सभाल कर रखी गअी, तो समझदार बनने पर बच्चा भी अुसे देखकर वैसा ही आचरण करेगा। परन्तु हम तो अपने पासके पैसेसे तैयार वस्तुअें खरीद लेते है। यह अेक प्रकारका आलस्य है। और मौजशौक तो है ही। परन्तु बापूजीने केवल ये वस्तुअें लौटाकर ही सतोष नही माना। अपने स्वभावके अनुसार मेरे पिताजीको पत्र लिखा और जबसे मेरे पिताजीने अपने

जीवनमें कमाओी शुरू की तबसे पाओी-पाओीका हिसाब अुनसे मांगा, जो अुन्होंने शुरूसे आखिर तक भेजा।

ता० १५-६-'४४ को कराचीमें मेरे पिताजीको बापूजीका पत्र मिला। चूंकि अुस पत्रमें यह चेतावनी थी कि अुन्हें कितनी बारीकीसे मेरी देखरेख रखनेकी जरूरत है, अिसलिअे अुसे अक्षरशः यहां देती हूं:

१२-६-'४४

चि० जयसुखलाल,

तुम्हें यह पत्र मनुके जानेके बाद तुरन्त लिखना था, परन्तु लिख न सका। मनुने जाते-जाते ही मुझे बहुत निराश किया। मेरा खयाल था कि वह सब समझ गअी है और वचनके अनुसार काम करेगी। पर मैंने भूल की। अुसने जाते जाते प्यारेलालके भाअीकी लड़कीके लिअे खिलौना और चांदीका प्याला खरीद कर भेजा। मुझे बड़ा दुःख हुआ। मैंने सारा दुःख अुसे लिखे हुअे पत्रमें अुंडेल दिया और चीजें लौटा दीं। यह सब तुमने जान लिया होगा। तुम्हें सावधान रहना चाहिये। अुसके महान गुणोंका अधिक विकास हो और दोष दूर हों, अिस आशासे मनुको अेक वर्ष राजकोट रहनेका मैंने सुझाव दिया था। परन्तु मनु वहां जानेको बहुत अुत्सुक न थी। कराचीके शिक्षकका अुल्लासभरा पत्र मिलने पर वह तो पागल ही हो गअी, अतः अुसे कराची भेज दिया।

मेरे मनमें तुम्हारे बारेमें जो विचार आये सो कह दूं। क्या तुम्हारे पास अितना अधिक रुपया है कि जिससे तुमने मनुको करोड़पतियों जैसी खर्चीली बनना सिखाया? लड़कियोंके प्रति तुम्हारे प्रेमकी मैं बड़ी कद्र करता हूं। परन्तु सवाल यह पैदा हुआ कि तुम्हारे पास अितना रुपया आया कहांसे? खादी-कार्यसे तो बचत होती नहीं। तो क्या वहांकी नौकरीसे सचमुच अितना रुपया बचा सकते हो? तुमने हिसाब रखा

हो तो मैं अवश्य देखना चाहूंगा। मेरे मनमें जो सन्देह पैदा हो गया है, अुसे तुमसे कैसे छुपाअू? जब मैं बिगडा तब शान्तिकुमार मौजूद थे। अुनसे पूछा तो अुन्होंने कहा, सिन्धियासे तो अितनी बचत हो नही सकती और जयसुखलाल पर शकका कोअी कारण ही नही।

अब मुझे जवाब लिखना। युक्ति*के बारेमें सुशीलाने लिखा होगा। अुसकी चिन्ता रखना। मनुकी आखें बहुत खराब है। सावधानी रखनेसे ही बच सकती है, नही तो थोड़े वर्षमें अैसी हो जायगी कि वह लिख-पढ भी न सकेगी।

बापूके आशीर्वाद

मेरे पिताजीने सारा हिसाब भेज ही दिया था। जब बापूजीको खयाल हो गया कि अितनी पूजीमें १०–१२ रुपयेका खर्च आसानीसे किया जा सकता है, तभी अिस काडका अन्त हुआ।

अिस सारे काडसे मेरे मन पर भी अितना जबरदस्त आघात लगा कि मैं कराची जाते ही बीमार हो गअी और बापूजीको अितना सतोष हो गया कि जो कुछ हुआ वह बचपन और नासमझीके कारण हुआ। अिसलिअे मेरे माफीके पत्रके जवाबमें अुन्होंने तुरन्त ही पत्र लिखा.

२३–६–'४४

चि० मनुडी,

तू जाते ही बीमार पड गअी अिसने मुझे हिला दिया। मेरी कही हुअी बातोका अक्षरश. पालन करे तो बीमार पड ही नही सकती। पढनेका निश्चय ठीक है। परन्तु परीक्षा पास करनेके लोभसे हरगिज नही। आखोको बचाकर जितना पढ़ा जा सके पढना। तू अधीर है। सभी बच्चे अैसे होते है। परन्तु तुझसे धीरजकी आशा रखता हू। तुझमें जो गुण मैंने देखे है, वे सब

* मेरी बड़ी बहन।

लड़कियोंमें नहीं देखे। जिन गुणोको ध्यानमें रखकर तुझमें जरासा भी दोष देखता हू, तो वह मुझे पहाड़ जैसा लगता है और सहन नही होता।

बापूके आशीर्वाद

मेरे पिताजीको लिखा:

२३-६-'४४

चि० जयसुखलाल,

तुम्हारे दो पत्र मिले हैं। तुमने सारा ब्यौरा लिख भेजा यह अच्छा किया। परन्तु जिसके बारेमें फिर कभी लिखूगा। मनुको राजकोट भेजनेकी कोजी जरूरत नहीं। वहा भी वह मेरी अनुमतिसे ही आजी है। अच्छी होकर पढना शुरू करे। झट पास होनेकी जल्दी न करे। घरका काम करना तो अुसे आता ही है। जिसलिजे अुसमें थोडा समय दे। नौकरकी तगीके कारण कुछ काम तो करना ही पडेगा। अगर वहा बीमार ही रहा करे तो अुसका स्थान मैं सेवाग्राम समझूगा। परन्तु मेरे कहे अनुसार वह चलेगी तो बीमार हरगिज नही पडेगी। वहाके वैद्यकी दवा युक्तिको अनुकूल आ जाय और मनुको वे कोजी औषधि देना चाहें तो भले ही वह ले। अुसका शरीर अच्छा है। वह बिगडना हरगिज नही चाहिये। आखोको सभालकर ही पढ़ाजी करनी है।

बापूके आशीर्वाद

४१

फिरसे सेवाग्राम

बापूजी अपने स्वास्थ्य-सुधारके लिअे पचगनी गये थे और मैं कराची। मेरे और मेरी माताके समान बापूजीके बीच सैंकडो मीलका फासला था। मा बेटीोसे कितनी ही दूर हो, तो भी पुत्रीकी चिन्ता नजदीककी अपेक्षा कभी कभी दूरसे अधिक महत्त्वकी और गहरी बन जाती है। अत अितनी दूर होने पर भी अुन्होंने वहासे मेरी पढाअीका सूक्ष्म ध्यान अपनी बीमारी और देशके अितने अधिक कामोंमें भी रखा। बापूजीने मेरे नाम लिखे नीचेके पत्रके साथ मेरे शिक्षकको भी अपने हाथसे जो पत्र लिखा, अुसमें अिस प्रकारका आग्रह किया कि अंग्रेजीके अुच्चारण, हिज्जे, सस्कृत व्याकरणके रूप और सधि, गुजराती अक्षरो और भाषा पर अधिकार तथा गणित, बीजगणित, भूमिति, विज्ञान आदि सब विषयोको मैं तोतेकी तरह रटकर नहीं, परन्तु समझपूर्वक सीखू। और मेरा मासिक प्रगति-पत्रक भी मगाया। माताके रूपमें वे मेरा कितना ध्यान रखते थे, अिसके नमूनेके तौर पर मेरे पास बापूजीके कुछ पत्र है। अुनमें से थोडे अक्षरश यहा देती हू

पचगनी,
६-७-'४४

चि० मनुडी,

तेरा पत्र अच्छा है। जो काम शुरू किया है वह अुत्तम है। परन्तु अिससे तेरी पढाअीमें विघ्न पडेगा। भले ही पडे, लेकिन अिससे तेरी आखें बच जायेंगी। आखोको बिगाडे बिना जितना पढा जा सके अुतना पढना। सेवाशक्ति तो तुझे अीश्वरने दी है, अिसलिअे वह काम तुझे मिल जाता है। फिजूलखर्ची छोड देना। हरअेक चीज जैसे गरीब सभालकर रखता है वैसें सभालकर रखना और काममें लाना।

बापूके आशीर्वाद

जो वैद्यराज मेरा और मेरी बड़ी बहनका अिलाज करते थे, अुन्हें भी बापूजीकी सूचना थी कि "वे अिस बातका भी स्वयं अन्दाज लगायें कि हमारी शारीरिक प्रगति हुअी या नहीं, अथवा हम दवा लेनेकी चिंता रखती हैं या नहीं और हम पर आयुर्वेदका प्रयोग किस हद तक सफल हो रहा है।" अिसलिअे बेचारे वैद्यराज हम दोनोंकी बहुत चिन्ता रखते थे। परन्तु मेरी दूधके प्रति अरुचि अुनके लिअे परेशानीका कारण बन गअी और मुझसे पूछे बिना बापूजीको अुन्होंने अिसकी सूचना दे दी। परिणामस्वरूप मेरे नाम नीचे लिखा पत्र आया

पचगनी,
१७–७–'४४

चि० मनुडी,

दूधकी अरुचि मिटा ही देनी चाहिये। वैद्य कहे अुतना स्वादसे पीना चाहिये। मेरे पास रहनेके बाद रुचि-अरुचि कैसी? जो खाना ही चाहिये अुसकी रुचि और जो नहीं खाने लायक हो अुसकी अरुचि होनी चाहिये। युक्ति बिलकुल अच्छी हो जाय तो मेरा विश्वास वैद्यों पर जम जायगा। तेरी आंखें ठीक हो जाय और मलेरिया मिट जाय, तो फिर मेरे लिअे तू दवा भेज देना।

तेरे अक्षर ठीक माने जायगे। परन्तु अभी बहुत सुधारकी गुंजाअिश है। सुशीलाबहन दिल्लीके लिअे रवाना हो गअी है। अिसलिअे अुनका पत्र मिलनेमें देर लगेगी।

देवदास वहां आ गया, यह अच्छा हुआ।

बापूके आशीर्वाद

साथ-साथ पूर्ण आराम लेना था, जो मेरे लिअे बिलकुल असंभव था। क्योंकि मुझे पढ़ना था। मेरे साथ पढ़नेवाली लड़की मैट्रिकके कक्षामें थी और मुझे अुससे पीछे नहीं रहना था। अिसलिअे स्वास्थ्यमें प्रगति होनेके बजाय जब शरीर काफी कमजोर हो गया, तो बेचारे

वैद्यराज घबराये और मेरी सारी लापरवाही बापूजीको लिख दी। अिसलिअे दूसरा सख्त डाटका कार्ड मेरे नाम आया

पचगनी,
२७-७-'४४

चि० मनुडी,

तेरा वजन ८७ पौंड तक घट जाय यह तो शर्मकी बात है। (आगाखा महलमें १०६ पौंड था।) रातके दो बजे तक पढना पाप है। पास होनेकी यह शर्त हो, तो मुझे अैसी पढाअी नही चाहिये। यदि तू नियमका पालन कर ही न सके तो तुझे मेरे पास आना पडेगा। अैसी पढाअीके बजाय तू अपढ रह जाय तो मुझे बरदाश्त हो जायगा। दवा लेनेमें भी तू अनियमित रहती है, यह क्या बताता है?

बापूके आशीर्वाद

अन्तमें अगस्तके दूसरे सप्ताहमें मेरी बडी बहनकी तबीयत अत्यत गिर जानेसे मुझे अेकाअेक बम्बअी जाना पडा। बापूजी भी अुस समय बम्बअी आनेवाले थे। मै अेक दिन ठहरी। मुझे देखते ही अुन्होने कहा . "अब कराची नही जाना है, मेरे साथ सेवाग्राम चलना है।" अिस प्रकार मैं बापूजीके साथ सेवाग्राम गअी।

सेवाग्राम जानेके बाद पूज्य बापूजी और सुशीलाबहनकी देख-रेखसे मेरा स्वास्थ्य फिर अच्छा हो गया। परन्तु अब कराची जानेसे मैंने अिनकार ही कर दिया और सेवाग्राममें सुशीलाबहनकी देखरेखमें अेक नर्सिंग क्लास खुलने पर अुसमें भरती हो गअी।

सेवाग्राममें अेक दवाखाना चलता है, जिससे आसपासके गावोंके लोग खूब लाभ अुठाते है। ६ सप्ताहका प्रथम कार्यक्रम बापूजीने स्वय अपने हस्ताक्षरसे बना दिया और कुल तीन वर्षकी तालीमकी मियाद निश्चित की।

जो प्रथम कार्यक्रम बापूजीने हमारे लिअे बनाया, वह अक्षरश: अिस प्रकार है:

यह चि० मनुडी या नुशीलाबहनके लिअे है।

छह सप्ताहका प्रथम सेवा-शुश्रूषाका कार्यक्रम

१. शरीरके भागोंका साधारण वर्णन। अिसमें पेटके भीतरी भाग, मुख्य मुख्य हड्डियां और रगें (व्हेन्स) आ जाती हैं।

२ साधारण घाव, जो रणक्षेत्रमें होते हैं अुनका वर्णन, अुनके संबंधकी अनेक प्रकारकी पट्टियां — खोपड़ी पर, पेट पर, अुंगलियों पर, पैरों पर अित्यादि।

३. बहता खून बन्द करनेके लिअे टॉर्निक्वेट शिराक्रमका और शिरासे बाहरका कामचलाअू ज्ञान, जैसे रेत द्वारा।

४ अस्पतालका सामान न मिले तो काम चलानेका ढंग, जैसे कि अुबले हुअे पानीके बजाय गरम राख, जलाया हुआ कागज, जलाअी हुअी रुअी, सूखे कपड़े या फलालैनके बजाय पहनेको मिला हुआ अखबार वगैरा।

५. डूबे हुअे मनुष्यके लिअे, साप बिच्छूके लिअे, 'जंगली' अुपचार — जहां डॉक्टर न मिले।

६ घायलों और बीमारोंको ले जानेके लिअे स्ट्रेचर-ड्रिल, अस्पतालका स्ट्रेचर न मिले वहां बन्दूक या लकड़ी तथा जाकेटका तात्कालिक स्ट्रेचर।

७ मामूली ढंगकी हजारोंकी बाकायदा कूचके नियमोंके अनुसार कूच करना।

८ रणक्षेत्रमें कुछ मिनिटोंमें तंबू तानने और पानी छाननेके नियम, पाखाने और रसोअीघर वगैरा कैसे और कब बनाये जाय?

सम्भव है अिसमें कोअी चीज रह जाती हो। केंटलीकी लिखी हुअी पुस्तकमें अिनमें से बहुतसी बातें आ जाती हैं। सेन्ट जॉन्स अेम्बुलेंसमें भी बहुत कुछ है। हमारे यहां ये सब पुस्तकें थीं तो सही। यहां यदि मैं बोलना होता तो लेता

लगता है कि अिससे अधिक नहीं बता सकता था। अिसलिअे तुमने बहुत खोया नहीं।

९–१०–'४४ बापू

अिस प्रकार पहले डेढ़ महीनेमें क्या सिखाया जाय, अिसका क्रम बताया गया। और अुसकी परीक्षा भी बाकायदा ली जानेवाली थी।

अुसके बादका क्रम तो सुशीलाबहनने ही तैयार किया था। यह प्रारम्भिक मूल कार्यक्रम बापूजीका मौनवार होनेके कारण लिखित रूपमें मेरे पास रह गया।

जैसे स्कूलोंमें पाठ्यक्रम तैयार किया जाता है, अुसी प्रकार व्यवस्थापूर्वक अिस नअी पढ़ाअीका पाठ्यक्रम तैयार करनेकी बापूजीको कितनी चिन्ता है, अिसका अुपरोक्त कार्यक्रम प्रत्यक्ष प्रमाण है।

४२

बापूकी अहिंसा

मैं रोज सुबह नौसे ग्यारह बजे तक दवाखानेमें काम करती हूं। साथ ही बीमारोंकी देखभालके लिअे भी वहां रहना पड़ता है। दोपहरको साढ़े तीन बजे बापूजीको पंखा करने जाती हूं, अुस समय मुलाकाती मिलने आते हैं। अिसलिअे मुझे काफी जाननेको मिलता है।

आज डॉ॰ सैयद महमूद साहब (बिहारके वर्तमान विधान और सहकार मंत्री) आये। वे बीमार हैं अिसलिअे बापूजीने अुन्हें आश्रममें ठहरा [illegible]। अुनके खानेके लिअे डॉक्टरने 'चिकन-सूप' जैसी चीजें लेना निर्धारित की थी। परन्तु आश्रममें यह कैसे लिया जाय? अिसलिअे डॉ॰ महमूद साहबने [illegible] सोचा [illegible] अिनकार कर दिया। परन्तु बापूजीने अुनकी यह बात न मानी।

अुन्होंने डॉक्टर साहबसे कहा – 'आश्रमवासियोंको समझाना [illegible] आपको [illegible] तैयार किया हुआ [illegible]

जाये, जिसका मैं प्रबन्ध करा दूंगा। जिसके सिवा किसी लड़कीसे कह दूंगा। वह आपको अच्छी तरह तैयार करके दे देगी। (मेरी तरफ देखकर) जिस लड़कीको शोरबा बनाना नहीं आता, परन्तु अेक बंगाली लड़की है अुससे कहूंगा। मैं आपकी अेक भी बात नहीं सुनूंगा। (विनोदमें) मैं हुक्म जो दे रहा हूं। मैं भी कुशल डॉक्टर हूं और आपको मेरी देखभालमें रहना है। देखिये तो सही, आपकी तबीयतमें कितना फर्क पड़ जाता है!"

जिस तरह डॉ० महमूदके यहीं रहनेका और जरूरी खुराक देनेका अिन्तजाम बापूजीने कर दिया।

मुझे यह बात सुनकर अत्यन्त आश्चर्य हुआ और मैंने अेक नया ही पाठ सीखा। कहां अुबाला हुआ सात्त्विक भोजन और कहां आश्रममें 'चिकन-सूप'! बापूजीसे पूछा तो हसने हंसते कहने लगे: "आश्रममें यही तो सीखना है।"

[बिहारके दंगोंके सिलसिलेमें बापूजी पटनामें डॉ० महमूदके मेहमान बने थे। वे बार बार मुझे अपनी पुत्रीके समान मानकर मेरी खबर लेते रहते हैं। अुन्होंने मुझे अपने पत्रमें अुपरोक्त घटनाकी याद दिलाअी थी। वह पत्र अिस प्रसंगके सिलसिलेमें होनेके कारण अुन्हींके शब्दोंमें यहां अुद्धृत करती हूं:

I need hardly tell you how much I love everything connected with Bapu, much more his flesh and blood You also know well how much he loved me He was not only a friend but a father to me I feel I am left alone in this world after he has gone.

I wonder if you will remember that while I was in the Ashram and was ill, doctors prescribed to give me chicken soup and Bapu ordered that I may be supplied chicken soup. It was perhaps entirely a new thing for Sevagram Ashram and naturally there was a flutter in the Ashram I protested strongly

with Bapu that I should not have it, but he refused to listen to me and said that when doctor prescribes you must have it and the Ashram people may not themselves have meat but they must learn how to feed others if and when it was absolutely essential I considered it as a great privilege He simply captivated my heart . *]

लगभग ४ बजे काठियावाडके कार्यकर्ता आये। भावनगरकी हालत बयान कर रहे थे। घीकी मोनोपलीकी बात हो रही थी। अेक भाअीने कहा "महाराजा साहब तो बहुत भले है। सुनते सब कुछ है, परन्तु कुछ हो नही सकता। तब हम क्या करे ?"

बापू — आप जो कहते है वह सब सच ही हो तो सत्याग्रही पद्धतिसे विद्रोह कीजिये।

---

* मेरे लिअे तुमसे यह कहना शायद ही जरूरी हो कि बापूसे सबध रखनेवाली हर चीजसे मैं कितना प्यार करता हू, तब अुनके बच्चोसे तो कितना अधिक नही करूगा ? तुम यह भी जानती हो कि बापू मुझे कितना ज्यादा प्यार करते थे। वे मेरे दोस्त ही नही थे, बल्कि पिता भी थे। मुझे लगता है कि अुनके चले जानेके बाद मैं अिस दुनियामें अकेला पड गया हू।

शायद तुम्हे याद होगा कि जब मैं आश्रममें बीमार था, तब डॉक्टरोने मुझे चिकन-सूप खानेकी सलाह दी थी। और बापूने मुझे चिकन-सूप खिलानेका हुक्म दे दिया था। यह सेवाग्राम आश्रमके लिअे शायद बिलकुल नअी बात थी। अिससे स्वभावत. आश्रममें थोडी खलबली मची थी। मैंने अिसका जोरदार विरोध करते हुअे बापूसे कहा था कि मैं चिकन-सूप नही लूगा। लेकिन अुन्होने मेरी बात सुननेसे अिनकार कर दिया और कहा कि जब डॉक्टर कहते है तो तुम्हे लेना ही चाहिये, आश्रमके लोग खुद भले मास न खाय, लेकिन अुन्हे यह सीखना चाहिये कि निहायत जरूरी होने पर दूसरोको कैसे खिलाया जाय। अिसे मैं अपना बडा सौभाग्य मानता हू। अपने अिस व्यवहारसे अुन्होने मेरे दिलको बिलकुल मोह लिया था। . .

वह भाओी — क्या मैं अकेला विद्रोह करूं?

बापू — अेक मनुष्यको भी लगता हो कि राज्यका तरीका लोगोंको बिलकुल चूस लेनेका है और अेक ही मनुष्यको जोश आ जाये, तो मैं खुद तो अिस मामलेमें बहुत कड़ा हूं। यदि आपकी बातमें कहीं भी निजी स्वार्थको स्थान न हो और वह लोकोपयोगी ही हो, तो भावनगरकी तमाम प्रजा अवश्य आपके साथ होगी। भावनगरकी प्रजा शिक्षित है। यद्यपि मैं मानता हूं कि पट्टणीजी जरूर समझ जायंगे, क्योंकि अुन्होंने मुझसे अिस बारेमें बहुत बातें की हैं। और मैं मानता हूं कि वे मेरा कहा कुछ मानते भी हैं। आप मुझे ब्यौरेवार सब बातें लिख देना। मैं अुन्हें लिखूंगा।

मणसाली काका चिमूरसे कुछ लड़कियोंको आश्रममें लाये थे। वे लड़कियां कुछ दिनोंसे आओी हुओी थीं और अुनकी देखरेखका काम आश्रममें रहनेवाली कुछ बड़ी महिलाओंको सौंपा गया था। परन्तु वे लगभग हमारे दवाखानेमें ही रहती थीं और मणसाली काका व प्रभाकरजी अुनका ध्यान रखते थे।

बापूजीने मुझसे पूछा, चिमूरकी लड़कियां कहां रहती हैं? कौन अुनकी संभाल रखता है? वगैरा। मुझे और कोओी जानकारी नहीं थी। परन्तु स्वाभाविक रूपमें जैसा था वैसा मैंने बता दिया।

बापूजीने तुरन्त ही भाओी और दो चार बड़ी बहनोंसे कहा "यदि अिस समय रामदास या देवदासकी लड़कियां आओी होतीं, तो क्या वे अिस प्रकार अकेली रहतीं? ये लड़कियां दो दिनसे आओी हुओी हैं। जब नओी लड़कियां आओी हों तब किसी न किसीको तुरन्त ही देखना चाहिये कि अुन्हें नया-नया न लगे। पर अैसा नहीं लगता कि तुममें से किसीको अुनकी खास खबर हो। अिससे मुझे आश्चर्य होता है। आज वे अचानक मेरे पास आओीं, अिसलिअे मैंने प्रेमसे सब हाल पूछा। क्या तुम मनुको अिस प्रकार अकेली रहने दोगे? यह बात आश्रमकी सब बहनोंके सामने रखना।"

ये लड़कियां दस बारह वर्षकी थीं।

सेवाग्राम आश्रम, वर्धा,
२५-१२-'४४

आज ओीसाअियोका त्योहार होनेके कारण बापूजीने अेक सुन्दर सन्देश हिन्दीमें लिखा। बापूजीको खासी होनेके कारण वह सन्देश पढ़कर सुनाया गया

"मेरी अुम्मीद थी कि मैं आज दो शब्द बोल सकूंगा, लेकिन ओीश्वरेच्छा कुछ और ही थी। आजका दिन क्रिस्टमसका है। हम जो सब धर्मोंको समान मानते हैं अुनके लिअे अैसे अुत्सव मनन करने लायक हैं, आत्म-निरीक्षणके लिअे हैं। अैसे मौके पर हम अपने दिलके भीतरसे और सब मैल निकाल दें। हम जानें कि ओीश्वर या खुदा अेक ही है। अुनके असली हुक्म भी अेक हैं। जिसको हम सत्य या हक माने, अुसके लिअे दूसरोंको मारे नहीं। हम अुस सत्यके लिअे मरनेकी तैयारी रखें, और मौका आने पर मरे और अपने खूनकी मुहर अपने सत्य पर लगावे। यही मेरी दृष्टिमें, निगाहमें सब मजहबोंका निचोड़ है। हम अिस अवसर पर विचार करे, याद रखें कि ओीसा मसीह जिसे वह सत्य मानते थे अुसके लिअे सूली पर चढ़े।"

पूज्य बापूजी रोज अपने दैनिक विचार लिखते थे। जैसे कृष्ण भगवानने गीताके श्लोक हमें मनन करनेके लिअे दिये, वैसे ही ये सुवाक्य मनन करने योग्य हैं।*

---

* ये सुवाक्य अलग पुस्तकके रूपमें 'नित्य मनन' के नामसे नवजीवन प्रकाशन मंदिरकी तरफसे गुजरातीमें प्रकाशित हुअे हैं।

४३

बापूजीके कुछ पत्र

सेवाग्राम,
२९-१-'४५

अेक नौजवान मोतीझिरेसे पीडित थे। अिसलिअे अुनकी माताको बापूजीने पत्र लिखा:

चि० . . .

वसतके चले जानेका कोअी भी कारण नही है। मोतीझिरा भयकर रोग नही है। सेवा-शुश्रूषासे बीमार जरूर अच्छा हो जाता है। तुम हिम्मत रखना और वसतको भी दिलाना।

बापूके आशीर्वाद

यह पत्र बीमारके हाथमें पहुचनेसे पहले ही अुसकी मृत्यु हो गअी। अिसलिअे बापूजीने अुसकी माताको दूसरा पत्र लिखा। मृत्यु या जन्मके बारेमें बापूजी कैसे विचार रखते थे, यह निम्न-लिखित पत्र बतायेगा।

१-२-'४५

चि० .

तुम्हारा तार मिला। वसत चला गया यह तो सपना ही है न? फिर भी मुझ पर अिसका कुछ असर नही होना। मैंने बहुत मौतें देखी हैं, अनेक जन्म देखे है। ये अेक सिक्केके दो पहलू हैं। अेक तरफ मौत है तो दूसरी तरफ जन्म। दोनों पहलू अेकसे मूल्यके है। अिस प्रकार जन्मका दूसरा पहलू मृत्यु और मृत्युका दूसरा पहलू जन्म है। अिसमें हर्ष-शोक क्या? और फिर ये सभीके लिअे है। बीचमें हम विवाह करते है, नाचते

है, कूदते है। ये सब खेल है। तुम फिरसे ये खेल खेलती रहो। क्या विवाह रुक जायगा? मेरा बस चले तो मैं विवाह न रोकू, धर्मविधि होने दू। शृगार मात्र छोड़ दू। परतु व्यवहारकी जानकारी तुम्हे ज्यादा होगी। हिम्मत रखना।

बापूके आशीर्वाद

सेवाग्राम, १५-२-'४५

चि०   .

तुम्हारा पत्र मिला। हम यदि अीश्वरको याद करे तो अच्छा-बुरा, दु ख-सुख, सब भूलना ही पडेगा। और अिस आम रास्ते पर देर-अबेर हम सभीको जाना है। अंग्रेजी कहावतके अनुसार बहुमत तो वही है। यहा तो चार दिनकी चांदनी है। अन्तमें तो सबको मिट्टीमें ही मिल जाना है।

बापूके आशीर्वाद

अेक बहनने दूसरी जातिमें विवाह कर लिया, अिसलिअे अुसने पत्र द्वारा बापूजीका आशीर्वाद मागा। बापूजीने भेज दिया। बादमें पता चला कि जिस बहनने दूसरी जातिमें शादी की, अुसके पतिकी अेक पत्नी मौजूद है। परतु बाल-विवाह होनेके कारण और पत्नी बहुत आधुनिक युवती न होनेके कारण अथवा किसी और कारणसे पतिने अुसे छोड दिया और यह नया विवाह कर लिया। यह बात आशीर्वाद मागनेवाली बहनने किसी कारणसे लिखी नही थी। स्त्री-जगतमें यह अेक पहेली है। अैसे सासारिक अनर्थोंके समय बापूजीका मानस किस तरह काम करता था, यह नीचेके पत्रोसे मालूम हो जायेगा

चि० . . .

तुम्हारा पत्र मिला। . का भी मिला। अुन्हे अलग नही लिख रहा हूं। अुन्हे बीमार नहीं पड़ना चाहिये। तुम्हारी बात समझ गया। तुम दोनो विवाह कर लो। मेरे आशीर्वाद है ही।

शर्त यही है कि विवाह करके अेक वर्ष तक बिलकुल अलग रहना। तुम अपनी पढाओी पूरी कर लो और वे (बहनके पति) अपनी। भगवान करे तुम दोनो खूब सेवाभावी सिद्ध हो।

बापूके आशीर्वाद

महाबलेश्वर, २६–४–'४५

चि० .

तुम्हारा पत्र मिला। चि० . . को तुम्हारा काम पसन्द आ गया, अिसलिअे तुम्हे विचार करनेकी जरूरत ही नही है। तुम निकटकी रिश्तेदार हो, अिस नाते मैंने तुम्हारे कामकी जाच नही की है। तुम पढ़ी-लिखी स्त्री हो, अिसी दृष्टिसे मैंने तुम्हारा काम देखा। तुम्हारे मनमें कोओी पाप नही था, तो भी तुमने बाल-विवाहकी बात छिपाओी अिसे मैं महादोष मानता हू। दूसरी जातिमें शादी की यह तो मुझे अच्छा लगा। लेकिन बाल-विवाहको तुमने या . . ने (बहनके पतिने) विवाह ही नही माना, अिस वार्तका तुम्हारे अिस विवाहके साथ जरा भी मेल नही बैठता। . . (पति) बहुत भले लगते हैं। परतु मेरी नजरमें अुन्होने अपनी स्त्रीकी सेवा नही की। तुमने तो बिलकुल नही की। तुम अुस स्त्रीकी जगह होती, तो तुम्हे कैसा लगता? (बहनके पति) जैसे तो हिन्दू समाजमें अनेक किस्से होते है। सब अुन्हींकी तरह करने लगें तो विवाहिता लडकियोका क्या होगा? . . . (बहनके पति) का धर्म अुस लडकीके साथ रहकर अुसका शिक्षक बननेका था। तुमने परोपकारके नाम पर यह काम करके अपने मोहको ही पोषित किया है। यह निदान स्वीकार करना तुम्हारा धर्म नही है। तुम दोनो यह मानते हो कि तुम दोनोने अपने धर्मका पालन किया है। यह तुम्हारे लिअे बस है। आदमी खुद जिसे मान ले वही अुसका धर्म।

चि० . . (बहनके पति) को अलग पत्र नही लिख रहा हू। अिसीको दोनोके लिअे समझ लेना।

बापूके आशीर्वाद

अूपरके पत्रके साथ जिस लडकीका आन्तर-जातीय विवाह हुआ था, अुसकी माताजीको लिखा

चि० .

साथका पत्र . को भेज देना। दूसरी जातिमें विवाह करनेके बारेमें तुम्हे दु खी न होना चाहिये। साथ ही मेरे विरोधसे भी तुम्हे दु खी नही होना चाहिये। मेरे विरोधको बेकार समझना। अितने पर भी मुझे अिस बारेमें कुछ कहना होता तो भी मैं यह विवाह न रोकता। दोनो बडी अुमरके है, अिसलिअे अुन्हे अपनी अिच्छानुसार चलनेका अधिकार था। मेरा विरोध सैद्धान्तिक कहा जायेगा। और वह कायम है। परतु वे सुखी हो। अिस प्रकार भावनाकी लहरमें बहनेवाले अनेक जोड़े है। तुम चिन्ता न करना।

बापूके आशीर्वाद

सेवाग्राममें मैं नर्सिगकी पढाअी कर रही थी। परतु सेवाग्रामकी असह्य गर्मीसे मेरी तबीयत बहुत बिगड गअी। नकसीर छूटना शुरू हो गया। नाकमें से रक्तकी धारा कभी-कभी तो अैसी चलती थी कि देखनेवालेको भी कष्ट होता था। दिनमें आधे आधे घटेसे अैसा होता था। अिससे मुझे कमजोरी बहुत आ गअी। मेरी पढाअी अेक दिन ी रुक जाती तो मुझे अपार दु ख होता था। मनमें यही खयाल बना हता कि कही मेरे साथ पढनेवाली बहनें आगे न निकल जायं।

मैं बहुत ही जल्दी खा लेती थी और मुझे छोटे बच्चोकी तरह ाथ-पाव समेटकर सोनेकी आदत पड गअी थी। अिससे मैं सास अच्छी रह नही ले सकती थी। मैं सुशीलाबहनकी माताजीकी सेवामें थी। अिसलिअे बा वाले कमरेमें अुनके पास ही सोती थी। परतु

तबीयत बिगड़ जानेके कारण बापूजीने हुक्म दिया कि मुझे अपना रहना, सोना, खाना, पीना सब कुछ अुन्हींके पास करना है।

बापूजीने डॉक्टरोंके अति आग्रह पर अपने स्वास्थ्यके लिअे महाबलेश्वर जानेका निश्चय किया। अुस समय मेरा स्वास्थ्य और भी बिगड़ गया था, अिस कारण मुझे भी साथ ले गये। बहुत काम होनेके कारण पिछले कुछ समयसे अुन्होंने मेरे पिताजीको पत्र नहीं लिखा था, परन्तु महाबलेश्वर पहुंचते ही मेरे विषयमें पत्र लिखा

महाबलेश्वर,
२१–४–'४५

चि० जयसुखलाल,

तुम्हें यहां आकर ही लिख सका हूं। चि० मनुको दुःख तो काफी भुगतना पड़ा। दिनमें नकसीर छूटती ही रहती थी। बुखार भी आता रहा। अब जान पड़ता है कि नकसीर नहीं छूटेगी और ज्वर भी नहीं आयेगा। मनुको यहां ले आया हूं। दवा और परिश्रम सुशीलाबहनके थे। मैं कभी कभी बीचमें पड़कर नैसर्गिक अुपचार करवाता था। और दो दिन तक अेक होमियोपैथ आया था, अुसका भी अिलाज किया। चिन्ताकी कोअी बात नहीं। देखता हूं, अब अिस ढंगसे अुनकी तबीयतमें क्या फर्क पड़ता है।

यहां दो मास रहनेकी आशा है।

बापूके आशीर्वाद

महाबलेश्वर,
२१–४–'४५

महाबलेश्वर आनेके बाद थोड़े दिन तो मेरी तबीयत ठीक रही, परंतु फिर बिगड़ने लगी। मेरी बहनका पत्र आया, जिसमें अुसने बापूजीको लिखा था कि शायद अुसके पास रहनेसे मेरा स्वास्थ्य सुधर जाय। मैं अिसलिअे जाना चाहती थी कि बापूजीने दूर रखी,

तो अुन्हें मेरे लिअे जो अितनी तकलीफ अुठानी पड़ती है, अुससे शायद अुन्हे कुछ राहत मिल जायगी। अिसलिअे अन्तमें यह तय किया कि मैं बम्बअी जाअू। वहासे सबकी राय होनेसे मैं कराची चली गयी। मैं पहुची अुसी दिन मुझे तथा मेरे पिताजीको बापूजीके पत्र मिले '

महाबलेश्वर,
२२–५–'४५

चि० जयसुखलाल,

अन्तमें मनुडी अच्छी होकर वहा नही आअी, परतु हार कर — मनसे और शरीरसे। अिसका असर परस्पर है। दोनोके लिअे वही जिम्मेदार है। वातावरण भी हो सकता है। परतु वातावरण पर काबू पानेमें ही मनुष्यकी मनुष्यता है। मनुको यह बात मैं पूरी तरह नही सिखा सका। अुसका भय अुसे खा जाता है। भयका कारण वह स्वय ही है। दूसरोकी बातें सुनकर अुनसे चिढ़ना, घबराना और रोना। यही आजकल अुसका काम है। अिससे अवकाश मिले तब पढती है। सेवाभाव अुसमें अुत्तम है। सीखनेका अुसे बहुत ही शौक है। बडी प्रेमल है। अुसे अेमीबा और हूकवर्मकी शिकायत है, जो मुझे भी है। मैं अिन्हे काबूमें रखता हू। मनु नही रखती। अब कुछ सूझे तो अुसके लिअे करना। मेरे पास तो वह है ही। मैं अुसे नही छोडूगा, वह खुद छूट गअी है। तुम अच्छे होगे। चि० मनुडीका पत्र साथमें है।

बापूके आशीर्वाद

महाबलेश्वर,
२२–५–'४५

चि० मनुडी,

तू कराची गअी अच्छा किया। अेमीबा और हूकवर्म निकाल ही देने चाहिये। यदि तू ४ तारीखको लौट आयेगी, तो वहा कैसे

निकाले जा सकेंगे? अुस वैद्यकी दवा हरगिज न करना। वहा रहनेकी अिच्छा करे तो रोग मिटानेके दृढ निश्चयसे ही करना। परीक्षा देनेका लोभ न करना। सहज ही पढना हो जाय तो भले हो जाय। तेरे पत्र परसे देखता हू कि आसपासका डर तुझे खा जाता है। जो डरता है अुसे ससार अधिक डराता है। भयमात्रको तू समुद्रमें फेंक दे तो अच्छा। अिसकी रामबाण औषधि तो रामनाम ही है। जो रामसे डरे वह और किसीसे क्यो डरे? जब आना चाहे आ सकती है। यह तुझे अभयदान है।

बापूके आशीर्वाद

जूनके अन्तमें नर्सिंगकी आगेकी पढाअीके लिअे नागपुर जानेकी मेरी तीव्र अिच्छा थी, अिसलिअे कमजोर तबीयत होने पर भी मैं हठ करके बम्बअी तो पहुच गअी। तबीयतके लिअे पूरा साल खराब हो, यह मुझे सहन नही हो रहा था। परतु मनमें यह विचार भी आता था कि पढने लगू तो शायद तबीयत सुधर भी जाय। नागपुरका प्रवेश-पत्र भर दिया था। मजूर भी हो गया था। परतु सुशीलाबहन और बापूजीकी अिजाजतके बिना जाना नही हो सकता था। मैंने बापूजीसे पुछवाया, परतु मेरे पत्रसे मजूरी नही मिली। और सुशीलाबहन तथा बापूजीका पत्र मिला कि:

निडर होकर अितनी हिम्मत करना। डॉ० गिल्डरको तो तू अच्छी तरह जानती है। वहा जा और वे स्वीकृति दें तो ही नागपुर जाना। यहा जब चाहे आ सकती है। वर्धाकी सलाह मैं नही दूगा।

बापूके आशीर्वाद

मुझे तो विश्वास ही था कि डॉ० गिल्डर हरगिज अिजाजत नहीं देंगे। अुनको भी बापूजीने मेरे स्वास्थ्यके विषयमें पत्र लिखा था, अिसलिअे

मैं अुन्हें तबीयत बताने गअी। अुनकी मुझ पर पिताकी-सी ममता थी। खूब प्रेमसे अुन्होंने मेरी तबीयतकी जाच की और वचन भी दिया कि "मैं कहूं वैसा करे तो तेरा साल खराब होने पर भी मैं तुझे दूसरी लडकियोंके साथ कर दूगा।" सुशीलाबहनने भी वचन दिया — लेकिन शर्त यह थी कि नागपुर जानेका विचार मैं समझपूर्वक छोड दू। वे जानती थी कि मेरी पसन्दकी बात नही होगी तो मैं मनमें कुढूंगी। किसीसे कहूगी तो नही, परतु स्वास्थ्य पर अुसका प्रभाव पड़ेगा। अुसी दिन बुखार चढा। अिसलिये अुन्होंने तो मेरे लिअे अपना निश्चित मत दे दिया कि मुझे पहाड़की हवामें ही रहना चाहिये। बापूजीको यह मालूम होने पर अुन्होंने मुझे पत्र लिखा.

महाबलेश्वर,
३–६–'४५

चि० मनुडी,

तू फिर बीमार हो गअी? अब तो चेत! तू धीरज रखेगी तो बढिया नर्स हो जायगी। बुखार अुतरते ही चली न जाना। सुशीलाबहन कहती है कि तुझे दिनशाजीके आरोग्य-मदिरमें रहना चाहिये। तुझे बार-बार बुखार आये, यह मुझे बिलकुल अच्छा नही लगता। तू अपने स्वास्थ्यकी रक्षा करना सीख लेगी और लोहे जैसी मजबूत बन जायगी तो सब ठीक हो जायगा। जल्दी करनेसे कुछ नही होगा। यहा आना हो तो आ जा। नागपुर जानेका मोह छोड दे।

बापूके आशीर्वाद

दिनोदिन मेरा स्वास्थ्य अुलटा ज्यादा बिगडने लगा। बापूजीको मालूम हुआ तो अुनका हुक्म देनेवाला पत्र मुझे तारकी तरह पहुंचाया गया :

महाबलेश्वर,
४–६–'४५

चि० मनुडी,

तेरे जैसी मूर्ख लड़की मैंने दूसरी नहीं देखी। अिसके अुत्तरमें तुझे यहां आ ही जाना है। बावला (महादेवभाअीका पुत्र) तेरे साथ जरूर आवे। अिससे रास्तेमें कोअी कठिनाअी नहीं होगी।

बापूके आशीर्वाद

मेरे वहां पहुंचनेसे पहले ही रेडियो द्वारा खबर मिली कि कांग्रेस कार्यसमितिके सदस्योंकी जेलसे मुक्ति होनेके कारण बापूजी और तमाम सदस्य बम्बअी आये हैं। बापूजीके बिड़ला-भवन पहुंचनेके बाद मोटर मुझे लेने आअी। हम दोनों बहनें बापूजीके पास गअीं। वहां पहुंचने पर मुझे खूब थकी हुअी देखकर मुझसे कुछ भी बातें किये बिना बिस्तर लगाकर मुझे सुला दिया गया।

दूसरे दिन मैं घर गअी और १२–६–'४५ को बापूजीका शिमला जाना हुआ। मुझे पूनाके आरोग्य-भवनमें ही रहनेके लिअे डॉ० दिनशाजीको सौंप दिया गया। मैं भी बहुत अकुता गअी थी, अिसलिअे अिस नये प्रयत्नको मैंने स्वीकार कर लिया।

मैं पूना तो गअी। परंतु वहां पहुंचूं अिस बीच अेक नअी बात हो गअी। मेरे पिताजीने मेरे नाम पर अेक खास रकम रखकर अुसका ट्रस्ट बनानेका निश्चय किया। अिस बातका पता मुझे बड़ी देरसे लगा, परंतु बापूजी और अुनके बीच अिस संबंधमें पत्रव्यवहार हो रहा था। मुझे तो कल्पना भी कहांसे होती कि बापूजी मेरे ट्रस्टी बनेंगे! माता, पिता और दादाके हकोंके अलावा जो लाखों-करोड़ों रुपयोंके ट्रस्टी हों, वे मेरे जैसी लड़कीकी छोटीसी रकमके ट्रस्टी बन

सकते हैं, यह मेरे लिअे आश्चर्यकी बात थी। परंतु अपार प्रेमके सामने या पूर्वजन्मके ऋणानुबंधके कारण सब कुछ संभव हो जाता है यह जिन पत्रों परसे समझमें आया।

मनोर विला,
शिमला,
२५–६–'४५

चि० जयसुखलाल,

ट्रस्टका जो दस्तावेज मैंने बनाया है सो भेजता हूं। वहां गुजराती चलती है, जिसलिअे गुजराती बनाया है। गुजराती दस्तावेजकी रजिस्ट्री न होती हो तो जिसका सिंधी या हिन्दुस्तानी बनवा लेना। अंग्रेजीकी कोअी जरूरत नहीं। शर्तोंमें फेरबदल कर सकते हो। मैंने तो तुम्हारे विचारोंको जिस प्रकार समझा है अुस प्रकार रख दिया है।

जब तक मनुका रोग मिट न जाय तब तक मुझे चिन्ता रहेगी। अब तो वह दिनशाजीके आरोग्य-भवनमें चली गअी होगी। यह आशा रखें कि वहां अच्छी हो जायगी।

बापूके आशीर्वाद

यहां मैं लम्बे समय तक रहना नहीं चाहता। कितना रहना पड़ेगा, यह शायद आज तय हो जायगा।

मूल दस्तावेजकी नकल, जो पू० बापूजीने अपने हाथसे लिखा है, नीचे दी जाती है :

१. मैं जयसुखलाल अमृतलाल गांधी, मूल निवासी पोरबन्दरका, हाल निवासी कराची बन्दरका, यह दस्तावेज नीचेकी शर्तोंके अनुसार लिखता हूं.

२. जिस दस्तावेजकी तारीखको मुझ पर किसीका कर्ज नहीं है।

३ मेरी चौथी लडकी कुमारी मनु (जो आगे मनुवहनके नामसे जानी जायगी) कुछ वर्षोसे मेरे बुजुर्ग श्री मोहनदास करमचद गाधी (जो आगे महात्मा गाधीके नामसे जाने जायगे) के सरक्षणमें सेवाग्राम आश्रममें अपनी शक्तिके अनुसार सेवाधर्मका पालन कर रही है और अुसके लिअे आवश्यक ज्ञान प्राप्त कर रही है। अुसकी सेवावृत्ति पर मैंने वडी वडी आशाअें लगा रखी है। मनुवहनका किसी भी कारणसे किसी पर कोअी बोझ न पडे, अिसके लिअे मैंने दस हजार रुपये अुसके नाम पर अमानत रख दिये हैं। अिस दस्तावेज द्वारा वह रकम मैं स्थान पर वार्षिक के हिसावसे व्याज पर रख देता हू। अुस रकमकी रसीद अिसके साथमें है। अुस रकमका अधिकार गाधीजीके हाथमें मनुवहनके सरक्षकके रूपमें रहेगा और वे अपनी अिच्छानुसार मनुवहनके लिअे अुसका अुपयोग करेंगे। यदि किसी समय व्याजकी रकम काफी न हो तो अमानतकी रकमको काममें न लेते हुअे वे मुझसे अतिरिक्त रकम वसूल कर लेंगे। मैं वह रकम न जुटा सकू तो मूल रकमका अुपयोग करनेका गाधीजीको या जिसे वे नियुक्त कर दें अुसे अधिकार होगा।

यदि मेरे जीते-जी गाधीजीकी मृत्यु हो जाय अथवा किसी कारणसे वे सरक्षक न रहे या न रह सके, तो अुनके वजाय मैं सरक्षक हो जाअूगा और जो अधिकार अिस दस्तावेजके अनुसार गाधीजीको दिये गये है वे मुझे मिल जायगे।

मेरी मृत्युके बाद या मेरी अशक्त हालतमें मेरा अधिकार अुसे मिल जायगा, जिसे सेवाग्राम आश्रमके सरक्षक चुन लेंगे।

मनुवहन पढ-लिखकर अपने सेवाकार्यमें ही लग जाय, अुसे आगे कुछ भी सिखानेकी जरूरत न रहे और वह पैंतीस वर्षकी अुमरमें पहुच जाय, अुस समय यदि गांधीजी या मैं जिन्दा

न होअू, तो मनुबहन अुक्त रकमका अुपयोग अपनी अिच्छानुसार कर सकेगी और सेवाग्राम आश्रमके संरक्षकोकी तरफसे जो ट्रस्टी नियुक्त होगे अुनका धर्म मनुबहन चाहे तो मूल रकम ब्याज सहित अुसे सौंप देनेका होगा। यदि मनुबहन विवाह करे तो अुस समय बची हुअी रकम चारो बहनोमें समान रूपसे बाट दी जायगी।

चि० जयसुखलाल,

अिसमें कोअी फेरबदल करना चाहो या जिनके नाम दिये गये है अुन्हे तुम अपने बदले नियुक्त करना चाहो तो कर देना। मेरी सलाह है कि वे नाम मेरे और तुम्हारे बाद क्रमसे हो तो अच्छा।

बापूके आशीर्वाद

मुझे बापूजीने दिनशाजीके आरोग्य-भवनमें रख तो दिया, परतु वहा मुझे कुछ प्रवाही पदार्थो पर रखा गया। प्राकृतिक चिकित्सामें यह माना जाता है कि अिस प्रकार रहनेसे शरीर पर प्रतिक्रिया (reaction) होती है और अन्तमें रोग जडसे चला जाता है। मुझ पर भी प्रतिक्रिया हुअी और दमेका अेक नया रोग शुरू हो गया। जिससे मैं कुछ घबराअी। मेरे बारेमें डॉक्टरोको साप्ताहिक समाचार तो बापूजीके पास भेजने ही पडते थे। अुस सिलसिलेमें बापूजीने मुझे लिखा

सेवाग्राम,
२०-७-'४५

चि० मनुडी,

तेरी अच्छी कसौटी हो रही है। डॉ० दिनशा पर मेरा दृढ विश्वास है। अिसलिअे तेरी चिन्ता नही करता। अिस समय सबसे अच्छी जगह तेरा अिलाज हो रहा है। और तेरे लिखने परसे देख सकता हू कि तुम दोनो बहनें वहा जरूर कुछ

सीखोगी। तावे जैसा शरीर बनाकर आना। निश्चिंत होकर डॉक्टर कहे अुसी तरह करती रहना। जो भी हो लिखनेमें सकोच न रखना। सकोच रखेगी तो मेरी चिन्ता बढेगी।

बापूके आशीर्वाद

अिस बीच डेढेक महीने बाद मुझे अचानक बबअी जाना पडा। अितनेमें मेरे पिताजीका तबादला कराचीसे महुवा हो गया। अिसलिअे मैं अुनके साथ बम्बअीसे कराची गअी और वहासे महुवा आअी। यहा आनेके बाद महुवाके बारेमें बापूजीने थोडासा मेरे पिताजीको लिखा :

महुवा तो हवा खानेका स्थान माना जाता है, अिसलिअे यह बन्दरगाह तुम्हे अनुकूल आना ही चाहिये।

महुवामें पढनेके साधन है, अैसा मेरा खयाल है। वहा किसी समय दूधाभाअी हरिजन पाठशाला चलाते थे और हाजिरी भी अच्छी रहती थी। अब वह चलती है या नही, यह तलाश करके लिखना।

तुम लोग अैसी जगह पर चले गये हो, जहा बहुत सेवा-कार्य हो सकता है। वहा धर्मांध मनुष्य रहते है। वहा कोअी खादी नही पहनता; कोअी अिक्के-दुक्के खद्दरधारी दिखाअी देते है। अुस क्षेत्रमें कोअी काम नही हुआ है। साथ ही राज्यका बडा बदरगाह होनेसे राज्यका असर भी दिखाअी दे सकता है। तुमसे जितना बन पडे करना। मुझे लिखते रहना।

मेरा खयाल यह है कि रायचंदभाअीका लडका भी वहीं है। वह रायचदभाअीका काम कर रहा है अैसा बात तो नहीं है। मुझे लिखा करता था। अुसके विचार अच्छे है। खोज करनेकी झझटमें न पडना। महज ही कभी मजर लग जाय तो दूसरी बात है।

सरदार पाच दिनके लिअे बम्बआी गये हैं। वे जहा रहते हैं वहासे चले जाय तो सूना लगता है। अुनका स्वभाव अितना विनोदी और मिलनसार है।

बापूके आशीर्वाद

जैसे हमारे समाजमें हर शहरमें लडकियोको छेड़नेकी अेक कुटेव है वैसे यहा महुवामें भी है। १९४६ में हमारे यहा आनेके बाद सस्थाके सचालकोके आग्रहसे मैं स्त्रियोकी अेक सस्थामें अवैतनिक काम करती थी। वहा हम स्त्रियोका वातावरण काफी जम गया था। मैं हमारे घरकी नौकरानीको भी, जो पद्रह वर्षकी कोलीकी लडकी थी, कातना, पूनिया बनाना और अक्षरज्ञान सिखानेके अुद्देश्यसे रोज कमलाबहन-अुद्योगशालामें ले जाती थी। अिस लडकीकी शिकायत थी कि जब वह केबिन चौकमें से गुजरती है, तब वहा होटलमें बैठनेवाले लडके अुससे छेडखानी करते हैं। यही शिकायत कपोल जातिकी लडकियोकी भी थी। परतु यदि वे लडकिया कोअी शिकायत करती हैं, तो अुनके मा-बाप अुन पर नाराज होते हैं और वे गावकी आखोमें चढ जाती हैं। कुछने तो मुझे यह भी कहा कि "हम या हमारी लडकिया कुछ करे तो अुनका विवाह-सबध न हो।" अिस कारण कोअी अुस शैतानी टोलीसे, जो गावके बीचोबीच थी, कुछ नही कहता था। मुझे अिस बातका पता चलने पर मैं अपनी नौकरानीके साथ बाजारमें होकर निकली। अेक लडकेने सदाकी भाति अपनी शरारत शुरू की। मुझे गुस्सा आया। अिसलिअे मैंने तो चप्पल निकालकर अुस लडकेको दो जमा दी। अिससे मेरे साथ जो कोलीकी लडकी थी अुसमें भी हिम्मत आअी और अुसने भी लडकेकी खासी मरम्मत की। लोग अिस कुतूहलको देखने अिकट्ठे हो गये। कुछ व्यापारियोने शाबाशी दी कि "बहन, अच्छा किया। हमारी लडकियोको भी बहुत समयसे ये बदमाश परेशान करते थे।" अिससे मुझे व्यापारियो पर और भी क्रोध आया और अुस लडकेको पुलिसके सुपुर्द करनेकी विधि अपने पिताजी पर छोडकर मैं अपने काम पर चली गअी। मडलमें जाकर यह बात कही तो अेक

और बहनने मुझसे यही शिकायत की। अिसलिअे अुसी दिन फिर वहासे मडलकी दो बहनें साथ गअी। हमें देखते ही जो लडके अिस बहनको चिढाया करते थे अुन्होंने अुसके साथ अपनी छेडछाड शुरू की। हमने अुनमें से अेकको पकडकर खूब पीटा। और अुस लडकेको भी पुलिसके हवाले किया। अतमें सबने लिखित माफी मागी। अुसके बाद आज तक हमारे भर बाजारसे निकलने पर भी किसीने हमें छेडनेकी हिम्मत नही की।

परतु जिस दिन दो-तीन लडकोको अेकके बाद अेक पीटनेकी घटना हुअी, अुसी रातको मुझे विचार आया कि मेरा यह कार्य हिंसामय हुआ, बापूजीको पता चलेगा तो अुन्हें कितना दु ख होगा! अिसलिअे मैंने सारी बात अुन्हें बता दी। परतु बापूजीने मेरी कल्पनासे भिन्न ही लिखा .

मसूरी,
६-६-'४६

चि० मनुडी,

तू अपने पराक्रमोका जो वर्णन कर रही है, अुन परसे तो यही कहा जा सकता है कि तू अपना समय अच्छी तरह बिता रही है। गुडोसे तेरा मतलब अुन बदमाश लडकोंसे है जिनका तुझे अनुभव हुआ है। तूने जिस ढंगसे काम लिया वह कुछ हद तक द्रौपदीका तरीका माना जायगा। लेकिन अनुकरण करने लायक ढग सीताका है। बेशक, सतियोंमें दोनोंकी गिनती है। द्रौपदीके पाच पति थे तो भी वह सती कैसे रही और मानी गअी, यह विचार करनेकी बात है। परन्तु अिसे यही छोड देता हू। तूने गुडोको जो जवाब दिया अुतना ही करके रह गअी हो और तेरे मनमें क्रोध भरा हो, तो तेरा यह जवाब गुडेपनसे ही दिया गया माना जायगा। पैरसे चप्पल निकालकर तू गुडे पर फेंके या हाथमें लेकर दो-चार मार दे तो वह दब जायगा — यह अर्थ तू लगा ले, तो क्या तुझे अिसका भान होगा

कि तूने क्या किया? भरे चौकमें तूने जो शरीर-बल दिखाया, अुससे लोगोंमें भी बल आ सकता है। और गुंडोके स्वभावमें तो डरपोकपन होता ही है, अिसलिअे वे दबकर भाग जाते है। यदि चप्पल निकालना तेरी करुणाकी निशानी हो, तो चप्पल निकालने और फेंकने पर भी मैं अुसे अहिंसाका चिह्न मानूगा। अहिंसाकी जड हृदयमें होती है। और अुसका परिणाम यह होना चाहिये कि सामनेवाला मनुष्य मारके आगे नही झुके, परतु मारकी जडमें करुणाका जो तेज होता है, अुससे चकित होकर आत्माके बलके सामने झुक जाय। अैसा अुदाहरण मै तुझे अपना ही देता हू। मिस श्लेशिनने मेरे देखते हुअे मूर्खतासे बीडी पी। मैंने अुसे तमाचा मार दिया। बीडी फेंक कर पहली ही बार वह मेरे देखते-देखते रो पडी। अुसने मुझसे माफी मागी और मुझे लिखा "अब मै कभी अैसा नही करूगी। आपका प्रेम मैंने जान लिया है।" अैसे अुदाहरण मेरे जीवनमें तो और भी हैं। बहुतोंके जीवनमें भी होगे, जिन्हे हम नही जानते। क्या अुन गुडोने जान लिया कि तुझमें वह प्रेम था? लोगोकी वाहवाहीसे तू भुलावेमें न आना। अपने हृदयको पहचान लेना और फिर विचार करना कि तेरे काममें हिंसा थी या अहिंसा? आम तौर पर सोचे तो चप्पल निकालना सभ्यता अर्थात् अहिंसाका चिह्न नही है, नादानी अर्थात् असभ्यताकी निशानी है। परतु वह कृत्य तेरे लिअे अहिंसाका चिह्न हो सकता है। अिसकी साक्षी तू ही हो सकती है या भगवान। तेरे कामका यह सारा पृथक्करण करके मै तुझे बधाअी ही देना चाहता हूं, क्योंकि तेरा काम हिंसामय हुआ हो तो भी मुझे परवाह नही है। मेरे लिअे अितना काफी है कि तू दबी नही। मैं यह मान लेता हू कि तेरा रुख अहिंसाकी ओर है। अिसलिअे अगर यह हिंसा होगी तो भी तू अिससे विचारपूर्वक अहिंसा सीख लेगी। अिसलिअे मैंने तेरा पत्र सबको प्रेमपूर्वक पढनेको दिया

है। अखा भगतने कहा है "सुतर आवे तेम तु रहे, जेम तेम करीने हरिने लहे।"* अिसलिअे वहा बैठकर भी शुद्ध सत्य और अहिंसा सीखकर तू अुसे अमलमें ला सकेगी, तो मेरे पास या मेरे अधीन सीखनेसे अधिक सीखी हुअी मानी जायगी।

तुम दोनोको बापूके आशीर्वाद

जिस दिन अिस लडकेको पीटा था अुसी दिन वह लडका रातको साढे ग्यारह बजे घर आकर यह कहते हुअे मेरे पैरोमें पडा कि मुझसे बहुत बेजा काम हो गया। और अुसने अिस बातका विश्वास दिलाया कि आयदा कभी अिस प्रकारकी छेडखानी नही करेगा। अुसके बाद पू० बापूजीका अुपरोक्त पत्र तो आ ही गया था। फिर भी मैंने जरा और स्पष्टीकरण चाहा था। अुसके अुत्तरमें बापूजीने लिखा

दिल्ली,
२६–६–'४६

चि० मनुडी,

तेरा १५ तारीखका पत्र कोअी तीन दिन पहले मिला था। अुत्तर आज ही लिख पा रहा हू। तूने जो साहस दिखाया अुसकी चर्चा करके तूने पूछा कि अिसे मैं हिंसा कहू या अहिंसा? लेकिन तेरा अिस विचारमें न पडना ही अच्छा है।

अहिंसाका मनन करनेसे समय आने पर हमारे हाथो अहिंसक कार्य ही होगा। दूसरे लोग अुसे वैसा समझें या न समझें, अिसकी चिन्ता नही करनी चाहिये। अुसके असरका आधार अिस बात पर नही होता कि दूसरे क्या समझेंगे, परन्तु हमारे मन पर होता है। मनको तो हम भी नही जान सकते। परन्तु मान लो कि जान सकते है। तब यदि किसीका मन कहे कि गाली देना या थप्पड मारना अहिंसक कार्य है तो अुसके लिअे तो वह अहिंसक ही रहेगा। वास्तवमें वह अहिंसक है या नही,

---

* तू कैसा भी सरल जीवन बिता, लेकिन हरिको प्राप्त कर।

यह तो भगवान ही जाने। सामनेवाले मनुष्य पर असका जो असर पडा हो, अस परसे वह खुद और प्रेक्षक निर्णय कर सकते हैं। अिस सारी झझटमें मै तुझे क्यो डालू? तू लगनसे यह प्रयत्न करती रहेगी तो असे मैं तेरी शिक्षा ही समझूगा।

तुम दोनोको बापूके आशीर्वाद

महुवाकी गदगी तो मशहूर है। शुरूमें मैंने बहनोसे यहाका सारा वातावरण जान लिया। अब तकका मेरा पालन-पोषण पोरबन्दर, बम्बअी और कराची जैसे शहरोमें हुआ था। अत अितनी अधिक गदी गलिया देखकर मुझे आश्चर्य ही होता था। जगह जगह धूरेके ढेर पडे हुअे थे। परतु बादमें मुझे मालूम हुआ कि काठियावाडमें यह सब स्वाभाविक है। जहा तहा स्त्रिया घूघट निकालकर सवेरे-सवेरे या सध्याके समय पाखाने बैठ जाती है। यह ढग तो मैंने पहले-पहल यही देखा। महुवा निवासियोके लिअे और खास तौर पर स्त्रियोके लिअे यह अत्यत लज्जाजनक बात है। शायद पूज्य बापूजीके प्रयत्नसे म्युनिसिपैलिटी द्वारा ही कुछ हो सकता है, क्योकि शहर छोटा है। साथ ही दिन-दहाडे और भर बाजारमें जब बहनोके साथ छेडखानी की जाती हो, तो जिन बहनोके घर पाखाने न हो वे देर-अबेर गावके बाहर कैसे जा सकती है? यह समस्या म्युनिसिपैलिटी ही हल कर सकती है, अिसलिअे मैंने बापूजीको लिखा। बापूजीने जवाबमें लिखा "मैंने महुवा देखा है। परतु तेरा वर्णन तो असे और भी खराब बताता है। मुझे वहा अेक ही दिन रहनेकी याद है।" मेरा पत्र श्रीमान दीवान साहबके पास भेजा गया। असके बाद जब सितम्बरमें मेरा बापूजीके पास दिल्ली जाना हुआ तब और आगे भी जब जब श्रीमान दीवान साहबसे मिलना होता तब तब मेरा यह प्रश्न अनके सामने खडा ही रहता था। बापूजीने अनसे कहा था कि "महुवामें रहनेवाली अपनी ही लडकीकी बात सुनकर असे सतुष्ट कीजिये।" और आज मुझे अितना स्वीकार करना चाहिये कि यद्यपि महुवाकी म्युनिसिपैलिटी वहाके नागरिकोके हाथमें होनेसे वे कहते थे कि 'अब तो नागरिकोंके हाथमें सत्ता है', फिर

भी अुन्हें यह तो लगा ही कि अिस प्रश्नके साथ न्याय हो सके तो अच्छा। और जहा तक मै जानती हू वे अिस प्रश्नको हल करनेकी कोशिशमे ही थे। परतु राजनीतिक परिवर्तन अितनी तेजीसे हुअे कि महुवाकी मशहूर गन्दगीका सवाल अेक तरफ रह गया, जो आज तक वैसा ही पडा हुआ है। आज तो हमारे अिस छोटेसे शहरमें 'वादो'के अैसे नारे लग रहे है कि जिस महुवाके लिअे पूज्य बापूजीने अपने असख्य कामोके बीच भी सतत चिंता रखी थी, अुसके लिअे आज यह अेक बडा प्रश्न हो गया है कि 'वादो'के नारोको छोडकर शहरकी यह शर्म मिटाअी जायगी या नही?

हमारे महत्त्वपूर्ण हिन्दी प्रकाशन

अहिंसक समाजवादकी ओर	१ ००
आरोग्यकी कुंजी	० ४४
खादी	२ ००
गांधीजीकी संक्षिप्त आत्मकथा	० ७५
गीताका सन्देश	० ३०
गोसेवा	१ ५०
दिल्ली-डायरी	३ ००
नयी तालीमकी ओर	१ ००
पंचायत राज	० ३०
बापूकी कलमसे	२ ५०
बुनियादी शिक्षा	१ ५०
मंगल-प्रभात	० ३७
यरवडाके अनुभव	१ ००
रामनाम	० ५०
विद्यार्थियोंसे	२ ००
विश्वशांतिका अहिंसक मार्ग	० ४०
शाकाहारका नैतिक आधार	० २५
शिक्षाकी समस्या	२ ५०
सच्ची शिक्षा	२ ००
सत्यके प्रयोग अथवा आत्मकथा	१ ५०
सत्य ही ओश्वर है	० ८०
सन्तति-नियमन सही मार्ग और गलत मार्ग	० ४०
सर्वोदय	२ ००
सहकारी खेती	० २०
स्त्रियां और अुनकी समस्यायें	१ ००
हमारे गांवोंका पुनर्निर्माण	१ ५०
हिन्द स्वराज्य	०.७०
विचार-दर्शन १	१.५०
भूदान-यज्ञ	१ २५

सरदार वल्लभभाअी १	६ ००
सरदार वल्लभभाअी २	५ ००
जीवन-लीला	३ ००
धर्मोदय	१ २५
सूर्योदयका देश	२ ५०
स्मरण-यात्रा	३ ५०
गांधी और साम्यवाद	१ २५
गीता-मन्थन	३ ००
तालीमकी बुनियादें	२ ००
संसार और धर्म	२ ५०
स्त्री-पुरुष-मर्यादा	१ ७५
अेकला चलो रे	२ ००
बापूके जीवन-प्रसंग	० ५०
बिहारकी कौमी आगमें	३ ००
गांधीजी	०.७५
ग्रामसेवाके दस कार्यक्रम	१ २५
आत्म-रचना अथवा आश्रमी शिक्षा भाग १–२–३	४ ५०
अैसे थे बापू	१ ७५
गांधीजी और गुरुदेव	० ५०
गांधीजीकी साधना	३ ००
गांधीजीके पावन प्रसंग. १–२	० ७४
गांधी-नास्तिक-संवाद	० ६२
जीवनका पाथेय	० ५०
जीवनकी सुवास	० ३७
ठक्करबापा	३ ००
बापूकी छायामें	४ ००
राजा राममोहनरायसे गांधीजी	२ ००
सरदारकी सीख	० ८०
हमारी बा	२ ००

नवजीवन ट्रस्ट, अहमदाबाद–१४